"हिन्दी भाषा के विकास में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का योगदान"

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की डी० फिल० उपाधि
के लिए प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

निर्देशक
डॉ० राम किशोर शर्मा
रीडर, हिन्दी विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

शोधकर्ता
राकेश कुमार पटेल
हिन्दी विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

हिन्दी विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
2002

डॉ० रामकिशोर
रीडर, हिन्दी विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

हिन्दी विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय

दिनाक----------

शोध निर्देशक का प्रमाण-पत्र

अत्यन्त प्रसन्नता के साथ प्रमाणित किया जाता है कि राकेश कुमार पटेल शोध छात्र हिन्दी विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद ने अपना शोध प्रबन्ध '' हिन्दी भाषा के विकास मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन का योगदान'' विषय मे मेरे निर्देशन मे सम्पन्न किया है। इनका यह अनुसधान मौलिक एव महत्वपूर्ण है। शोध कार्य हेतु विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित अवधि तथा उपस्थिति इनके द्वारा पूर्ण की गयी है। अत यह शोध प्रबन्ध परीक्षार्थ विश्वविद्यालय मे प्रस्तुत किया जा रहा है।

शोध नि॰शक

डॉ० राम किशोर
रीडर, हिन्दी विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

भूमिका

भाषा का परिवर्तन एव विकास भाषा का समाज द्वारा अपनी आवश्यकता की सपूर्ति हेतु स्वय होता रहता है लेकिन विशिष्ट प्रयोजन हेतु राजकीय एव सामाजिक स्तर से सस्थागत प्रयत्न अपेक्षित होते है। हिन्दी के आरम्भिक काल से ही हिन्दी के रचनाकारो को राजकीय सरक्षण प्राप्त हुआ। भक्त कवियो ने यद्यपि राजकीय सरक्षण की कभी परवाह नही की किन्तु रीतिकाल मे राजकीय सरक्षण मे हिन्दी का कलात्मक रूप विकसित हुआ। स्वतत्रता आन्दोलन के साथ जहा राष्ट्रीय चेतना की जागृति हुई वही भाषिक विकास की चिन्तन भी प्रमुख्य हुई। भारतेन्दु ने 'निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल्य' कहकर भाषा के महत्त्व को रेखाकित किया। सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र मे निबद्ध करने के लिए एक राष्ट्रभाषा के विकास की आवश्यकता प्राय· देश के सभी नेता अनुभव कर रहे थे। इसी भावना के परिणामस्वरूप देश मे अनेक सस्थाए इस दिशा मे सक्रिय हुई। नागरी प्रचारणी सभा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति बर्धा, आदि अनेक सस्थाएँ इस संदर्भ मे उल्लेखनीय है।

जब देश पराधीन था उस समय स्वैच्छिक हिन्दी सेवी सगठन एव सस्थाओं ने भाषा एव साहित्य का प्रचार-प्रसार पूरे देश मे जिस स्तर पर किया उस स्तर पर कोई भी सरकारी ताम-झाम वाली संस्था या सगठन कभी नही कर सका। जहॉ सरकारी व्यवस्था करोडो रुपये व्यय करके कोई विशेष उल्लेखनीय अथवा महत्वपूर्ण उपलब्धियां नही हासिल कर सकी वही नागरिको द्वारा मिशनरी भावना से सचालित स्वैच्छिक सस्थाओं ने अपने अत्यन्त न्यून और सीमित साधनो के सहारे पूरे देश मे जागृति का सचार करके यह प्रमाणित कर दिया कि सरकारी और गैर सरकारी व्यवस्था मे कितना बड़ा फर्क होता है। साहित्य सम्मेलन स्वतन्त्रता संग्राम का एक साधन था क्योकि भाषा और साहित्य का सघर्ष उस काल मे गुलामी के खिलाफ संघर्ष था। स्वाधीनता के बाद जैसे-जैसे सरकारीकरण या सरकारी हस्तक्षेप बढ़ता गया वैसे-वैसे स्वैच्छिक सगठन की प्रकृति भी उसी गति से क्षीण से क्षीणतर होती चली गयी सरकारी निमत्रण के कुछ ही वर्षो मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन की कितनी

अति हुयी इसी कारण हिन्दी भाषा के विकास में कुछ रुकावटे आयीं। लेकिन स्वावलम्बी हिन्दी सेवी सगठन अग्रेजी के खिलाफ जो सघर्ष कर सकते है वह सरकारी सस्थान नही। भाषाओ की प्रतिष्ठा की लडाई अन्तत अखण्डता की लडाई है। इस प्रकार के सगठनो का सरकारीकरण अग्रेजी का हित साधन है। सयोगवश सम्मेलन के कई विरोधी अग्रेजी परस्त और उनके पिट्ठू रहे है।

महात्मा गॉधी के शब्दो मे- जिस राष्ट्र ने अपनी भाषा का अनादर किया है उस राष्ट्र के लोगो ने अपनी राष्ट्रीयता खो दी है। **डॉ० वेलेरा के शब्दों मे** यदि मेरे सामने एक ओर स्वाधीनता और दूसरी ओर मातृभाषा रखी जाए और पूछा जाए कि इन दोनो मे से कौन सी एक वस्तु लोगे, तो मै नि सकोच मातृभाषा को पहले चुनूँगा, क्योंकि इसके बल पर कालान्तर मे देश की स्वाधीन्ता भी प्राप्त कर लूँगा। इन्ही वाक्यो को प्रेरणा मानकर हिन्दी भाषा के विकास पर सम्मेलन ने इस मौलिक कार्य को आगे बढाने का सकल्प लिया। सम्मेलन के क्रिया-कलापो एव हिन्दी भाषा के विकास मे उसके योगदान के समग्र विवेचन तथा मूल्याकन की आवश्यकता की ओर मेरे गुरुजनो ने मुझे आकृष्ट किया। अतः मैंने इस क्षेत्र मे कार्य करने का सकल्प लिया है।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की डी० फिल० उपाधि हेतु मैंने इस विषय को चुना। मैंने अपने अध्ययन को छह अध्याय मे विभाजित किया है। प्रथम अध्याय मे हिन्दी भाषा का उद्भव इतिहास, द्वितीय मे हिन्दी सेवी संस्थाओ की भूमिका, तृतीय अध्याय मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना और उद्देश्य, चतुर्थ अध्याय में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का योगदान, पचम अध्याय में हिन्दी सम्मेलन के कार्य तथा षष्ठम अध्याय में उपसंहार वर्णित है।

प्रथम अध्याय में हिन्दी भाषा का इतिहास और उसके क्षेत्र व स्वरूप का वर्णन किया गया है। राज भाषा एवं राष्ट्र भाषा का स्वरूप के रूप मे हिन्दी भाषा की प्रतिष्ठा को दर्शाया गया है। द्वितीय अध्याय मे हिन्दी सेवी संस्थाओं की हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार मे उनकी भूमिका वर्णन किया गया है। तृतीय अध्याय मे सम्मेलन की स्थापना और उद्देश्य की पूर्ति मे महामना मदन मोहन मालवीय, राजर्षि टण्डन के हिन्दी भाषा के प्रति किये कार्य को दर्शाया गया है। चतुर्थ अध्याय मे हिन्दी भाषा के विकास में सम्मेलन द्वारा किन-किन तरीको से योगदान दिया गया है उनका वर्णन किया गया है। पंचम अध्याय में हिन्दी सेवियों के प्रति सम्मेलन द्वारा आयोजित गोष्ठियो, साहित्यकारो की जन्म शब्दादियों हिन्दी 'दिवस व

आधुनिक साहित्य की विभिन्न विधाओ पर चर्चाओ को समाहित किया गया है। षष्ठम अध्याय मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन के विभिन्न विभागो द्वारा हिन्दी भाषा को जनमानस तक कैसे पहुँचाया जा रहा है उसका वर्णन है।

इस शोध प्रबन्ध के प्रणयन में मैने सम्मेलन तथा अन्य स्रोतो से प्राप्त सामग्री का उपयोग किया है। विषय को व्यवस्थित ढग से प्रस्तुत करने की कोशिश की है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभी पदो पर विचार किया गया है। प्रत्येक पक्ष पर स्वतत्र रूप से कार्य करने का प्रयास किया हूँ। सारा श्रेय गुरुवर डॉ० रामकिशोर शर्मा, रीडर, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद को है। उन्ही के निर्देशन मे यह शोध प्रबन्ध लिखा गया है। जब-जब मेरे सामने कठिनाइयाँ आयी उनका परिहार गुरुवर ने किया है। यह प्रबध उनके कुशल निर्देशन से ही इस रूप मे आकार ग्रहण कर सका है।

मे उनके प्रति अपनी प्रणति निवेदित करता हूँ। पूज्या माता श्रीमती शर्मा ने भी मेरा उत्साहवर्द्धन तो किया ही साथ ही साथ सुझाव भी दिये, उनके प्रति भी मै नतमस्तक हूँ। हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० राजेन्द्र कुमार, प्रो० सत्य प्रकाश मिश्र के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिन्होने मेरी समय-समय पर बहुमुखी सहायता की। पूज्य पिता श्री किशोरी लाल पटेल, माता श्रीमती धीराज पटेल की प्रबल प्रेरणा ने मनोबल बढाया। उनके प्रति भी मै अपनी प्रणति निवेदित करता हूँ। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रधान मत्री, प्रचार मत्री, प्रकाशन मत्री एव पुस्तकालय अध्यक्ष शोध सामग्री इकट्ठा करने मे बहुमुखी सहायता की। अत समस्त हिन्दी साहित्य सम्मेलन परिवार धन्यवाद के पात्र हैं।

पुस्तकालय अध्यक्ष इलाहाबाद विश्वविद्यालय, भारतीय हिन्दू परिषद् इलाहाबाद, पुस्तकालय अध्यक्ष हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पुस्तकाल्याध्यक्ष नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पुस्तकालय अध्यक्ष राजकीय लाइब्रेरी , केन्द्रीय लाइब्रेरी इलाहाबाद के प्रति भी मै अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिन्होने मुझे अपने पुस्तकालयो से पुस्तकें देने का कष्ट किया।

इस शोध प्रबन्ध के प्रणयन में मैंने अनेक लेखकों, आलोचको की कृतियो से प्रत्यक्ष एव अप्रत्यक्ष रूप से सहायता ली है। मै उन सबके प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। श्री अनिल कुमार गुप्त (गुप्ता कम्प्यूटर्स, अल्लापुर, इलाहाबाद) ने शोध प्रबंध का टंकण किया अत˙ वे धन्यवाद के पात्र हैं।

अत मे ----

आपरितोषात् विदुषां न साधुमन्वे प्रयोग विज्ञानम्

शोधार्थी
राकेश कुमार पटेल

अ: क्रमणिका

भूमिका

अध्याय - 1 6 — 39

(क) हिन्दी भाषा का स्वरुप और विकास
(ख) मुस्लिम शासन काल मे हिन्दी की प्रतिष्ठागत समस्याऐ
(ग) ब्रिटिश शासन काल में हिन्दी उर्दू और अग्रेजी का पारस्परिक सघर्ष
(घ) राज भाषा के रूप मे हिन्दी की स्थिति
(ड) स्वतत्रता संग्राम मे राष्ट्र भाषा के रूप मे हिन्दी की स्वीकृति

अध्याय - 2 40 — 53

(क) हिन्दी सेवी संस्थाओ की स्थापना
(ख) राष्ट्रभाषा के प्रचार-प्रसार मं उनकी भूमिका

अध्याय - 3 54 — 79

(क) हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना और उद्देश्य

अध्याय - 4 80 — 179

(क) हिन्दी भाषा के विकास मे हिन्द साहित्य सम्मेलन का योगदान
(ख) अधिवेशनो के माध्यम से
(ग) पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से
(घ) दुलर्भ पुस्तिकाओं के माध्यम से
(ड) पाणुलिपियो के सकलन एवं संख्या के माध्यम से

अध्याय - 5 180 — 217

(क) परिक्षाओं के संचालन के मध्यम से
(ख हिन्द साहित्य सम्मेलन से जुड़े नेताओं की भूमिका
(ग) गोष्ठियों और समिति के माध्यम से भाषा का प्रचार एवं प्रसार

अध्याय - 6 218 — 225

उपसहार

अध्याय-1

हिन्दी भाषा का स्वरूप और विकास

(क) हिन्दी भाषा का स्वरूप और विकास

हिन्दी शब्द की व्युत्पत्ति और अर्थ उपभाषा तथा बोलियॉ :- हिन्दी 'हिन्द' की भाषा है। हिन्दी शब्द मुसलमानो की देन है। फारसी मे 'स' का 'ह' हो जाता है। यह ध्वनि परिवर्तन मध्यकालीन आर्य भाषाओ मे परिलक्षित होता है जैसे- द्वादश > बारस > वारह (स > ह)। सिन्ध से फारसी मे हिन्द और सिन्धी से हिन्दी हो गया। सिन्धु के आस-पास के स्थान को हिन्द तथा वहॉ के निवासियो को हिन्दी या हिन्दोस्तानी कहा गया। आगे चलकर इस शब्द का विस्तृत अर्थ मे प्रयोग होने लगा और हिन्दी तथा हिन्दुस्तान सारे भारत का द्योतक हो गया। धीरे-धीरे हिन्दी शब्द का अर्थ संकुचित हुआ और मात्र मध्य देश की भाषा के रूप मे परिवर्तित होने लगा।

मध्य युगीन कवियो जैसे कबीर, सूर, जायसी, तुलसी, बिहारी आदि ने हिन्दी के लिए भाषा या भाखा शब्द का प्रयोग किया है। इस शब्द के प्रयोग की परम्परा उन्नीसवी शताब्दी के आरम्भ तक मिलती है। हिन्दी- सस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश की उत्तराधिकारी है। जब कोई बोली अपने क्षेत्र का विस्तार कर लेती है तो वह भाषा की पदवी प्राप्त कर लेती है।

हिन्दी प्रदेश :- ग्रियर्सन ने अम्बाला (पजाब) से लेकर बनारस तक और नैनीताल की तलहटी से लेकर बालाघाट (मध्य प्रदेश) तक की बोलियो को हिन्दी कहा है। आज हिन्दी प्रदेश की सीमा अधिक विस्तृत हो गयी है। इसके अन्तर्गत पश्चिम मे अम्बाला, बीकानेर और जैसलमेर, दक्षिण मे ताप्ती नदी, बालाघाट, दुर्ग, पूर्व मे रायगढ़, धनबाद और भागलपुर और उत्तर मे नेपाल की सीमा को छूते हुए गगोत्री और जमनोत्री का १६९० कि०मी० ल० और ९६५ किमी० का चौड़ा भू-भाग है[1] इस व्यापक क्षेत्र में हिन्दी के अनेक उपरूप और बोलियॉ हैं। हिन्दी शब्द उन सभी उपभाषायों तथा बोलियो का प्रतिनिधित्व करता है। आजकल हिन्दी शब्द का व्यवहार परिनिष्ठित साहित्यिक तथा प्रशासनिक काम-काज मे प्रयुक्त हिन्दी भाषा के लिए होता है।

१ ग्रामणीय हिन्दी बोलियॉ - डॉ० हरदेव बाहरी पृ० २७

हिन्दी की उपभाषाएँ तथा बोलियाँ

आधुनिक हिन्दी के विकास से पूर्व हिन्दी प्रदेश मे पॉच प्राकृते प्रचलित थी। जिनसे हिन्दी की पॉच उपभाषाओं का विकास हुआ। उपनागर अपभ्रंश से राजस्थानी, शौरसेनी से पश्चिमी हिन्दी, अर्द्धमागधी से पूर्वी हिन्दी, मागधी से बिहारी हिन्दी, खस से पहाडी हिन्दी का विकास हुआ। इन उपभाषाओ की अपनी बोलियॉ एव उपबोलियॉ हैं जिनमे से कुछ बोलियॉ साहित्यिक स्तर प्राप्त कर सारे मध्य प्रदेश की सामान्य भाषा बनती रही है किन्तु ये स्वतत्र भाषाऍ न होकर हिन्दी की उपभाषाओ मे ही गिनी जाती है। राजस्थानी की डिगल भाषा, पश्चिमी हिन्दी की ब्रजभाषा और खड़ीबोली, पूर्वी हिन्दी की अवधी को यह प्रतिष्ठा प्राप्त हो चुकी है।

राजस्थानी हिन्दी मुख्यत राजस्थान क्षेत्र की उपभाषा है। इसका कुछ क्षेत्र वर्तमान मध्य प्रदेश मे पडता है। राजस्थानी का विस्तार जोधपुर, उदयपुर, जयपुर, बीकानेर, अलवर, भरतपुर, जैसलमेर कोटा, शाहपुर, करौली आदि क्षेत्रो तक है। राजस्थानी हिन्दी की चार मुख्य बोलियॉ है।

1 - मारवाड़ी

2 - मालवी

3 - जयपुरी

4 - मेवाती

मरुभूमि से सम्बद्ध होने के कारण इस क्षेत्र का नाम मारवाड पड़ा तथा यहॉ रहने वालो की बोली मारवाड़ी कहलायी। मारवाडी का क्षेत्र मेवाड़, पूर्वी सिध, जैसलमेर, बीकानेर, दक्षिणी पजाब तथा जयपुर के उत्तरी पश्चिमी क्षेत्र तक परिव्याप्त है। इसके बोलने वालो की सख्या ७२ लाख से अधिक ऑकी गयी है।

उज्जैन के आस-पास मालव प्रान्त की बोली **'मालवी'** है। यह दक्षिणी पूर्वी राजस्थान का प्रतिनिधित्व करती है इसके अन्तर्गत परतापगढ, रतलाम, इंदौर, भोपाल, होशंगाबाद, नीमच, ग्वालियर, कोटा, झालावाड, चित्तौड़गढ के कुछ भाग आते हैं। विशुद्ध मालवी उज्जैन, इदौर और देवास की बोली है। इसके बोलने वालों की संख्या लगभग ६० लाख है।

जयपुरी .- यह पूर्वी राजस्थान की प्रतिनिधि बोली है। इस बोली का स्थानीय नाम

ढूँढाडी है। विशुद्ध जयपुरी जयपुर नगर के ६४० कि०मी० उत्तर, ८० कि०मी० पूर्व और ९६ कि०मी० दक्षिण तक बोली जाती है। इसके बोलने वालो की सख्या ५० लाख के लगभग होगी।

मेवाती : मेओ जाति के नाम पर इस क्षेत्र का नाम मेवात और बोली का नाम मेवाती पडा । इस बोली का क्षेत्र काफी विस्तृत है। इसका क्षेत्र अलवर, गुड़गॉव, भरतपुर के आस-पास पड़ता है। ग्रियर्सन ने इसकी एक सम्मिश्रित उपबोली अट्टीखाटी का वर्णन किया है जो गुडगॉव, दिल्ली और करनाल के पश्चिमी क्षेत्रो मे बोली जाती है।

पश्चिमी हिन्दी

पश्चिमी हिन्दी के अन्तर्गत पॉच बोलियो का उल्लेख किया है—खडी बोली, बागरू, ब्रजभाषा, कन्नौजी और बुन्देली। डॉ० भोलानाथ तिवारी ने निमाड़ी को भी इसी के अन्तर्गग रखा है। डॉ० हरदेव बाहरी पश्चिमी हिन्दी के दो वर्गो आकार बहुला तथा ओकार बहुला का उल्लेख किया है। डॉ० बाहरी ने दक्षिणी हिन्दी को भी इसी वर्ग मे रखा है। डॉ० राम किशोर शर्मा के अनुसार इस वर्ग मे मुख्यतः छः बोलियॉ हैं जिसमे कौरवी और ब्रजभाषा प्रतिनिधि बोलियॉ हैं। शेष हरियाणी, दक्खिनी, कौरवी की, बुन्देली और कन्नौजी ब्रजभाषा की उपबोलियॉ हैं।

खड़ी बोली : खडी बोली का अर्थ है स्टैण्डर्ड या परिनिष्ठित भाषा। कौरवी को साहित्यिक भाषा बनने के पश्चात खड़ी बोली संज्ञा प्राप्त ही। परिनिष्ठित भाषा के रूप मे इसमे अन्य बोलियों के आवश्यक तत्वो को भी ग्रहण किया गया है। खडी बोली को हिन्दुस्तानी, सरहिन्दी, वर्नाक्यूलर आदि नामो से भी पुकारा जाता है। डॉ० चन्द्रबली पाण्डेय का कथन है कि हिन्दुस्तानी खडी वह भाषा है जिसका साहित्यिक भाषा के रूप मे सबसे पहले विकास हुआ। खडी बोली नाम का प्रयोग सर्वप्रथम लल्लूलाल जी के प्रेमसागर की भूमिका मे मिलता है। केलाग ने खरी को आधार खड़ी बोली को मानकर प्योर स्पीच कहा।[1]

खडी बोली हिन्दी और कौरवी मे ध्वनि, व्याकरण, शब्द भण्डार की दृष्टि से असमानता पायी जाती है, किन्तु मूल मे हिन्दी कौरवी से ही विकसित मानी जाती है। इसका क्षेत्र रामपुर, मुरादाबाद, बिजनौर, मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, देहरादून के मैदानी हिस्से, अम्बाला के पूर्वी भाग, कलसिया और यमुना के उत्तरी दोआब तक फैला है। इसके बोलने वालो की सख्या एक करोड़ से अधिक है।

---

१ हिन्दी भाषा का विकास - डॉ० रामकिशोर पृष्ठ - १०३

हरियाणी या बॉंगरू :- यह बॉंगर देश की बोली है। इसलिए इसे बॉंगरू या हरियाणी नाम से सम्बोधित किया गया है। डॉ० राम किशोर शर्मा के अनुसार इस बोली का क्षेत्र दिल्ली, रोहतक, कर्नाल, जीद नाभा, हिसार के पूर्वी भाग, दक्षिणी पूर्वी पटियाला आदि मे विस्तृत है।

दक्खिनी हिन्दी

इस बोली का मूलाधार १४-१५ वी सदी के मध्य दिल्ली के आस-पास प्रचलित खडी बोली थी। दक्खिन की ओर कई बार उत्तर के मुसलमानो ने आक्रमण किया। समय-समय पर दिल्ली के आस-पास के लोग जो सैनिक, राज कर्मचारी, धर्म प्रचारक के रूप मे गुजरात, महाराष्ट्र, हैदराबाद के कुछ क्षेत्रो मे बस गये अपनी मूल बोली को यहॉ भी प्रयुक्त करते रहे इसीलिए इस बोली को दक्खिनी कहा गया।

ब्रजभाषा

पश्चिमी हिन्दी बोलियो मे ब्रजभाषा का अत्यन्त गौरवपूर्ण स्थान रहा है। ब्रजभाषा शौरसेनी प्राकृत की उत्तराधिकारिणी है। ब्रज कृष्ण की लीला भूमि रही है। भागवत मे 'विरज' का अर्थ व्याप्ति दिया हुआ है। जिसमे कृष्ण व्याप्त हैं वही ब्रज है और वहॉ की बोली ब्रजभाषा है।[1]

पश्चिमी हिन्दी की ओकार बहुला उपसर्ग की प्रतिनिधि बोली ब्रजभाषा का क्षेत्र मथुरा, आगरा, भरतपुर, धौलपुर करौली ग्वालियर का पश्चिमी हिस्सा, जयपुर का पूर्वी हिस्सा, गुडगॉव का पूर्वी हिस्सा, बुलन्दशहर, अलीगढ, एटा, मैनपुरी तथा गंगा पार के क्षेत्र बदायूँ, बरेली, नैनीताल के तराई मे फैला है। इनके बोलने वालों की संख्या १ करोड ३० लाख से अधिक है।[2] अपनी मिठास, गेयता तथा थोडे में बहुत कुछ कह देने की सामर्थ्य के कारण हिन्दी बोलियो मे ब्रजभाषा सबसे अधिक समृद्ध हुई है। हिन्दी प्रदेश के ही नही अपितु गुजरात, महाराष्ट्र, बंगाल, उडीसा आदि तक के कवियो ने ब्रजभाषा मे साहित्य की रचना की। सम्पूर्ण कृष्ण काव्य ब्रजभाषा मे ही लिखा गया है। सूर, नन्द, बिहारी, मतिराम देव, घनानन्द, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आदि ने ब्रजभाषा को प्रतिष्ठित किया।

---

१ ब्रज साहित्य का इतिहास डॉ० सत्येन्द्र पृ०३

२ हिन्दी भाषा का विकास - डॉ० राम किशोर शर्मा पृ० १०५

बुन्देली

बुन्देला राजपूतो के प्रदेश बुन्देल खण्ड की बोली को बुन्देली या बुन्देलखण्डी कहा जाता है। कुछ इतिहासकारो ने इस प्रदेश के नाम का सम्बध विन्ध्य से जोडा है और इसकी व्युत्पत्ति विन्ध्य - विन्ध्येले - बुन्देले देते है।[1]

डॉ० रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल ने इसकी व्युत्पत्ति 'बूँद' से बतायी है।[2]

डॉ० हरदेव बाहरी के अनुसार बुन्देली बोली उत्तर प्रदेश के झॉसी, उरई, जालौन, हमीरपुर और बॉदा तथा मध्य प्रदेश के ओडछा, पन्ना, दतिया, चरखारी, सागर, टीकमगढ़, दमोह, नृसिहपुर, सिवनी, छिदवाडा, बालाघाट के अतिरिक्त ग्वालियर, भोपाल में बोली जाती है। बुन्देलखण्ड मध्य काल मे एक प्रसिद्ध सास्कृतिक एव साहित्यिक केन्द्र रहा है। तुलसीदास, केशवदास, बिहारी, मतिराम, पजनेश, श्रीपति, रसनिधि, ठाकुर पद्‌माकर भट्‌ट आदि कवि यही के थे।

कन्नौजी, फर्रुखाबाद जिले मे स्थित कन्नौज जो प्राचीन काल मे कान्यकुब्ज के नाम से जाना जाता था इसी के नाम पर आलोच्य बोली का नाम कन्नौजी पड़ा। इस बोली का क्षेत्र इटावा, शाहजहॉपुर, कानपुर, हरदोई और पीलीभीत जिले मे विस्तृत है।

पूर्वी हिन्दी की बोलियाँ

पूर्वी हिन्दी का क्षेत्र प्राचीन काल मे उत्तर कोसल और दक्षिण कोसल था। हिन्दी की इस उप भाषा को कोसली भी कहते थे। उत्तर कोसल की बोली अवधी तथा दक्षिणी कोसल की बोली छत्तीसगढ़ी है। इन दोनो खण्डो के बीच शताब्दियो तक बघेल राजपूतो का राज्य था। बघेलखण्ड एक राजनीतिक इकाई होने के कारण इसकी बोली बघेली को लोग अलग बोली मानते हैं, किन्तु वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विचार किया जाय तो बघेली को अवधी की एक उपबोली मानना पडेगा। अवधी पूर्वी हिन्दी की महत्वपूर्ण बोली है। अयोध्या से औध या अवध बनता है। इसी के आधार पर इसे अवधी कहते हैं। अवधी को पूर्वी कोसली और बैसवाड़ी के नाम से भी जाना जाता है। डॉ० राम किशोर शर्मा के अनुसार "पूर्वी संज्ञा बिहारी बोलियों के लिए भी चलती है। अतः अवधी के लिए यह सार्थक नाम

---

१ बुन्देल खण्ड का सक्षिप्त इतिहास - गोरे लाल तिवारी - पृ० ३

२ बुन्देल खण्ड का भाषा शास्त्रीय अध्ययन - डॉ० रामेश्वर प्रसाद - पृ०३

नही है, कोसली कुछ हद तक ठीक नाम है। बैसवाडी तो अवधी की एक क्षेत्रीय बोली है।"[1] अवधी का विकास अर्धमागधी से माना जाता है। अवध प्रान्त के अन्तर्गत लखीमपुर खीरी, बहराइच, गोडा, बाराबकी, लखनऊ, सीतापुर, उन्नाव, फैजाबाद, सुलतानपुर, रायबरेली जिले है। इसमे हरदोई जिले मे अवधी नही बोली जाती । अवध के बाहर इलाहाबाद, फतेहपुर और जौनपुर तथा मिर्जापुर के कुछ भागो की बोली भी अवधी है। हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल मे प्रेमाख्यान ठेठ अवधी मे और रामकाव्य साहित्यिक अवधी में प्राप्त होते हैं। कुतुबन, मझन, मलिक मुहम्मद जायसी, उसमान, नूर मुहम्मद आदि ने अवधी मे लिखा। तुलसी कृत प्रसिद्ध रामचरित मानस अवधी मे लिखा गया है।

बघेली : बघेलखण्ड की बोली का नाम बघेली है। बघेल राजपूतो के नाम पर इस क्षेत्र का नाम प्रचलित हुआ। यह बोली रीवा, जबलपुर, दमोह, मॉला, बालाघाट, बादा, फतेहपुर तथा हमीरपुर जिलो के कुछ भागो मे बोली जाती है। अनेक भाषा वैज्ञानिक बघेली को स्वतत्र बोली की मान्यता नही प्रदान करते। इसे अवधी से एक उपबोली माना जाता है।

बिहारी हिन्दी

बिहारी हिन्दी का क्षेत्र बिहार प्रान्त माना जाता है। बिहारी हिन्दी की प्रमुख बोलियॉ भोजपुरी मैथिली एव मगही है।

भोजपुरी : भोजपुर नगर के नाम पर इसका नाम भोजपुरी रखा गया। भोजपुरी का एक लम्बा क्षेत्र है। यह उत्तर मे नेपाल की दक्षिणी सीमा से शुरु होकर दक्षिण मे छोटा नागपुर तक, पश्चिम में पूर्वी मिर्जापुर, वाराणसी, पूर्वी फैजाबाद से लेकर पूर्व मे रांची और पटना तक फैला हुआ है, जिसमे बस्ती के कुछ भाग, गोरखपुर, देवरिया, रांची और पालामऊ आदि सम्मिलित हैं। भोजपुरी का क्षेत्र उत्तर प्रदेश में बिहार की अपेक्षा अधिक पडता है। भोजपुरी मे राजनीतिक और वैज्ञानिक दृष्टि से साम्य है। डॉ० मिश्र इस सम्बंध में लिखते है कि—भोजपुरी के सम्बन्ध मे पुनः बात दुहराई जा सकती है बिहारी की अपेक्षा उसका सम्बंध उत्तर प्रदेश से अधिक है।"[2]

---

१ हिन्दी भाषा का विकास - डॉ० राम किशोर शर्मा १०६

२ मैथिली तथा भोजपुरी - डॉ० जयकान्त मिश्र पृ० ५९

भोजपुरी मे साहित्य रचना की परम्परा काफी समय से रही है। मध्य युगीन कवियो मे कबीर, चरनदास, धरणीदास आदि ने भोजपुरी मे अपनी कुछ रचनाएँ प्रस्तुत की। कवि ठाकुर का विदेशिया बहुत ही लोकप्रिय हुआ।

मगही : मगही मगध या मागधी का नया नाम है। पुराने मगध मे पाटिलपुत्र और गया का आधा उत्तरी भाग था। मगही बोली का क्षेत्र काफी फैला हुआ है। इसके अन्तर्गत पटना, हजारीबाग, गया के पूरे जिले और पालामू का पश्चिमी भाग आता है।

मैथिली :- यह बिहार के मिथिला क्षेत्र की बोली है। मिथिला नाम मिथि नामक एक प्राचीन राजा, मिथिला नामक एक ऋृषि से सम्बद्ध किया जाता है। एक अन्य मत के अनुसार मिथि का अर्थ एक साथ या मिला हुआ होता है। यह प्रदेश मुख्यतः वैशाली, विदेह तथा अग राज्यो का मिला हुआ रूप है। इस नाम का उल्लेख याज्ञवल्क्य स्मृति तथा वाल्मीकि रामायण मे मिलता है। इस क्षेत्र के अन्य नाम तिरहुत और तीरभुक्ति भी है तथा बोली को तिरहुतिया भी कहा जाता है। डॉ० हरदेव बाहरी ने मैथिली बोली का क्षेत्र दरभंगा, मुजफ्फरपुर, पश्चिमी पूर्णिया, उत्तर पूर्वी मुगेर, उत्तरी भागलपुर बताया है।[1]

मैथिली मे पर्याप्त साहित्य रचा गया है। इसलिए इसे स्वतत्र साहित्यिक भाषा का दर्जा प्राप्त है। बिहार मे गीतकारो मे गोविन्द दास, नाटककारों मे रणजीतमल, जयप्रकाश मल्ल एव वशमणि के नाम उल्लेखनीय हैं। मैथिली मे लोक साहित्य अधिक लिखे गये हैं।

पहाड़ी हिन्दी

डॉ० रत्ना शर्मा के अनुसार जिस भाषा को ग्रियर्सन ने मध्यवर्ती पहाड़ी का नाम दिया उसे पहाडी हिन्दी कहना ही उपयुक्त प्रतीत होता है।[2] पहाड़ी हिन्दी के अन्तर्गत दो बोलियॉ आती हैं-

१- गढवाली   २- कुमाऊँनी।

गढवाली : प्राचीन युगीन उत्तराखण्ड या केदार खण्ड अनेक गढ़ों में विभक्त हो जाने के कारण मध्यकाल में गढवाल की सज्ञा से अभिहित हुआ। गढ़वाली बोली का क्षेत्र टेहरी, अलमोड़ा, देहरादून का उत्तरी भाग, सहारनपुर, बिजनौर, मुरादाबाद का उत्तरी भाग

---

१ हिन्दी भाषा - हरदेव बाहरी - पेज १६१

२ हिन्दी के प्रमुख क्रिया-रूप - डॉ० रत्ना शर्मा - पृष्ठ ३४

है।[1] गढवाली का लोक साहित्य समृद्ध है मांगल, जागर, पंवाडा, झुमैलो आदि काव्य रूप अत्यन्त लोकप्रिय है। आधुनिक लेखको मे चन्द्रमोहन, तारादत्त गैरोला, तोता कृष्ण गैरोला, चक्रधर बहुगुणा, भोपालदत्त देवरानी, भगवती प्रसाद पाथारी आदि उल्लेखनीय है।

कुमाऊँनी

कुमाचल शब्द से कुमाऊॅ शब्द बनता है। कुमाऊॅनी नैनीताल के उत्तरी भाग अल्मोड़ा, पिथौरागढ, चमोली तथा उत्तरी काशी जिलो मे बोली जाती है। इसकी १२ उपबोलियाँ है।

(ख) साहित्यिक हिन्दी का विकास

उद्भव की दृष्टि से हिन्दी भाषा के अर्थ कुछ मिलते हैं, पृष्ठभूमि की दृष्टि से कुछ। व्याकरणिक दृष्टि से इस भाषा के नमूने एक अर्थ रखते हैं तो साहित्यिक दृष्टि से दूसरे। हिन्दी भाषा को अपने निर्माण, परिष्करण तथा साहित्यिक आकार ग्रहण करने तक विविध रूपात्मक यात्राऍ करनी पडी है। ध्वनियो की दृष्टि से हिन्दी भाषा के बीच वैदिक वाड्मय मे स्पष्ट परिलक्षित है किन्तु शब्द, वाक्य और अर्थ विकास की दृष्टि से इस भाषा का विकास अति प्राचीन नहीं है। मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाओ के अपभ्रंश साहित्य मे हिन्दी भाषा अपने अनगढ रूप मे गतिमान थी। प० राहुल सांकृत्यायन निरापद तौर पर स्वीकारते हैं, 'अपभ्रश के कवियो को विस्मरण करना हमारे लिए हानि की वस्तु है, वही कवि हिन्दी काव्यधारा के प्रथम स्रष्टा थे।"[2] हिन्दी भाषा के विकासात्मक अध्ययन क्रम मे हिन्दी के आदि-रूप अपभ्रश के भाषिक मानचित्र सामने अवश्य रखने होंगे। इस प्रकार अपने आरम्भिक किन्तु साहित्यिक रूप मे हिन्दी १०वी शताब्दी तक प्रकाश में आ जाती है। तब से आज तक के हिन्दी भाषा के विकास - क्रम को तीन खण्डो मे विभाजित किया जा सकता है।[3]

१- आदिकालीन साहित्यिक हिन्दी - १००० ई० से १५०० ई० तक

२- मध्यकालीन साहित्यिक हिन्दी - १५०० ई० से १८०० ई० तक

३- आधुनिककालीन साहित्यिक हिन्दी - १८०० ई० से अब तक।

---

१ हिन्दी भाषा का विकास - डॉ० राम किशोर शर्मा पृ०१३०

२ हिन्दी काव्यधारा, भूमिका-भाग - राहुल साकृत्यायन - पृ० १२

३ भाषा विज्ञान के सिद्धान्त और हिन्दी-भाषा - डॉ० रामदरश राय - पृ० ६६

हिन्दी भाषा का आदिकालीन स्वरूप प्राकृत और अपभ्रश रूपो से बहुत प्रभावित है। आदिकालीन भाषा के विकासात्मक नमूने उस समय के शिलालेखो, ताम्रपत्रो, अपभ्रश एव चारण - काव्यो मे उपलब्ध होते है। हिन्दवी अथवा पुरानी खडी बोली मे लिखे साहित्य भी आरम्भिक हिन्दी के प्रचुर प्रमाण देते हैं।

नागरी प्रचारणी सभा, काशी ने समरसिह एव पृथ्वीराज के दरबारो से सम्बन्धित पत्रो के नमूने प्रकाशित कर उन्हे हिन्दी प्रदेश की भाषा होने का प्रमाण दिया। शुक्ल जी ने आदिकालीन साहित्य- सामग्री के प्रारम्भिक भाग को अपभ्रंश - काव्य तथा चारणो के गाथा साहित्य को डिगल-पिगल की सज्ञा प्रदान की। डिगल और पिगल में अन्तर स्पष्ट करते हुए उन्होने लिखा है, 'प्रादेशिक बोलियो के साथ-साथ ब्रज या मध्य देश की भाषा का आश्रय लेकर एक सामान्य साहित्यिक भाषा भी स्वीकृत हो चुकी थी जो चारणो में पिगल भाषा के नाम से पुकारी जाती थी। अपभ्रंश और शुद्ध राजस्थानी भाषा के योग का जो साहित्यिक रूप था वह 'डिगल' कहलाता था।[1] आदिकाल की हिन्दी मे मिलने वाली वीरगाथाए 'डिगल भाषा' मे लिखी गयी है।

भाषिक अध्ययन की दृष्टि से आरम्भिक हिन्दी भाषा मे दो प्रकार की रचनाएं प्राप्त होती है।

१- अप्रभश भाषा की रचनाए

२- देशी भाषा की रचनाएं

अपभ्रंश मिश्रित रचनाओं मे मुख्यत - विजयपाल रासो, हम्मीर रासो, की कीर्तिलता एव कीर्तिपताका के नाम आते है।

देशभाषा की कृतियो मे खुमाण रासो, बीसलदेव रासो, पृथ्वीराज रासो, जयचन्द्र प्रकाश, जयमयकजसचन्द्रिका, परमाल रासो, खुसरो की पहेलियॉ एवं विद्यापति की पदावली का उल्लेख मिलता है।

इसी काल मे अवहट्ट भाषा मे संदेशरासक, पुरातन प्रबन्ध, संग्रह, प्राकृत, पैगलम्, वर्णरत्नाकर रचे गए हैं।

---

१ हिन्दी साहित्य का इतिहास -आचार्य रामचन्द्र शुक्ल - पृ० ३७

आदिकालीन हिन्दी भाषा की परिधि मे एक महत्वपूर्ण कार्य खडीबोली के रूप मे दिखाई पडता है जिसे पुरानी खडी बोली की सञ्ज्ञा दी जा सकती है। इस बोली के प्रसिद्ध भाषाकार ख्वाजा बन्दानेवाज, ख्वाजा मसऊद तथा अमीर खुसरो हुए। अमीर खुसरो ने १३४० के आस-पास अपनी काव्य रचना प्रारम्भ की थी। बोल-चाल की भाषा को साहित्यिक रूप देने मे खुसरो का विशिष्ट स्थान है। इनका मुख्य ध्येय अपनी रचनाओ द्वारा जन समाज का मनोरजन करना था। अमीर खुसरो का सबसे बडा वैशिष्ट्य काव्य मे खडी-बोली का प्रयोग माना जाता है। उन्हे यदि खडी-बोली का आदि कवि कहा जाय तो अनुचित नही। भाषा और साहित्य दोनो ही दृष्टियो से हिन्दी का मध्यकाल समृद्ध है। यद्यपि मुगल शक्तियो का इस काल खण्ड पर असर रहा है किन्तु आदिकाल की तरह न तो राजनीतिक उद्वेलन था और न वीरगाथात्मक अत्युक्तियॉ। शान्त परिवेश ने सन्तो, भक्तो को रचने पनपने का अवसर दिया। मध्यकाल को हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग कहा जा सकता है। मध्यकाल के आते-आते हिन्दी का स्वरूप स्पष्ट हो गया था। हिन्दी की प्रमुख तीन बोलियॉ खडी बोली, अवधी तथा ब्रज साहित्यिक चिन्तन के लिए भाषिक आयाम अर्जित कर चुकी थी। खुसरो और कबीर ने 'खडी बोली' का नमूना उपस्थित कर रखा था। कबीर के अतिरिक्त अन्य सन्तो ने भी खडी बोली का मिश्रित प्रमाण दिया। बोल-चाल के रूप मे खड़ी बोली मुसलमान शासको के बीच पहले से प्रचलित थी।

इस काल मे हिन्दी की दो प्रमुख बोलियो- अवधी और ब्रजभाषा को साहित्य भाषा बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अवधी पूर्व मध्यकाल की प्रमुख बोली थी। जायसी और तुलसी ने अवधी का प्रयोग किया है। पद्‌मावत की रचना कर जायसी ने और रामचरित मानस की रचना कर तुलसी ने अवधी को स्वतन्त्र भाषा - अस्तित्व प्रदान किया। सूफी कवियो का जायसी, कुतुबन, मझन आदि ने ठेठ अवधी तथा तुलसी ने परिनिष्ठित अवधी का प्रयोग किया है।

मध्यकाल की दूसरी प्रमुख भाषा ब्रजी रही है। मध्ययुगीन कृष्णकाव्य का लगभग सम्पूर्ण साहित्य ब्रजभाषा में ही लिखा गया है। सूरदास, नन्ददास एवं चतुर्भुज आदि अष्टछाप के कवि ब्रजभाषा के प्रमुख साहित्य-प्रणेता हुए हैं। सूरसागर की रचना कर महात्मा सूर ने ब्रजी के प्रति जनाकर्षण ही पैदा नहीं किया अपितु 'ब्रजी को बोली से विकसित कर साहित्यिक भाषा का गौरव भी दिया। १६वी शताब्दी के मध्य तक ब्रजभाषा सम्पूर्ण मध्यदेश की भाषा

होने के साथ-साथ बहर भी फैल चुकी थी। डॉ० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने लिखा है, ब्रज की वशीध्वनि के साथ अपने पदों की अनुपम झंकार मिलाकर नाचने वाली मीरा राजस्थान की थी, नामदेव महाराष्ट्र के थे, नरसी गुजरात के थे, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र भोजपुरी भाषा क्षेत्र के थे। बिहार मे भोजपुरी, मगही तथा मैथिली भाषा क्षेत्रो मे भी ब्रजभाषा के कई प्रगतिशील कवि हुए है।'[1]

उत्तर मध्ययुगीन कवियो ने ब्रजी का चरम उन्नयन किया है। चिन्तामणि, देव, मतिराम, केशव, बिहारी, घनानन्द, भूषण, सुदन तथा सेनापति आदि रीतियुगीन कवियो ने अपने शास्त्रीय और काव्यात्मक प्रणयनो मे ब्रजभाषा को खूब सजाया-संवारा है। किन्तु शब्द और वाक्य-विन्यास यहाँ गडबड मिलते है। आशय यह कि भाषातात्विक अनेक दुर्बलताओ के कारण ब्रजी चिरकाल तक स्थिर नही रख सकी। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने ब्रजी की व्याकरण हीनता की ओर इशारा भी किया है। शुक्ल के अनुसार—'भाषा जिस समय सैकडो कवियो द्वारा परिमार्जित होकर प्रौढता को पहुंची उस समय व्याकरण द्वारा उसकी व्यवस्था होनी चाहिए थी।'[2]

लोकप्रियता की दृष्टि से साहित्यिक ब्रजभाषा मध्यकाल की शान थी। डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी इसे उत्तर भारत की उस काल की बादशाही बोली कहा है।[3] कारण की उस समय के बादशाहों का इसे संरक्षण प्राप्त था। अकबर ने ब्रजी में कुछ दोहे लिखे थे। रहीम के दोहे ब्रजी के मिसाल हैं ही। कहा जाता है कि औरंगजेब के जमाने मे मिर्जा खॉ ने 'तुहफतुल हिन्द' नाम से ब्रजभाषा-व्याकरण की रचना की थी।[4]

हिन्दी भाषा का आधुनिक युग खडी बोली हिन्दी के रूप में प्रसिद्ध है। मध्यकालीन प्रमुख भाषा अवधी और ब्रजी का असर जनभाषा के रूप में क्षीण होने लगा। शासकीय परिवर्तन हुआ, सत्ता मुसलमानो के हाथ से निकलकर अंग्रेजों में निहित हो गयी। अंग्रेजो की पश्चिमी सभ्यता हर तरह से भारतीय सस्कृति पर असर बनाती गयी और खड़ी बोली प्रकाश मे आने लगी। दिल्ली और मेरठ के आस-पास की बोली के लिए प्रयुक्त 'खडी बोली' मूल ढॉचे के साथ गतिशील हो गयी। खड़ी बोली जिसकी जन्म भूमि पठानों का गढ रूहेलखण्ड है मानक हिन्दी का पर्याय बन चुकी है।

१ नई धारा पटना अक ११ पृ० ६।

२ हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल - पृ०२३७।

३ भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी - डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी पृ० २०८।

४ भाषा विज्ञान के सिद्धान्त और हिन्दी -भाषा- रामदरश राय - पृ० ७०।

खडी बोली मे भाषार्थक प्रयोग का एक इतिहास है। इस शब्द का प्रथम प्रयोग फोर्टविलियम कॉलेज, कलकत्ता मे हुआ।

हिन्दी गद्य लेखन मे आरम्भिक प्रयासकर्त्ताओ मे भारतीय तो मन बुद्धि से लगे ही थे, अग्रेजो ने भी इस क्षेत्र मे कम उत्साह नही दिखाया। फोर्टबिलियम कालेज, कलकत्ता के तत्त्वावधान मे उस समय के अग्रेज गवर्नर जनरल जॉन गिलक्राइस्ट ने भाषा पंडितो को गद्य लेखन के लिए प्रेरित किया। परिणामत· लल्लू लाल और सदल मिश्र ने क्रमश· प्रेमसागर और नासिकेतोपाख्यान की रचना खडी बोली गद्य मे की। इसी काल खण्ड मे इशाअल्ला खॉ ने हिन्दवी मे रानी केतकी की कहानी भी लिखी। इन भाषा-पंडितो की गद्य भाषा कुछ लचर-सी है किन्तु हिन्दी गद्य के बीच रूप मे इनकी महत्ता नितान्त मौलिक अर्थ मे स्वीकृत की जानी चाहिए, लल्लू लाल जी ने जान गिलक्राइस्ट की सद्प्रेरणा को जिन शब्दो मे प्रकाशित किया उनसे उनकी गद्य भाषा की बानगी ली जा सकती है, 'श्रीयुत गुनगाहक गुनियन सुखदायक जान गिलकिरिस्त महाशय की अज्ञा से सवत् १८६० मे लल्लू जी लाल कवि ब्राह्मण - गुजराती सहस्त्र अवदीच आगरे वाले ने जिसका सार ले यामनी भाषा छोड दिल्ली आगरे की खडी बोली कह नाम प्रेमसागर धरा।'[1]

इसी प्रकार सदल मिश्र ने भाषा के अर्थ मे खडी बोली का प्रयोग करते हुए उदाहरण पेश किया। उनके अनुसार, 'अब स० १८६० मे नासिकेतोपाख्यान को जिसमे चन्द्रावती की कथा कही है देववाणी से कोई समझ नही सकता इसलिए खडी बोली में किया।[2]

सदल मिश्र और लल्लू लाल जी के कथनो से ज्ञात होता है कि उन्होने यामनी भाषा का अपनी कथा भाषा से बहिष्कार किया और खडी बोली में कथा कही। किन्तु ऐसे कथनो से डॉ० ग्रियर्सन और पं० चक्रधर शर्मा गुलेरी आदि को अधिक भ्रम हुआ। गुलेरी ने कहा कि, 'खडी बोली या पक्की बोली या रेख्ता या वर्तमान गद्य-पद्य को देखकर यह जान पडता है कि उर्दू रचना मे अरबी-फारसी तत्सम या तद्भवो को निकाल कर सस्कृत या हिन्दी - तत्सम और तद्भव शब्दों को देखने से हिन्दी बना ली जाती है।'

हिन्दी गद्य भाषा लल्लू लाल जी के समय से आरम्भ होती है। पुरानी हिन्दी गद्य और पद्य खडे रूप मे मुसलमानी है। विदेशी मुसलमानों ने आगरे, दिल्ली, सहारनपुर और मेरठ की पड़ी बोली को खड़ी बनाकर लश्कर एवं समाज के लिए उपयोगी बनाया।[3] लाला

---

१ 'प्रेमसागर १८५० प्रथम सस्करण - लल्लू लाल - पृ०१।

२ नासिकेतोपाख्यान - सदल मिश्र - पृ० २।

३ पुरानी हिन्दी (नागरी प्रचारणी सभा, काशी) - पृ० १०८।

भगवान दास का मत है, "फारसी मे कुछ ब्रज और कुछ बांगडू का टेल लगाकर बोली को खडा कर दिया गया और उसका नाम खडी बोली पड गया खडी बोली किसी बोली का नाम नही है वह सिर्फ हिन्दी का तारीफ है।'[1] अत यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि अग्रेजो के आरम्भिक शासन काल मे खडी बोली उत्तर भारत मे सर्व प्रचलित लोकप्रिय लोकभाषा थी। साहित्य क्षेत्र मे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और धार्मिक क्षेत्र मे दयानन्द सरस्वती के प्रभाव से खडी बोली का व्यापक असर हुआ।

ध्यातव्य है कि १९वी शताब्दी तक हिन्दी कविता की भाषा ब्रजी थी और गद्य की 'खडी बोली'। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र १८७३ मे 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' के प्रकाशन के साथ खडी बोली का व्यावहारिक रूप लेकर आये। उन्होने कई नाटक, निबन्ध आदि की रचनाएँ खड़ी बोली मे की। खड़ी बोली हिन्दी के प्रारम्भिक उन्नायको मे भारतेन्दु के बाद प० महावीर प्रसाद द्विवेदी का नाम आदरणीय है। द्विवेदी जी ने व्याकरणिक दृष्टि से इस भाषा का बहुत उपकार किया। मुख्यतः विराम चिन्हो की शुद्धता पर उनके द्वारा किये गये सुझाव बहुत सराहनीय है।

१९वी शताब्दी के अन्तिम और २०वी शताब्दी के आरम्भिक दशको मे प्रकाशित होने वाली प्रमुख पत्रिकाओ ने भी खडी बोली गद्य-पद्य के विकास मे महत्वपूर्ण योग दिया। इस समय के प्रमुख पत्र निम्न है जिन्होने खडी बोली का विकास एवं संमृद्धि में योग दिया- बनारस अखबार-१८४५, सुधाकर- १८५०, बुद्धि प्रकाश-१८५२, सुधावर्षण-१८५४, तत्वबोधनी १८६६ कविवचन सुधा-१८६७, हरिश्चन्द्र मैगजीन- १८७३, ब्राह्मण-१८८३, सरस्वती १९०३, इन्दु १९०९, समालोचक १९२४, विश्व भारती १९४२।[2]

हिन्दी भाषा का आधुनिक काल शब्द भांण्डार या शब्द सम्पदा की दृष्टि से समृद्ध होता रहा है। छायावाद, प्रगतिवाद, नयी कविता, साठोत्तरी कविता, नवगीत आदि अनेक वादपरक काव्यधाराओं ने हिन्दी को अभिनव भाषाशक्ति दी है। इस दिशा मे प्रसाद, निराला, पन्त, महादेवी वर्मा, अज्ञेय, मुक्तिबोध, नरेन्द्र शर्मा, दिनकर, धर्मवीर भारती, रघुवीर सहाय, नागार्जुन, शमशेर बहादुर आदि के नाम उल्लेखनीय है जिनके भाषा प्रयोग से हिन्दी को नयी शक्ति मिली। निबन्ध, कहानी, उपन्यास, नाटक तथा गद्य को नवीन विधाओ रेखाचित्र, सस्मरण, रिपोर्ताज और इण्टरव्यू आदि के माध्यम से हिन्दी को निरन्तर स्फूर्त भाषिक तेवर

---

१ 'हिन्दुस्तानी पत्रिका (१९४६) पृ० २५।

२ भाषाविज्ञान के सिद्धान्त और हिन्दी भाषा - डॉ० रामदरश राय पृ० ७४।

मिलता रहा। अत वर्तमान कालीन हिन्दी सभी लेखकीय क्षेत्रो मे प्रयुक्त होती हुई भाषा के रूप मे चरम प्रकर्ष पर पहुँच चुकी है।

(ग) ब्रिटिश शासन काल हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी का प रस्पारिक संघर्ष

--हिन्दी उद्भव विकास और रूप, डॉ० हरदेव बाहरी, पृष्ठ स २२०, २२, २२२।

भारत के लिए हिन्द और हिन्दुस्तान दोनो नाम मुसलमानी राज्य काल से चले आ रहे है। यहॉ की भाषा के लिए हिन्दी हितुई या हिन्दवी के अतिरिक्त हिन्दुस्तानी नाम भी यदा-कदा प्रयुक्त होता रहा है। बाबर के आत्म चरित मे हिन्दुस्तानी जबान का उल्लेख मिलता है। शाहजहॉ के समय मे तारीख फरिश्ता और बादशाहनामा मे यह नाम आया है। आक्सफोर्ड डिक्शनरी मे हिन्दुस्तानी को मुगल बादशाहों की भाषा कहा गया है। जब हिन्दी शब्द का प्रयोग विशिष्ट अर्थ मे अर्थात् उत्तरी भारत के मध्य देश की प्रचलित भाषाओ के लिए होने लगा तो इसका पर्याय हिन्दुस्तानी भी इसी अर्थ मे व्यवरूत होता था। ऐसा उल्लेख सर्वप्रथम स्वामी प्राणनाथ (१५८१ - १६९४) की वाणी मिलता है। यूरोपीय यात्रियो, पादरियो और सरकारी कर्मचारियो ने इस शब्द का बहुत अधिक व्यवहार किया। हिन्दी शब्द की अपेक्षा कम १७१५ ई० मे उच्च पादरी जे०जे० केटलीर ने जो हिन्दी का प्रथम व्याकरण भाषा जगत मे प्रस्तुत किया उसका नाम हिन्दुस्तानी ग्रामर ही रखा। सन् १८०० के आस-पास फोर्ट विलियम कॉलेज के प्रिसिपल जान गिलक्रिष्ट ने हिन्दुस्तानी को ग्रामीण हिन्दी और उर्दू इन दोनो अर्थो मे ग्रहण किया। इस कॉलेज के हिन्दुस्तानी विभाग में उर्दू ही पढी-पढ़ायी जाती थी। १९वी शती के यूरोपीय विद्वानो ने जो हिन्दुस्तानी कोश लिखे हैं, वे वास्तव मे उर्दू के ही शब्द कोश है। कुछ लोग उर्दू के सरल बोल-चाल के रूप को भी हिन्दुस्तानी कहते रहे। सुख्यात फ्रासीसी विद्वान गार्सा द तासी १८५२ ई० ने भारत की भाषा पर जो व्याख्यान दिये, उनमे उर्दू ही को हिन्दुस्तानी कहा। कन्साइज आक्सफोर्ड डिक्शनरी में हिन्दुस्तानी का अर्थ दिया है मुसलमान विजेताओं की भाषा उर्दू। किन्तु भारतीयों मे हिन्दी और उर्दू शब्द व्यापक रूप से प्रयुक्त होते रहे । ग्रियर्सन ने हिन्दुस्तानी के दो अर्थ लिये है। एक तो पश्चिमी हिन्दी की बोली जिसे हमने कौरवी कहा है और दूसरा व्यापक बोल-चाल की मिली-जुली उत्तरी भारत की भाषा।

अग्रेज बहादुर की कूटनीति के फलस्वरूप उर्दू मुसलमानो की और हिन्दी हिन्दुओं की भाषा कही जाने लगी। दोनो जातियों में भाषा के प्रति एक उन्माद भरा जागरण आ

गया। उर्दू अधिकाधिक अरबी, फारसी शब्दो को और हिन्दी सस्कृत शब्दो को ग्रहण करने लगी। दोनो के बीच मे जो दरार सास्कृतिक भेद के कारण बन गयी थी, वह खाई बन कर अधिकाधिक चौडी होती गयी। तब हिन्दुस्तानी को नयी परिभाषा देकर एक सामान्य भाषा के रूप मे प्रस्तुत किया गया। हिन्दुस्तानी एक प्रकार से समझौते की आम फहम भाषा समझी जाने लगी जिसमे न क्लिष्ट सस्कृत रहे न क्लिष्ट अरबी, फारसी। इशा ने रानी केतकी की कहानी और राजा शिव प्रसाद सितारे हिन्द ने राजा भोज का सपना आदि अनेक कृतियो और राजा शिव प्रसाद सितारे हिन्द धीरे-धीरे उर्दू की ओर झुकते गये। उनका कहना था कि शुद्ध हिन्दी लिखने वालो को हम यकीन दिला सकते हैं कि जब तक कचहरी मे फारसी हरुफ जारी है इस देश मे सस्कृत शब्दो को जारी करने की कोशिश बेफायदा होगी। इशा फारसी लिपि को और सितारे हिन्द नागरी लिपि को चलाने के पक्ष मे थे। बाद मे लक्ष्मी शकर मिश्र ने अपनी काशी पत्रिका मे दोनों लिपियो को समान स्थान दिया। मिश्र जी स्कूलो के इन्स्पेक्टर थे उन्होने कई पाठ्य पुस्तके भी लिखी जिनमे विषय और भाषा तो एक ही थी किन्तु लिपियाँ अलग-अलग थी। मिश्र जी क्रमश. सस्कृत शब्दावली को अधिक मात्रा मे अपनाने लगे।

१९३५ मे महात्मा गाँधी ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन के नागपुर अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए हिन्दी को देश की राष्ट्रीय भाषा-देश के नाना वर्गो और समुदायो को जोडने वाली एकता की भाषा घोषित किया। इस पर उर्दू के पोषको मे बडा शोर मचा। परिणाम यह हुआ कि गाँधी जी को अपनी नीति मे परिवर्तन करना पडा। उन्होंने इस भाषा नीति की व्याख्या कुछ इस प्रकार से की।

१ - हमारी सामान्य भाषा का नाम हिन्दुस्तानी होना चाहिए हिन्दी नही।

२ - हिन्दुस्तानी का सम्बन्ध हिन्दुओं या मुसलमानो की धार्मिक परम्पराओं से नही होगा।

३ - इसके प्रचलित शब्दो का ग्रहण होगा देशी और विदेशी शब्दो का भेद नही किया जायेगा।

४ - हिन्दुओ को फारसी लिपि मे लिखी जाने वाली उर्दू लिपि का और मुसलमानो को नागरी उर्दू दोनों लिपियाँ प्रचलित मानी जायेगी।

१९३८ मे डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के सभापतित्व मे एक हिन्दुस्तानी कमेटी बनायी गयी। डा० सैय्यद महमूद, डॉ० ताराचन्द, लावा पडित, सुन्दर लाल, डॉ० भगवान दास, डॉ० जाकिर हुसेन, सैय्यद सुलेमान नकवी आदि बडे-बडे लोगो ने इन आधारो पर हिन्दुस्तानी के आन्दोलन को आगे बढ़ाया। काग्रेस ने इसे अपने काम-काज मे स्थान दिया। उर्दू वालों ने इसका स्वागत करते हुए कहा कि उर्दू का नाम भले ही हिन्दुस्तानी रख दिया किन्तु इसकी प्रकृति नही बदलेगी। हिन्दी जगत मे ऐसी भाषा का घोर विरोध हुआ और हिन्दुस्तानी के पोषको की नीयत पर सन्देह किया जाने लगा। हन्दुस्तानी वालो ने इन सन्देशहो को पुष्ट ही किया। बिहार और सयुक्त प्रात में जो रीडरे हिन्दुस्तानी बोलचाल आदि। चलायी गयी, वे हिन्दुस्तानी के नाम पर उर्दू मे ही तो थी उन लोगो ने घोषित किया कि हिन्दुस्तानी समझौते की भाषा है यद्यपि उर्दू वाले कहते हैं कि उर्दू समझौते की भाषा है किन्तु शिक्षित वर्ग ने अनुभव किया कि प्रचलित भाषा से ज्ञान विज्ञान सम्बन्धी कार्य नहीं चल सकता। हिन्दुस्तानी बोलचाल के लिए तो ठीक हो सकती है किन्तु साहित्य मे बिना संस्कृत या अरबी, फारसी का आश्रय लिये इसका व्यवहार असम्भव होगा। क्योकि इसका जन प्रचलित शब्द भण्डार अत्यन्त सीमित है और इसका कोई साहित्यिक रूप है ही नही हुआ यह कि जब उच्च विचारो की अभिव्यक्ति का अवसर आता तो हिन्दुस्तानी वाले अरबी-फारसी की शरण ले लेते थे। आल इण्डिया रेडियो मे ऐसी ही भाषा का प्रचलन होने लगा। इस पर हिन्दी ससार ने रेडियो के विरुद्ध असहयोग आन्दोलन प्रचलित होने लगा। इस पर हिन्दी ससार ने रेडियो के विरुद्ध असहयोग आन्दोलन खडा किया अन्ततः हिन्दुस्तानी इतनी बदनाम हुई की सजग राष्ट्रवादी नेताओ को उसका साथ छोडना पडा, भले ही कुछ लोग आजीवन इस सम्प्रदाय से चिपके रहे।

हिन्दुस्तानी सम्प्रदाय ने देश का अहित ही किया। वे लोग कहते थे कि नागरी हिन्दुओ की लिपि है उर्दू मुस्लिम लिपि है, हिन्दी हिन्दुओं की भाषा है, उर्दू मुसलमानो की, हिन्दुस्तानी दोनों लिपियों और दोनो भाषाओ की सामान्य शब्दावली को अपना कर दोनो मे एकता स्थापित करती है। किन्तु इस प्रकार की बातो से हिन्दू, मुस्लिम अलगाव के सिद्धान्त को अधिक बल मिला। उनसे यह प्रश्न भी किया गया कि यदि दो लिपियॉ चल सकती है तो दो भाषा शैलियॉ क्यों नहीं चल सकती। उन लोगो ने यह भी कहा कि हिन्दी कृत्रिम भाषा है किन्तु समझदार भारतीयो ने हिन्दुस्तानी ही को कृत्रिम कहा। एक नेता ने मजाक मे कहा था, ''वाह हिन्दुस्तानी आधी मर्दानी आधी जनानी, बाये ईरानी दाहिने इंग्लिस्तानी''।

१९४८-४९ मे जब स्वतत्र भारत का सविधान बना तो हिन्दी को राजभाषा और देवनागरी को राजलिपि स्वीकार किया गया। हिन्दुस्तानी सम्प्रदाय के आग्रह से भारत की १४ भाषाओ मे हिन्दुस्तानी को भी परिगणित किया गया। किन्तु उसका कोई विशेष महत्व प्रतिष्ठित नही हो पाया। सम्प्रदाय अब भी है दो चार बूढे किन्तु प्रभावशाली व्यक्ति हिन्दी का विरोध करके अपने अस्तित्व का परिचय कभी-कभी देते है। एक हिन्दुस्तानी कोश भी वे लोग पिछले ३० वर्ष से तैयार कर रहे हैं। जिसके लिए कई लाख रुपया उन्हे अनुदान के रूप मे मिल चुका है।

हिन्दी उद्भव विकास और रूप डॉ० हरदेव बाहरी २२८, २२९, २३०, २३१, २३२,-उर्दू का नाम जिन चगेज खॉ, हलाकू खॉ बातू खॉ, और उनकी बर्बर मंगोल सेनाओ की लूट, हिसा, बर्बरता और क्रूरता की खूनी कहानी से तुर्किस्तान, खुरासान, अफगानिस्तान, आरमेनिया और चीन के इतिहास के पन्ने रगे पडे है, उनके पडाव का नाम उर्दू था। तुर्क और तातार जगली थे जिनका कोई एक घर घाट नहीं था। इनका जीवन खेमो मे बीतता था। प्रत्येक कुटुम्ब का एक अलग खेमा होता था। कभी-कभी कई कुटुम्ब एक साथ रहते बसते थे। कुटुम्बो का ऐसा समूह जहॉ डेरा जमा देता था उसे उर्दू कहते थे। यह उनका दुर्ग सा होता था, यही उनका नगर था, तुर्की मे उर्दू नाम की जन जाति और उर्दू नाम की नागरी आज भी विद्यमान है। काशगर का नाम उर्दू कंद और कराकरम का उर्दू बालीग आज भी प्रचलित है। तुर्की से यह शब्द पश्चिम और पूर्व मे पहुंचा, ओर्दा से पोलैंड मे, ओर्दा जर्मनी में, होरदे इंग्लैड में, होर्ड (HORDE) स्वीडन मे, होर्द इटली मे ओद्रा और फ्रास मे होरर्दे बना जिसका अर्थ है जनजाति असभ्यगण अगठित सेना। एशिया मे उर्दू शब्द इरान के रास्ते चला। वहॉ भी इसका अर्थ जनजाति शिविर और सेना हुआ। भारत में बाबर से पहले मगोलों के कई आक्रमण हुए किन्तु पठान सुल्तानों ने उन्हे तोबधन देकर अथवा परास्त करके लौटा दिया। सन् १५२६ ई० में तुर्को और मंगोलो का सरदार बाबर भारत मे आया। उसकी छावनी का नाम उर्दू था। मुगल कालीन साहित्य में उर्दू ए आलिया, उर्दू ए लश्कर, उर्दू-ए-हजरत, उर्दू - ए- बुजुर्ग आदि अनेक शब्द पाये जाते हैं जिनमे इसका अर्थ है छावनी राज शिविर राज सेना। अकबर के मंत्री अबुल फजल कृत आइन-ए-अकबरी मे उर्दू का विस्तृत वर्णन मिलता है। उस उर्दू में चौकीदारो, चोबदारो, सिपाहियो, अमीरों और अधिकारियो के लिए अलग-अलग खेमे थे। बादशाह बेगमों और बच्चों के खेमें मध्य में थे। खेमो के अतिरिक्त उर्दू में सभा मण्डप, सुखपाल, तोपखाना द्वीपगृह, वाद्यगृह, स्नानगृह,

रसोईघर, शर्बतघर भी थे। उर्दू यदि भाषा का नाम होता तो उसके शेर, गजले और सज्ञा सर्वनाम आदि होते किन्तु अकबर के उर्दू मे बकौल अबुलफजल मकान और तम्बू थे, अस्तबल, बाग-बगीचे और दफ्तर थे। उसके चारो कोनो मे चार बाजार थे। जिन्हे उर्दू बाजार कहते थे। इसी मे एक टकसाल भी थी। अकबर और जहॉगीर के समय में जो सिक्के छावनी मे पाये जाते थे, उन पर उर्दू शब्द छपा रहता था। उर्दू में एक विशेष अधिकारी होता था जिसका नाम काजी-ए-उर्दू छावनी का न्यायपधिकारी बताया गया है। पुरुष युद्ध मे चले जाते थे तो छावनी मे महिलाओ की देख-भाल के लिए विशेष दासियॉ तैनात थी जिन्हे उर्दू बेगियॉ कहते थे। वे सशस्त्र होती थी और पुरुषो का बाना पहनती थी।

उर्दू के साथ जुडा हुआ उर्दू बाजार आवश्यक था। सिपाहियो को नागरिक जनता से अलग ही रखना पडता था। याद रहे कि उर्दू का अर्थ बाजार नही है, बल्कि बाजार का नाम उर्दू के कारण पडा। छावनी के इस बाजार मे एक विदेशी ग्राहक देशी दुकानदारो से ऐसी भाषा मे बात-चीत करते ही होगे जिसमे दोनो के तत्व आ जाते थे। किन्तु ऐसी खिचडी भाषा का विकास प्रत्येक छावनी के बाहर नही हो जाता था। शाहजहॉ बादशाह ने दिल्ली मे पक्का किला बनवाया जिसका नाम उर्दू -ए-मुअल्ला बड़ा किला पड़ा और जिसे बाद मे साधारण जन लाल किला कहने लगे। इस किला के बाहर पक्का बाजार बना। १८९५ ई० के गदर मे यह उर्दू बाजार नष्ट हो गया। आज उसके एक भाग को उर्दू बाजार कहते हैं। इस तरह के उर्दू बाजार दूसरी जगहो के किलो के बाहर भी बने। औरंगजेब के समय से लेकर मुहम्मदशाह रगीला के समय तक भाषा के तीन स्तर थे -

१ - हिन्दी या हिन्दवी (सामान्य जनता की भाषा)।

२ - जबान - ए - उर्दू - ए मुअल्ला अर्थात बड़े किला की जबान और

३ - बाजारो और हिन्दू मुसलमानो की आपसी भाषा जिसे तत्कालीन मुसलमान साहित्यिको ने रेख्ता कहा। कबीर ने ठीक ही कहा है कि भाषा तो बहता नीर है। हिन्दी भाषा भी गगा की धारा की तरह निस्तर बहती चली जा रही है। इधर से किले की भाषा और बाजार की भाषा का नाला आ मिला। लाल किले के अन्दर की जो दरबारी भाषा थी शनै. शनैः उसका नाम बदला। जबान ए - उर्दू - ए - मुअल्ला (बड़े किले की भाषा) के स्थान पर कालान्तर मे जबान ए उर्दू, उर्दू की जबान या अहले उर्दू की जबान उर्दू में रहने वालो की भाषा नाम रह गया। यहाँ भी उर्दू का अर्थ किला या छावनी ही है वरना उर्दू की

जबान न कहकर उर्दू जबान कहते। मीर अम्मान उस्ताद मसहफी आदि ने इसे उर्दू की बोली कहा है हकीकत उर्दू को जबान की बुजुर्गो के मुँह से यो सुनी है। मीर अम्मन बागो बहार इससे भी प्रकट है कि उर्दू स्थान वाची शब्द है। नाम की छँटाई करते करते आगे चलकर उर्दू की बोली की जगह केवल उर्दू शब्द रह गया। भाषा के लिए इसका सर्वप्रथम प्रयोग शायद मीर तकी ने सन् १७५५ ई० के बाद किया था। किन्तु १८वी शती के अन्त तक इस अर्थ मे यह नाम प्रचलित नही हो पाया था। सन् १७९० मे लाहौर के एक विद्वान पीर मुरादशाह लखनऊ आये। वे लिखते है कि यहां आकर हमे एक नयी जबान का नाम सुनने को मिला, जिसे ये लोग उर्दू कह रहे हैं। १७९० इसवी मे ही अब्दुल कादिर ने कुरान के अनुवाद की भूमिका में कहा है कि मै अपने ग्रथ को रेख्ता फारसी मिश्रित हिन्दी मे नही शुद्ध हिन्दी मे अनुदित कर रहा हूं। सर जार्ज ग्रियर्सन ने भारतीय भाषा सर्वेक्षण खण्ड १ भाग ४ मे हैरी १६५५ ई० से लेकर अपने १९०७ ई० तक लगभग १२ पाश्चात्य विद्वानो के नाम दिये है जिन्होने भारत की भाषाओ पर कुछ लिखा है। सभी ने हिन्दी या हिन्दुस्तानी का उल्लेख तो किया है किन्तु उर्दू का नाम एक ने भी नही लिया। उर्दू वस्तुतः दरबारो मे ही सीमित रही है। दास्तान ए उर्दू के विद्वान लेखक अदीब उल मुल्क नवाब नसीर हुसैन खॉ खयाल ने लिखा है। लोग समझते है कि हमारी उर्दू खुले बाजारो और तग कूचो की हवा खाकर हम तक पहुची। मगर नही उसने तो महलो मे परवरिस पायी है और बेखबर जो चाहे कहे। मगर उर्दू बादशाही, महाराजो और हमारे उमरा की गोद मे पलकर जघन हुई और किलो महलो की हवा खाकर बाहर निकली और आज भी उसका सही ठिकाना कही और नही मिल सकता। उससे लगभग १५० वर्ष पहले यही बात ईशा अल्लाखाँ ने कही थी कि उर्दू हिन्दुस्तान के बादशाह की और चंद अमीरो और उनके मुसाहिबो और बेगम ओ खानम की जबान है। आगे हम फिर इस तथ्य का निरूपण करेंगे कि उर्दू एक वर्ग विशेष की भाषा रही है। किला और छावनी के बाहर जो मिश्रित भाषा प्रचलित हो गयी थी उसे रेख्ता कहा जाता था। रेख्ता शब्द पहले पहल सअदो दक्खिनी ने १५८६ ई० मे प्रयुक्त किया था। बाद मे मीर सौदा गालिब आदि कवियो ने अपनी भाषा को रेख्ता ही कहा है। इसका अर्थ यह है कि पौने तीन सौ वर्ष तक बाजारी भाषा को मुसलमान साहित्यकार रेख्ता कहते रहे है। स्त्रियो की ऐसी भाषा के लिए रेख्ती शब्द का प्रयोग मिलता है। रेख्ता का अर्थ गिरी-पडी या मिली-जुली भाषा बताया जाता है।

मुहम्मद शाह रगीला के बाद मुगल साम्राज्य का पतन होने लगा। किला की जबान

एव गलियो और बाजारो की रेख्ता एक होने लगी। सन् १८०० से १८५७ तक एक ही भाषा के दो वैकल्पिक नाम चलते रहे। उर्दू और रेख्ता-अग्रेजो ने उर्दू शब्द को अधिक उभारा और कहा कि यह मुसलमानो की उर्दू को भी यह अधिकार प्राप्त है। साम्प्रदायिकता ने भारत मे उर्दू और हिन्दी की खाई को अधिकाधिक गहरा और चौडा किया है। मुहम्मद शाह रगीला के समय से मुसलमान कवि अमीर खुसरो से लेकर वली तक अपने को हिन्दी के कवि कहा करते थे। दिल्ली के मीर सौदा और दर्द ने तथा लखनऊ ने नासिख और आतिश ने उस हिन्दी से सस्कृत और भारतीय शब्दो को चुन-चुन कर निकाला और उनकी जगह फारसी अरबी के शब्दो को भरा। यहां तक कि यह भाषा ही बदल गयी। इसका वातावरण ही विदेशी हो गया जिसे उर्दू नाम दिया गया। उस भाषा मे भीम और अर्जुन की जगह रुस्तम और सोहराब प्रेमियो मे कैस और फरहाद, कामदेव के स्थान पर युसफ उदारता के निदर्शक हाटमताई, न्याय के नौशी खॉ, वात्सल्य के हजरत याकूब, धनपतियो मे कारुँ, मनु की जगह नूह, गगा और जमुना के स्थान पर दजला और फरात, कोयल और सारिका के स्थान पर बुल-बुल और कुमरी, चम्पा और जूही के स्थान पर नरगिस और सोसन हिमालय और विन्ध्याचल की जगह कोहकाफ और तूर प्रयाग और हरिद्वार की जगह मक्का और मदीना स्वर्ग और नरक की जगह बहिश्त और दोजख आत्मा और परमात्मा की जगह रुह और खुदा आ गये। उर्दू साहित्य में भारतीय संस्कृति, भारतीय विश्वास, भारतीय संदर्भ सब लुप्त हो गये और फिर कभी आने नही पाये। रूप विदेशी, छन्द विदेशी, उपमान विदेशी, लिपि विदेशी, सारा माहौल विदेशी रहा है। और जो देशी कहलाता है वह भी हिन्दू लेखक का नाम नही लिया गया। उर्दू साहित्य के इतिहास मे बीसियो हिन्दू साहित्यकारो के नाम लिये जा सकते थे किन्तु उन्हें सदा नगण्य माना जाता रहा है। आदर्श लेखक मुसलमान माने जाते रहे है। आजाद के साहित्यिक इतिहास ग्रन्थ आबेहयात में एक भी हिन्दू लेखक का नाम नही लिया गया। उर्दू साहित्य की एक दूसरी इतिहास पुस्तक दरिया -ए- लताफत मे रानी केतकी की कहानी के लेखक इंशा अल्ला ने लिखा-- हिन्दूओ ने खाने-पीने, बोल-चाल का सलीका मुसलमानो से सीखा है। किसी बात मे भी उनका कौल बात व फेल कर्म काबिले एतबार विश्वसनीय नहीं है। ये बाते ऐसी थी जिनके कारण उर्दू पर मुसलमानो की अपनी मोहर लग गयी। ईशा ने ही एक जगह लिखा है कि मुहावरा -ए-उर्दू इबारत अज गोथाई अहले इस्लाम अस्त, अर्थात उर्दू बोलना मुसलमानों का ही अधिकार है। सर सैय्यद अहमद खॉ ने भी कहा कि उर्दू मुसलमानों की जबान है। आज हम यह सुन रहे है

कि उर्दू हिन्दुओ और मुसलमानो की सामान्य भाषा के रूप मे विकसित हुई है। किन्तु दूसरी ओर मुसलिम एजूकेशनल क्रान्फेस जैसी सस्थाएँ मॉग करती रहती है कि उर्दू एक महत्वपूर्ण अल्पसख्यक जाति की भाषा है। इसकी रक्षा और शिक्षा के लिए सरकार व्यवस्था करे। मुसलमानी काल मे उर्दू का इतना विकास नही हुआ जितना अग्रेजी शासन काल मे। मुसलमान बादशाहो के समय मे साहित्य और शासन का माध्यम देश भाषाएँ थी फारसी और हिन्दी। अग्रेजो ने फारसी को १८३३ ई० मे हटाकर उर्दू को प्रतिष्ठित किया। यह कार्य ऐसा था जिससे ॲग्रेजो की फूट डालने की नीति को बडा बल मिला। उर्दू हिन्दी का झगड़ा स्वतत्रता प्राप्ति तक बराबर चलता रहा । इस सघर्ष मे उर्दू की जो क्षति हुई। वह स्वतत्र भारत मे प्रकट हो गयी। पजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार और हैदराबाद मे उर्दू के राजभाषा हो जाने के कारण नौकरीपेशा जातियो ने मजबूरी मे उसे अपनाया तो अवश्य किन्तु उस मजबूरी के हट जाते ही उर्दू का साम्राज्य समाप्त हो गया बंगाल, महाराष्ट्र, गुजरात आदि प्रदेशो के मुसलमानी आबादी न रह जाने के कारण उर्दू पहले लिखने वाले नही मिलते रह गया हिन्दी प्रदेश यहॉ भी सामान्य जन हिन्दी ही बोलते समझते है सन् १९२९ मे ख्वाजा हसन निजामी ने कुरान शरीफ के हिन्दी अनुवाद की भूमिका मे लिखा था कि एक करोड मुसलमान ऐसे है जो अब भी अपना सारा काम-काज हिन्दी में करते है और हिन्दी के सिवा और कुछ नही जानते। अब तो हिन्दी प्रदेश के जन-जन के लिए हिन्दी अनिवार्य है। चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान, सिख हो या ईसाई।

(घ) स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी की स्वीकृति

भारत की स्वतंत्रता के लिए अग्रेजो से सघर्ष का आरम्भ सन् १८५७ से माना जाता है। उत्तरी भारत मे जगह-जगह पर हिसात्मक संघर्ष छिड़ गया जिसमें दिल्ली के सम्राट बहादुर शाह जफर और झॉसी की रानी लक्ष्मीबाई के नाम विशेष उल्लेखनीय है। सब लोग अपने-अपने स्तर पर लड़े। कोई राष्ट्रीय स्तर की लड़ाई नहीं हुई इसके चलते अंग्रेज सरकार ने इस लड़ाई को दबा दिया। यह अनुभव किया जाने लगा कि भावात्मक या राष्ट्रीय एकता के लिए एक सामान्य भाषा की आवश्यकता होगी, वही सबको जोड सकती है। राजा राम मोहन राय ने कहा कि इस समग्र देश की एकता के लिए हिन्दी अनिवार्य है।[1]

---

१ हिन्दी भाषा - हरदेव बाहरी - पृ० १२७।

'ब्रह्म समाज के बगाली नेता केशव चन्द्र सेन ने अपने पत्र 'सुलभ समाचार' मे १८७३ ई० मे लिखा कि यदि भाषा एक न होने पर एकात्मकता नही है, तो इसमे क्या आश्चर्य है। फिर भारतीय एकता कैसे हो। पर लिखा - उपाय यह है कि भारत मे एक ही भाषा का व्यवहार हो। इस समय जितनी भाषाएं भारत मे प्रचलित हैं उनमें हिन्दी भाषा सारी जगह प्रचलित है। इस हिन्दी भाषा को अगर भारत वर्ष की एक मात्र भाषा बनाया जाय तो यह काम सहज और शीघ्र सम्पन्न हो सकता है।[1]

हिन्दी चेतना की झकझोरने मे आर्य समाज का सर्वाधिक महत्व था। आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती गुजराती और सस्कृत के अच्छे जानकार होते हुए भी अपना सारा धार्मिक साहित्य हिन्दी मे लिखा। वे हिन्दी को देश उन्नति का आधार मानते थे और उन्होने हिन्दी के प्रयोग को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया। वे कहते थे- 'मेरी ऑखे उस दिन को देखना चाहती है जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक सब भारतीय एक भाषा समझने और बोलने लग जाएँ।'[2]

हिन्दी प्रदेश के बाहरी नेता हिन्दी की सम्मानपूर्ण प्रतिष्ठा की मॉग बराबर करते जा रहे थे। १८६४ ई० मे बगाल के नेता डॉ० राजेन्द्र लाल मित्र ने हिन्दी का प्रबल समर्थन किया और १८८० मे बंगाल के लेफ्टिनेन्ट गवर्नर ऐशले ने आदेश दिया कि जनवरी १८८१ से अदालत के सब काम-काज देवनागरी लिपि मे लिखे जायॅ तथा जनता की ओर से जो कागज अदालतो में पेश किये जायं वे भी देवनागरी लिपि मे हो।[3] मुसलमानो मे उर्दू के प्रति अन्धश्रद्धा बढती जा रही थी इसके चलते हिन्दी उर्दू विवाद खड़ा हो गया। विवाद के कारण ही सैयद अहमद खॉ ने शिक्षा आयोग के सामने गवाही देते हुए कहा कि समाज के केवल छोटी श्रेणी के लोग हिन्दी पढते हैं या वे लोग हिन्दी पढते हैं जिन्हे व्यापार करना होता है।[4] परन्तु सभी मुसलमानो में वैमनस्य का भाव नहीं था कुछ उदारवादी मुसलमान थे। १९ अगस्त १८८२ ई० के 'पायोनियर' के अक मे प्रकाशित इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज सैयद महमूद का यह कथन उक्त उदारवादी विचार की ओर सकेत करता है। हिन्दी और उर्दू का विवाद एक कठिन विषय है। उर्दू की अपेक्षा हिन्दी का प्रचार चाहने वालों की

---

१ वही - पृ० १२७।

२ डॉ० हरदेव बाहरी- हिन्दी भाषा - पृ० - १२७।

३ हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य - डॉ० राम किशोर शर्मा - पृ०३१६।

४ हिन्दी भाषा का विकास - डॉ० राम किशोर शर्मा - पृ० १७६।

सख्या बहुत अधिक है। यदि आयोग यह निश्चित करे कि पश्चिमोत्तर प्रान्त मे स्कूलो मे हिन्दी का अधिक प्रचार हो तो मै सच्चे मन से इसका अनुमोदन करूगा।[1] शिक्षा आयोग के प्रश्न का उत्तर देते हुए भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कहा कि—'यदि आप दो सार्वजनिक नोटिस एक उर्दू मे एक हिन्दी मे लिखकर भेज दे तो आपको आसानी से मालूम हो जायेगा कि प्रत्येक नोटिस को समझने वालो का अनुपात क्या है। भारतेन्दु जी ने निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल का स्वर बुलन्द किया। उन्होने इस बात से आश्चर्य व्यक्त किया कि भारत ही एक ऐसा देश है जहॉ की अदालती भाषा न तो शासको की मातृभाषा है और न प्रजा की।[2] उन्नीसवी सदी के अन्तिम दशक मे हिन्दी आन्दोलन और तेज हुआ। भारत मित्र, विद्या प्रकाश और अन्य हिन्दी पत्रो मे फारसी लिपि की कमियो का साग्रह उद्घाटन किया गया। १८९३ ई० मे नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई जिसमे रोमन लिपि के प्रचलित किये जाने का कडा विरोध किया गया। १८९८ ई० मे मदन मोहन मालवीय के नेतृत्व मे शिष्ट मण्डल इलाहाबाद मे सर एटोनी से मिला और देवनागरी के पक्ष मे अपना विचार व्यक्त किया।[3]

राष्ट्रीय भावना को संगठित और राष्ट्रव्यापी रूप देने के लिए अखिल भारतीय राष्ट्रीय महासभा (काग्रेस) की स्थापना की गयी । शुरुआत में कांग्रेस की नीति सरकार के साथ मिलकर देशवासियो को जागृत करने की थी। परन्तु धीरे-धीरे अंग्रेजी सरकार की नीतियो से खिन्न होकर अग्रेजी राज्य का विरोध होने लगा। जैसे-जैसे राष्ट्रीय आंदोलन गहराता गया हिन्दी का महत्व बढता गया। कांग्रेस के १९२५ के कानपुर अधिवेशन मे यह प्रस्ताव स्वीकार किया गया कि कांग्रेस अपने सभी कार्यो मे हिन्दी एवं प्रादेशिक भाषा का प्रयोग करे। विदेशी राज्य के विरोध के साथ विदेशी वस्तुओ का भी विरोध होने लगा और स्वदेशी भावना तीव्र होती गयी। विदेशी भाषा का बहिष्कार और स्वदेशी का प्रचार व्यापक रूप से होने लगा। कांग्रेस अधिवेशनों के साथ राष्ट्रभाषा सम्मेलन भी होने लगा और हिन्दी नाना भाषियो के बीच संयोग का सूत्र बन गयी। हिन्दी के माध्यम से ही जनता मे राष्ट्रीय स्वाधीनता की आकांक्षा फैली।

---

१ हिन्दी भाषा का विकास - डॉ० राम किशोर शर्मा - पृ० १७६।

२ हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य - डॉ० राम किशोर शर्मा पृ० ३१६-३१७।

३ वही ।

बालगगाधर तिलक ने महाराष्ट्र की भावना को मुखरित किया और भारतवासियो से आग्रह किया कि वे हिन्दी सीखे। तिलक ने लिखा कि- 'राष्ट्र के सगठन के लिए आज ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसे सर्वत्र समझा जा सके। किसी जाति के निकट लाने के लिए एक भाषा होना महत्वपूर्ण तत्त्व है। एक भाषा के माध्यम से ही आप अपने विचार दूसरे पर व्यक्त कर सकते हैं।'[1] एन० सी० केल्कर और महाराष्ट्र के महापंडित भण्डारकर भी हिन्दी को राष्ट्रभाषा होने के समर्थक थे। भारत की अखडता पर बंगाल के नेता विशेषतः सोचते विचारते रहे है। यहॉ के नेताओ ने यह महसूस किया कि हिन्दी अखिल भारतीय एकता के लिए अनिवार्य है। राजनारायण बोस, भूदेव मुखर्जी और नवीन चन्द राय ने हिन्दी की अनिवार्यता पर बल दिया। वन्दे मातरम् राष्ट्रीय गीत के रचयिता बंकिम चन्द्र चटर्जी बग दर्शन मे लिखा कि - 'हिन्दी भाषा की सहायता से भारतवर्ष के विभिन्न प्रदेशों के मध्य मे जो ऐक्य-बन्धन स्थापित करने मे समर्थ होगे वही सच्चे भारत बधु पुकारे जाने योग्य है।'[2] रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भी हिन्दी का पक्ष लेते हुए कहा—'हमे उस भाषा को राष्ट्रभाषा ग्रहण करना चाहिए जो देश के सबसे बडे भू-भाग मे बोली जाती है।'[3] इसके अतिरिक्त बंगाल के विचारको की एक दीर्घ परम्परा रही है जिन्होने हिन्दी के पक्ष मे अपना समर्थन किया है। सन् १८०५ मे चरणी चरण दास ने बेताल पचीसी का सम्पादन कराया और विषयो पर हिन्दी मे लेखन कार्य किया। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के अनेक साहित्यिक लेख 'कविवचन सुधा' मे प्रकाशित हुए। सन् १८२६ मे राजाराम मोहन राय ने वेदान्त सार का हिन्दी मे अनुवाद किया।'[4]

गुजरात की आवाज को स्वामी दयानन्द ने ऊँचा किया। उनके स्वर में स्वर मिलाकर राष्ट्रभाषा प्रचार के कार्य को स्वतंत्रता आंदोलन के साथ महात्मा गॉधी ने अग्रसर किया। सन् १९१७ के गुजरात शिक्षा परिषद् के अधिवेशन मे कहा कि राष्ट्र की भाषा अँग्रेजी नही हो सकती और फिर अगले वर्ष तक काग्रेस के इन्दौर अधिवेशन मे स्पष्ट किया कि 'मेरा यह मत नही है कि हिन्दी ही हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा हो सकती है और होनी चाहिए।" वे कहते थे कि हिन्दी का प्रश्न स्वराज का प्रश्न है। उन्होने सैद्धान्तिक दृष्टि से राष्ट्रभाषा की

---

१ 'हिन्दी भाषा - डॉ० हरदेव बाहरी - पृ०१२८।

२ हिन्दी भाषा - डॉ० हरदेव बाहरी - पृ० २१७।

३ हिन्दी भाषा - डॉ० कैलाश चन्द्र भाटिया - पृ० ९३।

४ वही।

व्याख्या करते हुए कहा कि राष्ट्रभाषा होने के लिए किसी भाषा मे निम्नलिखित आवश्यकता पूरी होनी चाहिए -

१- वह भाषा राष्ट्र के बहुसख्यक लोग जानते बोलते हो।

२- जो सीखने मे सुगम हो।

३- जिसके द्वारा भारत वर्ष के धार्मिक, आर्थिक तथा राजनीतिक व्यवहार निभ सके।

४- जो क्षणिक या अल्पस्थाई स्थिति के ऊपर निर्भर न हो।

गॉधी जी का विचार था राष्ट्रभाषा के सारे गुण भारत की भाषाओं मे केवल हिन्दी मे मिलते है। १९३६ मे गॉधी जी ने कहा-- 'अगर हिन्दुस्तान को सचमुच आगे बढाना है तो चाहे कोई माने न माने राष्ट्र भाषा तो हिन्दी ही बन सकती है। क्योकि जो स्थान हिन्दी को प्राप्त है वह किसी अन्य को नही प्राप्त हो सकता। अगर स्वराज्य अंग्रेजी बोलने वाले भारतीयो का और उन्ही के लिए होने वाला हो तो निस्सन्देह अग्रेजी ही राष्ट्रभाषा होगी। महात्मा गॉधी की प्रेरणा से वर्धा और मद्रास मे राष्ट्रभाषा प्रचार सभाएँ स्थापित हुई। जिनके हजारों प्रचारको ने इस समय तक हिन्दी प्रदेशो मे हजारों-लाखो को हिन्दी सिखाई। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा मद्रास की स्थापना गॉधी जी ने ही की।[1] इसकी शाखा केरल, कर्नाटक और आन्ध्र प्रदेश मे भी खुली। काका साहब कालेकर और मोटूरि सत्य नारायण जैसे महान् विद्वान और नेता हिन्दी प्रचारक बनकर दक्षिण मे हिन्दी का प्रचार करते रहे। आसाम मे आसाम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिन्दी असमिया साहित्य परिषद् ने हिन्दी का जोरदार आन्दोलन चलाया। उड़ीसा मे जगह-जगह पर हिन्दी शिक्षण संस्थान स्थापित हुए और हिन्दी परीक्षाओं की शुरुआत की। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा, हिन्दी विद्यापीठ बम्बई, गुजरात विद्यापीठ और महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा पुणे और हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद आदि प्रचार सभाओ ने अपने-अपने प्रदेश मे उल्लेखनीय कार्य किया।

गुजरात के अन्य नेताओ ने भी हिन्दी सदा हिन्दी का पक्ष-पोषण किया है। सरदार बल्लभ भाई पटेल १९४० में कराची अधिवेशन के अध्यक्ष हुए तो उन्होंने अपना भाषण पहले हिन्दी मे पढा फिर अंग्रेजी मे । प्रसिद्ध साहित्यकार, राजनीतिज्ञ और नेता कन्हैया लाल माणिक लाल मुंशी का मत है कि- 'भारत के भविष्य का निर्माण राष्ट्र भाषा भारती (हिन्दी)

---

१ हिन्दी भाषा - हरदेव बाहरी - पृ० १२९।

के उद्‌भव एव विकास के साथ सम्बद्ध है। क्योकि हिन्दी हमारे राष्ट्रीय एकीकरण का सबसे शक्तिशाली और प्रधान माध्यम है। यह किसी प्रदेश या क्षेत्र की भाषा नही है, बल्कि समस्त भारत मे भारती के रूप मे ग्रहण की जानी चाहिए। १९४५ में उन्होने कहा था कि हिन्दी राष्ट्र भाषा बनाना नही है, वह तो राष्ट्रभाषा है ही।[1]

१९२९ मे राजगोपालाचारी जी ने दक्षिण वालो को हिन्दी सीखने की सीख दी थी। उनका कहना था कि हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही यही जनतत्रात्मक भारत मे राजभाषा भी होगी। गोपालाचारी ने १९३७ मे सम्पन्न हुए हिन्दी साहित्य सम्मेलन में यह प्रस्ताव रखा था कि काग्रेस की सारी कार्यवाही हिन्दी मे हो। यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया था।[2] सर टी० विजयराधवाचार्य ने कहा—'चाहे व्यावहारिक दृष्टि, सैद्धान्तिक दृष्टि या राष्ट्रीय दृष्टि से देखा जाय हिन्दी का कोई दूसरा प्रतिद्वद्वी सम्भव नही है। किसी दक्षिण भारतीय ऐसे व्यक्ति को शिक्षित नही मानना चाहिए जिसने हिन्दी की कोई लिखित या मौखिक परीक्षा पास न की हो। हिन्दुस्तान की सभी जीवित एव प्रचलित भाषाओं मे मुझे हिन्दी ही राष्ट्रभाषा बनने के योग्य दिखाई देती है।'[3] प्रसिद्ध नेता एव साहित्यकार रगनाथ रामचन्द्र दिवाकर ने कहा है—'जो राष्ट्र प्रेमी है उसे राष्ट्रभाषा प्रेमी होना चाहिए।'

स्वतत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद कहते थे कि मै हिन्दी के प्रचार राष्ट्रभाषा के प्रचार को राष्ट्रीयता का मुख्य अंग मानता हूं।[4] स्वाधीनता आन्दोलन मे हिन्दी के लेखको और पत्रकारो ने सदा सहयोग दिया है। सच तो यह है कि भारतेन्दु युग से ही अग्रेजी शासन व्यवस्था के विरुद्ध लहर चल पडी थी। साहित्यकारो ने इस बात की प्रशंसा भले की कि अग्रेजी राज्य मे सुख शान्ति है, परन्तु अंग्रेज जो आर्थिक शोषण कर रहे थे उनके विरुद्ध उन्होने जोरदार आवाज उठाई। भारत-दुर्दशा और भारत जननी मे बड़े कटु शब्दो मे अग्रेजो की नीति की आलोचना की गयी। प्रताप नारायण मिश्र ने अपने पत्र 'ब्राह्मण' मे बालकृष्ण भट्ट ने 'हिन्दी प्रक्षेप' में और बालमुकुन्द गुप्त ने 'शिवशंभु के चिट्‌ठे', शीर्षक लेखो मे भारत देश के प्रति होने वाले अत्याचारों और आर्थिक शोषण से तिलमिलाती जनता के आक्रोश को मुखरित किया। कलकत्ता से भारत मित्र के सम्पादको - बाबूराव विष्णु

---

१ हिन्दी भाषा - हरदेव बाहरी - पृ० १३०।

२ हिन्दी भाषा - हरदेव बाहरी - पृ० १३०।

३ हिन्दी भाषा - हरदेव बाहरी - पृ० १३०।

४ हिन्दी भाषा - हरदेव बाहरी - पृ० ३३१।

पराडकर, अम्बिका प्रसाद वाजपेयी और लक्ष्मी नारायण गर्दे ने राष्ट्रभाषा के प्रचार के साथ राष्ट्रीयता का प्रचार भी किया रामानन्द चट्टोपाध्याय का मासिक पत्र 'विशाल भारत' कई वर्षो तक राष्ट्रीय चेतना को जगाता हुआ हिन्दी की सेवा करता रहा।

सन् १९०० ई० मे इलाहाबाद मे सरस्वती के प्रकाशन के साथ हिन्दी पत्रिका मे एक नये युग का आरम्भ हुआ। इस पत्रिका ने हिन्दी भाषा, हिन्दी साहित्य और इसके माध्यम से राष्ट्रीय आन्दोलन को चमकाने मे भारी काम किया। अन्य मासिक पत्रिकाओं मे माधुरी, सुधा, वीणा और विशेषता चॉद ऐसे नाम हैं जिन्होने स्वाधीनता संघर्ष मे अपना - अपना योगदान दिया। बहुत नेताओं ने अपने-अपने पत्र निकाले। प० मदन मोहन मालवीय ने 'अभ्यूदय', बालगंगाधर तिलक ने 'केसरी', महात्मा गॉधी ने 'नवजीवन' आचार्य नरेन्द्र देव ने 'सघर्ष', गणेश शकर विद्यार्थी और बालकृष्ण शर्मा नवीन ने 'प्रताप' के माध्यम से राष्ट्रीय सघर्ष को आगे बढाया।

(ङ) राजभाषा के रूप में हिन्दी की स्थिति

राज चलाने के लिए किसी न किसी भाषा की आवश्यकता पडती है। सस्कृत, पालि, महाराष्ट्रीय प्राकृत अथवा अपभ्रंश अपने-अपने समय में राजभाषा रही हैं। ऐतिहासिक साक्ष्यो से ज्ञात होता है कि ११वीं से १५ शताब्दी के दौरान राजस्थान मे हिन्दी मिश्रित संस्कृत का प्रयोग किया जाता था। मुसलमान बादशाह मुहम्मद गोरी के शासन काल से लेकर अकबर के शासनकाल तक हिन्दी शासन-कार्य का माध्यम थी।[1] अकबर के गृहमत्री राजा टोडरमल के आदेश से सरकारी कामकाज फारसी में किया जाने लगा और ३०० वर्षो तक फारसी शासन - कार्य का माध्यम रही। मैकाले ने आकर अंग्रेजी को प्रतिष्ठित किया तब से उच्चस्तर पर अग्रेजी और निम्न स्तर पर देशी भाषा प्रयुक्त होती रही।[2] हिन्दी प्रदेश मे उर्दू प्रतिष्ठित रही। राष्ट्रीय चेतना के विकास के साथ स्वभाषा को राजपद दिलाने की मॉग उठी। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, महर्षि दयानन्द सरस्वती, केशव चन्द्र सेन, लोकमान्य बाल गगाधर तिलक, मदन मोहन मालवीय, महात्मा गाँधी, राजर्षि पुरुषोत्तम दास टडन और बहुत से अन्य नेताओ और जनसाधारण ने अनुभव किया कि हमारे देश का राजकाज हमारी ही भाषा मे होना चाहिए और वह भाषा हिन्दी ही हो सकती है।[3] हिन्दी सभी आर्य भाषाओ की

---

१ हिन्दी भाषा - डॉ० हरदेव बाहरी - १०८।

२ वही।

३ हिन्दी भाषा का विकास - डॉ० राम किशोर शर्मा - १८।

सहोदरी है यह सबसे बड़े क्षेत्र के लोगो की मातृभाषा है। हिन्दी प्रदेश के बाहर भी यह अधिकतर लोगो की दूसरी या तीसरी भाषा है। हिन्दी संस्कृत की उत्तराधिकारिणी है और सभी भारतीय भाषाओ की अपेक्षा सरल है। इन विशेषताओ के कारण स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले ही हिन्दी को भारत की सम्पर्क भाषा स्वीकार किया गया।

स्वतंत्रता के बाद राजसत्ता जनता के हाथ मे आयी। राजभाषा के रूप मे हिन्दी को एकमत से स्वीकार किया गया। १४ सितम्बर १९४९ ई० को भारत के सविधान मे हिन्दी को मान्यता प्रदान की गयी।[1]

राजभाषा हिन्दी की संवैधानिक स्थिति

सविधान की धारा १२० के अनुसार ससद का कार्य अंग्रेजी व हिन्दी मे किया जाता है। परन्तु यथास्थित लोकसभा का अध्यक्ष या राज्यसभा का सभापति किसी सदस्य को उसकी मातृभाषा मे सदन को सबोधित करने की अनुमति दे सकता है।[2]

सविधान की धारा ३४३ के अनुसार सघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी और अको का रूप भारतीय अंको का अन्तर्राष्ट्रीय रूप होगा।[3] शासकीय प्रयोजनो के लिए १५ वर्षो तक अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा। परन्तु राष्ट्रपति इस अवधि के दौरान किन्ही शासकीय प्रयोजनो के लिए अग्रेजी के साथ हिन्दी भाषा का प्रयोग अधिकृत कर सकेगा। इसी धारा के अन्तर्गत कहा गया है कि संसद उक्त १५ वर्ष के पश्चात विधि द्वारा अग्रेजी भाषा का या देवनागरी अको का प्रयोग किन्ही प्रयोजनो के लिए उपबन्ध कर सकेगी। अनुच्छेद की अन्तिम पक्ति इस अवधि को शिथिल कर देती है इसके दुरुपयोग की सम्भावना थी जो बाद मे प्रत्यक्ष हुई।

अनुच्छेद ३४४ राज्य भाषा के लिए आयोग बनाने का प्राविधान प्रस्तुत करता है। सविधान के आरम्भ से पॉच वर्ष के बाद तत्पश्चात १० वर्ष बाद आदेश द्वारा राष्ट्रपति एक आयोग गठित करेगा जो निम्न मामलो पर अपनी सिफारिशें प्रेषित करेगा।[4]

१- संघ के राजकीय प्रयोजनो के लिए हिन्दी भाषा के उत्तरो अधिक प्रयोग के विषय में।

---

१ हिन्दी भाषा - डॉ० हरदेव बाहरी - १०८।

२ भारत का सविधान - एक परिचय - आचार्य दुर्गा दास वासू - ३८७।

३ वही।

४ भारत का सविधान - एक परिचय - डॉ० दुर्गा दास बसु - पृ० ३८८।

करारनामो, अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहारो और अन्तर्राज्यो के कार्यो मे हिन्दी के प्रयोग को अग्रेजी के साथ बढावा दिया जाय। इस आदेश के अनुसार गृह मंत्रालय ने एक ज्ञापन द्वारा सरकार ने सभी मत्रालयो को कतिपय कार्यो मे हिन्दी का प्रयोग करने की सलाह दी।

१९५५ मे बम्बई राज्य के तत्कालीन मुख्यमत्री बाल गगाधर खरे की सदस्यीय राजभाषा आयोग का गठन किया गया।[1] इस आयोग ने सरकारी, गैर सरकारी अधिकारियो, नागरिको तथा सस्थाओं से सम्बद्ध व्यक्तियो से सम्पर्क करके एक प्रतिवेदन तैयार किया जिसे जुलाई १९५६ मे राष्ट्रपति को सौप दिया गया। इस प्रतिवेदन मे हिन्दी के महत्व को गहराई से अनुभव किया गया। इस आयोग के मुख्य सुझाव निम्न थे -

१- शिक्षा प्रशासन, सार्वजनिक जीवन तथा दैनिक क्रिया-कलापो में विदेशी भाषा अग्रेजी प्रयोग औचित्यपूर्ण नही है।

२ - हिन्दी सम्पूर्ण भारत के लिए सुस्पष्ट माध्यम भाषा है।

३ - १४ वर्ष की अवस्था तक प्रत्येक विद्यार्थी को हिन्दी का ज्ञान कराया जाना चाहिए ताकि वह सार्वजनिक गतिविधियो तथा सरकारी क्रियाकलापों से अवगत हो सके।

४ - सम्पूर्ण देश में माध्यमिक स्तर तक हिन्दी की शिक्षा अनिवार्य की जानी चाहिए। विश्वविद्यालयो मे भी इच्छुक छात्रों के लिए हिन्दी माध्यम से शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए।

५ - वैज्ञानिक एवं तकनीकी शिक्षण सस्थाओ में यदि विद्यार्थी भिन्न-भिन्न भाषाओं से सम्बद्ध हो तो हिन्दी को सामान्य माध्यम भाषा के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए।

६ - प्रशासनिक कर्मचारियो के लिए हिन्दी का ज्ञान आवश्यक माना जाना चाहिए।

७ - ससद और विधानमण्डल की कार्यवाहियो में हिन्दी के साथ क्षेत्रीय भाषा का भी प्रयोग होना चाहिए। देश के सम्पूर्ण साविधानिक ग्रंथ हिन्दी मे उपलब्ध कराये जाने चाहिए।

८ - विशेष न्यायालयो मे निर्णय यदि एक क्षेत्र में सीमित न हों तो वे निर्णय व आदेश मूल रूप से हिन्दी में लिखे जायं।

९ - अखिल भारतीय तथा केन्द्रीय सेवाओ के कर्मचारियो के लिए हिन्दी की योग्यता आवश्यक की जाय।

---

१ हिन्दी भाषा का विकास - डॉ० राम किशोर शर्मा - १८१।

आयोग प्रतिवेदन पर विचार करने के लिए गोविन्द बल्लभ पत की अध्यक्षता मे एक ससदीय समिति १९५७ मे गठित की गयी। इस समिति ने ४ फरवरी १९५९ को अपनी रिपोर्ट राष्ट्रपति को प्रस्तुत की। २७ अप्रैल १९६० को राष्ट्रपति ने सविधान के अनुच्छेद ३४४ के खण्ड ६ की व्यवस्था के अनुसार राजभाषा के सदर्भ में एक आदेश निर्गत किया -[1]

१ - अखिल भारतीय सेनाओ मे भारत के लिए परीक्षा का माध्यम अंग्रेजी बनी रहे और कुछ समय बाद हिन्दी और अन्य प्रादेशिक भाषाओ के प्रयोग करने की व्यवस्था की जाय।

२ - जिन कर्मचारियो की उम्र ४५ वर्ष से कम है उनको हिन्दी का प्रशिक्षण अनिवार्य बनाया जाए।

३ - हिन्दी मे वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के निर्माण के लिए एक स्थायी आयोग स्थापित किया जाय।

४ - सभी प्रशासनिक साहित्य का अनुवाद किया जाए।

५ - एक मानव विधि कोश बनाया जाए और कानून सम्बधी साहित्य का हिन्दी मे अनुवाद किया जाए इसके लिए एक विधायी आयोग गठित किया जाए।

६ - टकको और आशुलिपिको को हिन्दी मे कार्य करने की प्रशिक्षण देने की व्यवस्था की जाय।

७ - शिक्षा मत्रालय हिन्दी प्रचार की व्यवस्था करे और इस कार्य में गैर सरकारी सस्थाओ की भी सहायता करे।

गृह-मंत्रालय मे २७ मार्च १९६१ को एक कार्यालय ज्ञापन निकला। जिसमें वैज्ञानिक शब्दावली के निर्माण, अहिन्दी भाषी कर्मचारियो के लिए हिन्दी प्रशिक्षण, संघ के सरकारी काम-काज के लिए जरूरी नियमों और मैनुअल का हिन्दी अनुवाद आदि कार्यक्रम शुरू किया गया।

राजभाषा के रूप मे हिन्दी की प्रगति राजभाषा अधिनियम १९६३ द्वारा बाधित हो गयी।[2] इस अधिनियम में अनुच्छेद ३४५ मे वर्णित अवधि के पूर्ण होते हुए भी अंग्रेजी भाषा

---

१ हरदेव बाहरी - हिन्दी भाषा - पृ० ११२।

२ हिन्दी भाषा का विकास - डॉ० राम किशोर शर्मा - १८१।

को अनिश्चित काल तक प्रयोग किये जाने का उपबन्ध किया गया। इस प्रकार हिन्दी को पूर्ण रूप से प्रतिष्ठित करने की अवधि को अनिश्चित काल तक के लिए बढा दिया गया। इसके बाद राजभाषा सशोधन अधिनियम १९६७ को पारित किया गया। इस अधिनियम मे राजभाषा की उन्नति को अन्य भारतीय भाषा के साथ जोडकर देखा गया। इस अधिनियम मे केन्द्र सरकार से हिन्दी के विकास और प्रसार के लिए व्यापक कार्यक्रम बनाने की अपेक्षा की गयी। केन्द्रीय सेवाओ मे हिन्दी या अग्रेजी या किसी एक भाषा के ही ज्ञान का पर्याप्त मानने तथा अखिल भारतीय स्तर की प्रतियोगी परीक्षाओ मे भारतीय भाषाओ के चयन करने की छूट पहली बार दी गयी। केन्द्रीय सेवाओ मे हिन्दी माध्यम हो जाने के कारण राजभाषा के विकास मे काफी मदद मिली। इस अधिनियम के तहत गृह मंत्रालय द्वारा कई प्रशासनिक आदेश जारी किये गये—

१ - केन्द्र सरकार द्वारा हिन्दी अपनाने वाले राज्यों से हिन्दी मे पत्र व्यवहार किया जाय।

२ - कर्मचारियो द्वारा टिप्पणी तथा आलेखन हिन्दी या अंग्रेजी किसी एक भाषा मे तैयार किया जाय।

३ - हिन्दी भाषी क्षेत्रों मे चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों की सेवा पंजिका हिन्दी मे लिखी जाय।

४ - जनता के प्रयोग मे आने वाले फार्मो को अंग्रेजी तथा क्षेत्रीय भाषाओ मे छपवाये जायॅ।

१९७६ मे राजभाषा से सम्बन्धित कुछ नियम बनाये गये। इस नियम के अनुसार सम्पूर्ण देश को तीन भागो मे विभाजित किया गया।[1] इस विभाजन का मुख्य प्रयोजन यह था कि जिस क्षेत्र मे हिन्दी का अधिक प्रचलन है वहॉ इसका अधिकाधिक प्रयोग किया जाय। जहॉ कम प्रचलन है वहॉ धीरे - धीरे इसके प्रयोग को बढ़ाया जाय। जहॉ बिलकुल प्रयोग नही वहां इसके प्रयोग के लिए तैयारियॉ की जाय।

क - क्षेत्र के अन्तर्गत बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और दिल्ली राज्य आते हैं।

ख - क्षेत्र के अन्तर्गत पंजाब, महाराष्ट्र, गुजरात, चण्डीगढ एवं अण्डमान आते हैं।

ग - क्षेत्र के अंतर्गत शेष १३ राज्य आते हैं।

---

१ हिन्दी भाषा - डॉ० हरदेव बाहरी - पृ० - ११४।

हिन्दी का प्रचार-प्रसार भारत मे ही नही अपितु संसार के अन्य कई देशो में हो रहा है। डॉ० राम किशोर शर्मा के अनुसार विश्व के ९० विश्वविद्यालयो मे हिन्दी पढ़ाने की व्यवस्था है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विचार विनिमय के लिए अब तक चार विश्व हिन्दी सम्मेलन सम्पन्न हो चुके है।[1] सरकार की अन्य योजनाओ की तरह राजभाषा से सम्बन्धित प्रयत्नो के परिणाम भी बहुत सतोषजनक नहीं है। स्वार्थी तत्त्वो तथा नौकरशाही से हिन्दी का प्रयोग होता जा रहा है। सरकार की लचर नीति के कारण लोगो का अंग्रेजी के प्रति प्रेम बढ़ता जा रहा है। पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गॉधी जी ने कहा था—'हमें थोड़ा सोचना चाहिए कि यह क्यो हो रहा है। अगर इतने लोग हिन्दी समझते हैं तो कार्यवाही क्यों हिन्दी मे नहीं हो पाती। क्या हमारे ऑकड़े ठीक हैं। क्या सचमुच ९९% लोग किसी विभाग मे हिन्दी को समझते है कि वे अपने एलाउस ले पायेंगे। अगर हमे खाली एलाउस लेना है तो और बात है लेकिन अगर हिन्दी का प्रचार होना है, हिन्दी मे काम होना है तो ज्यादा अच्छी तरह से हमे हिन्दी की जानकारी करनी पडेगी। हिन्दी की प्रगति मे सबसे अधिक बाधा अग्रेजी है। अग्रेजी का वर्चस्व बढ़ने से हिन्दी के लिए खतरा पैदा हो गया है। देखना है कि संघर्ष मे जन्मी हिन्दी अपने अस्तित्व को कहां, किस रूप मे निर्धारित करती है।

---

१ हिन्दी भाषा का विकास - राम किशोर शर्मा - पृ० १८४।

अध्याय - 2

हिन्दी सेवी संस्थाओं की स्थापना तथा राष्ट्रभाषा के प्रचार-प्रसार में उनकी भूमिका

हिन्दी भाषा के विकास में संस्थाओं की भूमिका

हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार मे दो तरह की संस्थाओं का योगदान है। प्रथम मे वे सस्थाएँ आती है जिनका प्रमुख लक्ष्य सामाजिक सुधार तथा सांस्कृतिक पुनर्जागरण था। सास्कृतिक, सामजिक नवजागरण मे स्वदेशी महत्त्व की सहज स्वीकृति होती है। चूंकि भाषा और सस्कृति मे घनिष्ठ सम्बन्ध है इसलिए किसी एक के प्रचार-प्रसार पर ध्यान केन्द्रित करने पर दूसरे का स्वतः प्रचार - प्रसार होने लगता है। उन्नीसवी शताब्दी मे अनेक धार्मिक, सामाजिक सस्थाओं की स्थापना हुई जिनमे ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज, थियोसोफिकल सोसाइटी, सनातन धर्म सभा आदि उल्लेखनीय हैं।

ब्रह्म समाज

हिन्दू धर्म मे सुधार का कार्य सर्वप्रथम ब्रह्म समाज द्वारा शुरू किया गया। इस पर आधुनिक पाश्चात्य विचारधारा का बहुत प्रभाव था। ब्रह्म समाज की स्थापना राजाराम मोहन राय द्वारा १८२८ ई० मे की गयी।[1] डॉ० नगेन्द्र के अनुसार - 'आधुनिक भारत की नीव का पहला पत्थर राजाराम मोहन राय ने रखा। आधुनिकीकरण के सम्बन्ध में ही उन्होने ब्रह्म समाज की स्थापना की।[2] राजाराम मोहन राय बहुत बड़े विद्वान थे। उन्हें अरबी, फारसी, सस्कृत जैसी प्राच्य भाषाएँ और अंग्रेजी फ्रासीसी, लातीनी यूनानी आदि भाषाओ का ज्ञान था।[3] यद्यपि राजाराम मोहन राय बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे, परन्तु उन्हे धर्म सुधार से विशेष प्रेम था। जिस समय तरुण बगाली ईसाई धर्म की ओर आकर्षित हो रहे थे उस समय राजाराम मोहन राय हिन्दू धर्म के रक्षक के रूप में सामने आये। एक ओर उन्होने पादरी प्रचारको के विरुद्ध हिन्दू धर्म की रक्षा की, और दूसरी ओर हिन्दू धर्मं में आये झूठ और अधविश्वासो को दूर करने का भी प्रत्यन्न किया। उन्होने मूर्ति पूजा की आलोचना की और अपने पक्ष को वेदोक्तियो से सिद्ध करने का प्रयत्न किया। उन्होने हिन्दू धर्म के सिद्धान्तो की पुर्नव्याख्या की और अपनी मानव सेवा के लिए उपनिषदो से पर्याप्त मात्रा में आधार खोज

---

१ आधुनिक भारत का इतिहास - वी० एल० ग्रोवर - पृ० २७१।

२ हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ० नगेन्द्र - पृ० ४४८।

३ आधुनिक भारत का इतिहास - वी०एल० ग्रोवर पृ० २७२।

निकाले। उन्होने ईसाई मत को अस्वीकार किया और महात्मा ईशू के देवत्व को भी स्वीकार नही किया। वे यूरोपीय मानवतावाद को स्वीकार करते थे। सामाजिक क्षेत्र मे हिन्दू समाज की कुरीतियो, सती प्रथा, बहुपत्नी प्रथा, वेश्यागमन, जातिवाद इत्यादि का विरोध किया। उन्होने विधवा पुनर्विवाह का भी समर्थन किया।[1] राजाराम मोहन राय ने स्त्री पुरुष के समानाधिकार का समर्थन किया और सदर्भ विशेष मे पाश्चात्य संस्कृति को मूल्यवान समझा इसलिए उन्होने अग्रेजी शिक्षा प्रणाली के प्रसार में भी योग दिया और अंग्रेजी राज्य की अच्छाइयो की प्रशसा की। ब्रह्म समाज को देवेन्द्र नाथ टैगोर और केशव चन्द्र सेन ने आगे बढाया।

इस सस्था ने राष्ट्रीय भावना की जागृति के लिए राष्ट्रभाषा के महत्त्व को स्वीकार किया। इस सस्था ने अपने विचारो को राष्ट्रभाषा हिन्दी मे निबद्ध किया।

हिन्दी के प्रबल समर्थक केशव चन्द्र सेन, राजनारायण बोस, भूदेव मुखर्जी, नवीन चन्द्र राय इसी सस्था से सम्बद्ध थे। नवीन चन्द्र राय ने पजाब मे, भूदेव मुखर्जी ने बिहार मे हिन्दी को प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न किया। मुखर्जी के ही प्रयास से हिन्दी भाषा तथा नागरी लिपि को बिहार के आन्दोलन मे स्थान मिला। राजाराम मोहन राय हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के पक्षधर थे। उन्होने १८२६ मे कलकत्ता से बंगदूत नामक एक साप्ताहिक पत्र निकाला था जिसमे कुछ पन्ने हिन्दी मे छपते थे।[2]

आर्य समाज

आर्य समाज आंदोलन का प्रसार प्रायः पाश्चात्य प्रभावो की प्रतिक्रिया के रूप मे हुआ। आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानन्द सरस्वती ने १८७५ ई० में बम्बई में की थी।[3] स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनके गुरु स्वामी विरजानन्द शुद्ध वैदिक परम्परा मे विश्वास रखते थे। उन्होने 'पुन' वेद की ओर चलो' का नारा दिया। उत्तर वैदिक काल से आज तक सभी अन्य मत - मतान्तरो को उन्होंने पाखण्ड अथवा झूठे धर्म की सज्ञा दी।[4]

स्वामी दयानन्द सरस्वती उच्चकोटि के सस्कृतज्ञ, कुशल वक्ता तथा असाधारण प्रतिभा

---

१ वही पृ० २७२।

२ हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य - डॉ० राम किशोर शर्मा - पृ० ३३५

३ भारतीय सस्कृति एव कला - डॉ० हरिनारायण दूबे - पृ० ४११

४ आधुनिक भारत का इतिहास - वी० एल० ग्रोवर पृ० २७४।

सम्पन्न व्यक्ति थे। उन्होने अपनी सबल तर्क शक्ति से इस्लाम, ईसाई, जैन, बौद्ध तथा अन्य आचलिक धर्मो मे व्याप्त बुराईयों एव कमियो को उजागर किया। उन्होने कोने-कोने आर्य समाज की शाखाओ को सचालित कर हिन्दी मानस मे स्वाभिमान एव गौरव का सचार किया। सामाजिक और नैतिक मूल्यो को देखते हुए आर्य समाज ने एक आचार सहिता बनायी। इसमे जाति और स्त्री पुरुष मे असमानता के लिए कोई स्थान न था। निश्चय ही यह एक लोकतांत्रिक दृष्टि थी। वैदिक धर्म के व्याख्याता होने के वावजूद स्वामी दयानन्द समाज की भौतिक उन्नति के लिए पाश्चात्य ज्ञान विज्ञान की शिक्षा को आवश्यक समझते थे। इसीलिए १८८६ मे लाहौर मे दयानन्द एग्लोवैदिक कॉलेज की स्थापना हुई और आगे चलकर प्रत्येक महत्वपूर्ण स्थानो पर दयानन्द स्कूल, कॉलेज खोले गये।[1] हिन्दूवादी दृष्टिकोण के बावजूद आर्य समाज ने राष्ट्रीय विचारधारा को आगे बढाने मे आश्चर्यजनक योगदान दिया कुछ समय तक ब्रिटिश सरकार इसे दबाने की भरपूर चेष्टा करती रही किन्तु उत्तर भारत के आचार-विचार, रहन-सहन, साहित्य और सस्कृति पर इसका गहरा प्रभाव पडा।[2]

स्वामी दयानन्द सरस्वती गुजराती होते हुए भी हिन्दी भाषा को अपने विचारो की सवाहिका भाषा बनाया। सरस्वती जी ने अपने प्रचारकों तथा अनुयायियो के लिए हिन्दी शिक्षा तथा प्रयोग को अनिवार्य कर दिया। स्वामी जी ने अपने ग्रन्थों को हिन्दी में लिखकर जन सामान्य मे हिन्दी के प्रति लगाव पैदा किया। आर्य समाज द्वारा सचालित विद्यालयो मे हिन्दी प्रयोग से प्रेरणा लेकर धीरे-धीरे राजपूताना, हरियाणा तथा उत्तर प्रदेश आदि मे हिन्दी भाषा को काम-काज की भाषा बनाया जाना शुरू हुआ।[3] स्वामी जी की हिन्दी सेवा को अनेक प्रतिष्ठित विद्वानो ने मूल्यांकित करके काफी सराहना की है। श्री विष्णुदेव पोद्दार का कथन है कि—'ऋषि दयानन्द यद्यपि गुजराती ब्राह्मण थे और गुजराती ही उनकी मातृभाषा थी तथा वे गुजराती के अच्छे ज्ञाता थे तदापि देश प्रेमी एव क्रांतिदर्शी होने के कारण उन्होने वेदोक्त सनातन धर्म-प्रचार एवं देशोन्नति के अपने महान कार्यो की पूर्ति के लिए हिन्दी भाषा को अपनाया। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश, पंचमहायज्ञ, विधि, वेदात, ध्वांत-निवारण, वेद विरुद्ध मत खडन, वेदांग प्रकाश आदि अनेक ग्रन्थो का प्रणयन हिन्दी में किया।[4] आर्य समाज ने

---

१ भारतीय सस्कृत एव कला - हरिनारायण दूबे पृ० ४१२

२ हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ० नगेन्द्र पृ० ४५०।

३ भारतीय सस्कृति एव कला - हरि नारायण दूबे पृ० ४१२।

४ हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य - डॉ० राम किशोर शर्मा पृ० ३३६।

मित्र भारतोदय, धर्मवीर भारती, श्रद्धा, वैदिक सदेश, हिन्दी, आर्यजीवनी, देववाणी आदि पत्रिकाओ का भी प्रकाशन करवाया।[1] आर्य समाज ने शिक्षा प्रणाली तथा न्यायालयों में हिन्दी को प्रवेश दिलाने का प्रयत्न किया। भारतीय स्कूलो मे कौन सी भाषा पढाई जाय इस विषय पर विचार करने के लिए १८८२ मे कलकत्ता मे एक सरकारी कमीशन बैठा था। इस कमीशन के प्रधान को आर्य समाज की ओर से हिन्दी पढाये जाने के लिए मेमोरेण्डेम दिया गया। अन्य लोगो को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित किया गया।[2] आर्य समाज भारत मे ही नही दक्षिणी अफ्रीका, कोरिया, मारिशस, फीजी, डच, म्याना आदि देशों मे भी हिन्दी माध्यम की शिक्षण संस्थाएं आरम्भ की।

प्रार्थना समाज

१८६७ ई० मे केशव चन्द्र सेन के क्रांतिकारी विचारो से उद्वेलित होकर डॉ० आत्मा राम पाण्डुरग ने महाराष्ट्र मे प्रार्थना सभा की स्थापना की।[3] इसकी स्थापना के दो वर्ष बाद १८६९ मे भारतीय विद्याओ के दो महान् विद्वान् आर० जी० भण्डारकर तथा एल० जी० रानाडे इस समाज मे सम्मिलत हो गये। प्रार्थना समाज की मूल चेतना सामाजिक पुनर्जागरण थी। इसमे मुख्यत· जाति प्रथा का विरोध, विधवा विवाह को मान्यता, स्त्री-शिक्षा को प्रश्रय तथा बाल-विवाह पर रोक कायम करने पर बल दिया गया। इसकी प्रार्थना मे वेद, उपनिषद, कुरान, बाइबिल आदि धर्म ग्रन्थों मे उद्धृत एकेश्वरवाद को स्मरण किया गया।[4]

जिस प्रकार बंगाल मे हिन्दू-नवोत्थान के पहले नेता राजाराम मोहन राय हुए उसी प्रकार महाराष्ट्र मे प्रार्थना समाज आन्दोलन का श्रीगणेश महादेव गोविन्द रानाडे ने किया।[5] बौद्धिक ऊँचाई में रानाडे राजाराम मोहन राय के समकक्ष थे। उनकी मेधा, उनका ज्ञान और उनका पावन चरित्र सब ने मिलकर उन्हें देश के सर्वोच्च महापुरुषों में स्थान दे रखा था एव महाराष्ट्र मे उनकी पूजा होती थी। रानाडे ने तीस वर्ष तक भारत वर्ष के ऊँचे से ऊँचे विचारो तथा ऊँची से ऊँची आकाक्षाओं का प्रतिनिधित्व किया। प्रोफेसर कर्वे ने लिखा है कि 'बाईस साल तक पूने का सारा इतिहास रानाडे के कृत्यों का ही इतिहास था।'[6]

---

१ हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ० नगेन्द्र पृ० ४५१।

२ हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य - डॉ० राम किशोर शर्मा पृ० ३३६।

३ भारतीय सस्कृत एव कला - हरिनारायण दूबे - पृ०४०६।

४ वही पृ० ४०७।

५ सस्कृति के चार अध्याय - रामधारी सिह दिनकर - पृ० ४६७।

६ वही वृ० ४६७।

रानाडे ने धार्मिक और सामाजिक समस्याओ पर तर्क पूर्ण ढंग से विचार किया और भागवत धर्म का अनुसरण करते हुए सकीर्ण विचारधारा को कभी भी प्रश्रय नही दिया। मध्यकालीन महाराष्ट्रीय संतो के प्रति उनकी गहरी आस्था थी। अतीत के लिए उनके मन मे आदर था। किन्तु इसका अर्थ यह नही था कि वे अतीत को उसी रूप मे पुनः प्रतिष्ठित करना चाहते थे। पुराने आचार-विचार और सस्थाओ को उनके मूल रूप मे पुनः स्थापित करने वाले पुनरुत्थानवादियो से उनका विरोध था। उन्होने स्पष्ट लिखा है कि मृत अतीत को कभी भी जीवित नही किया जा सकता। उनके अनुसार समाज जीवित अवयवो का सगठन है, जिसमे परिवर्तन की प्रक्रिया बराबर चलती रहती है। इस प्रक्रिया के बन्द हो जाने पर समाज मुर्दा हो जाता है।[1] रानाडे पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित थे पर उन्होने इसे बिना तर्क नही स्वीकार किया। दूसरे शब्दो मे वे भारतीय सस्कृति को नवीन वैज्ञानिक विचार प्रणाली के अनुरूप ढालने का यत्न कर रहे थे। इस संस्था ने महाराष्ट्र मे हिन्दी का पक्ष प्रबल करने मे सहयोग दिया।[2]

रामकृष्ण मिशन

इस सस्था की स्थापना रामकृष्ण परमहंस के देहान्त के बाद विवेकानन्द ने की थी। रामकृष्ण परमहंस अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व मे परमहस थे। रामकृष्ण परमहंस कलकत्ता के एक काली मदिर मे पुजारी थे। वे हिन्दू परम्परानुसार भक्ति, ध्यान, वैराग्य तथा संन्यास आदि द्वारा मोक्ष प्राप्ति को जीने का सर्वोच्च लक्ष्य मानते थे। एक ओर जहॉ वे हिन्दू धर्म मे पूर्ण श्रद्धा रखते थे वही विश्व के अन्य धर्मों के प्रति भी पूर्ण सहिष्णु थे। उनका विश्वास था कि मनुष्य की सेवा करना ही ईश्वर की सेवा करना है।[3] विवेकानन्द ने रामकृष्ण परमहंस को बाहर से भक्त और भीतर से ज्ञानी कहा। सन् १८९३ मे विवेकानन्द विश्व धर्म ससद मे सम्मिलित होने के लिए शिकागो गये। उनकी वक्तृता से प्रभावित होकर न्यूयार्क हेराल्ड ट्रिब्यून ने लिखा था कि विश्व धर्म संसद मे विवेकानन्द सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति थे। उनको सुनने के बाद ऐसा लगता था कि उस महान् देश में धार्मिक मिशनों को भेजना कितनी बड़ी मूर्खता थी।[4] विवेकानन्द का मुख्य प्रयोजन रामकृष्ण परमहंस के उपदेशो का प्रचार करना था।

१ हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ० नगेन्द्र पृ० ४४९।
२ हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य - डॉ० राम किशोर शर्मा पृ०३३६।
३ भारतीय सस्कृति एव कला - हरिनारयण दूबे पृ० ४०९।
४ हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ० नगेन्द्र पृ० ४५०।

मानवीय समता के विश्वासी होने के कारण विवेकानन्द ने जाति सम्प्रदाय, छुआछूत आदि का विरोध किया। गरीबो के प्रति उनकी सहानुभूति अत्यन्त प्रगाढ थी।

शिक्षित समुदाय तथा उच्च वर्ग की भर्त्सना करते हुए उन्होने लिखा—जब तक देश के हजारो लोग भूखे है अज्ञानी है मै प्रत्येक शिक्षित वर्ग को धोखेबाज कहूँगा। गरीबो के पैसे से पढकर वे तनिक भी उनकी ओर ध्यान नहीं देते। उच्च वर्ग शारीरिक एवं नैतिक दृष्टि से मर चुका है। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार धर्म वह है जो शारीरिक, बौद्धिक और नैतिक आध्यात्मिक शक्ति दे जो आत्मसम्मान एव राष्ट्रीय गौरव प्रदान करने मे सहायता करे। विवेकानन्द ने हीनता की भावना से ग्रस्त देश को यह अनुभव कराया कि इस देश की सस्कृति अब भी अपनी श्रेष्ठता मे अद्वितीय है।

इस देश का आध्यात्मिक चिन्तन असमानान्तर है। आध्यात्मिक स्तर पर मनुष्य मनुष्य की समानता, एकता, बन्धुत्व और स्वतंत्रता की ओर भी उन्होने हमारा ध्यान आकृष्ट किया। पश्चिम की भौतिकता से चमत्कृत देशवासियों को पहली बार यह एहसास हुआ कि हमारी अपनी परम्परा मे भी कुछ ऐसी वस्तुएँ हैं जिन्हे ससार के समक्ष गौरवपूर्ण ढंग से रखा जा सकता है।

सनातन धर्म सभा

सनातन धर्म सभा की स्थापना १८९५ ई० मे दीन दयाल शर्मा के द्वारा की गयी। इस सस्था ने हिन्दी और सस्कृत को प्रोत्साहन देना अपना प्रमुख लक्ष्य माना। इस सस्था की अनेक शाखाएँ देश भर में फैली थी जो हिन्दी भाषा के माध्यम से समाज सुधार और धर्म सुधार का कार्य कर रही थी। सनातन धर्म सभा के प्रमुख नेता गोस्वामी गणेशदत्त थे। गोस्वामी गणेशदत्त ने पंजाब मे रात्रि पाठशाला खोलकर पौढ़ लोगो के लिए हिन्दी शिक्षण की व्यवस्था की। इनके प्रयास से हिन्दी की शिक्षा देने के लिए अनेक पाठशालाएं खोली गयी। इन्होंने सन् १९४० में विश्वबन्धु नामक हिन्दी का एक दैनिक पत्र निकाला। इसी सस्था से सम्बंधित श्रद्धाराम फिल्लोरी ने हिन्दी प्रचार की दिशा मे सक्रिय योगदान किया।[1]

थियोसोफिकल सोसायटी

इस संस्था का जन्म यों हुआ कि रूस मे एक महिला हेलेना पेत्रोवना ब्लेवास्की थी। वे प्रेत विद्या की जानकार समझी जाती थीं। उन दिनो अमेरिका में भी प्रेत विद्या की चर्चा

---

१ हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य - डॉ० राम किशोर शर्मा - पृ० ३३६

छिडी हुई थी और कर्नल आलकाट नाम के एक सज्जन इस विद्या मे गहरी दिलचस्पी रखते थे। ब्लेवास्की न्यूयार्क गयी, तब वहा उनका परिचय आलकाट साहब से हुआ और वही दोनो ने मिलकर थियोसोफिकल सोसायटी की नीव ७ सितम्बर १८७५ ई० को रखी। कहा जाता है कि तिब्बत मे कुछ श्रेष्ठ आत्माएँ थी जिनका सम्पर्क श्रीमती ब्लेवास्की से था। इन्ही आत्माओ के पथ - प्रदर्शन में ब्लेवास्की काम करती थी। अतएव अपनी संस्था का मुख्य उद्देश्य उन्होने उन अगोचर नियमो का अनुसधान और प्रचार रखा जिनके अधीन यह सृष्टि सचालित होती है।[1]

बाद मे इस संस्था का उद्देश्य कुछ और विशद और विस्तृत हो गये। १८७९ मे इसका कार्यालय बम्बई मे स्थापित हुआ। इस सोसायटी ने अनेक शिक्षण सस्थाओ की स्थापना की जिसमे हिन्दी को उचित स्थान दिया गया। सोसायटी ने अपने सिद्धान्तो के प्रचार-प्रसार मे अग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी को भी महत्व दिया। इस संस्था से सम्बद्ध श्रीमती ऐनीबेसेन्ट ने स्वयं गॉधी के साथ दक्षिण भारत का भ्रमण करके हिन्दी का प्रचार किया। उन्होने हिन्दी को सबसे अधिक प्रचलित भारतीय भाषा स्वीकार करते हुए राष्ट्र की एकता का प्रमुख साधन माना। हिन्दुस्तान मे अपने सिद्धान्तो के प्रचार-प्रसार के लिए इस सस्था ने हिन्दी को प्रमुख माध्यम स्वीकार किया।[2]

(ख) हिन्दी प्रचारक स्वैच्छिक संस्थाएँ

हिन्दी के प्रचार-प्रसार मे स्वैच्छिक संस्थाओ की भूमिका महत्वपूर्ण है। वास्तव मे हिन्दी प्रचार का कार्य प्रमुख रूप से स्वैच्छिक संस्थाओं के द्वारा किया गया। सबसे पहले सन् १८९३ ई० मे वाराणसी मे नागरी प्रचारणी सभा की स्थापना हुई। सभा के आरम्भिक सरक्षण गोपाल प्रसाद खत्री, राम नारायण मिश्र, बाबू श्याम सुन्दर दास थे। परवर्ती संरक्षको मे महामना मदन मोहन मालवीय, अम्बिका दत्त व्यास, राधाचरण गोस्वामी, श्रीधर पाठक, बद्री नारायण चौधरी, प्रेमधन आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। सभा ने हिन्दी की अनेक हस्तलिखित पुस्तको की खोज करायी। पुस्तकों का सम्पादन और प्रकाशन, हिन्दी शब्द कोश, निर्माण भाषा और साहित्य का इतिहास लेखन एवं अनुसंधान की योजनाओ को सफलतापूर्वक क्रियान्वित किया। सभा के पास अपना एक समृद्ध पुस्तकालय है। इसमे प्राचीन एवं नवीन हर प्रकार की रचनाएँ उपलब्ध है। हिन्दी के अनेक मानक ग्रन्थों जैसे

१ सस्कृति के चार अध्याय - रामधारी सिह दिनकर पृ० ४८१।

२ हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य - डॉ० राम किशोर शर्मा - पृ० ३३७।

हिन्दी शब्द सागर, पृथ्वी सागर, पृथ्वीराज रासो, परमाल रासो आदि ग्रथो के प्रकाशन का श्रेय सभा को है। सभा से नागरी प्रचारिणी पत्रिका प्रकाशित होती है।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के वर्ष १९१८ के इन्दौर अधिवेशन में महात्मा गॉधी ने सभापति के आसन से यह सुझाव प्रस्तुत किया कि अहिन्दी भाषी प्रान्तो मे हिन्दी प्रचार का प्रयत्न किया जाय। उनकी प्रेरणा से दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार की स्थापना हुई उसका प्रधान कार्यालय मद्रास रखा गया। १९३६ ई० में नागपुर मे एक प्रस्ताव पास करके १५ सदस्यो की एक प्रचार समिति बनायी गई। इस समिति के गॉधी जी, टन्डन जी, राजेन्द्र बाबू, जवाहर लाल नेहरू, जमुना लाल बजाज, आचार्य नरेन्द्र देव, शंकरराव देव, माखन लाल चतुर्वेदी, वियोगी हरि आदि इसके सस्थापक सदस्य थे। इस समिति का कार्यालय वर्धा मे रखा गया। इस समिति के तीन प्रमुख उद्देश्य थे। इसका प्रथम उद्देश्य या समस्त भारत मे राष्ट्रीय भावनाओं को उद्‌बुद्ध करना उन्हे एक सूत्र में बॉधना। इस समिति ने 'एक हृदय ही भारत जननी' इस उद्‌घोष वाक्य को चुना। इस संस्था का कार्य क्षेत्र मुख्यतया अहिन्दी प्रान्तो मे है। आवश्यकतानुसार विदेशो मे हिन्दी का प्रचार करना भी इसका लक्ष्य था। समिति ने १९३८ से हिन्दी भाषा की परीक्षाए आयोजित करनी शुरू की । आजकल राष्ट्र भाषा, प्राथमिक राष्ट्रभाषा, प्रारम्भिक राष्ट्रभाषा, प्रवेश राष्ट्रभाषा, परिचय राष्ट्रभाषा, कोविद राष्ट्रभाषा, एल राष्ट्रभाषा आचार्य आदि परीक्षाएं उसके द्वारा आयोजित होती हैं करीब तीन लाख परीक्षार्थी इन परीक्षाओ में सम्मिलित होते हैं। हिन्दीत्तर प्रदेशो में अधिकतर १८ हजार प्रचारक हिन्दी प्रचार का कार्य कर रहे हैं। राष्ट्र भाषा प्रचार को सुचारू रूप मे सचालित करने के लिए १८ प्रान्तीय समितियॉ गठित की गयी जो महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश, राजस्थान, कश्मीर, दिल्ली, असम, मेघालय, मणिपुर, पश्चिमी बंगाल, उड़ीसा, कर्नाटक, गोवा आदि प्रान्तो मे है। भारत के अतिरिक्त दक्षिण अफ्रीका, श्रीलंका, वर्मा, मारिशस, सूरीनाम आदि देशो में भी हिन्दी का प्रचार किया जा रहा है। यहां से राष्ट्र भाषा नाम की एक मासिक पत्रिका प्रकाशित होती है जिसमे परीक्षा सम्बन्धी तथा राष्ट्रभाषा से सम्बन्धित विचारो को प्रकाशित किया जाता है। इस संस्था के द्वारा अपनी परीक्षा के लिए पाठ्य पुस्तके तैयार करायी गयी और उन्हें प्रकाशित किया गया। भारतीय भाषाओं का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए भारत भारती पुस्तक माला के अन्तर्गत पुस्तके प्रकाशित की गयीं।

कवि श्री माला के अन्तर्गत प्रान्तीय भाषाओं के दो-दो कवियो की रचनाओ को हिन्दी मे अनूदित किया गया। गॉधी जी और टन्डन के विचारो से सम्बन्धित पुस्तको का प्रकाशन भी यहॉ से हुआ है। बृहत राष्ट्रभाषा कोष नाम से एक शब्द कोश का भी प्रकाशन हुआ है।

विश्व हिन्दी सम्मेलन

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के द्वारा किया गया विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन इसकी एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। भारत और भारत से बाहर हो रहे हिन्दी के समस्त कार्यो का मूल्याकन, भविष्य मे उनके कार्य की दिशाओं का निर्देशन, देश-विदेश के समस्त हिन्दी सेवियो और विद्वानो-लेखको को एक मच पर सगठित करने के लिए ये सम्मेलन आयोजित हुए। प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन १९७५ मे नागपुर मे आयोजित किया गया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता मारिशस के तत्कालीन प्रधान मन्त्री सर शिव सागर राम गुलाम ने की । भारत की प्रधान मत्री श्रीमती इन्दिरा गॉधी ने इसका उद्घाटन किया था। इस सम्मेलन मे विश्व मानव की चेतना, भारत और हिन्दी आधुनिक युग और हिन्दी आदि विषयो पर चर्चा हुई। सम्मेलन ने यह प्रस्ताव पारित किया गया कि सयुक्त राष्ट्र सघ मे हिन्दी को स्थान दिया जाय। इसी समय वर्धा मे विश्व हिन्दी पीठ की स्थापना की गई। द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन १९६६ मे मारिशस मे किया गया। तीसरा सम्मेलन १९८३ मे नई दिल्ली मे किया गया। इस सम्मेलन में प्रथम और द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन की उपलब्धियो को स्थायित्व प्रदान करने की दृष्टि से ठोस योजनाओ पर विचार किया गया तथा हिन्दी राष्ट्रीय स्तर के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ले जाने की प्रकिया को बल देने पर विचार हुआ। इसके अतिरिक्त हिन्दी के माध्यम से भारत तथा अन्य देशो के मैत्रीपूर्ण सम्बन्धो को दृढ करने पर उपाययोजना के सम्बन्ध मे सोचा गया। वसुधैव कुटुम्बकम के सम्बन्ध में जाति, धर्म, वर्ण और राष्ट्रीयता की संकुचित सीमा से परे हिन्दी को प्रेम सेवा और शाति की भाषा के रूप मे प्रतिष्ठित करने के लिए सभी हिन्दी प्रेमी ने संकल्प किया।

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति गुवाहाटी

गोपी नाथ बरलै जी के आग्रह से हिन्दी की १९३८ में असम मे हिन्दी समिति नाम से सस्था स्थापित की गयी जिसके कुछ काल बाद असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति नामकरण किया गया। संस्था प्राथमिक स्तर से स्नातक स्तर तक परिचय, प्रथमा, प्रवेशिका, प्रबोध विशारद और प्रवीण छः परीक्षाएँ आयोजित करती हैं। समिति का अपना निजी पुस्तकालय तथा प्रकाशन विभाग है वहां से हिन्दी की पाठ्य पुस्तके छापी जाती हैं। राष्ट्र सेवक नाम से एक त्रैमासिक पत्र भी प्रकाशित होता है।

ओडिया राष्ट्रभाषा परिषद् पुरी

महात्मा गॉधी के सहयोगी बाबा राघवदास की प्रेरणा से अनुसूया प्रसाद पाठक तथा रामानन्द शर्मा के प्रयास से पुरी राष्ट्रभाषा परिषद की स्थापना हुई। १९३७ से १९५४ तक यह सस्था वर्धा की सहायता से कार्य करती थी उसके बाद यह स्वतन्त्र हो गयी। इसका कार्य उडीसा के अहिन्दी भाषी लोगों को हिन्दी सिखाना था। आदिवासी अंचलो मे भी हिन्दी का प्रचार करना इसका लक्ष्य था। यह सस्था असम, पश्चिम बंगाल, आध्र प्रदेश आदि राज्यो मे भी हिन्दी प्रचार का कार्य करती है। इसके द्वारा प्राथमिक बोधिनी, माध्यमिक विनोद, प्रवीण और शास्त्री परीक्षाए की जाती है इसके सात हिन्दी विद्यालय भी चल रहे है। परिषद् के अधीन एक बडा और चार छोटे पुस्तकालय हैं।

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति बंगलूर

इस सस्था की स्थापना १९५२ ई० मे हुई। इसकी स्थापना का प्रमुख श्रेय श्री शिवानन्द स्वामी तथा आऊबाई को है। इस सस्था की सभी पदाधिकारी महिलाऍ है किन्तु इसका कार्यक्षेत्र केवल महिलाओ तक सीमित नहीं है। यह संस्था प्रथमा, मध्यमा, उत्तमा, हिन्दी भाषा-भूषण हिन्दी भाषा, प्रवीण आदि परीक्षाओं का सचालन करती है, इन्हे कर्नाटक असम, गोवा, बंगाल, केरल आदि राज्यो में मान्यता प्राप्त है। साहित्य निर्माण, प्रकाशन हिन्दी लेखन तथा भाषण प्रतियोगिता का आयोजन, नाटक मचन और कला प्रदर्शनी आदि इसके अन्य क्रियाकलाप है। इन सस्थाओ के द्वारा हिन्दी भाषा के विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका रही।

केरल हिन्दी प्रचार सभा तिरुवनन्तपुरम्

इस सस्था की स्थापना स्व० के वासुदेवन पिल्ले द्वारा सितम्बर १९३४ ई० मे की गयी। १९४८ तक यह संस्था हिन्दी प्रचार सभा मद्रास की परीक्षाओं मे सम्मिलित होने वाले विद्यार्थियो की परीक्षा के लिए तैयार करती थी। सम्प्रति सभा स्वयं हिन्दी प्रथमा, प्रवेश हिन्दी भूषण साहित्याचार्य आदि परीक्षाएं आयोजित करती है। केरलवासियों में हिन्दी के प्रति अनुराग पैदा करने मे इस संस्था का काफी योगदान है। इस संस्था के द्वारा ४०० विद्यालय खोले गये हैं। करीब ६०० हिन्दी प्रचारक प्रचार कार्य में जुटे हैं। इसका एक केन्द्रीय हिन्दी महाविद्यालय भी है जो विभिन्न परीक्षाओं में बैठने वाले छात्रो को हिन्दी पढाने

की व्यवस्था करता है। सभा द्वारा ४० पुस्तके प्रकाशित की गयी हैं। केन्द्र सरकार की सहायता से सभा द्वारा एक हिन्दी टकण व आशुलिपि विद्यालय की स्थापना की गयी है। १९६२ मे सस्थापक के नाम पर १०००० पुस्तको से युक्त एक पुस्तकालय भी खोला गया। केरल ज्योति नाम से एक पत्रिका भी निकलती है।

कर्नाटक हिन्दी प्रचार समिति

इस सस्था की स्थापना १९४९ मे हुई। १९६१ तक दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के लिए परीक्षार्थियो को तैयार करती थी। किन्तु उसके बाद यह स्वतन्त्र होकर परीक्षाएँ आयोजित करने लगी। समिति द्वारा राजभाषा प्रकाश राजभाषा विद्वान परीक्षाओ को भारत सरकार द्वारा हाई स्कूल, इण्टर तथा बी०ए० के समकक्ष मान्यता प्राप्त है। भारत सरकार की सहायता से ५० हिन्दी विद्यालय खोले गये है जिनमे प्रारम्भिक तथा उच्चतर हिन्दी शिक्षा की व्यवस्था है। समिति का ३००० पुस्तको से युक्त निजी पुस्तकालय है। इसके द्वारा कर्नाटक साहित्य का इतिहास, कर्नाटक दर्शन आदि पुस्तको का प्रकाशन भी किया गया है। भाषा पीयूष नाम से एक त्रैमासिक पत्रिका भी प्रकाशित होती है।

मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद् बंगलूर

इसकी स्थापना १९४३ ई० मे हुई। इस सस्था के प्रमुख उद्देश्य थे- अहिन्दी भाषियो मे हिन्दी का प्रचार करना, हिन्दी साहित्य के प्रति उनमे रुचि पैदा करना तथा हिन्दी तथा प्रातीय भाषाओ मे पारस्परिक आदान प्रदान को बढाना । यह संस्था हिन्दी तथा प्रदेश हिन्दी उत्तमा और हिन्दी इसकी परीक्षाए प्रचलित करती हैं इसके द्वारा एक मासिक पत्रिका प्रकाशन होता है। इन्ही मासिक पत्रों के द्वारा हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार में काफी योगदान मिला।

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा मद्रास

महात्मा गाँधी ने सन् १९१८ से दक्षिण भारत मे हिन्दी प्रचार का प्रारम्भ किया था। इसी वर्ष डॉ० एनी बेसेन्ट के द्वारा सी०पी० रामास्वामी की अध्यक्षता में मद्रास में सभा की स्थापना की गयी। सभा की चार प्रान्तीय शाखाएं- हैदराबाद, धारवाड़, लिचुरा, पल्ली और एरणाकुलम् में स्थापित की गयी। इसकी एक शाखा दिल्ली में भी है। सभा के द्वारा हिन्दी प्रचार समाचार और दक्षिण भारत नाम से हिन्दी मासिक पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं। इस सभा के द्वारा प्रारम्भिक से लेकर उच्चस्तरीय की परीक्षाएँ आयोजित की जाती हैं। प्रवेशिका

विशारद और प्रवीन इसकी उच्चस्तरीय परीक्षाए है। सभा के द्वारा १९६४ मे उच्च शिक्षा और शोध के लिए एक सस्था खोला गया।

गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद

विद्यापीठ की स्थापना १८ अक्टूबर सन् १९२० को हुई। इसके द्वारा हिन्दी, तीसरी हिन्दी, हिन्दी विनीत एव हिन्दी सेवक परीक्षाएँ आयोजित होती हैं।

बम्बई हिन्दी विद्यापीठ बम्बई

इसकी स्थापना १२ अक्टूबर १९३८ मे हुई। इसका प्रमुख उद्देश्य था हिन्दी केन्द्रो के अध्ययन का प्रकाशन पाठ्य पुस्तको को प्रकाशन, प्रचार परीक्षाओ के परीक्षा केन्द्र स्थापित करके परीक्षा लेना। इसके द्वारा सचालित परीक्षाओं मे हिन्दी उत्तमा को मैट्रिक हिन्दी भाषा रत्न को इण्टर साहित्य सुधारक परीक्षा को बी०ए० हिन्दी स्तर की मान्यता है। विद्यापीठ के द्वारा १०० पुस्तके प्रकाशित की गयी है। इसके आठ हजार पुस्तको से युक्त एक पुस्तकालय है।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, बम्बई

महात्मा गॉधी की हिन्दी उर्दू के संघर्ष को समाप्त करने के लिए हिन्दुस्तानी भाषा की जो समर्थन नीति थी उसी से प्रचार-प्रसार के लिए इस संस्था की स्थापना १९३८ मे हुई। इसके द्वारा लिखावट, प्रवेश परिचय, पहली, दूसरी, तीसरी, काबिल और विद्वान आदि परीक्षाओ का आयोजन होता है। इसके द्वारा पर्सियन लिपि भी सिखाने की व्यवस्था है। इससे सम्बद्ध महात्मा गॉधी मेमोरियल एव लायब्रेरी मे हिन्दी, उर्दू और फारसी की करीब २१००० पुस्तके हैं। इसके द्वारा हिन्दुस्तानी जबान नाम से त्रैभाषी द्विभाषी-मासिक पत्रिका का प्रकाशन होता है।

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा पूर्ण

मराठी भाषी प्रदेश मे हिन्दी के प्रचार के लिए लाला साहब कालेकर की अध्यक्षता मे १९३७ ई० मे महाराष्ट्र महासभा नाम से एक समिति बनायी गयी। ८वर्ष तक यह समिति वर्धा से सम्बद्ध रही। फिर १९४५ में यह महाराष्ट्र महासभा के नाम से स्वतन्त्र हुई। इसके द्वारा प्रवेश प्रवीण तथा पंण्डित की परीक्षाओं की हाईस्कूल, इण्टर एवं बी०ए० के बराबर मान्यता है।

हिन्दी विद्यापीठ देवधर

इस विद्यापीठ की स्थापना सन् १९२९ ई० मे देवनागरी लिपि तथा हिन्दी भाषा के विकास तथा राष्ट्रीय भावनाओ के विकास के लिए हुई। इसने अपने विद्यालय मे समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, गणित, तेलुगु, इतिहास आदि को सम्मिलित किया। विद्यालय का नाम गोवर्धन साहित्य महाविद्यालय रखा गया। विद्यापीठ द्वारा प्रारम्भिक स्तर से लेकर एम०ए० स्तर तक की शिक्षा की व्यवस्था की गयी है विद्यापीठ का अपना निजी पुस्तकालय है जिसमे १००० पुस्तके है।

हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद

इस सस्था की स्थापना सन् १९३२ ई० मे हुई। इसके २०० शिक्षण केन्द्र हैं। इसके द्वारा विशारद भूषन तथा विद्वान की परीक्षाए दी जाती हैं। इसके द्वारा एम०ए० स्तर की पढाई की व्यवस्था रखी गयी है। इसके द्वारा तेलुगु, मराठी, संस्कृत एवं कन्नड भाषाओ की कुछ साहित्यिक पुस्तको को हिन्दी और हिन्दी की पुस्तको को प्रादेशिक भाषाओं मे तेलुगु, उर्दू, मराठी आदि को हिन्दी मे अनूदित किया गया है।

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ

हिन्दी के प्रचार के लिए अनेक प्रान्तो एवं क्षेत्रो मे समय-समय पर संस्थाएँ बनी और उन्होने सक्रिय रूप से हिन्दी के प्रसार मे सहयोग दिया। इनके आपसी सहयोग और समन्वय की आवश्यकता की पूर्ति के लिए राष्ट्रीय स्तर पर १९६४ मे दिल्ली मे अखिल भारतीय हिन्दी सघ की स्थापना हुई। संघ द्वारा—

(क) संघ की ओर से पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण भारत की स्वैच्छिक हिन्दी सस्थाओ के कार्य कलापो का अध्ययन करने, उनकी समस्याओ का अध्ययन एवं समाधान करने, हिन्दी के प्रचार और प्रसार की दृष्टि से आवश्यक योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए क्षेत्रीय हिन्दी प्रचारकों, कार्यकर्त्ताओं के शिविरों का आयोजन किया जाता है।

(ख) अखिल भारतीय स्तर पर हिन्दी कार्यकर्ताओं के सम्मेलन तथा शिविरो का आयोजन किया जाता है।

(ग) हिन्दी तथा हिन्दीतर प्रदेशों के विद्वानो के भाषणों की व्यवस्था की जाती है।

(घ) हिन्दीतर भाषी वरिष्ठ साहित्यकारों की हिन्दी प्रदेशो मे सद्भावना यात्राएं आयोजित की जाती हैं।

(ङ) स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं के कार्यो मे समन्वय स्थापित करने का प्रयत्न किया जाता है।

(च) हिन्दीतर भाषी लेखको की पुस्तकों की प्रदर्शनी का आयोजन किया जाता है।

अध्याय-३

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना एवं उद्देश्य

सम्मेल· की स्थापना और उद् ·श्य

हिन्दी भाषा के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य डॉ० राम किशोर पृष्ठ ३६१-३६२

नागरी प्रचारिणी सभा के १७ वर्ष बाद सन् १९१० मे प्रयाग मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना हुई। सम्मेलन का प्रमुख उद्देश्य था हिन्दी साहित्य के समस्त अंगों को पुष्ट तथा उन्नत करना राष्ट्र लिपि देवनागरी लिपि का प्रचार-प्रसार करना, नागरी लिपि को लेखन तथा मुद्रण की दृष्टि से समृद्ध करना। हिन्दी भाषी राज्यो मे भाषा के प्रयोग को प्रचार करना, हिन्दी के विद्वानो तथा लेखको को पदक उपाधि तथा पारितोषिक से सम्मानित करना। हिन्दी भाषा द्वारा परीक्षाएँ लेना हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रमुख विभागों में परीक्षा विभाग सबसे महत्वपूर्ण है। सम्मेलन की परीक्षाओं का प्रारम्भ १९१८ से हुआ। सम्मेलन में प्रथमा एव उत्तमा की परीक्षाएँ संचालित होती है। हिन्दी और हिन्दीतर क्षेत्रों मे अनेक केन्द्रो पर ये परीक्षाएँ होती हैं। इनमे हजारो विद्यार्थी प्रति वर्ष सम्मिलित होते हैं। सम्मेलन की उत्तमा परीक्षा को बी०ए० आनर्स के समकक्ष मान्यता है। सम्मेलन की उत्तमा परीक्षाएँ मारिशस, फिजी, सुरीनाम, गुयाना में भी होती हैं सम्मेलन के प्रकाशन विभाग से बहुत सी शोधपरक तथा दुर्लभ पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है। यहां से पाक्षिक राष्ट्र भाषा सन्देश का प्रकाशन होता है जिससे राष्ट्र भाषा की विविध गतिविधियों एवं प्रगति के तत्वों से सम्बन्धित सामग्री का संचयन रहता है। इसके साहित्य विभाग से एक शोध पत्रिका प्रकाशित होती है। यह विभाग ज्ञान की अनुपलब्धि कृतियों के प्रकाशन और शोधकार्य को संचालित करता है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के पास हिन्दी पुस्तकों एवं पाण्डुलिपियो का बहुत बड़ा संग्रहालय है। सग्रहालय से प्रति वर्ष सैकडो स्वदेशी और विदेशी हिन्दी के अनुसंधानकर्ता लाभान्वित होते हैं। राष्ट्र भाषा प्रचार सर्व सग्रह प्रकाशक राष्ट्र भाषा प्रचार समिति वर्धा पृष्ठ - ३२-३६, सम्पूर्ण भारत वर्ष में हिन्दी भाषा और देव नागरी लिपि के प्रचार तथा साहित्य की उन्नति के लिए इस संस्था का जन्म संवत १९६७ सन् १९१० ई० मे हुआ। प्रारम्भ से ही सम्मेलन का प्रधान कार्य स्थान प्रयाग रहा। हिन्दी के सहयोग से सम्मेलन में गत पच्चीस वर्षो मे आशातीत सफलता प्राप्त करती है। इसका कार्य क्षेत्र दिन पर दिन व्यापक और सुसंगठित

होता जा रहा है। हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप मे प्रतिष्ठा प्राप्त करने मे सम्मेलन ने अत्यन्त महत्वपूर्ण उपयोग किया है तथा सम्मेलन का दृष्टिकोण आरम्भ से ही सर्वथा उदार और राष्ट्रीय रहा है। विश्व बोध महात्मा गॉधी के आग्रह पर राष्ट्रीय महासभा ने हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप मे स्वीकृत किया है और देश की व्यवस्थापिका का सभाओं एव सार्वजनिक जीवन मे हिन्दी को आदरणीय स्थान प्राप्त हो गया है। अब तक सम्मेलन के अधिवेशन देश के प्रत्येक प्रात के बडे-बडे नगरों मे हो चुका है जो इसकी लोकप्रियता और राष्ट्रीयता का परिचायक है। कलकत्ता, बम्बई, नागपुर, मद्रास आदि अहिन्दी केन्द्रों मे सम्मेलन का अधिवेशन हो चुका है। १९३८ मे भारत की राजधानी शिमला में सम्मेलन का अधिवेशन हुआ। अब तक सम्मेलन मे राष्ट्रभाषा की जो महत्वपूर्ण सेवा की है उसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।

सम्मेलन को प्रारम्भ से प्रसिद्ध देश भक्त हिन्दी प्रेमी बाबू पुरुषोत्तम दास टण्डन का सहयोग प्राप्त हुआ जिनके मतित्व के कारण सम्मेलन ने शीघ्र उन्नति की। १९१८ ई० मे इन्दौर अधिवेशन के साथ ही सम्मेलन के जीवन में एक नया अध्याय आरम्भ होता है। महात्मा गॉधी के सभापतित्व मे इस अधिवेशन मे दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार करने का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ तथा कुछ उतना ही युवको के उत्साह और लगन से इस कार्य मे आशातीत सफलता प्राप्त हुई । दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के उद्योग से दक्षिण भारत मे हिन्दी का अच्छा प्रचार हुआ है और अब तक वहॉ लगभग सात लाख स्त्री पुरुष लिख पढ सके है। इस सफलता से प्रोत्साहित होकर सम्मेलन ने अन्य अहिन्दी प्रान्तों में हिन्दी प्रचार के लिए हिन्दी प्रचार समिति की स्थापना की। समिति की ओर से बम्बई, गुजरात, महाराष्ट्र, सिन्ध, उत्कल, आसाम और बंगाल मे हिन्दी प्रचार का कार्य सुचारु रूप से चल रहा है। इस कार्य में बहुत सफलता मिल रही है और इन प्रान्तों में कार्य करने के लिए अच्छे प्रचारक तैयार करने के उद्देश्य से वर्धा मे राष्ट्र भाषा अध्यापक मंदिर स्थापित किया गया है। हिन्दी साहित्य के अध्ययन और उन्नयन के उद्देश्य से सम्मेलन ने हिन्दी की परीक्षाऍ चला कर जनता मे साहित्य के प्रति अभिरुचि उत्पन्न की है। सम्मेलन की प्रथमा, मध्यमा और उत्तमा के परीक्षाऍ हिन्दी संसार में बहुत लोकप्रिय हुई हैं। विश्वविद्यालयों के उच्च शिक्षा पाये हुए विद्यार्थी मध्यमा और उत्तमा की परीक्षाओँ में बड़े चाव से बैठते है। प्रचार समिति ने हाल ही में अहिन्दी प्रान्तों के विद्यार्थियों के लिए तीन परीक्षाएँ स्थापित की है जो वर्ष मे दो बार होती है। राष्ट्र भाषा की कोविद परीक्षा मे उत्तीर्ण होने पर विद्यार्थी को राष्ट्र

भाषा कोविद की उपाधि प्रदान की जाती है सम्मेलन की परीक्षाओ की लोकप्रियता मे किस प्रकार उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है यह निम्न कोष्ठक से भली-भांति प्रचार हो जायेगा। सम्मेलन की परीक्षाए सवत १९७१ (१९१५ ई०) में आरम्भ हुई है। उस वर्ष परीक्षाओ की सख्या २० और केन्द्र ८ थे। उसके बाद इस प्रकार परीक्षाओ की सख्या बढी—

संवत	**परीक्षार्थियों की संख्या**
१९८३	१०३५
१९८४	१३२६
१९८५	१४३५
१९८६	१६९२
१९८७	१२६९
१९८८	११६६
१९८९	१११६
१९९०	१२३१

सवत १९९३ मे भिन्न-भिन्न परीक्षाओ के परीक्षार्थियो की संख्या नीचे लिखे के अनुसार थी।

परीक्षा	**सम्मिलित हुए**	**उत्तीर्ण**
उत्तमा	७३	५६
सम्पादन कथा प्रवेशिका	१	१
वैद्य विशारद	४४	१८
कृषि विशारद	८	४
मध्यमा	६७९	३७३
प्रथमा	८०३	५७९
मुनीमी	५	३
आरा भजन वीसी	१२३	१०८
राष्ट्र भाषा प्रचार	१७७३	११५५

इस प्रकार उपर्युक्त कोष्ठक से स्पष्ट है कि सम्मेलन परीक्षाऍ दिन पर दिन लोकप्रिय हो रही है। देश के प्रत्येक भाग मे परीक्षा केन्द्र स्थापित हैं और उनकी संख्याओं में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही हैं।

संवत	परीक्षा केन्द्रों की संख्या
१९८४	१९०
१९८५	२२०
१९८६	२८०
१९९०	२५१
१९९१	२५७
९९९२	२५७
१९९३	३८०
१९९४	४८७
१९९५	५३५

सम्मेलन की ओर से केन्द्रो का निरीक्षण करने के लिए निरीक्षक भेजे जाते है जो केन्द्र की व्यवस्था की देखभाल करते है।

इन वर्ष से सम्मेलन ने एक विद्यालय खोला है जिसमे हिन्दी शार्टहैड और टाइप राइटिग की शिक्षा दी जाती है। साहित्य विभाग सम्मेलन का सदा से यह उद्देश्य रहा है कि हिन्दी मे उच्च कोटि की पुस्तके प्रकाशित की जाये अब तक सम्मेलन के द्वारा ८३ पुस्तके प्रकाशित हो चुकी है। इनमे ३३ पुस्तके कार्य विवरण और लेख माला से सम्बन्ध रखती हैं शेष पुस्तको मे अधिकांश सम्मेलन पत्रिका प्रकाशित होती है जो सम्मेलन का मुख्य पत्र है। इसे उच्च कोटि की साहित्यक पत्रिका बनाने का प्रत्यन किया जा रहा है सम्मेलन मे इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान राय बहादुर पडित, गौरीशकर, हीरा चन्द्र जी ओझा को उनके सत्तर वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भारतीय अनुशीलन ग्रंथ भेट की। यह बहुमूल्य ग्रंथ श्री जयचन्द्र विद्यालकार के सम्पादन मे तैयार हुआ। यह हिन्दी की एक महत्वपूर्ण चीज है। संग्रहालय विभाग कानपुर के त्रयोदश अधिवेशन मे श्री पुरुषोत्तम दास जी टंडन के सभापतित्व में एक वृहद् हिन्दी संग्रहालय स्थापित करने का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ था संग्रहालय के लिए टडन जी ने धन संग्रह के लिए बहुत उद्योग किया। १६ मई १९३२ ई० को संग्रहालय भवन की नीव रखी और इसका सुन्दर भवन १९३६ ई० में तैयार हो गया। महात्मा गॉधी ने इस सग्रहालय का उद्घाटन ५ अप्रैल १९३६ ई० को किया। इस भवन को बनाने में २६००० रुपये लग चुके हैं। उद्घाटन के समय बहुतेरे साहित्यकार और प्रतिष्ठित व्यक्ति उपस्थित थे। हिन्दी के प्राचीन ग्रंथ जो दिन पर दिन नष्ट और लुप्त होते जा रहे हैं, उनको सुरक्षित

रखने के लिए यह साहित्यिक सग्रहालय स्थापित हुआ है। इसके साथ रखने के लिए यह सात्विक साथ ही प० बनारसीदास चतुर्वेदी के एकत्र किये धन से ब्रज भाषा के सुप्रसिद्ध कवि स्व० सत्यनारायण की स्मृति मे सत्यनारायण कुटीर का उद्घाटन हुआ। यहाँ एक वाचनालय है जिससे हिन्दी के प्रसिद्ध समाचार पत्र और पत्रिकाएँ आती हैं। सग्रहालय के पुस्तकालय मे हस्तलिखित और प्रकाशित पुस्तके है जिसका उपयोग वहाँ पर किया जाता है। इस समय सग्रहालय मे सगृहीत पुस्तके इस प्रकार है—

पुस्तकें	**संख्या**
दर्शन और ज्योतिष	२८९
धर्मशास्त्र	१४८
पुराण	३०
विज्ञान	५२५
समाजशास्त्र	२४३
जीवन चरित	२०४
भूगोल	२२
भ्रमण	३७
इतिहास	२३७
कोष	४०
नाटक	१७४

अन्य हस्तलिखित पुस्तके है १५०

पारितोषक तथा पुस्कार सम्मेलन के अधीन मगला प्रसाद से कसरिया मान सिह और मुरारका पारितोषिक प्रदान किये जाते हैं। इनके अतिरिक्त हिन्दी को देशव्यापी बनाने के विचार से सम्मेलन ने हिन्दी संसार के सामने दो प्रभावशाली योजनाए रखी हैं, जिनकी ओर विद्वानो का ध्यान जाना आवश्यक है। इन्दौर के दूसरे अधिवेशन १९३५ ई० में सम्मेलन ने देवनागरी लिपि के सम्बन्ध में एक मन्तव्य स्वीकृत किया इसके द्वारा श्री काका साहब कालेलकर की अध्यक्षता मे लिपि सुधार समिति स्थापित हुई। जिसमे देवनागरी लिपि माला को छापने, लिखने और पढ़ने में सरल है और वैज्ञानिक बनाने के विषय पर गभीर विचार किया। इस समिति की सिफारिशें बहुत महत्वपूर्ण हैं और विद्वानों द्वारा माने जाने पर इसका व्यापक प्रभाव पड़ने वाला है। इस अधिवेशन मे दूसरा मन्तव्य देश की प्रान्तीय भाषाओ के

साहित्यको के साथ सम्बन्ध स्थापित करने तथा हिन्दी भाषा की वृद्धि मे उनका सहयोग प्राप्त करने के सम्बन्ध मे था। इस प्रस्ताव के अनुसार श्री कन्हैयालाल मुशी के प्रत्यन से भारतीय साहित्य परिषद् का संगठन हुआ। राष्ट्र भाषा द्वारा भारत की सास्कृतिक एकता के महत्वपूर्ण उद्देश्य से इस सस्था की स्थापना हुई है। नागपुर सम्मेलन मे हिन्दी के लिए स्थापना हुई। नागपुर सम्मेलन मे हिन्दी के लिए भेद तथा व्याकरण के अन्य विषयो पर विचार करने के लिए एक व्याकरण समिति कायम हुई जिसके सयोजक श्री पुरुषोत्तम दास जी टडन बनाये गये। इस समिति ने अपनी रिपोर्ट पेश की है जिसमें व्याकरण के नियमो के विषय मे कुछ परिवर्तनों की सिफारिशे की गयी है। समिति का निर्णय अत्यन्त महत्वपूर्ण है तथा आशा है कि इन पर हिन्दी के विद्वान समुचित विचार करेंगे। हिन्दी साहित्य सम्मेलन की परीक्षाये सम्मेलन की अधीन हिन्दी विश्वविद्यालय द्वारा निम्नलिखित परीक्षाएं चलायी जाती है प्रथमा, मध्यमा, उत्तमा, वैध विशारद, कृषि विशारद, सम्पादन कला प्रवेशिका सम्पादन कला रत्न, आरायजन वीसी मुनीमी और राष्ट्र भाषा प्रचार-प्रसार परीक्षाएं। हिन्दी विश्वविद्यालय की परीक्षाओं के लिए निम्नलिखित मूल्य नियत किया जाता है।

परीक्षा का नाम	**परीक्षा फीस**
प्रथमा	२५०
मध्यमा	६
वैद्य उत्तमा	११
विशारद	६
कृषि विशारद	६
सम्पादक कला रत्न	११
मुनीमी	३
राष्ट्रभाषा परिचय	९
साहित्याचार्य	२५
सम्पादन कला प्रवेशिका	११
अरायजनवीसी	३
राष्ट्र भाषा सन्देश	५० पैसा
राष्ट्रभाषा कोविद	२
शीघ्र लिपि विशारद	२

इन परीक्षाओ के लिए परीक्षार्थियो को जुलाई तक आवेदन पत्र सहित नियमित शुल्क भेज देना अनिवार्य है। यदि परीक्षार्थियो को किसी विषय या विषयो मे उत्तीर्ण हुआ तो उसे अगले वर्ष की उसी विषय पर विषयो मे परीक्षा देने का अधिकार होगा पर उसे कोई श्रेणी न मिलेगी और वह विभाजित प्रणाली के अनुसार उत्तीर्ण समझा जायेगा। राष्ट्र भाषा प्रचार परीक्षा सम्मेलन की तरफ से राष्ट्र भाषा प्रवेश राष्ट्र भाषा परिचय और राष्ट्रभाषा कोविद नामक तीन परीक्षा मे चलाई जाती है इनमे बिना स्त्री पुरुष व जाति कर्म के भेद के ये सब विद्यार्थी बैठ सकते है जिसकी मातृ भाषा हिन्दी हो। ये साधारणतया साल में दो बार फरवरी तथा सितम्बर मे होती है। कोई विद्यार्थी राष्ट्र भाषा प्रवेश तथा परिचय मे सीधे बैठ सकेगा पर कोविद के लिए विशेष अनुमति प्राप्त करनी होगी। राष्ट्र भाषा प्रवेश इसमे दो प्रश्न पत्र होंगे, परिचय मे दो प्रश्न पत्र होगे, कोविद मे तीन प्रश्न पत्र होगे। अन्य परीक्षाओ तथा विस्तृत विवरण के लिए सम्मेलन की विवरण पत्रिका देखना आवश्यक है जो वहाँ से तीन आने का टिकट भेजने से मिल सकती है ।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इतिहास प्रथम खण्ड नरेश मेहता पृष्ठ ४६, ४७, ४८ जिनके कारण हिन्दी भाषी क्षेत्र मे अपनी भाषा के स्वत्व एवं अधिकार की भावना प्रबल होने लगी । यातायात के आधुनिक तीव्र साधनो पश्चिमी शिक्षा तथा समाचार पत्रो के प्रकाशन के कारण हिन्दी भाषियो को भी अपनी भाषा के महत्व का अनुभव होने लगा। भारतीय इतिहास मे यह युग पुर्नजागरण काल कहलाता है। स्वामी दयानन्द ने देश को वेदो के महत्व से अवगत कराया तो स्वामी विवेकानन्द ने भारतीय अस्मिता की वेदान्ती व्याख्या प्रस्तुत की । इस प्रकार देश का मनस एक सर्वतोमुखी क्राति के लिए उद्यत हो चुका था ऐसे ही समय नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना एक ऐतिहासिक घटना थी। उक्त सभा नैवेशारण कृष्ण सप्तमी तद्नुसार १ मई १९१० के अपने अधिवेशन में यह निश्चय किया कि हिन्दी भाषा की उन्नति के लिए देश मे जो समय-समय पर अनेक संस्थाएं तथा सभाएं बनी उनके फलस्वरूप आज इस भाषा के बोलनें पढने वालों की संख्या करोडों मे की जा सकती है। फिर भी राजकीय तथा राष्ट्रीय स्तर पर भाषा के आन्दोलन तथा हिन्दी भाषियो का कोई प्रभाव नहीं हो पाता है। साथ ही हिन्दी भाषा के साहित्य में अभी अनेक कमियॉ है। अतः भाषागत तथा साहित्यगत इन समस्याओ पर विचार करने के लिए हिन्दी भाषा के लेखक-पाठक वक्ता तथा कार्यकर्त्तागण यदि एकत्र हो सकें और भाषा तथा साहित्य की उन्नति के लिए कुछ उपाय सोचे तो हमारी भी भाषा और साहित्य अन्य भारतीय भाषाओं की भॉति

अपने स्वत्व एव अधिकार का गौरव प्राप्त कर सकेगे। मातृभाषा के इस हितचिन्तन के हेतु ही यह निर्णय लिया गया कि शीघ्र ही काशी मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन नाम से एक आयोजन किया जाय। इस हेतु काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने तत्कालीन विशिष्ट एव विद्वान व्यक्तियो की एक स्वागतकारिणी समिति बना दी जिसमें २८ व्यक्ति सम्मिलित थे। सम्मिलित व्यक्तियो मे महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, बाबू शिव प्रसाद गुप्त, प० कृष्णाराम मेहता, बाबू श्याम सुन्दर दास, पण्डित राम नारायण मिश्र आदि विशिष्ट व्यक्ति मनोनीत किये गये। उक्त समिति ने देश भर की हिन्दी संस्थाओं, सभाओं। विद्वानों, लेखको तथा कार्यकर्त्ताओ से पूछा कि इस प्रस्तावित सम्मेलन का सभापति किसे चुना जाय। लोगो ने एक मत से इस पद के हेतु महामना मालवीय जी, का प्रस्तावित नाम स्वीकार किया।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की सारी ऐतिहासिक गतिविधियों को देखने पर ऐसा लगता है कि सम्मेलन का सारा कार्यालय महामना मालवीय जी, महात्मा गॉधी और राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन को केन्द्र मे रखकर सम्पन्न हुआ। टण्डन जी के बाद सम्मेलन के संगठन मे एक प्रकार का बिखराव दिखाई देता है। जिस प्रकार गॉधी जी के बाद कांग्रेस में क्रमश. विघटन ही प्रमुख होता गया, उसी प्रकार टण्डन जी के बाद सम्मेलन मे भी विघटन प्रमुख हुआ। जो सस्थाएं व्यक्ति को केन्द्र मे रखकर स्वरुपित होती है। उनकी परिणति प्राय इसी प्रकार की होती है। इस प्रकार के केन्द्रीय पुरुष एक ओर जहां लोगो के जुडे रहने का कारण होते हैं वहॉ उनके बाद एक प्रकार की रिक्तता भी सामने आती है। शायद इसका कारण यह भी रहा हो कि जब इस प्रकार की संस्थाएं या केन्द्रीय व्यक्ति लक्ष्य या उसका आभास प्राप्त कर लेते है तब उनमे पूर्वोक्त ऐतिहासिक जीवन्तता नही रह जाती। इसलिए एक प्रकार की अप्रासंगिकता अनुभव होने लगती है। लेकिन लक्ष्य तक पहुंचने या पहुचाने का जो ऐतिहासिक कार्य जिसे ये संस्थाएं और केन्द्रीय व्यक्ति किया करते है वह निश्चय ही महत्वपूर्ण होता है। कोई भी इतिहास या उसका विभाजन किन्हीं केन्द्रीय व्यक्तियो के कार्यकलाप को आधार बनाकर ही किया जाता है। इसलिए सम्मेलन के इस इतिहास को हम इसी सार्वजनीन परिपाटी एवं परम्परा के अनुरूप नवरात्रि के पुण्य अवसर पर १० अक्टूबर १९१० को दिन के साढे ग्यारह बजे देश के विभिन्न अंचलो से आये हुए ५०० हिन्दी प्रेमियो तथा हजारो की संख्या में उपस्थित दर्शकों श्रोताओं की उपस्थिति में तीन दिन तक हिन्दी साहित्य सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन नागरी प्रचारिणी सभा के खुले प्रांगण में मालवीय युग, गाँधी युग, टण्डन युग आदि नामो से अभिहित करना चाहेगे।

अधिवेशन एक सज्जित विशाल मण्डप के नीचे सम्पन्न हुआ । यह सयोग ही था कि भाषा यज्ञ का यह सकल्प अनुष्ठान नवरात्रि जैसे पुण्य क्षण मे आरम्भ हुआ। स्वागत गान आदि के उपरान्त स्वागत समिति के सभापति ने इस आयोजन की महत्ता एव सार्थकता पर प्रकाश डाला। उन्होने देश मे काम करने वाली अनेक हिन्दी सस्थाओ की चर्चा तथा उल्लेख किया। साथ ही इस बात पर बल दिया कि भाषा जागृति के इस कार्यक्रम को एक सूत्रित तो किया ही जाय साथ ही सामयिक दिशा। निर्देश भी दिया जाय। उन्होने सन् १९०१ की ससार की जनसख्या गणना के आधार पर बताया कि इस समय ससार मे १८५ भाषाएं हैं। विश्व भाषाओ के इस परिवार मे २५ आर्य भाषाए बोलने वालो की सख्या सन् १९०१ मे २२ करोड के लगभग थी। उन दिनो की गणना के अनुसार हिन्दी भाषियो की सख्या लगभग १३ करोड थी। यदि उसमे हिन्दी समझने वालों की भी सख्या शामिल कर ली जाती तो निश्चय ही हिन्दी भारत की एकछत्र राष्ट्र भाषा मानी जा सकती थी। भारत के लिए एक सामान्य भाषा की परिकल्पना का स्वप्न हिन्दी क्षेत्र के बाहर भी लोग देखने लगे थे और वे अहिन्दी भाषी हिन्दी को ही इस योग्य समझते थे। इस सम्बन्ध में गुजरात के बडौदा नरेश, बगाल के रमेश चन्द्र दत्त तथा महाराष्ट्र के डॉ० राम कृष्ण गोपाल भण्डारकर जैसे विद्वान मनीषियो ने बडौदा में भाषा की इस समस्या को लेकर एक महत्वपूर्ण आयोजन किया था। इस दृष्टि से देखने पर भी एक वर्ष बाद हिन्दी साहित्य का यह प्रथम अधिवेशन हिन्दी भाषियो की उस इच्छा की पूर्ति करने के लिए था कि स्वयं हिन्दी क्षेत्र के लोग भी भाषा की समस्या को राष्ट्र राज्य और साहित्य तीनो ही स्तर पर एक जागरूक समाज के रूप मे अनुभव करते हैं। महामना मालवीय जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में हिन्दी भाषा के स्वरूप, हिन्दी को एतिहासिक स्थिति अन्य भारतीय भाषाओं से समकक्षता हिन्दी भाषियो का अपने भाषा के प्रति दायित्व, हिन्दी और उर्दू का सम्बन्ध तथा अन्त मे हिन्दी भाषा के प्रयोग पर उन्होने अभिमत प्रगत किया।

"हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इतिहास प्रथम खण्ड सन् १९१० से १९७६ तक श्री नरेश मेहता पृष्ठ ४६, ४७, ४८ हिन्दी साहित्य सम्मेलन।

अमृत महोत्सव डॉ० गौरीशंकर गुप्त पृष्ठ १।

स० डॉ० सत्य प्रकाश मिश्रा

जिसके जीवन के बीते साढ़े सात दशक, जिसकी सेवा-महिमा का कोई पार नही।

जिसने झेला सघर्ष, कठिन, दु ख बहुत सहे, जिसकी मिसाल इस दुनिया मे दो चार नही। राजर्षि प्राण जिसके जिनका यश पुण्य साथ, वह सम्मेलन है अमृत महोत्सव मना रहा। हिन्दी की सेवा दिन दूनी चौगुनी रात वह करे, अमर हो प्रभु से मै यह मना रहा। प्रधान मत्री राट्रकवि परिषद् गायघाट वाराणसी २२१००१ स्मा०। सम्मेलन

सम्पादक डॉ० सत्य प्रकाश मिश्र, हिन्दी साहित्य अमृत महोत्सव हिन्दी साहित्य सम्मेलन एक्ट १९६२ ई०

हिन्दी साहित्य सम्मेलन एक विहंगावलोकन श्री विभूति मिश्र प्रबन्धमंत्री १९६२ ई० का अधिनियम सख्या १३ हिन्दी साहित्य सम्मेलन को जिसका प्रधान कार्यालय इलाहाबाद है। राष्ट्रीय महत्व की सख्या घोषित करने के लिए और उसके निगमन को उपबन्धित करने के लिए उपरिलिखित अधिनियम भारत गणराज्य के १३वें वर्ष मे ससद द्वारा पारित किया गया। उक्त अधिनियम के अन्तर्गत भारत सरकार ने सम्मेलन के प्रशासन के लिए प्रथम शासन निकाय का गठन किया और यह शासन निकाय जून १९६२ से कार्य करने लगा। उक्त प्रथम शासन निकाय मे निम्नलिखित महानुभाव पदाधिकारी एव सदस्य थे।

१ श्री श्रीप्रकाश जी - अध्यक्ष

२. श्री गोपाल चन्द्र सिह - सचिव

३. श्री कन्हैया लाल माणिक लाल मुंशी - सदस्य

४. श्री मोहन लाल भट्ट

५. श्री मोटूरि सत्यनारायण

६ श्री सुरेश मोहन घोष

७ श्री बाल कृष्ण राव

८. श्री राधा नाथ रथ

९ श्री सेठ गोविन्द दास

१०. श्री मौलि चन्द्र शर्मा

११. डॉ० संत प्रसाद टण्डन

१२. डॉ० बियोगी हरि

१३. श्री रामधारी सिंह दिनकर

शासन निकाय विरुद्ध १९६२ उच्चतम न्यायालय याचिका प्रस्तुत की। माननीय उच्च न्यायालय दिनाक २३ फरवरी १९७१ के आदेश मे शासन अधिनियम को अवैध घोषित किया। उच्चतम न्यायालय का मुख्य अंश इस प्रकार है। "सघ बनाने के अधिकार मे उसका सातत्य भी सम्मिलित है और संघ की बनावट मे परिवर्तन लाने वाला कोई भी कानून संघ बनाने के अधिकार का उल्लघन करता है। सम्मेलन के गठन में संस्था के साथ जहॉ तक यह अधिनियम हस्तक्षेप करता है वहॉ तक संस्था के मूल सदस्यो के सगठन बनाने की धारा १९-१ सी के अधीन गारण्टी प्राप्त अधिकार का उल्लघन करता है। " इस प्रकार इस वर्ष की समाप्ति तथा आगामी कुछ महीने आर्थिक दृष्टि से सम्मेलन के लिए बडे ही सकटपूर्ण है। आपको सम्मेलन की आर्थिक स्थिति के सम्बन्ध मे कुछ ऐसी सूचनाएं देनी है जिनसे आपको स्वभावत धक्का लगेगा। "सम्मेलन के पिछले दो-तीन वर्षो मे घाटो मे उत्तरोत्तर बढती हुई महॅगाई, अंग्रेजी हिन्दी कोश पर किये गये व्यय आदि के कारण इतना अधिक धन व्यय हो गया है कि आगामी दो-तीन महीनों मे कर्मचारियों को वेतन बॉटने का भी सकट पैदा हो गया है। इस प्रकार परीक्षार्थियो की सख्या इस प्रकार है।

वर्ष	**परीक्षार्थियों की संख्या**
१९६२	३६००५
१९६३	३१२८४
१९६४	२५८९९
१९६५	२६८००
१९६६	२७४५७
१९६७	२९५८०
१९६८	२९२३७
१९६९	३५३५५
१९७०	३२४१५
१९७१	२८०७६
१९७२	३९७३२
१९७३	४५७०६
१९७४	५०८९६
१९७५	५२५८०

१९७६	५६२३५
१९७७	६५३९०
१९७८	६९८८८
१९७९	७२१४३
१९८०	९१५७१
१९८१	८४१८४
१९८२	८८७२७
१९८३	९५८६७
१९८४	१०३४००
१९८५	९५०००
१९८६	९६७००
१९८७	१००५००

हिन्दी और हिन्दी साहित्य सम्मेलन अमृत महोत्सव स्मारिका श्री नागेश्वर द्विवेदी पृष्ठ ७२, ७३। डॉ० सत्य प्रकाश मिश्र हिन्दी साहित्य सम्मेलन का ७५ वर्षो का इतिहास राष्ट्रभाषा के जागरण का इतिहास रहा है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना के पूर्व हिन्दी भाषा पूर्णत उपेक्षित थी। राष्ट्र नाम की कोई वस्तु नही थी। राष्ट्रीयता की भावना एक दम दबी हुयी थी सरकारी भाशा अंग्रेजी थी। आज के हिन्दी भाषा भाषी क्षेत्र मुख्यतः वर्तमान बिहार, उत्तर-प्रदेश, परियाणा, पंजाब, मध्यप्रदेश, की अदालती भाषा उर्दू लिपि फारसी की राष्ट्र की भावना यद्यपि राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, विवेकानन्द, केशव चन्द सेन, लोक मान्य बाल गंगाधर तिलक, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आदि के द्वारा हिन्दी के माध्यम से देश में अभिव्यक्त हो रही थी फिर भी अंग्रेजी भाषा का प्रभाव व्यापक रूप से बढ़ रहा था। ऐसी परिस्थिति में भारत तथा भारतीय के धुरन्धर समर्थक भारतीय संस्कृति के आराधक, समर्थक तथा अनुयायी महामना प० मदन मोहन मालवीय ने हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि के समर्थक, प्रचार एव प्रसार के लिए अथक परिश्रम किया। महावीर प्रसाद द्विवेदी, जयशकर प्रसाद, प्रेमचन्द, मैथिली शरण गुप्त आदि ने भी अपनी लेखनी का उपयोग हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि को समृद्ध बनाने में किया ऐसे ही वातावरण व समय में हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की नींव डाली गयी। राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन के कन्धो पर इसका भारी बोझ प्रारम्भ से ही बढा। हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने अपना मुख्य कार्य हिन्दी

भाषा तथा देवनागरी लिपि के प्रचार-प्रसार तथा इसको प्रोत्साहन देने के लिए देश-विदेश मे परीक्षाऍ लेना और उपाधियॉ देने तक के पहले ही सीमित रखा। फिर हिन्दी साहित्य मे मौलिक ग्रन्थ रचना तथा अन्य भाषाओ के महत्वपूर्ण ग्रन्थों के अनुवाद को भी हाथ मे लिया। धीरे-धीरे महत्मा गॉधी डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ऐसे महापुरुषो का नेतृत्व व समर्थन पाकर हिन्दी साहित्य सम्मेलन का प्रचार-प्रसार बहुत तीव्रता से बढा और सारे देश का ध्यान एक राष्ट्र भाषा के निर्माण की ओर गया। एक दिन वह भी आया जब देश स्वतन्त्र हुआ और हिन्दी को राष्ट्र भाषा का गौरवमय पद प्राप्त हुआ। हिन्दी आज देश की सम्पर्क भाषा के रूप मे बडी तीव्रता से आगे बढ रही है। अन्य भारतीय भाषाओ को हिन्दी के द्वारा बल प्राप्त हो रहा है। अग्रेजी का प्रभाव कम हो रहा है। हिन्दी विश्वविद्यालय शिक्षा का माध्यम न केवल अपने देश मे बन रही है बल्कि दुनिया के अनेक विश्वविद्यालय मे वह शिक्षा का विषय बन चुकी है। आज विश्व मे जितनी भाषाए बोली समझी जा रही है। उसमें हिन्दी का तीसरा स्थान है। यह सब जो कुछ हुआ है और हो रहा है। उसका श्रेय यदि किसी को सर्वाधिक मिलना चाहिए तो हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग को ही। हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इतिहास भारतीय स्वाधीनता के इतिहास का ही एक पृष्ठ बना है। जन जागरण मे इसका प्रमुख हाथ रहा है। हिन्दी भाषा भाषी क्षेत्र मे जन-जन मे जो चेतना स्वाधीनता की छटपटाहट पैदा हुई वह हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा हिन्दी भाषा के कवियों लेखको के उद्घोष तथा लेखो, कहानियों, उपन्यासो का ही प्रभाव रहा है। देश की ठेठ जनता तक स्वाधीनता के आन्दोलन का सदेश महात्मा गॉधी। पं० जवाहर लाल नेहरू, नेता जी सुभाषचन्द बोस आदि नेताओ के द्वारा हिन्दी भाषा के माध्यम से ही पहुॅचा है। इस तरह की पृष्ठभूमि बनाने मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग नें बहुत ही प्रशसनीय कार्य किया है। खेद है कि स्वाधीनता के तुरन्त बाद जब हिन्दी भाषा के व्यापक रूप से फलने फूलने और प्रचार-प्रसार का राष्ट्रव्यापी प्रभाव स्थापित करने का समय आया तो सम्मेलन के उज्ञवल भविष्य की आशा मे आधिपत्य स्थापित करने की खीचतान मे तीव्र मतभेद पैदा हो गया। विवाद न्यायालय तक पहुॅच गया। सरकार के हस्तक्षेप के बावजूद आपसी विवाद न सुलझ सका। राजर्षि टण्टन जी जो संस्था के प्राण थे, उनकी अन्तर्रात्मा को बहुत ठेस लगी। सम्मेलन स्वाधीनता के बाद के अपने कर्त्तव्यपालन मे इसी विवाद के कारण पूर्णतः असफल रहा। सम्मेलन की ही नहीं, हिन्दी भाषा देवनागरी लिपि की प्रगति में बडी बाधा आयी। प्रसन्नता की बात है कि पिछले कुछ दिनों से यह गुत्थी सुलझ गयी है। सम्मेलन के गत वर्षो का इतिहास कई

दृष्टियो से दु खदायी, खेदजनक होते हुए भी भविष्य आशामय दिखायी दे रहा है। हिन्दी के जिन सेवको के हाथ मे सम्मेलन का कार्यभार आया है वे उत्साही, निष्ठावान, लगन शील व्यक्ति है। धुन के पक्के है। आशा है, जब सम्मेलन अपने जीवन के ७५ वे वर्ष मे प्रवेशक कर रहा है वह अपने महान हिन्दी सेवको का आशीर्वाद पाकर नये उत्साह के साथ तथा नयी प्रेरणा लेकर देश विदेश मे भारत भारती का सन्देश गुँजाने का माध्यम बनेगी। सारे देश की आशाभरी दृष्टि सम्मेलन की ओर लगी है।

सम्मेलन और उसका कार्य, डॉ० सन्त प्रसाद टण्डन, अमृत महोत्सव, डॉ० सत्य प्रकाश मिश्रा ८७, ८८, ८९, ९०, ९१,,९२।

हमारे देश मे कमी एक राष्ट्र की भावना नही रही। छोटे-छोटे अनेक राज्यो में यह देश बटा रहा। यही कारण है कि समय-समय पर यहॉ विदेशियो का आक्रमण होता रहा और हम उनसे पराजित होते रहे। ग्रीक आये और शक, कुषाण और हूण आये। इन सबो ने हमे पराजित किया और वे यहीं बस गये। उनका अपना कोई विशिष्ट धर्म नही था। इस कारण वे सब हिन्दू धर्म मे आत्मसात हो गये। फिर इस्लाम के अनुयायी आये और उन्होने देश के विभिन्न भागो पर कब्जा जमाकर अपना राज्य स्थापित किया। उनमे अपनी भाषा और धर्म की कट्टरता थी जिसके कारण उन्होने हिन्दू धर्म को नहीं अपनाया और सस्कृति चलायी। मुगल काल तक जितने विदेशी आक्रमण इस देश मे हुए सब उत्तर की ओर से हुए। इस कारण इन विदेशियो की भाषा और सस्कृति का प्रभाव उत्तर प्रभाव पर ही अधिक पडा। इसी कारण हम देखते है कि आज भी दक्षिण भारत मे भारतीय संस्कृति का रूप उत्तर भारत की अपेक्षा कहीं अधिक स्वच्छ है। मुसलमानी शासन काल मे फारसी राजभाषा रही। जब अंग्रेजों ने यहॉ अपने शासन की स्थापना की तो स्वभावतः उन्होंने अंग्रेजी भाषा का प्रवेश राजकाज मे किया। धीरे-धीरे अंग्रेजी भाषा का महत्व बढ़ता गया और फारसी का घटता गया यद्यपि कचहरी की भाषा बहुत काल तक अंग्रेजी के साथ-साथ फारसी बनी रही, हमें यह मानना पड़ेगा कि अंग्रेजों ने पूरे भारतवर्ष तक को एक तंत्र मे बॉधा और प्रथम बार हममे शक राष्ट्र की चेतना आयी। अत. यह स्पष्ट है कि राष्ट्रीय भावना की कमी ही सबसे बडा कारण रहा जिसमें हमें आक्रामकों के आगे झुका दिया और हम उनके अधीन हो गये।

राष्ट्रीय भावना उत्पन्न करने के लिए धर्म और सस्कृति से कहीं अधिक शक्तिशाली

माध्यम भाषा है। भाषा ही से परस्पर अपनत्व की भावना उत्पन्न होती है और व्यक्तियो को एक सूत्र मे बाधती है। यूरोप मे अनेक अलग-अलग राष्ट्र है और उनकी अपनी भाषाएँ भिन्न है। यद्यपि वे सब एक ही इसाई धर्म को मानने वाले है, फिर भी उनमे कोई अपनत्व की भावना नही है। वे बराबर आपस मे लडते रहे है। विश्व का प्रथम और द्वितीय महायुद्ध यूरोप के एक ही ईसाई धर्म के मानने वाले राष्ट्रो के बीच लडा गया था। अमेरिका मे यूरोप के इतना बडा देश होते हुए भी शक राष्ट्र के सूत्र मे केवल एक भाषा के कारण बॉधा हुआ है। अमेरिका ने यूरोप के विभिन्न देशो के विभिन्न भाषा बोलने वाले लोग आकर बसे किन्तु जब वहॉ बसने वाले लोगो के लिए यह अनिवार्यता कर दी गयी कि उन सब की भाषा केवल अग्रेजी रहेगी तब उन सबके मन मे धीरे-धीरे यह बात निकल गयी कि वे किसी अन्य देश के लोग है। सब अपने को एक राष्ट्र अमेरिका के नागरिक समझने लगे। रूस भी आज इतना शक्तिशाली राष्ट्र इसलिए हो सका है क्योकि वहाँ की भाषा रूसी एक ही है। विभिन्न प्रदेशो मे उनकी अपनी अलग-अलग क्षेत्रीय भाषाएँ भी हैं। किन्तु राष्ट्र की मुख्य भाषा रूसी को जानना प्रत्येक के लिए आवश्यक है। हमारा देश राष्ट्र की एक भाषा न हो सकने के कारण भी शक्तिशाली नही हो पाया। संस्कृति और धर्म एक होते हुए भी वैसी अपनत्व की भावना कमी नही आयी जो एक-एक राष्ट्र रूप का देने के लिए आवश्यक होती है।

मौर्य काल मे और गुप्त काल मे कुछ प्रयत्न अवश्य हुआ कि भारत के विभिन्न भाग एक राष्ट्र के रूप में संगठित हो किन्तु यह स्थिति अधिक समय तक नही रह सकी। किसी समय मे सस्कृत ऐसी भाषा थी जिसका देश के विभिन्न भागों मे प्रचार था किन्तु यह विद्वतजनो की भाषा थी जनता की भाषा कभी नही हो सकी थी। अंग्रेजी शासन काल के आरम्भ काल मे देश के कुछ मनीषियो ने हमारी दासता और राष्ट्र की कमजोरी के कारणो का विश्लेषण कर प्रथम बार यह अनुभव किया कि राष्ट्रीय भावना उत्पन्न करने के लिए और पूरे देश को एक राष्ट्र की सगठित रूप देने के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक क्षेत्र को अपनी भाषा के साथ-साथ एक ऐसी भाषा हो जो पूरे राष्ट्र की भाषा कही जा सके। सबसे पहले बंगाल के मनीषी राजा राम मोहन राय ने यह सुझाव रखा कि देश में एक राष्ट्र की भावना लाने के लिए एक राष्ट्र भाषा होनी चाहिए और यह राष्ट्र भाषा केवल हिन्दी ही हो सकती है। क्योकि इस भाषा के बोलने वालों की संख्या देश में सबसे अधिक है और यह भाषा बहुत सरल है और साथ ही देश की अन्य अधिकांश भाषाओं के बहुत निकट है। हिन्दी, बॅगला, मराठी, गुजराती, उडिया आदि देश की अधिकांश भाषाएँ सस्कृत से विकसित हुई हैं। अतः

उनमे परस्पर बडी समानता और निकटता है। इन सब की लिपि भी लगभग एक समान है। अत इन भाषा भाषियो को परस्पर एक दूसरे की भाषा सीखने मे विशेष कठिनाई नही होती। राजाराम मोहन राय के बाद देश के विभिन्न प्रदेशों के अनेक मनीषियो ने स्वामी दयानन्द सस्वती, केशवचन्द्र सेन, महात्मा गॉधी, लोकमान्य तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले, महामना पडित मदन मोहन मालवीय, सुभाष चन्द्र बोस आदि समय-समय पर देश मे राष्ट्रीय जागृति और भावना लाने के लिए हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाये जाने का समर्थन किया। काशी मे नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना २० वी शती के आरम्भ मे ही हो चुकी थी। इसका मुख्य कार्य हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि करना तथा हिन्दी का प्रचार करना था। हिन्दी के प्रचार कार्य को तीव्र गति देने के उद्देश्य से यह सोचा गया कि एक अन्य सस्था की स्थापना की जाय जो मुख्य रूप मे हिन्दी के प्रचार कार्य को हाथ में ले तब नागरी प्रचारिणी सभा के तत्वावधान मे काशी मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन का सूत्र १० अक्टूबर सन् १९१० को किया गया। महामना पडित मदन मोहन मालवीय इसके प्रथम सभापति हुए और राजर्षि पुरुषोत्तम दास टन्डन को इसके मत्री पद का भार सौपा गया।

टन्डन जी का निवास स्थान प्रयाग था और वे यही अपनी वकालत करते थे अतः यह निश्चय किया गया कि सम्मेलन का मुख्य कार्यालय इलाहाबाद में रहे जिससे टन्डन जी को इसका कार्य संचालन करने मे सुविधा हो। अतः थोड़े समय बाद ही सम्मेलन कार्यालय इलाहाबाद स्थानान्तरित हो गया और तब से यही से उसके कार्य का संचालन बराबर होता रहा है टण्डन जी जिस लगन और निष्ठा से सम्मेलन के कार्य का सचालन आरम्भ से किया और उसे प्रगति दी वह एक इतिहास की वस्तु है।

सम्मेलन के कार्य मे प्रगति देने मे उन्होने वस्तुतः अपना तन-मन-धन सब ही लगा दिया। इसी से उन्हे लोगों ने सम्मेलन के प्राण की संज्ञा दी। आरम्भ काल मे कई वर्षो तक सम्मेलन का कार्यालय भी टन्डन जी के निवास स्थान पर रहा। सम्भवत. उन दिनो सम्मेलन के पास किराये का कोई भवन ले सकने के लिए पर्याप्त धन नही था। उन दिनो टण्डन जी और उनके परिवार के लोग जानसेनगज मे उस भवन जिसका नम्बर ७२ था मे ऊपर की मजिल मे रहते थे जहॉ आज किन्स कम्पनी का दवाखाना है। हमारे निवास स्थान के जिस कमरे मे सम्मेलन का कार्यालय था उसका चित्र आज भी हमारे सामने है। सम्मेलन कार्यालय के दूसरे स्थान पर चले जाने के बाद भी वर्षों तक हम इस कमरे को सम्मेलन वाला कमरा ही कहते रहे थे।

सम्मेलन का आरम्भ के बहुत वर्षो तक समस्त भार बाबू जी पर ही था। उसके लिए चन्दा लाना, उसके कार्य की योजना बनाना, वार्षिक अधिवेशन आयोजित करना तथा प्रचार सम्बन्धी सब कार्यो की रूपरेखा बनाना और उसे कार्यान्वित करना सब कामो के पीछे उन्ही की प्रेरणा और निर्देश रहता था। अन्य जो अधिकारी और कार्यकर्ता थे वे केवल उनके निर्देशन पर और कार्य करते थे। अत धन जुटाने और उसके व्यय पर नियत्रण रखने के कारण ही मुख्य रूप से सम्मेलन का सभी कार्य बाबू जी के निर्देश पर ही होता था आरम्भ मे कई वर्षो तक सम्मेलन का मुख्य कार्य सरकारी कार्यालयो और न्यायालयो में हिन्दी को स्थान दिलाने और स्कूल तथा कालेजो मे विद्यार्थियो की शिक्षा। उनकी मातृभाषा के माध्यम से दिये जाने के सम्बन्ध मे आन्दोलन और प्रचार करना रहा। इस उद्देश्य से देश के विभिन्न स्थानो मे सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन आयोजित किये जाते थे जिनमें साहित्यकारो के अतिरिक्त देश के अग्रणी राजनैतिक नेतागण भी सम्मिलित होते थे। हिन्दी के पठन पाठन को व्यापक रूप देने और हिन्दी के प्रचार कार्य को तीव्र गति देने के लिए सम्मेलन ने थोडे ही वर्षो बाद तीन परीक्षाएं आरम्भ की प्रथमा, मध्यमा और उत्तमा, प्रथमा का स्तर हाईस्कूल के समकक्ष और मध्यमा का स्नातक के समकक्ष रखा गया। इन दोनों परीक्षाओं में विभिन्न विषय हिन्दी के माध्यम से अध्ययन कर विद्यार्थी सम्मिलित होते थे। उत्तमा परीक्षा का स्तर विश्वविद्यालयो की एम०ए० परीक्षा के समकक्ष रखा गया और इस परीक्षा द्वारा किसी एक विषय का गहराई से अध्ययन कर उसमें विशेषज्ञता प्राप्त करने की सुविधा विद्यार्थियों की दी गयी ।

मध्यमा परीक्षा उत्तीर्ण विद्यार्थियो को दी गयी विशारद की उपाधि प्रदान की गयी। उत्तमा परीक्षा उत्तीर्ण को रत्न की उपाधि दिये जाने का क्रम स्थापित हुआ। इन परीक्षाओ द्वारा हिन्दी प्रचार में तथा उसके साहित्य की अमिवृद्धि मे बड़ा योगदान मिला। परीक्षाओ के पाठ्यक्रमों के अनुसार पुस्तके तैयार हुई और इन परीक्षाओ में सम्मिलित होने के लिए विद्यार्थियो ने बडी संख्या मे हिन्दी साहित्य का और हिन्दी के माध्यम से विभिन्न विषयो का पठन-पाठन आरम्भ किया। फलस्वरूप हिन्दी साहित्य का निर्माण भी हुआ और हिन्दी का अच्छा प्रचार भी हुआ। अंग्रेजी शासन के समय देश में राष्ट्रीयता की एक लहर थी। राजाराम मोहन राय के इस विचार को पूरे भारत वर्ष को एक राष्ट्र का रूप देने के लिए हिन्दी को देश की राजभाषा और राष्ट्र भाषा बनाया जाना आवश्यक है। उनके बात को देश के सभी मनीषियो और राजनैतिक नेताओ ने स्वीकार किया था। इस कारण सम्मेलन का हिन्दी

प्रचार का कार्य राष्ट्रीय काग्रेस की भाति एक राष्ट्रीय महत्व का कार्य समझा जाता रहा। महात्मा गॉधी, महामना माननीय डॉ०राजेन्द्र प्रसाद, डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी तथा राजगोपालाचारी आदि के अग्रणी राजनैतिक नेताओ और भाषा विज्ञान के विशषज्ञो का सम्मेलन को सहयोग मिला और सम्मेलन के कार्य का महत्व बढ़ा और उसमे गति आयी। दक्षिण भारत मे हिन्दी का प्रचार कार्य, दक्षिण भारत मे हिन्दी प्रचार सभा की मद्रास मे स्थापना महात्मा गॉधी और मालवीय की प्रेरणा से हुयी। सम्मेलनो के प्रत्यनो के फलस्वरूप न्यायालयो मे हिन्दी का प्रवेश हुआ और शिक्षा के क्षेत्र मे माध्यमिक स्तर तक हिन्दी माध्यम के रूप मे स्वीकार की गयी।

विश्वविद्यालयो स्नातक एक स्नात्यकोत्तर कक्षाओं में हिन्दी साहित्य का अध्ययन एक पृथक विषय के रूप मे आरम्भ हुआ। इस प्रकार सम्मेलन के प्रत्यनो के फलस्वरूप हिन्दी का प्रचार कार्य लगभग १९४० तक अच्छी गति से होता रहा । आरम्भ मे तो महात्मा गॉधी का पूरा सहयोग हिन्दी के प्रचार कार्य मे सम्मेलन को मिला और उन्ही की प्रेरणा से वर्धा मे हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना भी हिन्दीतर भाषा भाषी प्रदेशों मे हिन्दी के प्रचार कार्य को अधिक तीव्रता प्रदान करने के उद्देश्य से हुई किन्तु इसी बीच कुछ राजनीतिक कारणो से अपने सहयोगी मुस्लिम नेताओ के दबाव से गॉधी जी ने एक नयी बात छेड दी। उन्होने यह सुझाव रखा कि हिन्दी के स्थान पर राष्ट्रभाषा का नाम हिन्दुस्तानी रखा जाय और नागरी लिपि के साथ-साथ अरबी लिपि भी राष्ट्रीय के रूप मे मान्य हो। उनके इस दृष्टिकोण से हिन्दी के प्रचार कार्य में कुछ अवरोध आया। अरबी लिपि इस देश की किसी भाषा की लिपि नही रही। इसका इस देश मे जन्म नही हुआ। विदेशी होने के साथ-साथ यह लिपि उतनी पूर्ण और वैज्ञानिक भी नहीं है जितनी नागरी लिपि है। गुजरात और महाराष्ट्र से लेकर उत्तर भारत की लगभग सभी भाषाओ की लिपियॉ नागरी लिपि से मिलती जुलती हैं। क्योंकि इन सभी भाषाओ की जननी संस्कृत है जिसकी लिपि नागरी लिपि ही है।

अत: महात्मा गॉधी के इस सुझाव के कारण हिन्दी के कार्य को बड़ा धक्का लगा। गॉधी का देश मे जो स्थान था उसके कारण कुछ राजनीतिक लोग उनके विचार का समर्थन करने लगे। फिर भी देश के संविधान मे हिन्दी भाषा और नागरी लिपि को ही राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपि का स्थान दिया गया। संविधान मे तो हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता दे दी गयी किन्तु देश के कुछ राजनीतिक नेताओं को जो पश्चिमी सभ्यता मे पले थे और

जिनकी भाषा एक प्रकार से अंग्रेजी थी हिन्दी के प्रति न कोई आस्था थी और न कोई प्रेम था। देश के दुर्भाग्य से स्वतत्रा मिलने के बाद शासन की बागडोर भी इन्ही के हाथो मे आयी केन्द्रीय शिक्षा मत्री के रूप मे मौलाना अबुल कलाम आजाद ने कार्यभार सभाला। यह भी हिन्दी के राष्ट्र भाषा बनाये जाने के समर्थक नही थे। परिणाम यह हुआ कि राष्ट्र भाषा के रूप मे हिन्दी को जितना शासन के कार्यो मे तथा शिक्षा के क्षेत्र मे अपनाया जाना चाहिए था वह नही किया गया। अपने स्वार्थ और राजनीतिक कारणों से हिन्दी के विरोध मे कुछ लोगो को खडा कर दिया गया। अग्रेजी शासन काल मे हम अग्रेजो की इस नीति की आलोचना किया करते थे वे भेदभाव और परस्पर अलगॉव की नीति अपना कर हमे विभिन्न प्रकार के विवादो मे उलझा देते थे जिससे राष्ट्र के मुख्य प्रश्न पीछे पड जाते थे और हम छोटी-छोटी बातो मे परस्पर लडते रहते थे। वही नीति हमारे शासको ने स्वतन्त्रता मिलने के बाद अपनायी। हिन्दी उर्दू का विवाद फिर उठा दिया गया और अग्रेजी भाषा की महत्ता पर बल दिया जाने लगा। कहा गया कि अंग्रेजी का स्थान हिन्दी नही ले सकती। इसमे वह क्षमता नहीं है। अंग्रेजी संसार की भाषा है। इसके बिना देश पिछड़ जाएगा। यह भाषा ही देश को एक सूत्र मे बॉधे रख सकती है। हिन्दी के राजभाषा के रूप मे फैल जाने पर देश के टुकडे-टुकडे हो जायेगे आदि ।

आश्चर्य तो इस बात से हुआ कि इस प्रकार के तर्क वे ही नेतागण देने लगे जो किसी समय हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप मे प्रतिष्ठित करने के जोरदार समर्थक थे। धन और पद व्यक्ति को कितना बदल देता है यह देखने को मिला। निःस्वार्थ के पीछे लोग देश के भविष्य की चिन्ता भुला बैठे। न कही राष्ट्रीयता रही और न कहीं देश की एकता और संस्कृति की भावना। इस सब मनोवृत्ति का परिणाम सामने दिखाई दे रहा है। आज अंग्रेजी भाषा का जो महत्व इस देश मे ही हो गया है वह अंग्रेजी शासनकाल में भी कभी नही था। यह तो प्रत्येक समझदार व्यक्ति मानता है कि अपनी मातृ-भाषा द्वारा शिक्षा प्राप्त करने पर बालक के मस्तिस्क का पूरा विकास होता है और उसमे मौलिक चिन्तन की क्षमता आती है। फिर भी स्वतन्त्रता मिलने के ३७ वर्षो के बाद भी न तो अपनी मातृ भाषा का और न राष्ट्र भाषा हिन्दी का शिक्षा के क्षेत्र मे तथा शासन के कार्यो में समुचित स्थान है। हमारे जीवन के हर क्षेत्र मे अग्रेजी का ही प्रमुख स्थान है बाह्य रूप से तो हम स्वतंत्र ही हो गये हैं किन्तु मानसिक दासता आज भी बनी हुई है। जो स्वार्थपरता और अराष्ट्रीयता की लहर आज पूरे देश में फैली हुई है उसे देख कर देश का भविष्य बड़ा अनिश्चित सा लगता है। दूसरे देश

वालो को भी आश्चर्य होता है कि हमारा देश अपनी भाषा और राष्ट्रीयता की ओर से कितना विमुख है। यह देश एक सुगठित राष्ट्र के रूप मे किस अश तक विकसित हो सकेगा यह तो भविष्य ही बतलायेगा। सम्मेलन ने अपने जीवन के ७५ वर्ष पूरे किये है।

इस सस्था की सेवा नि·स्वार्थ भाव से तथा निष्ठा से बहुसख्यक लोगों ने की है। मेरा भी सम्मेलन से कई वर्षो तक घनिष्ठ सम्पर्क रहा है। परीक्षा मत्री के रूप मे सन् १९४८ मे मैने इसकी परीक्षाओ के सचालन का कार्यभार सॅभाला। इसके पूर्व इसकी कार्य समिति के सदस्य के रूप मे इसके कार्यो मे योगदान भी देता रहा था। हम सबको स्वभावतः सन्तोष और प्रसन्नता है कि सम्मेलन ने राष्ट्र भाषा के माध्यम से देश मे एक राष्ट्रीय भावना लाने मे बडा योगदान दिया है। साथ ही हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि मे और उसे राष्ट्र भाषा के रूप मे सविधान मे उचित स्थान दिलाने मे इसका प्रमुख योगदान रहा है।

सम्मेलन के कार्य का ही यह परिणाम है कि आज हिन्दी देश के समस्त भागो मे पहुॅच चुकी है और उसके लिए अधिकाश जनता मे एक आदर और सम्मान का भाव है। किन्तु सम्मेलन का कार्य अभी समाप्त नही हुआ है। वैधानिक रूप से तो हिन्दी को राष्ट्रभाषा और राजभाषा का पद दे दिया गया है किन्तु जब तक व्यवहार के क्षेत्र मे यह राष्ट्र भाषा के रूप मे पूरे देश मे अपनायी नही जाती और शासन का कार्य इसके माध्यम से नहीं होता सम्मेलन को इस दिशा मे कार्य करते रहना है। अत सम्मेलन के सामने एक बड़ा काम लोगो की मनोवृत्ति में परिवर्तन लाकर व्यवहार क्षेत्र मे उचित स्थान न प्राप्त कर सकने मे बहुत अश तक हिन्दी भाषा भाषी ही दोषी है। यदि हिन्दी भाषी प्रदेशो मे शासन के सब कार्यो मे तथा शिक्षा के माध्यम के रूप मे हिन्दी को उसका उचित स्थान दिया गया होता तो हिन्दी पूरे देश मे सहजता से अपनायी जा सकती थी। किन्तु दुर्भाग्य तो यह है कि हिन्दी भाषी प्रदेशो मे आज भी अंग्रेजी का ही प्रमुख स्थान है। हिन्दी एक प्रकार से तिरस्कृत सी है। सामाजिक तथा शैक्षिक क्षेत्र मे काम करने का जो मेरा अनुभव है वह बडा कटु है। शासन के ऐसे विभाग की जिनका जनता से अधिक सम्पर्क रहता है उनमें भी अंग्रेजी भाषा के द्वारा ही अधिकार्य होता है। पंचायती राज और श्रम विभाग ऐसे विभाग हैं जिनका कार्यक्षेत्र मुख्यत· ग्रामीण तथा कम पढ़ी लिखी जनता के बीच में है। इन विभागों में जो भी पत्र भेजे जाते है वे अधिकतर अंग्रेजी लिखे होते हैं।

शासन के जिन विभागो से हिन्दी मे पत्र भी आते है उन पत्रो की भाषा इतनी कृत्रिम और जटिल होती है कि उसका अर्थ प्राय हिन्दी का विद्वान भी समझ नही पाता। विवाह आदि अवसरो पर नियत्रण पत्र अग्रेजी मे भेजना तो सामान्य बात है। जिन लोगो ने थोडा अग्रेजी पढ ली है उनके घरो मे पिता-पुत्र, भाई-भाई और यहॉ तक कि पति-पत्नी के परस्पर के पत्र भी अग्रेजी मे लिखे जाते है। जो थोडा भी अग्रेजी लिख और बोल सकता है वह वार्तालाप मे हिन्दी मे बाते करते समय भी बीच-बीच में अंग्रेजी शब्दो का प्रयोग करने मे अपनी प्रतिष्ठा समझता है। जो अग्रेजी मे भाषण देता है चाहे वह कितनी ही अशुद्ध अंग्रेजी हो उसे हम अपनी भाषा मे भाषण देने वाले की तुलना मे अधिक महत्व और सम्मान देते है। यह सब मनोभावना क्या प्रदर्शित करती है।

हमारी स्वय की अपनी भाषा और सस्कृति के प्रति एक ही भावना स्पष्ट है कि हिन्दी भाषी लोगो को ही अपनी भाषा से वह प्रेम नही है जो होना चाहिए। ऐसी स्थिति मे हिन्दी शीघ्र ही राजकाज में और व्यवहार के अन्य क्षेत्रो मे राष्ट्र भाषा का स्थान ले सकेगी। यह बडा सदिग्ध सा जान पडता है। बिहार और उत्तर प्रदेश में जहॉ हिन्दी भाषा भाषियो की सख्या ९०% से अधिक है, उर्दू को द्वितीय राज भाषा घोषित किया गया है। शासन की यह नीति केवल मुसलमानो को खुश कर उनका मत प्राप्त करना ही है। इस नीति मे न तो कोई समाज का और न देश का हित है इसके विपरीत यह केवल विघटन की भावना को ही प्रोत्साहन देगी और हिन्दी और उर्दू के विवाद को समाप्त करने के स्थान मे बराबर जीवित रहेगी। वास्तव मे देखा जाय तो समस्त दोष हिन्दी वालो का ही है। उनकी भाषा के प्रति धोर उपेक्षा और तिरस्कार प्रदर्शित किया जाता है उससे उनके मन पर कोई ठेस नही लगती अन्यथा वे इसके विरोध मे संगठित होकर खड़े हो जाते। यदि हिन्दी प्रदेशों के सब हिन्दी भाषी सम्मिलित रूप से यह निश्चय कर ले कि उनके प्रदेशों में केवल उनकी अपनी भाषा ही एक मात्र राजकाज की भाषा होगी तो कोई ऐसी शक्ति नहीं है जो इसमें रुकावट डाल सके।

जनतत्र मे जनता के निश्चय के आगे शासको को झुकना ही पड़ता है। हिन्दी भाषी लोगो को अपने को संगठित कर यह अभियान चलाना होगा कि उर्दू को द्वितीय राजभाषा का स्थान कदापि नही दिया जा सकता है और हिन्दी प्रदेशों में राज भाषा के रूप में केवल

हिन्दी को ही व्यवहार मे लाया जायेगा। यदि हिन्दी भाषी जनता यह निश्चय कर ले कि जो राजनीतिक दल उनकी इस मॉग का समर्थन नही करेगा उसे वे अपना मत चुनाव मे नही देगे तो राजनीतिक दल और बर्तमान शासक दल तुरन्त उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाये जाने की अपनी नीति बदल देगे। सत्य तो यह है कि सम्मेलन ने अब तक के अपने जीवन के ७५ वर्षो में कितना काम किया है। यद्यपि वह बहुत महत्व का है फिर भी उससे कही अधिक कार्य उसे अभी करना है। अंग्रेजी शासन काल के समय एक विदेशी राज्य को हटाना था। इस कारण समस्त भारतवासी एक राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर विदेशी सस्कृति और विदेशी भाषा को हटाने और उसके स्थान मे संलग्न हुए स्वतत्रता मिलने के बाद कोई ऐसी राष्ट्रीय भावना की जो हमे अपनी सस्कृति और भाषा की ओर प्रेरित कर सके, अभाव दिखलायी देता है। इसमे छोटे-छोटे सकुचित जातिगत, धर्मगत, प्रदेशगत और क्षेत्रगत स्वार्थ घुस गये है और राष्ट्रीय एकता की भावना पीछे ढकेल दी गयी है। विभिन्न भाषा भाषी अपनी अपनी भाषाओ को सर्वोपरि स्थान दिलाने और हिन्दी को शासन और राज-काज के लिए अनुपयुक्त सिद्ध करने मे ही अपना परिश्रम लगा रहे है। वे जानते है कि उनकी भाषाओं मे से कोई भी राष्ट्रभाषा का स्थान नही ले सकती। अतः अपरोक्ष रूप से उनकी चेष्टा यही है कि हिन्दी भी राष्ट्रभाषा न हो सके अग्रेजी ही बनी रहे।

हिन्दी का राज-काज मे और व्यवहार के क्षेत्र मे पूरे देश मे चलन केवल विभिन्न प्रदेशो तथा विभिन्न भाषा भाषियों की सद्भावना से ही हो सकेगा। संविधान में भी हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप मे विभिन्न भाषा भाषियो की स्वीकृति और सहमति से ही मान्यता मिली है। राष्ट्र के जीवन मे हिन्दी को उचित स्थान भी सभी प्रदेशों की सद्भावना से ही मिल सकता है इसके लिए सम्मेलन को सभी प्रदेशो को अपना कार्य क्षेत्र बनाकर उनकी सद्भावना प्राप्त करनी चाहिए तभी हिन्दी का जो विरोध आज हो रहा है वह समाप्त होगा और हिन्दी अपना उचित स्थान प्राप्त कर सकेगी।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का महत्व श्री गिरीश चन्द्र शर्मा, अमृत महोत्सव सम्पादक डॉ० सत्यप्रकाश मिश्रा, पृष्ठ, १५७,१५८। हिन्दी साहित्य सम्मेलन का महत्व इसी से ऑका जा सकता है कि जिन राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी ने राष्ट्रीय काग्रेस दल के कर्त्ता विधाता होते हुए भी क्रांग्रेस के किसी पद पर क्या उसकी साधारण सदस्यता तक भी स्वीकार नहीं की

वे ही हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन का दो बार अध्यक्ष पद स्वीकार कर एक-एक वर्ष तक इसके उन्नयन एव सवर्द्धन मे रुचि लेते रहे। प्रथम बार संवत १९७४ मे तथा द्वितीय बार १९९२ वि० मे ये दोनो ही अधिवेशन इन्दौर मे सम्पन्न हुए थे। गाधी जी के सान्निध्य से सम्मेलन को अपूर्व शक्ति मिली और दक्षिण भारत मे हिन्दी के प्रचार-प्रसार कार्यो मे आशातीत सफलता प्राप्त हुई। दक्षिण भारत मे हिन्दी के प्रचार कार्यो को शक्तिमान बनाने के लिए मद्रास मे सम्मेलन की एक शाखा की स्थापना की गयी। धीरे-धीरे यही शाखा स्वतत्र सस्था के रूप मे प्रवर्द्धमान हुई और दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा मद्रास के रूप मे विख्यात हुई। आज समूचे दक्षिण भारत मे इसकी समृद्ध शाखाएं कार्यरत है। विश्वबन्ध महात्मा गॉधी के अतिरिक्त महामना मदन मोहन मालवीय, देश रत्न राजेन्द्र प्रसाद, श्री गणेश शकर विद्यार्थी, डॉ० भगवानदास, प० अयोध्यासिह उपाध्याय हरिऔध, राजर्षि, पुरुषोत्म दास टन्डन, प० माखन लाल चतुर्वेदी, डॉ० अमरनाथ झा महामहोपाध्याय प० रामावतार शर्मा, गोस्वामी गणेशदत्त आदि प्रातः स्मरणीय विभूतियो का भी वरद संरक्षण सम्मेलन को प्राप्त हो चुका है। जिस प्रकार महान जन नायको की तप· पूत साधना से देश को स्वाधीनता मिली उसी प्रकार महान साहित्यकारो और विद्वानो के दीर्घकालीन सगठित प्रयत्न से ही देश को राष्ट्र भाषा हिन्दी मिली। इस साहित्यकारो और विद्वानों को एक मंच पर लाने का श्रेय सम्मेलन को ही प्राप्त है। सम्मेलन के कर्णधारो के भगीरथ प्रयास से ही हिन्दी को समूचे देश में हो रही विदेशो मे भी हमारे देश की राष्ट्रभाषा के रूप मे मान्यता प्राप्त हुई।

यह कहना अनुचित न होगा कि यदि सम्मेलन न होता तो आज हिन्दी को वर्तमान पद न मिला होता । सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन देश के कोने-कोने में प्रतिवर्ष बड़े उत्साह एव उल्लास के वातावरण में होते रहे। उसके कुल ब्यालीस अधिवेशन हुए। सम्मेलन की सभी प्रमुख प्रवृत्तियों के विकास के संकल्प इन्ही अधिवेशनो मे किये गये। आज सम्मेलन की प्रवृत्तियॉ बहुमुखी हैं जिनमे कतिपय इस प्रकार है। (१) सम्मेलन अपने अधिवेशन मे अपनी मानद उपाधि साहित्य वाचस्पति से देश-विदेश के मूर्द्धन्य विद्वानो को सम्मानित करता है। अब तक इस उपाधि से जो विशिष्ट विद्वान विभूषित किये गये उनमें कुछ के नाम ये है - महात्मा गॉधी, महामना मालवीय, जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त, श्री सुनीति कुमार चाटुर्ज्या, श्रीपाद दामोदर सातवलेकर,

श्री भवानी दयाल सन्यासी, श्रीमती महादेवी वर्मा, श्री सुमित्रानन्दन पन्त महा महोपाध्याय पडित दत्तात्रेय वामन पोतदार, श्री रगनाथ, राम चन्द्रदिवाकर, काका कालेलकर तथा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि। सम्मेलन की दूसरी प्रवृत्ति है पुरस्कार वितरण अपने अधिवेशन मे सम्मेलन पॉच प्रकार के पुरस्कार साहित्यकारो को प्रदान करता है इनमे सबसे श्रेष्ठ पुरस्कार मगला प्रसाद पारितोषिक है जो अब ११००० रुपयो का दिया जाता है। यह पुरस्कार श्री गौरीशकर हीरा चन्द ओझा, श्री वियोगी हरि, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, श्री वासुदेव शरण अग्रवान प्रभृति विद्वानों को प्रदान किया जा चुका है। सम्मेलन के अन्य पुरस्कार है सेक्सरिया महिला पारितोषिक, राधेमोहन गोकुल जी पुरस्कार मुरारका। पारितोषिक एव रत्न कुमारी पुरस्कार सम्मेलन की तीसरी प्रवृत्ति है परीक्षाओं का सचालन। सम्मेलन की परीक्षाओ मे प्रतिवर्ष एक लाख से अधिक परीक्षार्थी भाग लेते हैं।

१९७४ ई० से अब तक लगभग १० लाख परीक्षाओ के केन्द्र भारत के अतिरिक्त मारिशस, वर्मा, नेपाल, त्रिनीडाड, सुरीनाम (सूबा), थाईलैण्ड आदि देशो मे भी है। इस समय केन्द्र स्थापनार्थ अमेरिका और पाकिस्तान से भी पत्राचार चल रहा है। सम्मेलन की चौथी और सर्वश्रेष्ठ प्रवृत्ति है पुस्तको का प्रकाशन सम्मेलन द्वारा अब तक २०५ पुस्तके प्रकाशित हो चुकी है विगत ७५ वर्षो से सम्मेलन पत्रिका प्रकाशित होती आ रही है जिसकी हिन्दी जगत मे काफी प्रतिष्ठा है और जिसके श्री सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्सायन अज्ञेय आदि कई यशस्वी सम्पादक रह चुके हैं। सम्मेलन का पाक्षिक प्रकाशन राष्ट्र भाषा सन्देश का हिन्दी जगत मे सर्वत्र समादर है। सम्मेलन द्वारा अनेक पारिभाषिक एवं अन्य शब्दकोणी का प्रकाशन हुआ है जिनमे महापण्डित राहुल सांकृत्यायन द्वारा सम्पादित शासन शब्द कोश श्री एन०एस० दक्षिणापूर्ति द्वारा सम्पादित कन्नड हिन्दी कोश श्री हनुमच्छास्त्री अयाचित द्वारा सम्पादित तेलुगु हिन्दी शब्द कोश श्री रामचन्द्र वर्मा द्वारा सम्पादित मानक हिन्दी कोश, (पॉच खण्डो में) तथा डॉ० सत्य प्रकाश द्वारा सम्पादित मानक अंग्रेजी हिन्दी कोश महत्वपूर्ण है। सम्मेलन मे राजर्षि पुरुषोत्तमदास टन्डन द्वारा प्रवर्तित तथा श्री प्रभात शास्त्री द्वारा प्रवर्द्धित पुराण प्रकाशन योजना चल रही है जिसके अन्तर्गत अब तक ब्रह्मपुराण, ब्रहावैतर्त पुराण, अग्निपुराण, मत्स्य पुराण तथा नारदीय पुराण का प्रकाशन चल रहा वादुपुराण की हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित हो चुके है। अन्य पुराण भी यथासम्भव प्रकाशित होंगे।

सम्मेलन का हिन्दी सग्रहालय हिन्दी भाषा और साहित्य का अनुपम प्रतिष्ठान है। यहॉ देश विदेश से अनुसन्धानकर्त्ता छात्र-छात्राऍ एव विद्वान भी आते रहते है। संग्रहालय मे लगभग साठ हजार पुस्तके सुरक्षित है तथा हिन्दी पत्र पत्रिकाओ का विशाल संग्रह है। इसके हस्तलिखित ग्रन्थ कक्ष मे हिन्दी एव सस्कृत की लगभग १२५०० पाण्डुलिपियॉ हैं। जिनमे से कुछ सोलहवी शताब्दी की भी है। इन पाण्डुलिपियो मे से कुछ का प्रकाशन हो चुका है।

अध्याय - ४

हिन्दी भाषा के विकास में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का योगदान

हिन्दी भाषा के विकास में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का योगदान

हिन्दी भाषा के विकास मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन की प्रमुख भूमिका रही है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन का ही प्रयास रहा है कि आज हिन्दी समस्त भारत की राष्ट्रभाषा के सिहासन पर आरूढ है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने विभिन्न माध्यमो से हिन्दी की सेवा की है तथा हिन्दी भाषा के विकास मे योग प्रदान किया है।

(१) पत्र पत्रिकाओ के माध्यम से—बीसवी शताब्दी आरम्भ होने के पूर्व से ही सरकारी नौकरी छोडकर जिन साहित्य सेवियो ने अपने स्वाध्याय से हिन्दी की अकुण्ठ सेवा की उसमे गिरजा कुमार घोष प्रमुख थे। गिरिजा कुमार घोष का जन्म बगाल के चौबीस परगना जिले के उत्तर पाडा बाडी नामक गॉव मे सन् १८७८ मे हुआ था। इनके पिता जी जीविकोपार्जन हेतु प्रयाग आ गये। इसलिए इनका लालन पालन और शिक्षा दिक्षा यही प्रयाग मे ही हुआ। गिरिजा कुमार घोष की मातृभाषा यद्यपि बॅगला थी तथापि उनकी रुचि हिन्दी मे आरम्भ से ही थी। बॅगला मे प्रकाशित श्रेष्ठ रचनाओं को हिन्दी मे अनूदित कर इन्होंने हिन्दी का अपूर्व उपकार किया। गिरिजा कुमार घोष पहले सरकारी क्लर्क थे। नौकरी छोड़कर वे इण्डियन प्रेस प्रयाग मे मैनेजर हो गये। इण्डियन प्रेस में जिन दिनो वे मैनेजर नियुक्त हुए उन दिनों उसके संस्थापक बाबू चिन्तामणि घोष थे जो हिन्दी सेवा में तन-मन से लीन थे। उल्लेखनीय है कि आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी को सरस्वती पत्रिका का सम्पादक बनने का निमन्त्रण लेकर जाने वाले गिरिजा कुमार घोष जी ही थे। यह केवल संयोग की बात नहीं थी कि युगान्तरकारी सचित्र मासिक पत्रिका सरस्वती का प्रकाशन इन्डियन प्रेस से आरम्भ हुआ बल्कि गिरिजा कुमार घोष ने अपने लेखन के माध्यम से उसकी सेवा भी की। सरस्वती मे उन्होने मौलिक और अनूदित कई रचनाएं प्रस्तुत की। रवीन्द्र नाथ ठाकुर की कहानी 'मुक्ति तथा उपाय' को हिन्दी में अनूदित करने का श्रेय गिरजा कुमार जी को ही है। जो सन् १९०१ की सरस्वती में प्रकाशित हुई। इसी प्रकार लाला पार्वती नन्दन लिखित 'भूतो वाली हवेली' दूसरी प्रसिद्ध कहानी मानी जाती है का प्रकाशन १९०३ मे आचार्य महावीर प्रसाद

द्विवेदी ने धारावाहिक रूप मे किया। गिरिजा कुमार ने अनेक पुस्तकों का लेखन भी किया उनकी पुस्तके निम्न है—बाल रामायण सातो काण्ड, होमर गाथा, नारी रत्नमाला, लक्ष्मी, गल्पलहरी, छोटी बहू, सत जीवनी आदि। गिरिजा कुमार घोष बाद मे इण्डियन प्रेस से लीडर प्रेस मे चले गये लेकिन मत विभिन्नता के कारण अधिक दिनो तक वहॉ न टिक सके। उन्ही दिनो उनका सम्बन्ध राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन से हुआ। टण्डन के विशेष स्नेह से हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से अनेक रूपो मे सम्बद्ध हो गये।

१- सम्मेलन पत्रिका के आदि सम्पादक के रूप मे ।

२- हिन्दी साहित्य सम्मेलन के तृतीय अधिवेशन की स्थायी समिति के सदस्य के रूप मे।

३- भागलपुर मे हिन्दी साहित्य के चतुर्थ अधिवेशन के बिहार और उड़ीसा के सभासद के रूप मे।

सम्मेलन पत्रिका के श्री गणेश तथा गिरिजा कुमार घोष के उसके प्रथम सम्पादक होने के सम्बन्ध मे सम्मेलन पत्रिका के छठे अंक मे जो सम्मेलन का वार्षिक वृत्तान्त १९१२-१९१३ प्रकाशित हुआ है उसमे उनका उल्लेख निम्न प्रकार है—हर्ष की बात है कि सम्मेलन की ओर हिन्दी के रसिको का ध्यान दिन-दिन अधिक आकृष्ट हो रहा है और वे सम्मेलन के कार्यो और उसके स्थाई समिति के विचारो को विस्तृत रूप से जानने के लिए उत्सुक देख पडते हैं।

समाचार पत्रो मे यद्यपि सम्मेलन के कार्यो का विवरण यथा समय भेजे जाते थे और वे पूर्ण या संक्षिप्त रूप से प्रकाशित हुआ करते थे तथापि इतने से सर्वसाधारण का प्रबोध नही होता अतः इस आभाव को दूर करने के लिए प० श्याम बिहारी तथा कई अन्य सज्जनो ने सम्मेलन की ओर से एक पत्रिका प्रकाशित करने का प्रस्ताव किया और स्थायी समिति द्वारा प्रस्ताव को कार्य मे परिणित करने के लिए एक समिति बनायी गयी। जिसके सयोजक गिरिजा कुमार घोष और पं० द्वारिका प्रसाद चतुर्वेदी, पं० लक्ष्मी नारायण नागर, पं० रामजी लाल शर्मा, पुरुषोत्तम दास टण्डन इसके सदस्य नियुक्त किये गये। इन लोगो के प्रयास से विजय दशमी के दिन से 'सम्मेलन पत्रिका' के नाम से एक पत्रिका का सम्पादन होने लगा। जिसका सम्पादन कार्य गिरिजा कुमार घोष को सौपा गया। सन् १९१३ के अश्विन

महीने के १० तारीख को सम्मेलन पत्रिका का श्री गणेश बाबू गिरजा कुमार घोष के सम्पादन मे हुआ। सम्मेलन पत्रिका का प्रकाशन हिन्दी साहित्य सम्मेलन की कार्यकारिणी समिति की ओर से प्रतिमास होना निश्चित हुआ और यह सम्मेलन के कार्यो को विवरण सुधी जनता से सुपरिचित कराने के लिए प्रकाशित होती थी। गिरिजा कुमार घोष ने सम्मेलन पत्रिका के प्रथम भाग के प्रथम अक मे लिखा है—मेरे ऊपर इस पत्रिका के सम्पादन का दायित्व लाद दिया गया है। परन्तु यह सम्भव नही कि मैं अपनी राम मडैया मे अकेला बैठा हुआ इस भारी दायित्व को पूरा कर सकूँ। इस पत्रिका से सर्वसाधारण को लाभ पहुँचाना, उसको लोकप्रिय बनाकर उसके प्रचार मे सहायता करना अकेले मेरे हाथ मे नही यह कार्य हिन्दी भाषा प्रेमी मात्र का है। जब तक सब ओर से शक्ति संचार नही होगा। यह पत्रिका अशक्त रह जायेगी। दानव दल को नाश करने के लिए देवगणों ने मिलकर अपनी शक्ति प्रदान करके आद्याशक्ति की रचना की थी। उसी प्रकार सम्मेलन पत्रिका को अपने विचारो का केन्द्र बनाकर हिन्दी भाषा की उन्नति और हिन्दी साहित्य सम्मेलन के उद्देश्यो की पूर्ति करना प्रत्येक हिन्दी रसिक का धर्म है। छठे अक से सम्पादक के रूप मे किसी के नाम छपने की सूचना नही मिलती । सम्मेलन पत्रिका के भाग १ आठवे अंक से स्पष्ट ज्ञात होता है कि गिरिजा कुमार के सम्पादक न रहने से पत्रिका के प्रकाशन मे विलम्ब होता था। सम्मेलन पत्रिका के सूचना मैनेजर की ओर से क्षमा प्रार्थना शीर्षक से निम्न प्रकार से सूचना प्रकाशित हुई - हमे खेद है कि सम्मेलन पत्रिका गत तीन महीनों से समय से प्रकाशित नही हो रही है। सम्पादक का बदलना इसका प्रधान कारण था। हमें आशा है कि भविष्य मे ऐसा अनुचित विलम्ब नही होगा। पत्रिका के पिछडे हुए अंक भी शीघ्र प्रकाशित किये जायेगे।

गिरिजा कुमार घोष के सम्पादन मे सम्मेलन पत्रिका के कुल तीन अंक ही प्रकाशित हुए। गिरिजा कुमार घोष के सम्पदान कार्य से विरत होने लेकिन लेखक रूप मे सम्बद्ध होने की सूचना की पुष्टि निम्न उदाहरण से हो जाती है जिसमे कहा गया है—गत वर्ष पत्रिका के संपादन का कार्यभार गिरिजा कुमार घोष पर रहा था और पिछले माघ मास तक वे सम्पादन का कार्य करते रहे थे, परन्तु अवकाश अभाव के कारण उन्होंने पत्रिका के सम्पादन का कार्य परित्याग कर दिया किन्तु सम्पादन परित्याग करने पर भी वे पत्रिका की

निरतर लेखो द्वारा सहायता करते रहते है जिनके लिए उन्हे अनेक धन्यवाद है।

गिरिजा कुमार घोष ने सम्मेलन पत्रिका का श्री गणेश करते हुए सम्पादकीय विनय के अन्तर्गत गणेशजी की वन्दना इस प्रकार की थी—

सब विध्नो के नाश करने वाले पार्वती नदन जी को प्रणाम करके मैं अपना अपना कार्य आरम्भ करता हूँ। प्रथम अंक का सामग्री समायोजन इस प्रकार किया गया-

१- सभा समितियो पर प्रचीन ऋृषियो की उक्ति दिनाजपुर बगाल मे उत्तरबंग साहित्य सम्मिलिनी सभा का अधिवेशन एक अभिभाषण।

२- हिन्दी साहित्य मे चित्रकला सिखाने की पुस्तके।

३- अन्य भाषाओ की कुछ उपयोगी पुस्तके।

४- प्रयाग का विज्ञान परिषद और उसकी कार्य प्रणाली।

५- विविध नागरी लिपि मे परिवर्तन की आवश्यकताएँ, हिन्दी भाषा द्वारा प्रारम्भिक शिक्षा देने पर बल, अग्रेजी साहित्य मे १९१३ मे प्रकाशित पत्र पत्रिकारिता सम्पादक लेखक सम्बन्धी टिप्पणी, मुसलमानो मे बंगला प्रेम जैसी टिप्पणियाँ।

६- हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थायी प्रबंधकारिणी समिति के मंत्री की रिपोर्ट पुरुषोत्तम दास टण्डन मत्री हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा प्रस्तुत।

सम्मेलन पत्रिका के दूसरे अक (२-३ संयुक्त) मे गिरिजा कुमार घोष ने सामग्री सकलन इस प्रकार किया था।

१- हिन्दी भाषा मे उच्चशिक्षा देने के उपाय।

२- हिन्दी साहित्य की सच्ची उन्नति के उपाय।

३- हिन्दी भाषियो के लिए कुछ सोचने का मसाला।

४- ग्राम्य कविता।

५- गगाभरण हिन्दी भाषा मे वैधक का एक ग्रन्थ पुस्तक परिचय।

६- हिन्दी परीक्षा की नियमावली।

७- भागलपुर मे हिन्दी साहित्य प्रदर्शनी।

८- सयुक्त प्रान्त मे प्रारम्भिक शिक्षा।

९- पुस्तक प्राप्ति स्वीकार।

१०- सम्मेलन की स्थायी समिति का अधिवेशन।

११- विविध चतुर्थ हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन के सभापति मुशीराम जी कलकत्ते मे सत्य हरिश्चन्द्र कालेज, जीवन सुधार पुस्तकालय, श्रीधर पाठक कृत आर्य गीता, कलकत्ते का भारत मित्र एक लिमिटेड कम्पनी के हाथ मे भागलपुर अधिवेशन मे पढे जाने वाले निबन्धो की सूची, इन्द्रनारायण द्विवेदी कृत हिन्दू ज्योतिष का इतिहास की सूचना, लाला रामफल लाला जी द्वारा भृगु सहिता की कुडलियो का सकलन, बिहार के पत्र सम्पादको का स्वतत्र सम्मेलन, चीन का विश्व कोष, हिन्दी परीक्षा का परिणाम, भागलपुर सम्मेलन मे रामलोचन प्रसाद पाण्डेय सम्मेलन के अवैतनिक उपदेशक, श्री युत् सत्यदेव जी द्वारा हिन्दी प्रचार सत्य ग्रन्थ माला का कार्यालय प्रयाग मे । इसके अतिरिक्त इसी अंक मे हिन्दी साहित्य प्रदर्शनी तथा हिन्दी सम्बन्धी सभाओ से विशेष प्रार्थना सम्बन्धी विज्ञापन भी प्रकाशित हुए। इसी प्रकार तीसरे अंक ४-५ सयुक्त में भागलपुर मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन का चतुर्थ अधिवेशन शीर्षक लम्बी रिपोर्ट प्रकाशित हुई। इसके अतिरिक्त विविध विषय को हिन्दी ससार शीर्षक से प्रकाशित किया गया जिसके अन्तर्गत निम्न टिप्पणियॉ थीं। २१- २२- २३ दिसम्बर १९१३ को गया नागरी प्रचारिणी सभा के वार्षिकोत्सव में सत्य देव का व्याख्यान, धेनु गवॉ बस्ती मे रुद्रनाथ सिंह जी द्वारा हिन्दी हितैषिणी सभा का स्थापना, अलीगढ़ मे एक जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन, ब्रजनारायण शर्मा द्वारा अलवर में हिन्दी साहित्य सम्मेलन समिति की स्थापना, लखनऊ मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन की रजिस्ट्री, ८ जनवरी सन् १९१४ को होने सूचना पंडित जीवानन्द जी काल्पतीर्थ के हिन्दी साहित्य सम्मेलन के उपदेशक पद से अलग होने की सूचना।

गिरिजा कुमार घोष के सम्पादन मे प्रकाशित तीनों अंको के अनुशीलता से ज्ञात होता है कि उनकी दृष्टि हिन्दी साहित्य की सच्ची उन्नति, हिन्दी भाषा के सच्चे प्रचार-प्रसार, हिन्दी मे उच्च शिक्षा की आवश्यकता, हिन्दी साहित्य सम्मेलन की कार्यवाहियों एवं हिन्दी जगत की गतिविधियो को जन मानस तक पहुंचाने के अतिरिक्त पुस्तकों के परिचय और वैज्ञानिक गतिविधियो पर भी रही। संकलन सामग्री की योजना को देखते हुए कहा जा सकता है कि गिरिजा कुमार घोष के ऊपर आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी तथा उनकी सरस्वती सम्पादन

कला का भरपूर प्रभाव था। विविध या हिन्दी संसार स्तम्भ के अन्तर्गत लिखी गयी टिप्पणिया इस बात के उज्ज्वल दृष्टांत है। तीनो अको मे सर्वाधिक लेख उन्ही के लिखे प्रतीत होते है। सम्मेलन के पुस्तकालय को समृद्ध करने के लिए पुस्तक प्राप्ति स्वीकार नामक स्तम्भ जो उन्होने चलाया था उसी से अनुमान किया जा सकता है कि वे सम्मेलन के कितने हित चिन्तक थे। समग्रत कहा जा सकता है कि सम्मेलन पत्रिका यद्यपि सम्मेलन की गतिविधियो का विवरण प्रस्तुत करने के लिए प्रकाशित होती थी तथापि गिरिजा कुमार घोष जैसे सुसाहित्यिक के हाथ पडकर वह साहित्यिक पत्रिका हो गयी थी। गिरिजा कुमार घोष सम्मेलन पत्रिका के सम्पादन से विरत होने पर भी उसकी उन्नति के उपायो मे जीवन पर्यन्त निरत रहे। उनके बाद के लिखे ये लेख पत्रिका के प्रति उनकी शुभेच्छा के सच्चे प्रतीक है।

गिरिजा कुमार घोष के उपर्युक्त लेखो से अनुमान लगाया जा सकता है कि वे बहुविध लेखक थे। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी था। सम्पादन कार्य, हिन्दी का प्रचार लेखन सभी उनके व्यक्तित्व के अनुरूप थे। इंडियन प्रेस और सरस्वती की सेवा से वे हिन्दी जगत मे सुपरिचित हो ही चुके। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रति किये गये सत्यकार्यों से वे सच्ची हिन्दी प्रेमी सिद्ध हुए। सम्मेलन पत्रिका के लिए प्रारम्भिक दिनो में उन्होने कितना अथक प्रयास किया कहने की आवश्यकता नही। नि सकोच कहा जा सकता है कि उन दिनो पत्रिका के कलेवर को निर्मित करने का श्रेय उन्ही को है। सम्मेलन पत्रिका के परवर्ती सम्पादक श्री इन्द्रनारायण द्विवेदी ने तो लिखा है।

पत्रिका जन्म सम्मेलन की तीन ही वर्ष की अवस्था मे हुआ था और इसके जन्मदाताओ मे यदि श्रीमान बाबू गिरिजा कुमार जी घोष का नाम प्रथम ले तो अनुचित न होगा। उक्त बाबू साहब की प्रेरणा से और उन्ही के सम्पादकत्व में पत्रिका निकली थी और यदि बाबू साहब की स्थिति कुछ दिनो तक स्थायी रूप से प्रयाग मे रहती तो पत्रिका की उन्नति अब तक बहुत कुछ हो गयी होती क्योकि जिन विचारो को लेकर बाबू साहब ने पत्रिका को जन्म देकर उसके सम्पादन का भी भार अपने ऊपर लिया था वे विचार अन्य अस्थायी और अनेक सम्पादको में स्वभावत. सर्वथा आ जाते यह सम्भव नही। स्पष्ट है कि गिरिजा कुमार घोष जैसा विचारवान और सूझ-बूझ वाला दूसरा सम्पादक सम्मेलन पत्रिका को मिलना दुष्कर था। समयाभाव और अपनी परिस्थितियों से विवश होकर वे अधिक दिनों तक सम्मेलन पत्रिका की सेवा न कर पाये और फिर ब्यालीस वर्ष की अल्पायु मे ही सन् १९२० में वे स्वर्ग

सिधार गये। इस प्रकार हिन्दी के ऐसे एकनिष्ठ सेवी से हिन्दी साहित्य चिरकाल के लिए वचित हो गया। उनके दिवगत होने पर सम्मेलन पत्रिका ने जो शोकसंवाद प्रकाशित किया वह इस प्रकार है—डॉ० गिरिजा कुमार घोष हे गजानन हे पार्वती नन्दन हम लोगो से मयता काटकर आप इतनी उतावली सी क्यो हिम कुमारी की गोद मे खेलने को कैलास यात्रा कर गये। गिरिजा कुमार घोष के मरणोपरान्त दशम हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति का जो पॉचवा अधिवेशन सम्पन्न हुआ उसमे सभापति द्वारा निम्नलिखित प्रस्ताव भी पेश किया गया।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति श्रीमान् प० विष्णुदत्त जी शुक्ल, श्री यत् गिरिजा कुमार जी घोष तथा श्री युत् बाबू रूढमल जी गोयनका जी आकस्मिक मृत्यु पर अत्यन्त शोक प्रकट करती है तथा इनके कुटुम्बियो के साथ समवेदना प्रकट करती है। गिरिजा कुमार घोष की इहलीला समाप्त हो गयी लेकिन उनकी यशस्विनी जीवन गाथा सम्मेलन के प्रति किये गये सत्कार्यो मे अमर रहेगी। लोकचक्षु से दूर् रहने वाले आगे चलकर १९४८ मे सम्मेलन पत्रिका त्रिमासिक हो गयी और पत्रिका के सामान्य अको के साथ कला विशेषांक, गॉधी टण्डन स्मृति अंक लोकसस्कृति विशेषांक, श्रद्धांजलि विशेषांक, साहित्य संस्कृति-भाषा विशेषांक, मानस चतु. शती विशेषांक, श्याम सुन्दर दास जन्मशती विशेषांक, प० जगन्नाथ चतुर्वेदी, प० कामता प्रसाद गुरु, पं० पद्मसिंह शर्मा एव रविशंकर शुक्ल की स्मृति मे प्रकाशित अक राजर्षि टण्डन जन्मशती विशेषाक, गया प्रसाद शुक्ल सनेही विशषांक, आचार्य राम चन्द्र शुक्ल जन्मशती विशेषांक, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी विशेषाक, पं० माखन लाल चतुर्वेदी विशेषांक आदि प्रकाशित हुए जो विद्वत् समाज में विशेष समादृत हुए। इसके अतिरिक्त अमृत महोत्सव प्रकाशन योजना के अन्तर्गत सभापतियो के भाषण तीन भागो मे साहित्य परिषद्, राष्ट्रभाषा परिषद्, विज्ञान परिषद्, इतिहास तथा समाजशास्त्र परिषद्, दर्शन परिषद् के सभापतियों के भाषण भी अलग-अलग जिल्दो मे प्रकाशित हुए है।[1]।

सन् १९६५ से राष्ट्रभाषा सदेश नामक पाक्षिक पत्र प्रचार विभाग द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है जिसमे देश मे हो रही हिन्दी सम्बन्धी गतिविधियो का समाचार तथा हिन्दी भाषा सम्बन्धी लेख प्रमुखता से प्रकाशित किये जाते रहते है।[2]

---

१ सम्मेलन एक परिचय - पृ० ३०।

२ सम्मेलन एक परिचय - पृ० ४।

(ख) अधिवेशनों के माध्यम से

अधिवेशनों के माध्यम से हिन्दी के विकास में योगदान

साहित्य सम्मेलन एक आयोजन के रूप मे आरम्भ हुआ और दो तीन वर्षो तक इसका यही स्वरूप रहा। परन्तु जब हिन्दी साहित्य सम्मेलन संस्था के रूप मे रूढ़ हो गया, तब वर्ष मे आयोजित सम्मेलन को अधिवेशन का नाम दिया जाने लगा। इस अधिवेशन की गौरवमयी परम्परा १९१० से १९५० तक निरन्तर चलती रही। १९५१ से १९७५ तक सस्था शासी निकाय के अधीन रही जिसमे न केवल देश भर के हिन्दी प्रेमियो को एक साथ मिलने की परम्परा को समाप्त किया गया, वरन सम्मेलन का आर्थिक दोहन भी किया गया। १९७५ से जब सम्मेलन 'शासीनिकाय' के जजीर से मुक्त हुआ और जनतान्त्रिक प्रणाली पुनः स्थापित हुई तो इस परम्परा को पुनः आरम्भ किया गया, लेकिन यह क्रम भी केवल तीन वर्ष ही चल पाया और सम्मेलन पर पुन· ग्रहण लग गया, जो १९८२ मे समाप्त हुआ। अब तक कुल ५० वार्षिक अधिवेशन और तीन विशेष अधिवेशन हो चुके हैं। इन अधिवेशन के अवसर पर साहित्य परिषद्, राष्ट्रभाषा परिषद्, इतिहास परिषद्, समाजशास्त्र परिषद्, दर्शन परिषद् और पत्रकार परिषद् का आयोजन किया जाता रहा है। साहित्य परिषद् और राष्ट्रभाषा परिषदो का आयोजन अब भी होता है। सम्मेलन के इन समस्त सभापतियों के भाषण का प्रकाशन 'अमृत महोत्सव ग्रन्थमाला के अन्तर्गत किया गया है, जो हिन्दी भाषा के इतिहास की दृष्टि से महत्त्व के है।[1]

अब तक हुए अधिवेशन निम्नलिखित है—

क्र०	संवत्	स्थान	सभापति
१-	१९६७	काशी अधिवेशन	पं० मदन मोहन मालवीय
२-	१९६८	प्रयाग अधिवेशन	पं० गोविन्द नारायण मिश्र
३-	१९६९	कलकत्ता अधिवेशन	पं० बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन
४-	१९७०	भगलपुर अधिवेशन	महात्मा मुंशीराम
५ -	१९७१	लखनऊ अधिवेशन	श्रीधर पाठक

१ हिन्दी साहित्य सम्मेलन एक परिचय २००१ पृ० ८-९।

६- १९७२	प्रयाग अधिवेशन	बाबू श्याम सुन्दर दास
७- १९७३	जबलपुर अधिवेशन	प० राम अवतार शर्मा
८- १९७४	इन्दौर अधिवेशन	मोहनदास कर्मचद गॉधी
९- १९७५	बम्बई अधिवेशन	प० मदन मोहन मालवीय
१०- १९७६	पटना अधिवेशन	प० विष्णुदत्त शुक्ल
११- १९७७	कलकत्ता अधिवेशन	डॉ० भगवान दास
१२- १९७८	लाहौर अधिवेशन	पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी
१३- १९७९	कानपुर अधिवेशन	श्री पुरुषोत्तम दास टण्डन
१४- १९८०	दिल्ली अधिवेशन	प० अयोध्यासिह उपाध्याय हरिऔध
१५ -१९८१	देहरादून अधिवेशन	पं० माधवराव सप्रे
१६- १९८२	वृन्दावन अधिवेशन	श्री अमृत लाल चक्रवर्ती
१७- १९८३	भरतपुर अधिवेशन	प० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा
१८- १९८५	मुजफ्फरपुर अधिवेशन	प० पद्म सिह शर्मा
१९- १९८६	गोरखपुर अधिवेशन	श्री गणेश शकर विद्यार्थी
२०- १९८७	कलकत्ता अधिवेशन	बाबू जगन्नाथ दास रत्नाकर
२१- १९८८	झॉसी अधिवेशन	प० किशोरी लाल गोस्वामी
२२- १९८९	ग्वालियर अधिवेशन	श्याम बिहारी मिश्र
२३- १९९०	दिल्ली अधिवेशन	सदाराव
२४- १९९२	इन्दौर अधिवेशन	महात्मा गॉधी
२५ -१९९३	नागपुर अधिवेशन	डॉ० राजेन्द्र प्रसाद
२६- १९९४	मद्रास अधिवेशन	जमना लाल बजाज
२७- १९९५	शिमला अधिवेशन	पं० बाबू विष्णु पराडकर
२८- १९९६	काशी अधिवेशन	अम्बिका प्रसाद वाजपेयी
२९- १९९७	पूना अधिवेशन	श्री सम्पूर्णानन्द
३०- १९९८	अबोहर अधिवेशन	डॉ० अमरनाथ झा
३१- २०००	हरिद्वार अधिवेशन	माखन लाल चतुर्वेदी
३२- २००१	जयपुर अधिवेशन	गोस्वामी गणेश दत्त

३३-२००२	उदयपुर अधिवेशन	श्री कन्हैयालाल
३४-२००३	करॉची अधिवेशन	श्री वियोगी हरि
३५-२००४	बम्बई अधिवेशन	महापण्डित राहुल साकृत्यायन
३६-२००५	मेरठ अधिवेशन	सेठ गोविन्द दास
३७-२००६	हैदराबाद अधिवेशन	आचार्य चन्द्रबली
३८-२००७	कोटा अधिवेशन	श्री चन्द्रबली विद्यालेकार
३९-२०३२	प्रयाग अधिवेशन	पं० कमला पति त्रिपाठी
४०-२०३३	प्रयाग अधिवेशन	श्री नाथ सिह
४१-२०३४	हैदराबाद अधिवेशन	वियोगी हरि
४२-२०३९	प्रयाग अधिवेशन	हरवंश लाल शर्मा
४३-२०४०	कुरुक्षेत्र अधिवेशन	हरवश लाल शर्मा
४४-२०४२	प्रयाग अधिवेशन	रामेश्वर शुक्ल
४५-२०४५	गुडगॉव अधिवेशन	रामेश्वर शुक्ल
४६-२०४६	दिल्ली अधिवेशन	विजयेन्द्र स्नातक
४७-२०४७	पटना अधिवेशन	श्री नरेश मेहता
४८-२०४८	विशेष अधिवेशन पुरी	डॉ० गोविन्द चन्द्र पाण्डेय
४९-२०४९	बम्बई अधिवेशन	डॉ० शिवमगल सिह सुमन
५०-२०५०	प्रयाग अधिवेशन	श्री अमृत राय[१]
५१-२०५१	तिरुपतिअधिवेशन	पण्डित विष्णुकांत शास्त्री
५२-२०५२	कलकत्ता अधिवेशन	डॉ० विद्या निवास मिश्र
५३-२०५३	अहमदाबाद अधिवेशन	प्रो० सिद्वेश्वर प्रसाद
५४-२०५४	बगलोर अधिवेशन	श्री पी०वी० नरसिंह राव
५५-२०५५	पणजी गोवा अधिवेशन	डॉ० नामवर सिह
५६-२०५६	तिरुवनत्तपुरम अधिवेशन	डॉ० राम मूर्ति त्रिपाठी
५७-२०५७	इन्दौर अधिवेशन	डॉ० विद्या निवास मिश्र

१ सम्मेलन एक परिचय पु० ६६।

प्रथम अधिवेशन का भाषिक महत्त्व

१० अक्टूबर १९१० (संवत् १९६७) को दिन मे साढे ग्यारह बजे देश के विभिन्न अचलो से आये हुए ५०० हिन्दी प्रेमियो तथा हजारो की सख्या मे उपस्थित दर्शको की उपस्थिति मे तीन दिन तक हिन्दी साहित्य सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन नागरी प्रचारिणी सभा के खुले प्रागण मे एक सुसज्जित विशाल मण्डप के नीचे सम्पन्न हुआ। यह सयोग ही था कि भाषा यज्ञ का यह सकल्प अनुष्ठान नवरात्रि जैसे पुण्य क्षण मे आरम्भ हुआ। स्वागत गान आदि के उपरान्त स्वागत समिति के सभापति ने इस आयोजन की महत्ता एव सार्थकता पर प्रकाश डाला। उन्होने देश मे कार्य करने वाली अनेक हिन्दी संस्थाओ की चर्चा एव उल्लेख किया। साथ ही इस बात पर बल दिया कि भाषा जागृति के इस कार्यक्रम को एक सूचित तो किया ही जाय साथ ही सामयिक दिशा निर्देश भी दिया जाय। उन्होने सन् १९०१ की ससार की जनसंख्या गणना के आधार पर बताया कि इस समय ससार मे १८५ भाषाएँ है। विश्व भाषाओं के इस परिवार मे २५ आर्य भाषाएँ बोलने वालो की सख्या १९०१ मे २२ करोड के लगभग थी। उन दिनो की गणना के अनुसार हिन्दी भाषियो की संख्या लगभग तेरह करोड थी।[1]

यदि इसमे हिन्दी समझने वालो को शामिल कर लिया जाय तो निश्चित ही हिन्दी भाषा भारत की एकछत्र राष्ट्रभाषा मानी जा सकती है। भारत के लिए एक सामान्य भाषा की परिकल्पना का स्वटन हिन्दी क्षेत्र के बहर भी लोग देखने लगे थे और वे अहिन्दी भाषी हिन्दी को ही इस योग्य समझते थे। इस सम्बन्ध मे गुजरात के बड़ौदा नरेश, बगाल के रमेशचन्द्र दत्त तथा महाराष्ट्र के डॉ० राम कृष्ण गोपाल जैसे विद्वान मनीषियो ने बडौदा में भाषा की इस समस्या को लेकर एक महत्वपूर्ण आयोजन किया। इस दृष्टि से देखने पर भी एक वर्ष बाद हिन्दी साहित्य का यह प्रथम अधिवेशन हिन्दी भाषियों की इस इच्छा की पूर्ति करने के लिए था कि स्वयं हिन्दी क्षेत्र के लोग भी भाषा की समस्या राष्ट्र, राज्य और साहित्य तीनो ही स्तर पर एक जागरूक समाज के रूप में अनुभव करते हैं।

महामना मालवीय जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में हिन्दी भाषा के स्वरूप, हिन्दी की ऐतिहासिक स्थिति, अन्य भारतीय भाषाओ से समकक्षता, हिन्दी भाषियो का अपने भाषा के प्रति दायित्व, हिन्दी और उर्दू का सम्बन्ध और हिन्दी भाषा के प्रयोग पर अपना अभिमत प्रकट किया। अपने समापन भाषण में मालवीय जी ने कहा कि जिनमे विद्या बुद्धि है वे भाषा

---

१ हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इतिहास - नरेश मेहता - पृ०४७।

का भण्डार भरने मे अपना कुछ समय लगाये। अधिक श्रम न करके यदि लोग अंग्रेजी, फारसी आदि भाषाओ से अनुवाद ही करे तो भाषा का भण्डार भर जायेगा। ऊर्दू भाषा की बात कह चुका हूँ। उर्दू के कितने ही ग्रन्थो का अनुवाद अब तक हिन्दी मे नही हुआ है। हमारी भाषा से लोग लेते है, पर हम आलस्य से दूसरी भाषाओ से नही लेते। जो सस्कृत के ज्ञाता है, उनके लिए अनुवाद करने के लिए बहुतेरे ग्रन्थ है। बाबू गजाधर सिह के हम कृतज्ञ है कि उन्होने सस्कृत कादम्बरी का भाषा मे अनुवाद किया है। हमे ऐसे अनुवादो का बडा प्रयोजन है। ऐसे अनुवादको को सस्कृत मे प्रवीण होना चाहिए। साथ-साथ भाषा का पूर्ण ज्ञान भी बडा ही आवश्यक है। पुस्तके उठाइए जिस भाषा को जानते हो उस भाषा से अपनी भाषा मे अनुवाद कीजिए। सुधाकर जी ने ठीक ही कहा है कि अनुवाद वह है जिसमे प्राण आएँ भाव आएँ। जब उन बातो मे आप पडित होगे तभी आप से अच्छा अनुवाद होगा और ऐसे ही अनुवादो से हिन्दी भाषा श्री वृद्धि होगी। अनुवाद मे मूल पुस्तक का भाव मूल पुस्तको की बाते अवश्य आएँ। मै उन लोगो को कभी भूल नही सकता जिन्होने महाभारत, उपनिषदो आदि के अनुवाद से हिन्दी भाषा का भण्डार भरा है। उनका मैं हृदय से धन्यवाद करता हू। मौलाना हाफिज आदि की पुस्तको का अनुवाद होना चाहिए। ऐसे अनुवादो से आपके भाई मूल ग्रन्थकारो के ऊचे विचारो से परिचित हो सकेगे।

याद रखिए जितने अच्छे विचार है वे सब मानव जाति की सम्पत्ति हैं। जीवन बहुत थोडा है ऐसी अवस्था में हमे जो काम करना चाहिए वह इस प्रकार करना चाहिए जिससे वह चिरकाल तक जिये। गुजराती, बागला की तरह हमे भी अग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करना चाहिए। श्री शुकदेव जी ने कहा कि श्रृंगार रस बहुत हो चुका अब श्रृगार की आवश्यकता नही अब तो वह रस हो जिससे महत्व प्राप्त हो। पश्चिमी ग्रन्थो मे बहुत सा सामान भरा पडा है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन से ५० पृष्ठों की एक पुस्तक निकले जिससे लोगो के हृदय मे सद्विचार उत्पन्न हो और भाषा का भण्डार भरे।

जहॉ से अच्छा उपदेश मिले वहॉ से उसे लेना चाहिए। भंवरा जैसे फूलो से अच्छा रस लेता है उसी तरह आप अच्छी-अच्छी पुस्तको से अच्छा अच्छा रस ले। उपन्यास बुरी चीज नही है। उपन्यासो ने पाश्चात्य देशो मे बड़े-बड़े काम किये हैं, उनमे देश भक्ति का प्रचार किया गया है। उपन्यासो से कायरो मे वीरत्व लाया गया। हिन्दी भाषा मे ऐसे उपन्यास बने जो इन कामो के उपयुक्त हो।[1]

---

१ अमृत महोत्सव ग्रन्थ माला।-सभापतियो के भाषण पृ० २२।

प्रथम अधिवेशन के भाषणो से स्पष्ट है कि उस समय सम्मेलन की चिन्ता हिन्दी भाषा की समृद्धि की थी। प्राचीन तथा आधुनिक भाषाओ मे लिखित विचारों को हिन्दी मे लाने की आवश्यकता समझी जा रही थी। पाश्चात्य साहित्य मे निहित विचारो को भी अनुवाद के माध्यम से हिन्दी भाषा मे प्रस्तुत करने की जरूरत थी। वैश्विक चिन्तन से समृद्ध भाषा ही श्रेष्ठ भाषा का दर्जा पा सकती है। अपने भाषा भाषियों की दैनिक आवश्यकताओ की पूर्ति करने वाली भाषा ज्ञान विज्ञान तथा उच्च चिन्तन की मानक भाषा नही बन सकती है। अनुवाद कार्य को बढावा देने से भाषा की समृद्धि के साथ ही वैचारिक आदान-प्रदान तथा पारस्परिक सूझ-बूझ का भी उचित अवसर मिलता है।

हिन्दी गद्य मे नयी विधाओ का प्रचलन हो गया था। कुछ विधाएँ हिन्दी भाषियों के लिए एकदम नवीन थी। उपन्यास विद्या कुछ इसी तरह की थी। आरम्भ में इसके प्रति लोगो के मन मे आशका तथा हिचक थी। वे उपन्यास को मर्यादाहीन तथा चरित्रभ्रष्ट विद्या मानते थे। प्रथम अधिवेशन मे इस नयी विद्या के प्रति जनमानस के परिवर्तन का आग्रह करके सम्मेलन ने बडा उपकार किया। आगे आने वाले वर्षो मे उपन्यास की लोकप्रियता बहुत बढी जिसके आधार निर्माण मे इस अधिवेशन का योगदान विस्मृत नही किया जा सकता।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के द्वितीय प्रयाग अधिवेशन मे आचार्य प० गोविन्द नारायण मिश्र ने हिन्दी भाषा को राष्ट्रीय एकता, स्वतत्रता तथा देश की जनचेतना के साथ जोड़ा। आपने स्पष्ट शब्दो में घोषित किया कि हम मातृभाषा के यथोचित उन्नति के साथ ही हम अपनी और अपने देश की दशा को सहज ही सुधार सकते हैं। मातृभाषा हिन्दी को देशभक्ति का महत्वपूर्ण साधन बताते हुए आचार्य मिश्र ने कहा—मातृभाषा हिन्दी की यथाशक्ति सेवा और भक्ति आराधना करना हमारा परम कर्त्तव्य है। वस्तुत· राष्ट्रभाषा हिन्दी की उन्नति और भारतीय राष्ट्र की उन्नति एक दूसरे का पर्याय है। निज भाषा के गौरव से ही राष्ट्र की गौरववृद्धि सम्भव है। इसी तथ्य पर बल देते हुए आपने स्पष्ट शब्दों में यह कहा कि—जब तक हम अपनी मातृभाषा का आदर एव सम्मान करना न सीखेगे तब तक उसकी दुर्दशा का भी अन्त न होगा।[1] आपने अपने भाषण मे साहित्य के इतिहास तथा स्वरूप, हिन्दी की उन्नति कैसे हो, हिन्दी में उच्च शिक्षा की आवश्यकता पर विशेष बल दिया। साहित्य के स्वरूप का परिचय देते हुए आचार्य मिश्र विभिन्न विद्वानो की साहित्यिक विषयक परिभाषा का उल्लेख करते हुए कहा—साहित्य स्वर्ग की सुधा है, यह किसी व्यक्ति विशेष की सम्पत्ति

---

१ अमृतमहोत्सव ग्रन्थमाला भाग-१ सभापतियो के भाषण-पृ०१८।

नही, रचयिता के निज की भी वस्तु नही यह देवताओ की अमृतमयी रसीली वाणी है।[1]

द्वितीय अधिवेशन की टिप्पणियो से ज्ञात होता है कि सम्मेलन भाषा को राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक मान कर चल रहा था। चूँकि उस समय भाषा के साथ हमारा भावनात्मक लगाव बना था। सम्पूर्ण भारत मे राष्ट्रीयता की भावना उद्वेलित हो रही थी इसलिए राष्ट्रभाषा, मातृभाषा को राष्ट्रीय चेतना के परिप्रेक्ष्य मे देखना-परखना आवश्यक था। इस अधिवेशन के भाषणो से स्पष्ट है कि उस समय जन नेताओ तथा चिन्तको में हिन्दी भाषा की उन्नति के उपायो के खोज की बेचैनी थी, हिन्दी को उच्चशिक्षा का माध्यम बनाने की ललक थी और हिन्दी भाषा के साहित्य को वेदो की तरह दिव्य भाव से भरने की आकाक्षा थी।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का तृतीय अधिवेशन कलकत्ता मे श्री बदरीनारायण चौधरी, प्रेमधन जी की अध्यक्षता मे हुआ। आपने अपना अध्यक्षीय भाषण हिन्दी की महत्ता- प्रकाश करने वाली कविता से आरम्भ किया—

जय जयति जगदाधार सिरजन करत जो ससार है।

छायी अविद्या राशि तै चाह्यो करन उद्धार है।।

पावनि परम निज वेद वानी को करन सचार है।

जग-मानवन मन माहि कीन्यो ज्ञान को विस्तार है।।

हिन्दी की चर्चा करते हुए प्रेमघन जी ने देववाणी, राजभाषा या नागरी भाषा की चर्चा की है। आपने हिन्दी को महाराष्ट्री की संज्ञा दी है। आपका कथन है कि महाराष्ट्री भारतरूपी महाराष्ट्र की भाषा है। जिसकी शाखाएँ शौरसेनी, श्रावस्ती, मागधी आदि हैं। भारतीय भाषाओ की विकास यात्रा की चर्चा करते हुए आपने तीन अवस्थाओं का उल्लेख किया। प्रथम को आपने शैशवावस्था की संज्ञा दी है और कहा कि पुरानी भाषा प्राकृत अपभ्रंश-मिश्रित भाषा थी, जिसमे पृथ्वीराज रासो की रचना हुई। द्वितीय अवस्था को प्रेमघन जी ने यौवनावस्था की संज्ञा दी और ब्रजभाषा मिश्रित भाषा का उल्लेख करते हुए कबीर, सूर, तुलसी, खुसरो, जायसी, बिहारी, देव और द्विज की चर्चा की। तृतीय अवस्था को आपने वर्तमान की भाषा कहा। इसके अन्तर्गत पद्य का उल्लेख करते हुए आपने हरिचन्द, प्रतापनारायण मिश्र, अम्बिका दत्त व्यास, श्रीधर पाठक तथा श्री निवास और उनकी रचनाओं का उल्लेख किया।

अपने अध्यक्षीय भाषण मे प्रेमघन जी ने कहा—सर्वप्रथम आपको अपने प्रदेश के राज-कार्यालयो मे अपनी भाषा के प्रवेश का उद्योग करना चाहिए। जब तक अपनी भाषा

---

१ अमृतमहोत्सव ग्रन्थमाला भाग-१ सभा पतियो के भाषण-पृ०१९।

की पूछ न होगी, उसका कोई ग्राहक न होगा, क्यो कोई उसकी योग्यता बढ़ाने मे व्यर्थ श्रम करेगा। हिन्दी राष्ट्रभाषा का स्थान प्राप्त करे और वह जनता की भाषा बने, इस पर आपने विशेष जोर दिया। आपका कथन था भाषा को सरल बनाये और उसमे भाषापन लाये। हिन्दी के उज्ज्वल भविष्य तथा उसके राष्ट्रभाषा होने का आपको दृढ़ विश्वास था इसीलिए आपने कहा— हिन्दी के एक नही कोटि लाल है। वे यदि अपनी ललाई को बचाना चाहते है तो मातृभाषा हिन्दी की तन, मन, धन से सेवा करे।[1]

सम्मेलन का चुतर्थ अधिवेशन बिहार के भागलपुर नामक स्थान मे महात्मा मुंशीराम जी की अध्यक्षता मे हुआ। अपने अध्यक्षीय भाषण मे आपने राष्ट्रभाषा हिन्दी के सम्बन्ध मे अनेक महत्वपूर्ण सुझाव दिये - राष्ट्रभाषा हिन्दी के बिना भारतीय राष्ट्र की परिकल्पना ही कठिन होगी। इस तथ्य पर बोलते हुए आपने कहा—पर-भाषा के द्वारा विचार उठने से जहॉ सभ्यता विदेशी होगी वहॉ राष्ट्र भी भारतीय न रहेगा। सचमुच वाणी (भाषा) ही जातियो के जीवन का साधन होती है।[2]

प० श्रीधर पाठक जो हिन्दी साहित्य सम्मेलन के पॉचवे अधिवेशन के सभापति थे का अभिभाषण राष्ट्रप्रेम तथा भारतीय सस्कृति की भावना को नवीन आलोक प्रदान करने वाला था। आपने ने राष्ट्रभाषा को राष्ट्र का मूलसूत्र बताया - स्मरण रखना चाहिए कि हमे समस्त भारतवासियो मे जातीयता का भाव उत्पन्न करना है। अर्थात इस देश के भिन्न-भिन्न जातियो और भिन्न-भिन्न धर्म और सम्प्रदायो के अनुयायिओ को देशभक्ति परस्पर प्रीति के सामान्य सूत्र मे ग्रथित करना है। यह तभी सम्भव है जबकी भारत वर्ष मे श्रेष्ठ साहित्य की रचना हो और विद्वान लोग निष्पक्ष समीक्षा द्वारा ग्रन्थो की श्रेष्ठता घोषित करे।[3]

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के पॉचवें अधिवेशन का सभापतित्व करते हुए श्रीधर पाठक ने अपने भाषण मे कहा—हमारा साहित्य हमारी जातीय सम्पत्ति है, हमारी जातीय प्रतिमूर्ति व जातीय स्थिति का दर्पण है। साहित्य और जातियत्व का सर्वत्र सचमुच ऐसा ही अन्योन्याश्रम शाश्वत सम्बन्ध है यह कभी न भूलना चाहिए। प्रत्येक देश के सामयिक साहित्य की स्थिति से उसकी उस समय की जातीय स्थिति अनुमेय होती है।

साहित्य की उन्नति-अवनति और देश का उत्थान-पतन एक ही बात है।[4]

---

१ अमृतमहोत्सव - सभापतियो का भाषण- स०-डॉ० लक्ष्मीशकर व्यास - पृ०२२।

२ अमृतमहोत्सव - सभापतियो का भाषण - स० डॉ० लक्ष्मीशकर व्यास - पृ० २२-२३।

३ अमृतमहोत्सव - सभापतियो के भाषण - स० लक्ष्मीशकर व्यास - पृ० २३।

४ अमृतमहोत्सव - स्मारिका - सम्पादक - सत्य प्रकाश मिश्र - भूमिका।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के छठे अधिवेशन के सभापति बाबू श्याम सुन्दर दास थे। उन्होने देशी भाषा मे शिक्षा पर बल दिया। अपने अध्यक्षीय भाषण मे श्यामसुन्दर दास जी ने कहा—देश हितैषी लोग अब स्वय सोच ले कि दोनो बातों मे से कौन सी बात निज मातृभूमि के लिए कल्याणकारी होगी। दूसरी बात इस सम्बन्ध मे विचार करने की है वह यह है कि किसी भाषा के ज्ञान मात्र को शिक्षा नही कह सकते। शिक्षा से तात्पर्य मस्तिष्क विकास से है जो भिन्न विषयो के मनन से होता है। अग्रेजी भाषा के ज्ञान की आवश्यकता को हम मानने के लिए पूर्णतया उद्यत हैं, पर हमारी समझ मे यह नही आता कि इस बात की क्या आवश्यकता है कि हम भारत के मस्तिष्क-विकास के लिए भी एक विदेशी भाषा का आश्रण ग्रहण करे। इस पद्धति के अनुसार चलने का परिणाम तो यही होगा की अधिकाश बालको की सारी आयु एक विदेशी भाषा की जटिलता को हल करने मे लग जायेगी। न उसके मस्तिष्क का विकास होने पायेगा और न ही उसे किसी विषय का वास्तविक ज्ञान हो सकेगा। क्या ससार मे कही का भी आप एक दृष्टान्त उद्धृत कर सकते हैं जहॉ बालकों की शिक्षा विदेशी भाषा द्वारा होती हो। क्या जापान ने अपनी उन्नति विदेशी भाषा के प्रचार से की है, क्या निज मातृ भाषा द्वारा शिक्षा देने के कारण उसके गौरव मे, उसके महत्व मे किसी प्रकार की कमी हुई है। यदि ऐसा नही हुआ तो भारत वर्ष मे इस अनोखे सिद्धान्त के अनुकरण करने के लिए क्यो उद्योग नही किया जाता। इस प्रान्त के कांगड़ी गॉव मे इस बात का ज्वलन्त प्रमाण है कि देश भाषा द्वारा शिक्षा देने से उसके वास्तविक गुणो के अर्जन मे किसी प्रकार की न्यूनता नही होती। अतएव मेरा तो यह दृढ सिद्धान्त है- भारत का इसी मे कल्याण है कि जैसे हो वैसे शिक्षा का भरपूर प्रचार किया जाय और यह शिक्षा देश-भाषा द्वारा हो। जो लोग उच्च शिक्षा के अभिलाषी हो उनके लिए अग्रेजी शिक्षा का अभ्यास आवश्यक एवं सर्वथा उचित है। परन्तु वह भी अन्य तथा तृतीय भाषा के रूप मे।[1] अपने भाषण मे श्यामसुन्दर दास जी ने आगे कहा कि विचारणीय यह है कि साहित्य किस प्रकार का होना चाहिए जिससे उद्देश्य की सिद्धि हो सके। मेरे विचार के अनुसार इस समय हमे विशेष कर ऐसे साहित्य की आवश्यकता है जो मनोवेगो का परिष्कार करने वाला, संजीवनी शक्ति का संचार करने वाला, चरित्र को सुन्दर साँचे मे ढालने वाला तथा बुद्धि

---

१ अमृतमहोत्सव स्मारिका -सं० - सत्य प्रकाश मिश्र - भूमिका।

को तीव्रता प्रदान करने वाला हो। साथ ही इस बात की भी आवश्यकता है कि यह साहित्य परिमार्जित, सरस और ओजस्विनी भाषा मे तैयार किया जाय। पर क्या यह प्रश्न नही किया जा सकता कि इस बात की आवश्यकता है कि ऐसे साहित्य के उत्पादन का उद्योग हिन्दी ही मे किया जाय, क्या अन्य भारतीय देश-भाषाओ मे इसका सूत्रपात नही हो चुका है और क्या उनसे हमारा काम न चलेगा। मेरा दृढ विश्वास है कि समस्त भारतीय भाषाओ मे हिन्दी ही ऐसी है जो मातृभूमि की सेवा के लिए सर्वथा उपयुक्त है और जिससे सबसे अधिक लाभ की आशा की जा सकती है। गुजराती, मराठी, बगला आदि भाषाओ का साहित्य हमारी भाषा के वर्तमान साहित्य से कई अशो मे समृद्ध है। दूसरा गुण जो हिन्दी मे अन्य भाषाओ से अधिक पाया जाता है वह यह है कि इसका विस्तार प्रान्त या स्थान की सीमा के भीतर बद्ध नही है। राष्ट्रीयता के लिए यह एक आवश्यक गुण है।[1]

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का सप्तम अधिवेशन स० १९७३ मे जबलपुर मे सम्पन्न हुआ। इसके सभापति प० राम औतार शर्मा हुए। अपने अध्यक्षीय भाषण मे शर्मा जी ने हिन्दी के व्यापक प्रचार पर विशेष जोर दिया। अपने अध्यक्षीय भाषण मे शर्मा जी ने कहा कि—आज के पच्चीस-तीस वर्ष पहले अंग्रेजी फिट-फाटवाले बाबू तथा सस्कृत के प्रचण्ड पण्डित दोनो ही हिन्दी भाषा की ओर संकुचित दृष्टि से देखते थे। लैटिन, ग्रीक आदि आकर भाषाओ के प्रेम मे विह्वल यूरोप वाले भी अंग्रेजी, फ्रासीसी, जर्मन, इटालियन आदि नवीन देश भाषाओ पर पहले ऐसी ही कुदृष्टि रखते थे। पर विज्ञान के विकास के साथ अब विद्या फैलने लगी और शिक्षा का असली अर्थ तथा उपयोग लोग समझने लगे। अब समाज के नेताओ की बुद्धि सुधरी और समाज-शिक्षा का मुख्य द्वार देश की प्रचलित भाषा ही हो सकती है।, यह बात सबको झलकने लगी। शिक्षाधिकारियो की अभी पूर्ण दृष्टि तो इधर नहीं है। तथापि जब देश-भाषाओं के वैज्ञानिक अध्ययन की ओर प्रवृत्ति जनोद्योग से कुछ काल में हो चले, तो आश्चर्य नही। विश्वविद्यालयो से कुछ थोडी बहुत सहायता आपको इस कार्य में भले ही मिल जाय पर वस्तुतः नागरी प्रचारिणी सभा, विज्ञान परिषद्, साहित्य सम्मेलन तथा हिन्दी के पत्रो और पत्रिकाओं पर ही कार्य निर्भर है। अपने गुणो से तथा सूर, तुलसी, हरिश्चन्द्र आदि महाकवियो की अपूर्व प्रतिभा से हिन्दी केवल भारत में ही नहीं, द्वीपान्तरो

---

१ हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इतिहास-श्री नरेश मेहता-पृ०७।

मे भी माननीय हो रही है। राष्ट्र भाषा तो हिन्दी हो ही रही है। थोडे दिनों मे मारवाडी भाइयो के भू-व्यापक वाणिज्य आदि से सघाय (सघाई) नन्दन (लन्दन) और नवार्क (न्यूयार्क), मे भी इसका प्रचार होना दुर्घट नही दीख पडता। सरस्वती भगवती के दो वासस्थान है। सिद्ध वाङ्मय और साध्य वाङ्मय। सिद्ध वाङ्मय घना वन है। जहाँ के हाथ पडने से शोभा बढती नही बल्कि घट जाती है। छेड-छाड करने से कविता खराब होने लगती है। साध्य वाङ्मय कृत्रिम महल और बगीचा है। मुख्यतया मनुष्य के प्रयत्न से बना है। इसी के प्रयत्न से इसका आयाम बढ सकता है। इस साधय वाङ्मय के दो अंग हैं। अनुवादात्मक और मौलिक। इन दोनो अगो का परितोष और प्रचार इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। भारत मे कम-से-कम जन शिक्षा के दस केन्द्र वनवाने का प्रगाढ प्रयत्न करे और एक मध्य केन्द्र प्रयाग के आस-पास स्थापित करे। हरिद्वार लाहौर आदि मे ॠषिकुल और धार्मिक कालेज आदि की वृद्धि देख कर हर्ष होता है। मजहबी और नैतिक समाजो ने अपना कार्य आरम्भ कर दिया है। पर अभी तक शुद्ध सरस्वती सेवक किसी समाज ने मजहबी और नैतिक भावो से स्वतन्त्र होकर भारत मे विद्या केन्द्र स्थापित नही किये है। सम्मेलन को शुद्ध सरस्वती सेवा का अवसर है। हिन्दू, मुसलमान, कृस्तान, आर्यसमाजी, ब्रह्मसमानी आदि मत वालो मे से तथा गोखलीय टिलकी आदि दल वालो मे से विद्या प्रेमियो को लेकर हमे एक ऐसा समाज संगठित करना चाहिए और एक ऐसी संस्था स्थापित करनी चाहिए जिससे देश की जनता मे अज्ञान, दारिद्र्य और दुर्बलता का नाश हो और ज्ञान, धन, बल का क्रम से विकाश होता चले। ऐसी अवस्था मे समस्त भारत की दृष्टि हिन्दी साहित्य सम्मेलन पर है। सब लोग नही देखना चाहते है कि एक विशाल आयोजन किस फल मे परिणित होता है। हिन्दी मातृक लोगो से सामान्यतः एक रुपया प्रति व्यक्ति लेने का प्रयत्न होना चाहिए। विद्या केन्द्रो की स्थापना जन समाज के द्वारा होनी चाहिए। जिससे मातृभाषा मे शिक्षा हो अर्थात भाषा शिक्षा का विशेष क्लेश छात्रों को न उठाना पड़े। सम्मेलन का धर्म है कि राजे महराजो से, साधारण जनता से चाहे जैसे भी इकट्ठा कर सके इन चारो ग्रन्थों को शीघ्र संगृहीत तथा प्रकाशित करें और थोड़े मूल्य मे सब हिन्दी प्रेमियों के हाथ मे देदे। एक तो छायापथ से तारा ग्रह आदि निकलने के समय से आज तक का सक्षिप्त जग-विकास का इतिहास तैयार होना चाहिए। दूसरा नर जातियों के वृद्धि विकास का इतिहास बनाना चाहिए, जिसमें प्रत्येक जाति की उन्नति अवनति का कारण स्पष्ट दिखाते हुए, किस आदर्श

की ओर मनुष्य जा रहा है और आर्दश का अनुकरण असल मे इसके लिए कल्याणकारक है यह बात दिखलाई जाय। तीसरा एक अग्रेजी जन-शिक्षक पुस्तिका सर्वसुलभ शैली पर प्रकाशित होनी चाहिए, जो एक प्रकार का सचित्र बाल विश्वकोश का काम करेगा। चौथा दस हजार ऐसे शब्दो की सूची बनने की आवश्यकता है जिससे वाइसिकिल, फोनोग्राफ ऐलेक्जेण्डर, इग्लैण्ड आदि वैज्ञानिक ऐतिहासिक भौगोलिक आदि संज्ञाओ के लिए देशी नाम भी दिये जाय, जिससे देश भर मे इन विषयो पर बात-चीत करने मे कठिनाई न पडे।

यदि आठ दस उपसमितियॉ हम सब बना ले और इसके द्वारा भाषा निर्वाचन, दर्शनो का तारतम्य, ऐतिहासिक अन्वेषण, साहित्य समीक्षा, वैज्ञानिक अनुसंधान, ज्योतिष शैली आदि पर विचार हुआ करे और छोटे-बडे प्रबन्ध इन विषयो पर लिखवाये जायँ तो इस सम्मेलन द्वारा भारत वर्ष पर बडा उपकार होगा।

सम्मेलन के पूर्ववर्ती अधिवेशनो मे हिन्दी माध्यम से शिक्षा देने की बात को ही ज्यादा उभारा गया तथा राष्ट्रीय एकता के लिए हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप मे प्रतिष्ठित करने की दिशा मे प्रयल की जरूरत बताई गयी। किन्तु प्रस्तुत अधिवेशन मे धार्मिक शिक्षा की अपेक्षा वैज्ञानिक तथा अन्य प्रकार के उपयोगी विषयो की शिक्षा पर बल दिया गया। हिन्दी को ज्ञान-विज्ञान की भाषा के रूप मे विकसित किए जाने की दिशा मे ठोस कदम उठाए जाने हेतु सुझाव दिए गए।

इन्दौर अधिवेशन मे सभापतित्व का दायित्व गॉधी जी ने सम्हाला था। गॉधी जी उस समय राजनीतिक ही नही बल्कि राष्ट्र के अनेक सामाजिक गतिविधियो के अग्रगण्य नेता थे। उनके द्वारा जो विचार सम्मेलन के मच से व्यक्त हुए वे निश्चित ही राष्ट्रवासियों के लिए अतिशय प्रेरक थे।

इन्दौर मे होने वाले हिन्दी साहित्य सम्मेलन के नवे अधिवेशन के सभापति कर्मवीर मोहनदास कर्मचन्द गॉधी जी ने भाषा को माता के समान बताया। अपने भाषण मे गॉधी जी ने कहा कि—भाषा माता के समान है। माता पर जो हमारा प्रेम होना चाहिए वह हम लोगो मे नही है। मुझे तो सम्मेलन से भी वास्तविक प्रेम नहीं है। तीन दिन का जलसा होगा तीन दिन कह सुन कर, हमे जो करना होगा उसे भूल जायेगे। सभापति के भाषण मे तेज नही है। जिस वस्तु की आवश्यकता है वह उसमें नहीं। हम पर और हमारी प्रजा के ऊपर एक

बडा आक्षेप है कि हमारी भाषा मे तेज नही। जिसमे ज्ञान नही उसमे तेज नही। जब हममे तेज आयेगा तभी हमारी भाषा और हमारी प्रजा मे तेज आयेगा। विदेशी भाषा द्वारा आप जो स्वातत्र्य चाहते है वह नही मिल सकेगा क्योकि इसमे हम योग्य नही है। प्रसन्नता की बात है कि इन्दौर मे सब कार्य हिन्दी मे होता है पर क्षमा कीजियेगा, प्रधानमत्री जी का जो पत्र आया है वह अग्रेजी मे है। इन्दौर की प्रजा यह बात नही जानती होगी पर मै उसे यह बताता हू कि यहाँ की अदालतो मे प्रजा की अर्जियाँ हिन्दी मे ली जाती है, पर न्यायधीशो के फैसले पर वकील-वैरिस्टरो की बहस अग्रेजी मे होती है। मैं पूछता हूँ कि इन्दौर मे ऐसा क्यो होता है, हाँ यह ठीक है, यह मै जानता हूँ कि अग्रेजी राज्य मे यह आन्दोलन सफल नही हो सकता पर देशी राज्यो मे तो सफल होना ही चाहिए। शिक्षित वर्ग जैसा कि माननीय पं० जी ने अपने पत्र मे दिखाया है अग्रेजी के मोह मे फँस गया है और अपनी राष्ट्रीय मातृभाषा से उसे अविश्वास हो गया है। पहली माता से जो दूध मिलता है उसमे जहर व पानी मिला हुआ है। बिना इस शुद्ध दूध के मिले हमारी उन्नति होना असम्भव है। पर जो अन्धा है वह देख नही सकता और गुलाम नहीं जानता कि अपनी बेडियाँ किस तरह से तोड़ूँ। पचास वर्ष से हम अग्रेजी की मोह मे फँसे है, हमारी प्रजा अज्ञान मे डूब रही है। सम्मेलन को इस ओर विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए। हमे ऐसा उद्योग करना चाहिए कि एक वर्ष मे काग्रेस मे प्रान्तीय सभाओ मे और अन्य सभा समाज और सम्मेलनो मे एक भी शब्द अग्रेजी का सुनाई न पडे। हम बिलकुल अंग्रेजी का व्यापार त्याग दे। अंग्रेजी सर्वव्यापक भाषा है पर यदि अंग्रेज सर्वव्यापक रहेगे तो अग्रेजी भी सर्वव्यापक भाषा रहेगी। अब हमे अपनी मातृभाषा को और अधिक नष्ट करके उसका खून नहीं करना चाहिए। जैसे अग्रेज मादरी जबान अग्रेजी मे बोलते और सर्वथा उसे ही व्यवहार मे लाते हैं वैसे ही मै आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का गौरव प्रदान करे। हिन्दी सब समझते है इसे राष्ट्रभाषा बनाकर हमे अपना कर्तव्य पालन करना चाहिए।[1]

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का नवां अधिवेशन बम्बई मे सम्पन्न हुआ। इसके सभापति पण्डित मदन मोहन मालवीय थे। मालवीय जी ने अपने भाषण मे कहा कि हमे दो बातो

---

१ अमृतमहोत्सव - स्मारिका स० सत्य प्रकाश मिश्र - पृ० २२।

का विशेष ध्यान देना चाहिए। एक तो हिन्दी भाषा की उन्नति की जाय और दूसरे इसी भाषा द्वारा उच्च शिक्षा प्रचार किया जाय। सभी प्रान्तीय भाषाओ की उन्नति हो रही है। सभी प्रान्तो के निवासी अपनी-अपनी भाषा मे उच्च शिक्षा देने दिलाने का प्रबन्ध कर रहे है और ऐसा ही करना उचित है। कुछ लोगो का विचार यह है कि देशी भाषा उच्च शिक्षा के अयुक्त नही है। वे कहते है देशी भाषा घर, बाजार, पत्र व्यवहार एव समाचार पत्रो के लिए तो ठीक है, पर राजदरबार, कौसिल कालेज के लिए यह अनुपयुक्त है। जब हम अपने देश के प्राचीन काल की ओर दृष्टि डालते हैं, तब भी मालूम होता है कि उस समय भी यहॉ पर सस्कृत और प्राकृत भाषा शिक्षा प्रचार तथा देशोन्नति के सब कार्य होते थे। जिस काल मे जो भाषा प्रचलित हुई, उसी मे सब कार्य होते रहे। बौद्ध-काल मे, अशोक के जमाने मे पालि भाषा मे सब कार्य सम्पन्न होते थे। किबहुना दसवी शताब्दी से हिन्दी का प्रादुर्भाव समझना चाहिए। तेरहवी सदी मे 'पृथ्वीराजरासो' हिन्दी का पहला भारी काव्य ग्रन्थ लिखा गया। हिन्दी भाषा मुसलमानो के राजत्वकाल के पहले भी प्रचलित थी और उनके जमाने मे भी प्रचलित रही कुछ कार्य फारसी मे अवश्य होता रहा, पर अधिकांश हिन्दी ही रही। जब से अग्रेजी राज्य जारी हुआ तब से ऊची शिक्षा अग्रेजी मे होने लगी। अनेक कार्य देशी भाषा मे भी होते है पर जितने ऊँचे-ऊँचे काम हैं सब परदेशी भाषा में होते है। अंग्रेजी के अधिक प्रभाव के कारण देशी भाषा दब गयी है। वर्तमान समय मे जो जातीयता का आविर्भाव है, जो प्रान्तीय मेल वर्तमान समय मे देखा जाता है उनका बहुत कुछ श्रेय अग्रेजी को देना पडेगा। परन्तु इससे एक बहुत बड़ी जातीय हानि हुई है, और वह यह कि हम अपनी भाषा का महत्व भूल गये है। ये सब देशी भाषाएँ उस संस्कृत की बेटियॉ हैं जो कि सब भाषाओ की भूषण है। जिसमें ऋृग्वेद लिखा गया है। उसी भाषा की बेटी के द्वारा शिक्षा नहीं दी जा सकती यह बहुत लज्जा का विषय है। तेरहवी, चौदहवीं और पंद्रहवी शताब्दी मे विदेशो मे ही कितनी भाषाओ मे ऐसे ग्रन्थ बने? मुझे निश्चय है कि इस जमाने मे किसी भाषा मे भी ऐसे ग्रन्थो की रचना नही हुई। अंग्रेजी भाषा का गौरव हिन्दी से पुराना नहीं है पीछे का है। नि सन्देह वर्तमान काल में इसकी बडी उन्नति हुई है। तथापि हिन्दी का प्राचीन गौरव बहुत अधिक है। इस दृष्टि से हिन्दी अंग्रेजी की बडी बहन है। फ्रांस की भाषा सुललित है परन्तु उसका भी प्राचीन काव्य-साहित्य हिन्दी के टक्कर का नहीं है। जर्मनी का काव्य कलाप हिन्दी के सामने अभी कल का मालूम होता है। इसके शिवाय रूसी इत्यादि भाषाएँ तो अभी

बहुत ही आधुनिक काल की है। हॉ वर्तमान काल मे विज्ञान आदि की वैसी बडी पुस्तके हिन्दी मे नही तैयार हुई है। जैसी पश्चिमी भाषाओ मे है। इसका कारण यही है कि हमारे लोगो को बहुत सुविधा प्राप्त नही है। भाषा कहते है बोली को जो हम भाषते है। माता की जो बोली है उसी के भाव प्रकाश किये जाते है और फिर उसमे जैसी-जैसी आवश्यकता होती है, शब्द गढते जाते है। इसी प्रकार भाषा की उन्नति होती जाती है। आवश्यकता के अनुसार विद्वान लोग नवीन शब्दो की सृष्टि करते जाते है। इसके लिए हमारे यहॉ पर्याप्त सामग्री मौजूद है। सस्कृत के शब्दो का भण्डार बहुत भारी और विस्तृत है—फिर कैसे कहा जा सकता है कि हमारी भाषा अयोग्य है।[1]

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का दसवॉ अधिवेशन स० १९७६ मे पटना मे सम्पन्न हुआ। इसके सभापति रायबहादुर प० विष्णुदत्त शुक्ल हुए। इस अधिवेशन मे हिन्दी प्रचार और ग्रन्थ निर्माण पर विशेष वार्ता की गयी। अपने अध्यक्षीय भाषण मे प० विष्णुदत्त शुक्ल ने कहा कि मेरी समझ मे इस समय साहित्य सम्मेलन के सम्मुख दो प्रश्न बडे महत्व के उपस्थित है। एक तो यह कि किसी प्रकार देश भर मे हिन्दी भाषा का प्रचार हो और दूसरा यह कि हिन्दी साहित्य के सम्पूर्ण अगो की आपेक्षित वृद्धि कैसे हो?

ये दोनो प्रश्न जितने महत्व के है उतना ही उनका अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। हिन्दी भाषा को देश व्यापी राष्ट्रभाषा बनाने के लिए प्रचार की जितनी अधिक आवश्यकता है, उतनी ही अधिक आवश्यकता उसके साहित्य के सम्पूर्ण अंगो की वृद्धि की और उसे उस उच्चतम् आसन पर आसीन करने की जिस पर आज अग्रेजी भाषा आसीन है। कही भी गाडी एक पहिये से चलती हुई नही देखी गयी। सम्मेलन की कार्यगति उस समय तक द्रुततरवेग धारण न कर सकेगी जब तक उसके रथ के दोनो चक्र प्रचार और साहित्य दोनो बराबर काम न करेगे।[2]

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का ग्यारहवा अधिवेशन कलकत्ता मे सम्पन्न हुआ जिसके सभापति भगवान दास जी थे। अपने भाषण मे भगवान दास जी ने कहा—हॉ, हिन्दी शब्द

---

१ हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इतिहास - नरेश मेहता - पृ०८०

२ अमृतमहोत्सव - स० सत्य प्रकाश मिश्र पृ० २७।

मे सदेह हो गया है। उधर हिन्दी उर्दू का विवाद कुछ दिनो तक तो चला, इसके कारण हमारे मुसलमान भाइयो को कुछ शका हो गयी है, जो कि वह हुज्जत हिन्दी, उर्दू बोली की नही थी बल्कि नागरी मे लिखाई की थी। तो भी इधर कई माननीय देश नेताओ की सलाह है कि हिन्दी शब्द के स्थान पर हिन्तुस्तानी शब्द लिखा जाय। यह भी अच्छा है पर मेरा निवेदन है कि जो अर्थ हिन्दुस्तानी का है वही हिन्दी का है और शब्द छोटा और बहुत दिनो से बर्ताव का है तथा सुभीते का भी। इस देश का नाम जैसे हिन्दुस्तान है वैसे ही हिन्द। बहुतेरे देशो मे हिन्दुस्तान का नाम हिन्द है। हिन्द के रहने वाले हिन्दी ही कहे जाते है हिन्दुस्तानी नही, हिन्दी मे साहित्य सग्रह और साहित्य प्रचार हो तो पूरी आशा है कि इस देश की सर्वागीण जागृति ठीक-ठीक हो जाय और शिक्षा, रक्षा, जीविका आदि सब कार्यो मे सफलता स्वतन्त्र स्वाधीन रूप से हो। जिसकी एक बोली, उनका एक मन और देश के वासियो का एक मन हो जाय, तो कौन सी इष्ट वस्तु है जो उनको न मिल सके। इसलिए इस बोली का जितना अधिक प्रचार हो उतना ही अच्छा है। मुझे इसका बहुत खेद है कि स्वर्गवासी श्रीयुत् शारदा चरण मित्र ने जो एक लिपि विस्तार परिषद् स्थापित की थी और उसकी जो मासिक पत्रिका निकलती थी वह दोनो शान्त हो गयी और उसका इस ओर पुनर्वार प्रयत्न नही किया गया।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का बारहवॉ अधिवेशन लाहौर मे स० १९७८ मे सम्पन्न हुआ। इसके सभापति प० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी जी थे। इस अधिवेशन मे हिन्दी की दशा पर विशेष चर्चा की गयी। इस अधिवेशन के अध्यक्षीय भाषण मे सभापति महोदय ने कहा कि इसमे सदेह नही कि इधर दस-बारह वर्षो से हिन्दी ने आशातीत उन्नति की है और कर रही है। प्राय· सब प्रान्तो मे इसका प्रचार दिन प्रतिदिन बढता जा रहा है। देश के प्राय. सब विद्वानो ने इसे राष्ट्रभाषा स्वीकार कर लिया है और करते जाते है। राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, इतिहास तथा काव्य आदि विविध विषय की पुस्तक पुस्तिकाऍ धडाधड निकल रही है जिनकी छपाई-सफाई और कागज की बडाई जितनी ही की जाय थोडी है। राजनीति और असहयोग की जितनी पुस्तके हिन्दी में प्रकाशित हुई हैं उतनी शायद किसी दूसरी भाषा मे नही हुई है। सचित्र और अचित्र मासिक पत्र पत्रिकाओ की भी यथेष्ट सख्या है। पाक्षिक और साप्ताहिक पत्रो की कौन कहे दैनिक पत्र भी आधे दर्जन से ज्यादा निकल रहे

हैं। इसमे तीन तो सिर्फ कलकत्ते से, एक काशी, दो कानपुर, एक दिल्ली, एक लखनऊ से प्रकाशित होता है। भारत मित्र ने ही दैनिक सस्करण का पथ दिखाया है और पत्र उसके बाद निकले है। सभा समितियॉ और नाटक मण्डलियॉ भी बडे-बडे नगरो मे स्थापित हो अपना-अपना काम तेजी से कर रही है। पुस्तकालय और वाचनालय भी स्थान-स्थान पर स्थापित हो रहे है। काशी का ज्ञान मण्डल और प्रयाग का विज्ञान परिषद् विशेष उल्लेख के है। इनसे हिन्दी का बडा उपकार हो रहा है। हिन्दी विद्यापीठ का भी श्री गणेश हो गया है। सभी हिन्दी के प्रचार और उन्नति मे दत्तचित्त हैं। राजवाडो मे भी हिन्दी की घुसपैठ होती जा रही है। बडौदा भी ग्वालियर, अलवर, बीकानेर, इन्दौर और रीवा के नरेशो ने राष्ट्रभाषा हिन्दी का आदर कर दूरदर्शिता दिखायी है। युद्ध के समय देशी सिपाहियो के मनोरजनार्थ विलायत से एक सचित्र पत्र निकलता था, जिसमे हिन्दी को भी स्थान मिला था। हिन्दी के लेखक-लेखिकाओ और कवियो की सख्या बढ रही है। तात्पर्य यह कि हिन्दी साहित्य ससार की बाहरी दशा सतोषजनक है। हिन्दी की बाहरी दशा जैसी अच्छी है भीतरी वैसी नही। इसका कारण लेखको और कवियो की अहमन्यता और हठधर्मी है। सभी अपना -अपना पाण्डित्य प्रकट करने मे लगे है, कोई किसी की नही सुनता है। सभी ऐठासिह बन गये है। इससे हिन्दी की शील शैली और सौन्दर्य का सत्यानाश हो रहा है। न वर्णविन्यास का ठिकाना और न वाक्य रचना का, मनमानी घर जानी का बाजार गरम है।[1]

इस अधिवेशन मे हिन्दी भाषा के साहित्यिक आयामो की परख की गयी तथा भाषा के व्याकरण सम्मत स्वरूप के निर्धारण की चिन्ता की गयी।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का तेरहवॉ अधिवेशन श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन के सभापतित्व मे कानपुर मे स० १९७९ मे सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन मे भाषा की उन्नति का रहस्य पर विशेष चर्चा करते हुए ईरानी, प्राकृत और सस्कृत, हिन्दी शौरसेनी की पुत्री नाश और विकास, प्राकृत अपभ्रश और हिन्दी, प्राचीन ग्रन्थो की रक्षा, पुरानी हिन्दी ब्रजभाषा और खडी बोली हिन्दी और उर्दू, साहित्य क्या है? आदि पर चर्चा भी की गयी। अपने अध्यक्षीय भाषण मे टण्डन जी ने कहा। हिन्दी भाषा की उन्नति किस प्रकार हुई, किस वाणी के महास्रोत से

---

१ अमृत महोत्सव स्मारिका - स० - सत्य प्रकाश मिश्र - पृ० ३३

उसकी धारा बहती हुई हम तक आयी, मार्ग मे किन पर्वतो और वनो के प्राकृतिक रत्नो को अपने साथ लेती हुई और कहॉ-कहॉ उसको छितराती आयी है अथवा किस प्रकार से उसने अपने निर्मल जल से कूलो पर कुजलताएँ पोषित कर और उन कूलो के निवासियो को अपने पवित्र जल से मानसिक जीवन दान दे उनको सभ्य बनाया है।[1]

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का चौदहवॉ अधिवेशन स० १९८० वि० मे प० अयोध्यासिह उपाध्याय हरिऔध के सभापतित्व मे सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन मे हिन्दी भाषा के उद्भव, विकास, ब्रजभाषा और खडी बोली, क्या हिन्दी और उर्दू मे भेद है? पर चर्चा की गयी। अपने अध्यक्षीय भाषण मे हिन्दी के उद्भव की चर्चा करते हुए उपाध्याय जी ने कहा कि हिन्दी भाषा का वर्तमान रूप अनेक परिवर्तनो का परिणाम है। वह क्रम-क्रम विकसित होकर इस अवस्था को प्राप्त हुआ है। प्रथम सिद्धान्त यह है कि हिन्दी भाषा की जननी सस्कृत है, पहले वह कई प्राकृतो मे परिवर्तित हुई, उसके उपरान्त उसने हिन्दी का वर्तमान रूप धारण कर लिया। दूसरा यह कि प्राकृत स्वय एक स्वन्त्रत भाषा है, वह न तो वैदिक भाषा से उत्पन्न हुई न सस्कृत से। कालान्तर मे वही रूप बदलकर आयी और हिन्दी कहलायी। तीसरा यह कि प्राचीन वैदिक भाषा ही वह उद्गम स्थान है जहां से प्राकृत भाषाओ का स्रोत प्रवाहित हुआ। सस्कृत उसी का परिमार्जित रूपान्तर और हिन्दी उन्ही स्रोतो मे से एक स्रोत का सामयिक रूप है। समस्त सिद्धान्तो की मीमासा की जाय तो अन्त मे पता चलता है हिन्दी भाषा का सम्बध शौरसेनी और अपभ्रश से है।[2]

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का पन्द्रहवॉ अधिवेशन पं० माधवराव सप्रे के सभापतित्व मे देहरादून मे सम्पन्न हुआ। अपने अध्यक्षीय भाषण मे सभापति महोदय ने कहा कि मेरा हृदय फूला नही समाता जब कि मै देखता हूँ कि नाटक के ही बहाने सही इस समय हजारो की तादाद मे यहॉ लोग एकत्रित हुए है। इससे जान पडता है कि राष्ट्रभाषा के लिए हम अपना सुख त्याग करने को तैयार है। वस्तुतः हम लोग ससार को नाटक ही समझे। जैसे नाटक के भिन्न-भिन्न पात्र रूप धर कर आते है और अपना कर्त्तव्य कर के चले जाते हैं। वास्तव

---

१ अमृत महोत्सव - सभापतियो का भाषण - भाग १-स० लक्ष्मी शकर व्यास-पृ०२७६

२ अमृत महोत्सव सभापतियो के भाषण भाग -२ -स० डॉ० विद्यानिवास मिश्र - पृ० १४

मे उनका मूल स्वरूप कुछ और ही होता है। परन्तु पराधीनता मे आकर उनको दूसरे का कर्त्तव्य करना होता है। वे जिस प्रकार पराधीनता का अनुभव करते है उसी प्रकार आप भी इस पराधीनता का अनुभव करे और इस बात का प्रण करे कि हम पराधीनता को अवश्य दूर करेगे इसमे हमे सुख नही मिल सकता। पराधीनता की जजीरो को तोडने के अनेक साधन है जिसमे हिन्दी भाषा का प्रचार करना एक प्रमुख साधन है।[1]

हिन्दी स्वतत्रता सग्राम मे भाषाई भूमिका का निर्वाह कर रही थी। स्वतत्रता पाने के लिए भाषा के प्रति सजग रहना तथा अपनी राष्ट्रभाषा के द्वारा उस सग्राम मे विजय की सभावना प्रबल होती है। इसी तरह के विचार इस अधिवेशन मे उभरकर सामने आए।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का सोलहवॉ अधिवेशन अमृतलाल चक्रवर्ती के सभापतित्व मे वृन्दावन मे सम्पन्न हुआ। अपने अध्यक्षीय भाषण मे वृन्दावनलाल ने कहा कि अब तक मै देशवासियो के अभिमत के परिचालक वर्ग से यह विनती करता आया हूँ कि हिन्दी भाषा चाहे उन्नत वा अवनत जिस किसी स्थिति मे क्यो न हो, एक उसी मे ही भारत वर्ष भर की राष्ट्रभाषा होने की गुणावली है। इसलिए राष्ट्रभाषा की अनिवार्य आवश्यकता को ह्रदयगम कर भारत के प्रान्त मे, नगर-नगर मे तथा ग्राम-ग्राम मे प्रत्येक नर-नारी को उस प्रकार गुण विशिष्ट हिन्दी भाषा का अभ्यास करना चाहिए।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का सत्रहवा अधिवेशन भरतपुर मे सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन के अध्यक्ष गौरीशकर हीराचन्द्र ओझा थे। इस सम्मेलन मे एक लिपि की आवश्यकता और सग्रहालय की आवश्यकता पर विशेष जोर दिया गया। अपने सभापति भाषण मे ओझा जी ने कहा मै समझता हूँ सम्मेलन का कार्य मुख्यत दो भागो मे विभक्त है। एक प्रचार विभाग दूसरा साहित्य प्रचार की ओर सम्मेलन ने प्रर्याप्त ध्यान दिया है और इसमे उसे जो सफलता मिली है वह निश्चित रूप से अभिनन्दनीय है। मद्रास मे हिन्दी का अच्छा प्रचार हुआ । पर हिन्दी भाषा भाषी प्रान्तो मे हिन्दी प्रचार की जितनी प्रगति होनी चाहिए उतनी शायद हो नही रही है। सम्मेलन उधर उतना ध्यान भी नही देशका है। पर आवश्यकता है कि हम इन प्रान्तो को हिन्दी के सुदृढ दुर्ग बनावे और यह ह्रदय मे एक बार लगन पैदा हो जाने

१ अमृत महोत्सव स्मारिका - स० सत्य प्रकाश मिश्र।

पर सरलतापूर्वक किया भी जा सकता है। सम्मेलन की ओर से इस बात का जोरो से प्रचार हो कि जहाँ कही दस-पाच भी हिन्दी के प्रेमी वहाँ एक हिन्दी की प्रचारणी सभा स्थापित की जाय, और ये सस्थाएँ व्यर्थ के आडम्बर मे न पडकर सरल सुगम साधनो द्वारा हिन्दी प्रचार करना अपना उद्देश्य बनाएँ। सस्थाओ के सदस्यो का यह कर्तव्य होना चाहिए कि वह वर्ष मे कम से कम एक व्यक्ति को हिन्दी का प्रेमी बनाये, उन्हे हिन्दी सिखाये और जो हिन्दी जानते है हिन्दी के सुन्दर साहित्य का रसास्वादन कराकर उसके प्रेम की उत्तरोत्तर अभिवृद्धि करे।

सम्मेलन का अठारहवॉ अधिवेशन मुजफ्फरपुर मे १९८४ सवत् मे सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन मे प० पद्मसिह शर्मा सभापति थे। इस सम्मेलन मे कविता मे परिवर्तन, कवि सम्मेलन, ब्रजभाषा का विरोध हिन्दी उर्दू या हिन्दुस्तानी, बिहार मे उर्दू का विवाद हिन्दी साहित्य की प्रगति, साहित्य-सम्मेलन आदि पर चर्चा करते हुए शिक्षा का माध्यम क्या हो? इस बात पर विस्तृत चर्चा की गयी। अपने अध्यक्षीय भाषण मे पण्डित पद्मसिह शर्मा जी ने कहा कि कोई भी देश मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाये बिना सुशिक्षित नही हो सकता। भारत को छोडकर कोई ऐसा अभागा देश नही जहॉ विदेशी भाषा मे शिक्षा दी जाती हो। भारत के सरकारी विद्यालयो मे सब विषयो की उच्च शिक्षा अग्रेजी मे ही दी जाती है जिससे विद्यार्थियो का आधे से अधिक समय तोता रटन्त मे नष्ट हो जाता है। जिन विद्यालयो मे शिक्षा का माध्यम मातृभाषा है उसमे कॉगडी का गुरुकुल विश्वविद्यालय मुख्य है। यहा सब विषयो की शिक्षा मातृभाषा मे ही दी जाती है, इसी से उच्चशिक्षा का जो कोर्स दूसरे विद्यालयो मे ६ वर्ष मे पूरा होता है वह इस गुरुकुल मे ४ वर्ष मे ही पूरा हो जाता है। दूसरे विश्वविद्यालयो मे जो पुस्तक बी०ए० के कोर्स मे नियत है एफ०ए० मे पढाई जाती है और विद्यार्थी बडी सफलता से उत्तीर्ण हो जाते है। समस्त देश के लिए शिक्षा का माध्यम बनने की पात्रता यदि किसी भाषा मे है तो राष्ट्रभाषा हिन्दी मे है। शिक्षा विज्ञान के समस्त विद्वान इस बात पर सहमत है। खेद है कि इस महत्वपूर्ण विषय के लिए जिस भगीरथ प्रयत्न की आवश्यकता है वह नही हो रहा है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन का और शिक्षा प्रेमी देश भक्तो का परम कर्त्तव्य है कि अपना सब शक्ति हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बनाने मे लगावे।

यह सम्मेलन ग्वालियर मराठी सम्मेलन के उस प्रस्ताव पर खेद प्रकट करता है जिसमे यह स्वीकार करते हुए कि ग्वालियर की अधिकाश जनता हिन्दी भाषा-भाषी है। अपने अन्यान्य सरकारी दफ्तरो मे हिन्दी का प्रयोग करते हुए उसने रेवेन्यू विभाग को हिन्दी से वचित ही रखा। यह सम्मेलन ग्वालियर की कौसिल रीजेसी से इस बात का अनुरोध भी करता है कि वह ग्वालियर के अन्यान्य विभागो की भॉति रेवेन्यू विभाग मे भी हिन्दी के प्रयोग किये जाने की आज्ञा प्रदान करे।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का १९वॉ सम्मेलन गोरखपुर मे सम्पन्न हुआ। इसके सभापति 'गणेश शकर विद्यार्थी थे। इस सम्मेलन मे राष्ट्र भाषा हिन्दी, साहित्य की गति, प्रचार और उन्नत के कुछ उपाय पर विशेष चर्चा की गई। अपने सभापति भाषण मे गणेश शकर विद्यार्थी ने कहा—हिन्दी भाषा भाषियो के उद्योग से हिन्दी को राष्ट्रभाषा का पद प्राप्त नही हुआ। जैसी परिस्थिति थी, उसको देखते हुए बाबू हरिश्चन्द्र और उनके समकालीन हिन्दी विद्वान तो कभी इस बात को व्यावहारिक बात भी नही मान सकते थे कि देश के अन्य भाषा-भाषी लगभग सभी समुदाय, हिन्दी को इतना गौरवान्वित स्थान देने के लिए तैयार हो जाएँगे। किन्तु सार्वदेशिक आवश्यकताएँ बढती गई एव देश-भर के लिए काम करने वालो के सामने प्रकट और अप्रकट दोनो प्रकार से, यह प्रश्न उपस्थित होता गया कि वे किस प्रकार अपनी बात को देश के दूर से दूर कोने के झोपडे तक पहुचावे। भगवान बुद्ध ने धर्म के प्रचार के लिए पालि को अपनाया था, देश के वर्तमान कार्यकर्ताओ ने युगधर्म के प्रचार और ज्ञान के लिए, अनेक गुणो के कारण, हिन्दी को अपनाना आवश्यक समझा। नानक और कबीर, सूर और तुलसी राष्ट्रभाषा के लिए पहिले ही क्षेत्र तैयार कर गये थे। उनको वाणी और पद देश के कोने-कोने मे उन असख्यो श्रद्धालु नर-नारियो के कण्ठो से आज कई शताब्दियो से प्रतिध्वनि हो रहे हैं, जिनकी मातृ-भाषा हिन्दी नहीं है। हिन्दी के फारसी मिश्रित रूप उर्दू ने भी, एक विशेष दिशा मे, एक बहुत बडा काम किया था। देश भर मे जहॉ भी मुसलमान बसते है, वहॉ भी भाषा चाहे कोई भी क्यो न हो, वे उर्दू के रूप में हिन्दी समझते है और हिन्दी बोलते है।[1]

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का २०वॉ अधिवेशन कलकत्ता मे सम्पन्न हुआ। इसके सभापति

---

१ अमृत महोत्सव स्मारिका - सत्य प्रकाश मिश्र - पृ०

बाबू जगन्नाथ दास रत्नाकर थे। इस अधिवेशन मे 'काव्य के वॉछनीय गुण' पर विशेष चर्चा की गई।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का २१वॉ अधिवेशन झॉसी मे सम्पन्न हुआ। इसके सभापति श्री किशोरी लाल गोस्वामी' थे। इस अधिवेशन मे 'राष्ट्र भाषा और राष्ट्र लिपि' पर विशेष चर्चा की गई।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का २२वॉ अधिवेशन पं० श्याम बिहारी मिश्र की अध्यक्षता मे स० १९८९ वि० मे सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन मे राष्ट्रभाषा, राष्ट्रलिपि गद्य, व्याकरण, पद्य हिन्दी सस्थाऍ आदि पर चर्चा की गयी। पद्य पर चर्चा करते हुए सभापति ने कहा कि अपने पद्य काव्य की बदौलत भारतीय अन्य भाषाओ मे ही नही वरन सभी देशो की सभी भाषाओ के सामने हिन्दी का सिर ऊँचा है। पराधीन होने पर भी हम लोगो मे इतना जात्याभिमान शेष है कि हम अपने यहा की सभी वस्तुओ को हीन नही समझते। अधिक पढे लिखे की मुँहलगी चाहे तो भाषा हो सकती हो, पर जन समुदाय की भाषा हिन्दी है और सदा रहेगी। राष्ट्रभाषा हिन्दी को ही सर्वसाधारण को अपनाना होगा।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का २३ वॉ अधिवेशन नई दिल्ली मे सम्पन्न हुआ। इसके सभापति महाराजा सयाजी राव गायकवाड बडौदा नरेश थे। इस अधिवेशन मे साधारण भाषा की आवश्यकता भाषा सम्बन्धी विभिन्न प्रकार के विचार, हिन्दुस्तानी के त्रिभाषी स्वरूप, हिन्दी के लक्षण, तुलसी और कबीर की हिन्दी भाषा पर विशेष जोर दिया गया और साथ मे यह भी कहा गया चीन से सबक लेकर भारत के लिए भी एक देवनागरी लिपि होनी चाहिए।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का २४वॉ अधिवेशन इन्दौर मे सम्पन्न हुआ। इसके सभापति मोहनदास करमचन्द गॉधी थे। इस अधिवेशन मे राष्ट्रीय एकता के लिए सम्पूर्ण भारत मे हिन्दी भाषा की अनिवार्यता पर बल दिया गया।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का २५ वॉ अधिवेशन नागपुर मे सम्पन्न हुआ। इसके सभापति बाबू राजेन्द्र प्रसाद थे। इस अधिवेशन मे हिन्दी भाषा को राष्ट्रीय भाषा अथवा राजकीय भाषा बनाने पर जोर दिया गया।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का २६वॉ अधिवेशन मद्रास मे सम्पन्न हुआ। इसके सभापति

हिन्दी प्रेमी सेठ जमना लाल बजाज थे। इस अधिवेशन मे हिन्दी भाषा के लिए सवैधानिक सस्थाओ (केन्द्रीय सभा व विधान सभाओ) मे नियमावली बनाने व उसके विकास पर बल देने की बात कही गयी।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का २७वॉ अधिवेशन शिमला मे सम्पन्न हुआ। इसके सभापति पण्डित बाबू राव विष्णु पराडकर थे। इस अधिवेशन मे दिवगत हिन्दी सेवियो के प्रति श्रद्धाजलि, ब्रिटिश शासको द्वारा हिन्दी की उपेक्षा, नागरी लिपि के लिए हमारा कर्त्तव्य, राष्ट्रभाषा हिन्दी, राजभाषा हिन्दी, हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि में इन सभी की उपेक्षा नही होनी चाहिए।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का २८वॉ अधिवेशन काशी मे सम्पन्न हुआ। इसके सभापति पण्डित अम्बिका दत्त बाजपेयी थे। इस अधिवेशन मे स्वर्गीय हिन्दी सेवक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के साहित्यिक कार्य, प्रचार, हिन्दी नाटक एकाकी मे रेडियो की भूमिका, समाचार माध्यम मे हिन्दी की भूमिका कैसी हो इस पर विचार किया गया।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का २९वा अधिवेशन पूना मे सम्पन्न हुआ। इसके सभापति श्री सम्पूर्णा नन्द जी थे। इस अधिवेशन में हिन्दी भाषा मे प्रयोग किये जाने वाले विदेशी शब्दो लिखने चन्द्रवरदाई और पृथ्वीराज के समय से चली आ रही है। सूर, तुलसी, कबीर, रहीम सबने ऐसे शब्दो का प्रयोग किया। आज से २०० वर्ष पहले चरण दास जी ने लिखा है। "खुश्वमना सेज पर लम्प दमकै" उन्होने कहा आपकी भाषा मे अपने बल से मिल जायेगे पर उनके आ जाने पर भी भाषा हिन्दी ही है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का ३०वॉ अधिवेशन अबोहर मे सम्पन्न हुआ। इसके सभापति डॉ० अमर नाथ झा थे। इस अधिवेशन मे अनुवाद और समालोचना पर अधिक बल दिया गया। हिन्दी और सस्कृत के काव्य विषयक ग्रथो, साहित्य दर्पण, काव्यादर्श, काव्य प्रकाश, काव्यालकार कवि कुल कंठाभरण, ध्वन्यालोक, रसगगाधर, काव्य प्रदीप, राम चन्द्रिका, रस राज, कवित्त रत्नाकर, कवि प्रिया आदि ग्रथो का अनुवाद हिन्दी में होना चाहिए जिससे काव्य विषयक जानकारी जनभाषा के माध्यम से हो सके।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का ३१वॉ अधिवेशन हरिद्वार में सम्पन्न हुआ। इसके सभापति पण्डित माखन लाल चतुर्वेदी थे। इस अधिवेशन मे हिन्दी पत्र और पत्रकारिता पर विशेष बल दिया गया। सामयिक प्रान्तो का मूल्य विश्व की प्रगति मे बहुत भारी है। सन् १९२०

मे जब कागज की महॅगाई बढी तो स्व० गणेश शकर विद्यार्थी, स्व० कृष्णकांत और चतुर्वेदी जी ने एक साथ मिलकर प्रताप, अभ्युदय, कर्मवीर के मूल्य बढाने की घोषणा की। इस प्रकार बहुत से अधिकारी उच्चशिक्षा प्राप्त सज्जन प्रान्तीय बैको के गवर्नर, विद्या सभा के सदस्य, साहित्य के हितचितक मत्रिमडल को तोडने व बनाने मे जिसे एक नई विचार प्राप्त हुयी।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का ३२वॉ अधिवेशन जयपुर मे सम्पन्न हुआ। इसके सभापति गोस्वामी गणेश दत्त जी थे। इस अधिवेशन मे हिन्दी भाषा की अखण्ड ज्योति पर बल दिया गया है। उन्होने अपने भाषण मे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दो मे कहा- इसका एक-एक शब्द हमारी सत्ता का व्यजक है। हमारी सस्कृत का सम्पुट है। हमारी जन्मभूमि का स्मारक है। हमारे हृदय का प्रतिबिम्ब है। हमारी बुद्धि का वैभव है। देश की जिस प्रकृति ने हमारे हृदय मे रूप रग भरा है उसी ने हमारी भाषा का रूपरग खडा किया है। उन्होने अपने भाषण मे वीर भूमि राजस्थान, हमारी राष्ट्र भाषा, परम्परा का प्रसाद, अखण्ड ज्योति, वक्र कटाक्ष पर अधिक बल दिया।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का ३३ वा अधिवेशन उदयपुर मे सम्पन्न हुआ। इसके सभापति श्री कन्हैया लाल माणिक लाल मुशी थे। इस अधिवेशन मे साहित्य और साहित्यकार के सरोकार के बारे मे अपने भाषण मे भारत तो साहित्य स्वामियो की भूमि है। जगत की अमर और अपूर्व साहित्य कृतियो मे हमारा भाग सबसे बडा है। महाभारत और रामायण, कलिदास का शाकुन्तला, भागवत और रामचरित मानस दिये है। आगे कहा- मै तो अपना हृदय चीरकर उसमे भरे रत्नो को अपनी आत्म सिद्धि के लिए बाहर लाता हू। जो उसका पारखी हो वह उसे पसन्द करे। जो न हो वह उसे फेक दे पर मै अपनी कल्पनाओ, सस्कारो और भावनाओ से गढी हुई सरसता को ही दूॅगा।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का ३४वां अधिवेशन करांची मे सम्पन्न हुआ। इसके सभापति श्री वियोगी हरि थे। इस अधिवेशन का मुख्य विषय था। हिन्दी की रथयात्रा सम्पूर्ण भारत मे अविरल सदैव चलती रहे। हिन्दी भाषा के प्राचीन एवं आधुनिक कविता साहित्य, हिन्दी गद्य के प्रमुख विधाऍ उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध की गतिविधियॉ सम्पूर्ण भारत के रथ के पहिए की तरह चलती रहे। एकता मे अनेकता के प्रतीक भारतीय लोक साहित्य की अविरल धारा बहती रहे। कवि वियोगी हरि इसी परम्परा को आगे बढ़ाने की बात कही है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का ३५वॉ अधिवेशन बम्बई मे सम्पन्न हुआ। इसके सभापति महापण्डित राहुल साकृत्यायन जी थे। इस अधिवेशन के मुख्य विषय भारत मे हिन्दी भाषा का स्थान कैसा हो उसके साहित्य को समृद्ध कैसे बनाया जाय। उन्होने अपने भाषण मे कहा- सारे सघ की राष्ट्रभाषा के अतिरिक्त हिन्दी का अपना विशाल क्षेत्र है। हरियाणा, राजपुताना, मेवाड, मालवा, मध्य प्रदेश, सयुक्त प्रात और बिहार हिन्दी की अपनी भूमि है। यही वह भूमि है जिसमे हिन्दी के आदिम कवियो सरह, स्वय भू आदि को जन्म दिया। यही वह भूमि है जहॉ अश्वघोष, कालिदास, भवभूति और बाण पैदा हुए हैं कुरु, पाचाल, वशिष्ठ विश्वामित्र, भारद्वाज ने ऋृग्वेद के मत रचे प्रवाहण उद्दालक और याज्ञवल्क्य ने अपनी दार्शनिक उडाने की। हिन्दी भाषा ७०० वर्षो से पदच्युत रहकर अब विशाल मध्यदेश मे अपना स्थान ग्रहण करने जा रही है। इसके लिए हमे हर्ष होना चाहिए।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का ३६वॉ अधिवेशन मेरठ मे सम्मन्न हुआ इसके सभापति श्री सेठ गोविन्द दास जी थे। इस अधिवेशन का मुख्य विषय राष्ट्र भाषा हिन्दी और राष्ट्रलिपि नागरी को हिन्दी भाषा के विभिन्न आयामो मे कैसे प्रयोग किया जाय- इसी बात पर अधिक बल दिया गया है। नाटक, रगमच, सिनेमा, रेडियो, पत्र-पत्रिकाऍ, व्यापार आदि के माध्यम से हिन्दी भाषा की श्रीवृद्धि की जाय।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का ३७वॉ अधिवेशन हैदराबाद मे सम्पन्न हुआ। इसके सभापति आचार्य चन्द्रबली पाण्डेय जी थे। इस अधिवेशन का मुख्य विषय नागरी भाषा के विभिन्न रूपो पर बल दिया गया। भाषा की पीठ भी कई रूपो मे हमारे सामने आ रही है। सरलता से हम उसे चार रूपो मे ले सकते है। भाषा, स्वभाषा स्वबोली, उर्दू आदि के माध्यम से।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का ३८वा अधिवेशन कोटा में सम्पन्न हुआ। इसके सभापति श्री जयचन्द विद्यालकार जी थे। इस अधिवेशन का मुख्य विषय भारती की सेवा की आवश्यकता हिन्दी भाषा ही से ही हो सकती है। हमारे पुर्नस्थान के लगभग १२ वर्षो मे सम्मेलन द्वारा लक्ष्य की घोषणा के बाद १५ वर्षो मे कर लेना चाहिए था।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का ३९वॉ अधिवेशन प्रयाग मे सम्पन्न हुआ। इसके सभापति पं० कमला पति त्रिपाठी जी थे। इस अधिवेशन का मुख्य विषय जन साधारण की भाषा हिन्दी कैसे बने। इस पर अधिक बल दिया गया है। हिन्दी का तीन चार शताब्दियो पुराना

इतिहास है। हमारे सत कवियो, समाज सुधारको और साहित्य सुधी चिन्तको ने यह अनुभव किया कि हिन्दी ही वह भाषा है जो सस्कृत की समस्त गरिमा और थाती उत्तराधिकार मे लेकर प्रकट हो रही है और यही यहॉ के जन सामान्य और सारे राष्ट्र की भाषा बन सकती है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का ४०वॉ अधिवेशन प्रयाग मे सम्पन्न हुआ। इसके सभापति श्री नाथ सिह जी थे। इस अधिवेशन का मुख्य विषय हिन्दी भाषा का स्वरूप और शैली कैसी हो इस पर विचार करते हुए हिन्दी को वैज्ञानिक तकनीकी स्वरूप प्रदान की योजना बनायी गयी।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का ४१वॉ अधिवेशन पुन प्रयाग मे सम्पन्न हुआ। इसके सभापति डॉ० हरवश लाल शर्मा जी थे। इस अधिवेशन का मुख्य विषय हिन्दी का प्रचार प्रसार कैसे हो इस पर विचार करते हुए लगभग ७० वर्ष पहले हिन्दी जिस तेज गति के साथ बढ रही थी आज उतनी ही तेज गति के साथ पीछे खिसक रही है। यह स्थिति चिन्तनीय है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के दायित्व को बढाती है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का ४१वा व ४२वा अधिवेशन गुडगाव मे सम्पन्न हुआ। इसके सभापति श्री रामेश्वर शुक्ल अचल जी थे। भाषा के सदर्भ मे हिन्दी की भूमिका कैसी होनी चाहिए इस पर विचार करते हुए पिछले ५० वर्षो मे विदेशों की रुचि हिन्दी पठन पाठन मे जागी है या जगायी गयी। पश्चिमी और पूर्वी यूरोप को मिलाकर कम से कम एक दर्जन देशो के तीन दर्जन सस्थानो और विश्वविद्यालयो मे हिन्दी पढायी जाती है। पर अपने देश मे हिन्दी का स्थान अंग्रेजी से नीचा है। इसे विदेश वाले भली-भाति जानते है। हिन्दी को हमने अधिक से अधिक प्रयोजन मूलक भाषा के रूप मे स्वीकार किया है। जन जीवन से जुडी होकर भी हिन्दी लोकतत्र के बुनियादी जीवन मूल्यों से नही जुड पायी। राष्ट्रीयता की सच्ची कसौटी नहीं बन सकी। हिन्दी को हमने देश की शक्ति परम्परा और राष्ट्रीय अस्मिता के रूप मे ही देखकर ही विश्व की भाषा बन सकती है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का ४६वॉ अधिवेशन दिल्ली मे सम्पन्न हुआ। इसके सभापति डॉ० विजयेन्द्र स्नातक जी थे। इस अधिवेशन का मुख्य विषय उपरोक्त अधिवेशनों से मिलता जुलता है। इन्होने भी हिन्दी की श्रीवृद्धि की बात कही है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का ४७ वॉ अधिवेशन पटना मे सम्पन्न हुआ। इसके सभापति

श्री नरेश मेहता जी थे। इस अधिवेशन का मुख्य विषय हिन्दी भाषा की सर्वग्राह्यता जन मानस तक कैसे पहुँचे और इसकी स्वीकार्यता सम्पूर्ण भारत वर्ष मे कैसे स्थायित हो इस पर विचार किया जाय।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का ४८वा अधिवेशन तिरुपति मे सम्पन्न हुआ इसके सभापति प० गोविन्द चन्द्र पाण्डेय जी थे। इस अधिवेशन का मुख्य विषय भारतीय सस्कृति और हिन्दी भाषा था जिस पर सभापति महोदय ने हिन्दी भाषा को भारतीय सस्कृति के रूप मे उसके भावो रहन-सहन, बोली एव काव्यशास्त्रीय तत्वो को ग्रहण करने पर बल दिया है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का ४९वॉ अधिवेशन पुरी मे सम्पन्न हुआ। इसके सभापति डॉ० शिव मगल सिह सुमन जी थे। इस अधिवेशन का मुख्य विषय हिन्दी भाषा की स्वीकार्यता समकालीन दौर मे अपनी पहचान को कैसे सुरक्षित रख सके। इस पर सभापति महोदय ने समकालीन कविता के विभिन्न रूपो की चर्चा की।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का ५०वॉ अधिवेशन प्रयाग मे सम्पन्न हुआ। इसके सभापति श्री अमृत राय जी थे। इस अधिवेशन मे मुख्य हिन्दी भाषा के कला साहित्य की वृद्धि की बात कही गयी।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का ५१वॉ अधिवेशन बगलौर मे सम्पन्न हुआ। इसके सभापति आचार्य विष्णुकात शास्त्री थे। इस अधिवेशन का मुख्य विषय साहित्य और मानवीय स्थिति के रूप मे हिन्दी भाषा का सरोकार आम जनमानस तक किस प्रकार पहुंचाया जाय, इसी बात पर बल दिया गया है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के ५२वा, ५३, ५४, ५५, ५६वॉ अधिवेशन क्रमश. कलकत्ता, अहमदाबाद, बगलौर गोवा, तिरुवनन्तपुरम मे सम्पन्न हुयी इसके सभापति क्रमशः डॉ० विद्या निवास मिश्र, प्रो० सिद्धेश्वर प्रसाद, श्री पी०वी० नरसिह राव व डॉ० राम मूर्ति आलोचक डॉ० नामवर सिह आदि सभी ने हिन्दी भाषा को भारतीय क्षितिज पर उसके सूर्य को कैसे स्थायित किया इसी बात पर सभी ने महत्वपूर्ण योगदान दिये है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अंतिम अधिवेशन इन्दौर मे सम्पन्न हुआ। इसके सभापति डॉ० विद्या निवास मिश्र जी थे। इस अधिवेशन का मुख्य विषय हिन्दी भाषा और राष्ट्रीयता की छाप को किस रूप मे लिया जाय। राष्ट्र के लिए हिन्दी भाषा को राजकीय भाषा घोषित किया और इससे राष्ट्रीयता को अधिक मजबूती प्रदान की जाय।

अमृत महोत्सव स्मारिका स्मपादक डॉ० सत्य प्रकाश मिश्र सभापतियो के भाषण भाग १ - डॉ० लक्ष्मीशकर व्यास।

सभापतियो के भाषण भाग २ - डॉ० विद्या निवास मिश्र

सभापतियो के भाषण भाग ३ - डॉ० प्रेम नारायण शुक्ल

हि०सा० सम्मेलन का इतिहास - श्री नरेश मेहता सम्मेलन दैनन्दिनी - हिन्दी सा० सम्मेलन प्रयाग।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशनो के सभापतियो के भाषण इन्ही विषयो पर केन्द्रित थे।

पहला एव नवॉ	हिन्दी की उन्नति और हमारा कर्तव्य।
दूसरा	हिन्दी भाषा की विकास यात्रा।
तीसरा	हिन्दी भाषा की विकास यात्रा।
चौथा	हिन्दी साहित्य सम्मेलन के उद्देश्य।
पॉचवॉ	साहित्य हमारी राष्ट्रीय सम्पत्ति।
छठा	देशी भाषा मे शिक्षा हो।
सातवा	हिन्दी का व्यापक प्रचार।
आठवॉ एव चौबीसवा	हिन्दी भाषा माता के समान।
दसवॉ	हिन्दी प्रचार तथा ग्रन्थ निर्माण।
ग्यारहवॉ	हिन्दी या हिन्दुस्तानी।
बारहवॉ	हिन्दी की दशा।
तेरहवॉ	भाषा की उन्नति का रहस्य।
चौदहवा	हिन्दी भाषा का विकास।
पन्द्रहवॉ	राष्ट्रभाषा और सम्मेलन।
सोलहवॉ	साहित्य सम्मेलन और हिन्दी प्रचार।
अठारहवॉ	शिक्षा का माध्यम।
उन्नीसवॉ	राष्ट्रभाषा हिन्दी।
बीसवा	हिन्दी कविता के वांछनीय गुण।
इक्कीसवा	राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपि।
बाईसवॉ	राष्ट्रभाषा हिन्दी।

तेईसवॉ	भारतवर्ष के लिए एक लिपि देवनागरी।
पचीसवॉ	हिन्दी की व्यापकता।
छब्बीसवॉ	राष्ट्र भाषा का भविष्य।
सत्ताईसवॉ	राष्ट्रभाषा और मातृभाषा।
अठाईसवॉ	हिन्दी का व्याकरण।
उन्तीसवॉ	हिन्दी भाषा का स्वरूप।
तीसवॉ	अनुवाद और समालोचना
इकतीसवॉ	हिन्दी पत्र और पत्रकारिता।
बत्तीसवॉ	हिन्दी की अखण्ड ज्योति
तैतीसवॉ	साहित्य और साहित्यकार।
चौतीसवॉ तथा चालीसवॉ	हिन्दी की रथ यात्रा
पैतीसवॉ	हिन्दी का स्थान
छत्तीसवॉ	राष्ट्रभाषा हिन्दी और राष्ट्र लिपि नागरी
सैतीसवॉ	नागरी भाषा
अडतीसवॉ	भारती की सेवा आवश्यक।
विशेष अधिवेशन	जनसाधारण की भाषा हिन्दी।
उन्तालीसवॉ	हिन्दी भाषा का स्वरूप और शैली।
चालीसवॉ	हिन्दी का प्रचार प्रसार।
इकतालीसवॉ तथा व्यालीसवॉ	विश्व भाषा के सदर्भ मे हिन्दी की भूमिका ।
अतिम	हिन्दी भाषा और राष्ट्रीयता।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने अपने राष्ट्रीय अधिवेशनो के जरिए सम्पूर्ण भारत मे हिन्दी भाषा की मशाल प्रज्जलित की। इन सम्मेलनो मे हिन्दी भाषी तथा अहिन्दी भाषी दोनो क्षेत्रो के विद्वान बढ-चढ कर भाग लेते रहे। भाषा तथा साहित्य के विभिन्न बिन्दुओ पर विचार विमर्श करते रहे। इस तरह सम्मेलन ने हिन्दी भाषा के बहुआयामी विकास के लिए एक स्वस्थ मच का कार्य किया। हिन्दी भाषा की राजकीय प्रतिष्ठा, राष्ट्रीय प्रसार तता साहित्य सृजन मे इनसे सम्मेलनो मे अत्यधिक प्रेरणा मिला।

(ग) पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से

हिन्दी 'माध्यम' पत्रिका का प्रकाशन सन् १९६४ ई० मे श्री बालकृष्ण राव के सम्पादन मे पहली बार हिन्दी ससार मे निकली। श्री बालकृष्ण राव ने हिन्दी भाषा के राष्ट्र भाषा व राजभाषा के रूप मे अपने कार्य को आगे बढाने के लिए प्रथम सम्पादन कार्य किया आर्थिक कारण से सन् १९६९ मे माध्यम का प्रकाशन बन्द हो गया। इन ५ वर्षो के समय हिन्दी भाषा सम्बन्धी कई विशेषाक निकले। उनमे केरल हिन्दी विशेषाक व आन्ध्र हिन्दी विशेषाक बढा ही हिन्दी पाठको द्वारा सराहा गया । आजादी के १५ वर्षो के बाद हिन्दी राष्ट्र भाषा न हो सकी।[1] इसके लिए माध्यम पत्रिका के माध्यम से संघर्ष एव दबाव बनाया गया। सम्पादक बालकृष्ण राव इन पॉच वर्षो मे हिन्दी की सेवा अपनी पत्रिका सम्पादन एव साहित्यिक रचनाओ के माध्यम से करता रहा। हिन्दी भाषा की इस महत्वपूर्ण साहित्य पत्रिका का जिस उद्देश्य के लिए हुआ था वह अभी अधूरा है। इन छोटे सम्पादन काल मे बालकृष्ण राव जी ने हिन्दी सेवियो के प्रति अपनी आस्था बढाने एव हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए कार्य करने का सकल्प लिया लेकिन आर्थिक कारणवश माध्यम पत्रिका का प्रकाशन नही होगा। आने वाले समय मे साहित्यकारो ने इसे पुनः प्रकाशित करने का सकल्प लिया है।[2]

माध्यम का प्रकाशन ३२ वर्षो बाद दुबारा हो रहा है। सम्मेलन के पटना अधिवेशन मे डॉ० प्रभात शास्त्री ने माध्यम के पुर्नप्रकाशन की घोषणा की थी। बगलौर अधिवेशन मे इसके पुन· निकलने का निर्णय लिया गया। आपात्काल के बाद का हिन्दी साहित्य काफी कुछ बदल चुका है। बडबोलेपन की समाप्ति के साथ ही साथ वास्तविकता का नकार और असममवृद्धता की भी वृद्धि हुई है।[3]

पत्रिका प्रकाशित हो इससे पहले ही इस सहस्राब्दि का हैवतनाक जलजला अहमदाबाद, भुज, कच्छ, सूरत आदि क्षेत्रो मे आया। एक तरफ यह प्रयाग का महाकुम्भ और दूसरी तरफ लोगो की लील जाने वाला प्रलय भूचाल। विसगति और अर्थहीनता के

---

१ राष्ट्रभाषा प्रचार सदेश-१९७०

२ सम्मेलन पत्रिका १९७०

३ माध्यम पत्रिका अक - १ सम्पादक - सत्यप्रकाश मिश्र प०-३

बीच मे अर्थ खोजने का यह उपक्रम काफी बोझिल है। क्या हम कुछ ऐसा प्रयत्न कर सकते है कि इस प्रकार के प्राकृतिक जलजले यथासम्भव पूर्वानुमानित और कम विनाशकारी हो, हम ऐसा क्यो नही कर सकते। मनुष्य और प्रकृति के कारण सभावित प्रलयो को रोकने के प्रयत्न के लिए हम साहित्य, सगीत और कला की सृष्टियॉ करते हैं। सृष्टि दिखती वैयक्तिक है होती नही है।

माध्यम पत्रिका के प्रथम अक मे कुछ प्रतिष्ठित कवि तथा लेखको को श्रद्धाजलि दी गयी अपने सम्पादकीय मे डॉ० सत्य प्रकाश ने लिखा कि पत्रिका तो सामूहिक प्रयत्न है—आलोचना भगवान जाने परतु इस सामूहिक प्रयत्न मे जिनके अनुभव व लेख या होने मात्र से हमे और ताकत मिलती, विचलन और कमजोरी मे भौहो का डर बना रहता, वे ही सहसा चले गये। रामविलास शर्मा, केदारनाथ अग्रवाल, शिवनाथ सिह चौहान, अली सरदार जाफरी, नरेश मेहता, शलभ श्री राम सिह, नवीन सागर आदि की रचनाएँ है इस अक मे। वही बताती है साहित्य क्या है और क्या नही है। कृतियॉ और कृतियॉ जिनके लिए लिखी जाती है, वे ही सत्यापन करते है और उन्ही को करना चाहिए।[1]

माध्यम पत्रिका दूसरा अक अप्रैल-जून मे प्रकाशित किया गया। इस अंक में सम्पादकीय, प्रदक्षिणा अपने समय की · बनारस - श्री नरेश मेहता, साहित्य क्यो श्री लाल शुक्ल के साथ-साथ (आलेख) काव्य का यथार्थ - यशदेव शल्य, ज्ञान की इजोरदारी का खात्मा - नीलाभ, प्राचीन तमिल साहित्य और भारतीय एकता - एम० शेषन, (कविताएँ) वक्तव्य एव कविताएँ - अशोक वाजपेयी, विपिन कुमार अग्रवाल की कविताएँ, शत्रुधन चतुर्वेदी की कविताएँ, माधव प्रसाद पाण्डेय का गद्यगीत (उपन्यास अंश) - तबादला - विभूति नारायण राय (कहानियॉ) वापसी - प्रभात त्रिपाठी, सितरी- विजय, (अनुवाद) अधेर नगरी - टी० पद्मनाभन (सस्मरण), स्मरण केदारनाथ अग्रवाल - शिव कुमार मिश्र, (कृति चिन्तन), भारतीय सस्कृति मे विवेक परम्परा की असली पहचान - गंगासागर तिवारी और कहु रहीम कैसे निभै - शैलेश मटियानी, पहला गिरमिटिया - प्रभाकर श्रोत्रिय, प्रेम के होने और न होने का आख्यान - बलराम।[2]

---

१ माध्यम पत्रिका - स० सत्य प्रकाश मिश्र - पृ०-३

२ माध्यम पत्रिका अक - २ स० सत्यप्रकाश - पृ०-१

नाटक साहित्य की एक विधा है और रगमच एक कलारूप जहॉ शब्द शाश्वत सौन्दर्य को खोजते है। रचना और पुनर्रचना कह सम्बध और द्वन्द्व एक अबूझ पहेली के औत्सुक्य से भरा है। गिरीश रस्तोगी को दृष्टि मे 'रगमच' पर किसी भी महत्वपूर्ण नाटक की प्रस्तुति मे हम साहित्य और भाषा नाटककार और नाट्य विधा को समझते हुए भी उसे क्लासरूपीय, पाठ्यक्रमीय और अध्यायकीय दृष्टि से नही देख सकते, न समीक्षा मे निश्चित अवधारणा, पैमाने या निष्कर्ष के आधार पर लिखित नाटक की सत्ता होते हुए भी उसका लिखित भाषा रूप प्रस्तुतीकरण प्रक्रिया से होता हुआ मच तक पहुॅचने से लेकर प्रदर्शन की घडी तक उसके समय और उसके बाद भी निरतर नया होता है।[1] यह नवोन्मेष रगमचीय कला-रूप को महत्वपूर्ण बनाता है। चिरतन नवीनता ही उसका सौन्दर्य है—बिहारी का कथन है—

लिखन बैठि जाकी सबी, ग्राहि गहि गरब गरूर

अये न केते जगत के, चतुर चितेरे क्रूर।

नाटक की भाषा रगमच पर ही अपनी पूर्णता प्राप्त करती है। माध्यम पत्रिका अधिक साहित्यिक पृष्ठभूमि पर लिखी जाती है पर इसके माध्यम से भाषा विकास मे काफी योगदान मिला है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन से निकलने वाली पत्रिका राष्ट्रभाषा हिन्दी पत्रिका को सभी पाठको तक पहुॅचने का सरल माध्यम साबित हुई । माध्यम दिसम्बर २००२ मे सम्मेलन से प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओ मे हिन्दी रगमंच अभिनय और भाषा के अनेक सबंधो को परिभाषित किया गया है। पिछले दिनो जब वे इलाहाबाद मे थे तो दूधनाथ सिंह के घर पर हुई लम्बी बातचीत स्वास्थ्य चिता और इन सबके भीतर विद्यमान आर्षता झूलती ही रही है। समय-समय पर नया अर्थ प्राप्त होता रहता है। रगकर्मी उसका अभिनय रग व्यवस्था और सामाजिक दृष्टि से नया पाठ तैयार करता है। पत्रिका अपनी प्रारंभिक भूमिका को निरस्त नही करता है। उसको अतिक्रमित भी नही करता है बल्कि समय के पाट को चौडा कर देता है। समकालीनता का व्यास फैल जाता है। पत्रिका रगकर्म की सास्कृतिक सर्जनात्मकता है उसकी समदायधर्मिता है। माध्यम पत्रिका इस दूरी को कम किया है।

माध्यम डॉ० सत्य प्रकाश मिश्र दिसम्बर-२००२ पत्र हमारे अन्तर्जगत का सहज चित्र है। जिन भावों और अरमानो को हम अपने ओठो पर नही ला पाते हैं, वे अनायास ही कागज

---

१ माध्यम पत्रिका अक १ स० सत्यप्रकाश मिश्र पृ० १४२

पर उभरकर हमारे अन्तरण के स्वरूप को उद्घाटित कर देते है। हमारी आशाए, आकाक्षाए मनुहारे, हास-उच्छ्वास किम्बहुना कथ्य अकश्य सब कुछ पत्र के माध्यम से हमारे सामने आ जाता है। पत्र हमारे सूने क्षणो का साथी है। वर्तमान का कोलाहल जब हमारे कानो को बधिर-सा बना देता है। स्वजन परिजन जब सभी एक-एक करके साथ छोड देते है और अपने पराये से हो जाते है तब पत्र ही हमारा सम्बल बनता है। वही हमारे सखा के रूप मे हमारा सम्बल बनाता है। वह उष्णशीत, सरस-नीरस अतीत को वर्तमान मे साकार करता हुआ जीवन के विभिन्न रूपो की झॉकी उपस्थित करता है। जीवन डगर की एक लम्बी यात्रा के उपरान्त पडाव के रूप मे ही पत्र हमारे विश्राम-स्थल की रचना सा करता हे। हमारे वैयक्तिक एव सामाजिक जीवन मे प्राय एकरूपता का अभाव पाया जाता है। जो हम नही है, जहॉ हम अपने वर्तमान को भूलकर स्मृति पथ पर बडी तीव्र गति से चलते हुए अतीत मे रमण करने लगते है। इस दृष्टि से पत्र एक सूक्ष्म साक्षात्कार का कार्य करता है।

अथवा यो समझिए कि हम जिन आदर्शो की कल्पना मात्र करते है उन्हे अपने व्याख्यायो मे अपनी उपदेश परक चर्चा मे अपने लेखन व्यापार मे रहते है। पर जब हम अपने को अपने मे झॉक कर देखते है तब हमारी असली तसवीर हमारे सामने आती है। किन्तु अपने पत्रो मे हम स्वत ही अपना प्रत्यक्षीकरण करा देते है। मस्तिष्क का मथन और हृदय का आलोडन-विलोडन पत्रो मे रूपापित हो जाता है। पत्रो की अपनी विशिष्ट स्पन्दनशीलता होती है उनका अपना स्वर होता है अपनी ध्वनि होती है और अपने सकेत होते है। जिनके सहारे छोटे बडे बुध-अबुध सभी अपने जीवन के विचित्र कार्य कलापो मे दत्त चित्त रहते हैं। लिपि ज्ञान और भाषा सृष्टि के क्षणों से ही कदाचित पत्र का प्रचलन हो गया होगा। साहित्य के इतिहास मे पत्रो की कहानी वैचित्र्य कुतूहल जिज्ञासा, औत्सुक्य आदि सब को बटोरती चलती है। पत्र लिखने और पत्र बॉचने दोनो के प्रति जन मानस का सहज उल्लास देखा जाता है। इसीलिए तो दूसरे के पत्रो को खोलकर पढने और रहस्य को समझे और अनसमझे ही कुलाबे बॉधने के हौसले भी देखे जाते है।[1] कोई कोई तो ऐसे चतुर चितेरे होते हैं जो खत का मजमूॅ भांप लेते है। लिफाफा देख कर। पत्र हमारी

---

१ सम्मेलन पत्रिका पत्र विशेषाक।

भाव अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। साहित्यिक इतिहास मे पत्रो के माध्यम से अनेक उपलब्धियॉ प्राप्त हुयी है। महाकवि कालिदास की नायिका शकुन्तला सुग्गे की छाती के समान कोमल कमलिनी के पत्ते पर अपने नखो से ही लिखकर अपनी भावना दुष्यत के प्रति निवेदित करती है। कबीर दास को भी पत्र लिखने का चाव अवस्था विशेष का परिणाम होता है। कोई अपनी उम्र की गति के साथ पत्र लिखने के हौसले को बुलन्द करता है और अपनी कोई अवस्था की उपेछा करके अपने मन की सहज तरग मे पत्रो के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त करता है। कसम खा खाकर "मसि कागद छूयौ नही का उद्घोष करने वाला बेचारा कबीर भी अपने पत्र मे और कुछ न लिखकर अपने प्यारे का आराध्य का बार-बार श्रम अकित कर अपनी लगन को साक्त करता है।[1] चन्दबरदाई ने स्वय को महत्वपूर्ण पत्र लिखे या नही यह भले ही शोध का विषय बने पर इतना स्पष्ट है कि उसने अपने हृदय की सहज उमग मे सयोगिता द्वारा पृथ्वीराज को एक पत्र भिजवा ही दिया। जन-जन के मानस मे रमने वाले तुलसी के रामचरित मानस के भी पत्र अपनी प्रतिष्ठा प्राप्त करके ही रहे।

मीराबाई ने भी अपनी पारिवारिक जीवन से सन्त्रस्त होकर मार्गदर्शन के लिए तुलसीदास को पत्र लिखा। कृष्ण काव्य मे गोपियो द्वारा लिखा गया पत्र उद्धव के लिए सकट मे डाल देता है।

हिन्दी साहित्य का भारतेन्दु युग अपने मनमौजीपन के लिए अपनी साहित्यक कृतियो द्वारा जाना जाता है। भारतेन्दु प्रताप नरायण मिश्र तथा बाल मुकुन्द गुप्त के पत्रो मे भी निर्द्वन्दता एव फक्कडपन की झिलमिलाहट उपलब्ध होती है। पत्रो के महत्व का अनुभव करते हुए हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने हिन्दी जगत के प्रमुख साहित्यकारो के पत्रो को प्रकाशित करने का निश्चय किया है। एक योजना के रूप मे सन् १९८२ मे पत जी और कालाकांकर शीर्षक से कविवर सुमित्रा नन्दन पत के पत्रो का प्रकाशन किया गया है। इन पत्रो द्वारा पत जी की महाराज कालाकाकर परिवार से जहॉ एक ओर कनिष्ठ आत्मीयता का परिचय मिलता है। वही कवि के वैयक्तित्व जीवन भाव जगत एवं चितन धारा का भी पता चलता है। इतना ही नही कवि की पृष्ठभूमि का भी परिज्ञान हो जाता है। साहित्य जगत मे इस पत्र सग्रह को अच्छा सम्मान प्राप्त हुआ है। हिन्दी भाषा के पत्रों को सम्मेलन ने प्रकाशित

---

१ सम्मेलन पत्रिका पत्र विशेषाक पृ०१४।

करके भाषा की सरलता को जन-जन तक पहुचाने का प्रयास किया है। महत्वपूर्ण साहित्यकारो के नाम इस प्रकार है। महावीर प्रसाद द्विवेदी, धनपत राय (प्रेमचन्द) हरिऔध, निराला, राहुल, साकृत्यायन, श्री रामधारी सिह दिनकर, सियाराम शरण गुप्त, श्री भगवती प्रसाद बाजपेयी, शिव पूजन सहाय तथा श्री उदयशकर भट्ट के पत्र हिन्दी भाषा के उच्चकोटि के पत्र माने जाते है जिनका सकलन सम्मेलन के सग्रहालय मे किया गया है। भारतीय स्वतत्रता सग्राम के दौरान हिन्दी भाषियो ने अपने विचारों का आदान-प्रदान महान नेताओ के साथ किये जिनमे नेता जी सुभाष चन्द बोस, वीर सावरकर, लौह पुरुष भारतरत्न सरदार बल्लभ भाई पटेल आदि नेता को पत्र भी हिन्दी साहित्य के विकास मे अमूल्य योगदान दिया है और आपसी विचारो व्यक्त करने के माध्यम के रूप मे हिन्दी भाषा के पत्रो का अमूल्य योगदान है।[1]

विगत बीस-पच्चीस वर्षो मे हिन्दी भाषा के पत्र साहित्य की ओर विशेष ध्यान दिया गया। पंडित पद्म सिह शर्मा की रुचि हिन्दी भाषा के पत्रो मे अधिक थी। आर्य समाज के सस्थापक स्वामी दयानन्द के पत्रो का एक बहुत बडा सग्रह प० भगवत दत्त द्वारा प्रकाशित किया गया है। उपन्यास सम्राट प्रेम चन्द के पत्रो को भी साहित्य जगत मे विशेष सम्मान प्राप्त हुआ। उनके पत्रो के व्यक्तिगत जीवन स्वरूपो के अतिरिक्त साहित्यिक एव राजनीतिक पक्षो पर भी विचार प्राप्त होते है। शर्मा जी के पत्रो मे वैयक्तिकता के साथ ही साथ साहित्य सम्बन्धी चर्चा भी हो जाया करती थी। राहुल सांकृत्यायन के पत्रो का भी अपना अन्दाज है। सच्चे अर्थो मे उनका साहित्य उनकी श्रम पूर्ण यात्राओ का प्रतिफल है। इस सन्दर्भ मे उनके पत्र साहित्य का विशेष महत्व है। हिन्दी भाषा पत्र साहित्य की श्रृंखलाओ मे डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल और हजारी प्रसाद द्विवेदी के पत्र भी अपना एक निश्चित मूल्य रखते है।[2]

हिन्दी के भीष्म पितामह माने जाने वाले प० बनारसी दास चतुर्वेदी के पास तो पत्रो का मूल्यवान कोष है। इन्हे पत्रो के प्रति विशेष आकर्षण है।

---

१ सम्मेलन का पत्र विशेषाक - १०, ११, १२ प्रेम नरायण शुक्ल।

२ सम्मेलन पत्रिका पत्र विशेषाक पृ० ९, १०।

मुझे अपने युग के दो साहित्य महारथियो- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तथा आचार्य श्याम सुन्दर दास के भी कुछ पत्र अपने गुरुजनो से देखने को मिले है। जिनमे वैयक्तिक प्रसगो की ही चर्चा घुमा फिराकर की गयी है। इन पत्रो से जिस वातावरण का परिचय मिलता है उसके विषय मे मात्र इतना ही सकेत करना पर्याप्त होगा कि इस आपाधापी के बीच व्यक्ति का जीवन किस घुटन मे व्यतीत होता है। कविवर हरिवश राय बच्चन के पत्रो मे शीर्षक से कविवर बच्चन के पत्रो का सग्रह प्रकाश मे आया है। इन पत्रो से लेखक की स्पदनशीलता। आत्मीयता एव कवि सुलभ भावुकता का परिचय मिलता है। इस पत्र सग्रह मे प्रश्नोत्तर शैली के भी कुछ पत्र है जिनमे बच्चन जी के ही शब्दो मे ही उनके जीवन के विविध पत्रो पर अधिकाधिक रूप से प्रकाश पडता है साथ ही उनकी साहित्य सम्बन्धी विचारधाराओ से भी परिचय प्राप्त होता है।[1] दिल्ली विश्वविद्यालय के निवर्तमान अध्यक्ष डॉ० विजयेन्द्र स्नातक का भी एक पत्र सग्रह प्रकाशित हुआ। उन्होने अपनी साहित्य सम्बन्धी मान्यताओ एव विविध अनुभूतियो की पत्रात्मक शैली मे व्यक्त किया है। साहित्य का विवेचन और अनेकानेक सरस प्रसगो का आत्मीय शैली मे चित्रण ही इस सग्रह की विशेषता है।

कुछ ही समय पूर्व डॉ० जीवन प्रकाश जोशी द्वारा सम्पादित पत्र सग्रह अचल पत्रो मे शीर्षक पढने को मिला है। इस सग्रह मे लेखक के विभिन्न साहित्यिक विषयो एव साहित्य सेवियो से सम्बन्धित विचारो का ज्ञान प्राप्त होता है। अचल जी एक सुधी चिन्तक है। उनके अपने विचार महत्वपूर्ण है। पत्र शैली मे इस प्रकार का विवेचन एक विधा का रूप ग्रहण कर रहा है।[2]

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का प्रथम-पत्र सग्रह ११-११-१९१५ यह पत्र मात्र चार पक्ति का है, जिसमे सरस्वती मे लेख लिखने का आग्रह किया गया है। जहॉ तक हो सके भाषा सरल बोल-चाल की हो। क्लिष्ट सस्कृत शब्द न आने वाले मुहावरो का ख्याल रहे। वाक्य छोटे-छोटे हों। सम्मेलन द्वारा कुछ महत्वपूर्ण पत्रो का प्रकाशन किया गया था। उनका विवरण निम्न प्रकार है।

---

१ सम्मेलन पत्रिका पत्र विशेषाक पृ०१२

२ सम्मेलन पत्रिका पत्र विशेषाक पृ०१४

१- आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के पत्र पण्डित देवी दत्त शुक्ल के नाम स०
१-५९।

२- किशोरी दास बाजपेयी के नाम सख्या १०० से १५२।

३- राम गोविन्द त्रिवेदी के नाम स० १५३-१५७।

४- जगन्नाथ चतुर्वेदी के नाम स० १५८-१५९।

५- धनपत राय (प्रेमचन्द) देवी दत्त शुक्ल १६०-१६४।

६- रामचन्द टण्डन स० १६५-१६७।

७- हरिऔध - देवी दत्त शुक्ल के नाम १६८-१८८।

८- पडित किशोरी दास बाजपेयी के नाम स० १७७-१८१।

९- निराला के पत्र देवीदत्त शुक्ल के नाम स० १८९-२०३।

१०- राहुल के पत्र

क- देवी दत्त शुक्ल के नाम स० २०४-६।

ख- राम गोविन्द चौधरी स० २०५-२८।

ग- किशोरी दास बाजपेयी स० २२४-४४।

११- दिनकर के पत्र-प्रभात शास्त्री के नाम सं० २४५-५२।

किशोरी दास बाजपेयी के नाम २५०।

१२- सियाराम शरण गुप्त के पत्र

देवी दत्त शुक्ल के नाम सं० २५३-२५५।

१३- भगवती प्रसाद बाजपेयी के पत्र

श्री प्रभात शास्त्री के नाम स० २५६-२६९।

१४- आचार्य शिव पूजन सहाय के पत्र

राम गोविन्द चौधरी २७०-७४।

देवी दत्त शुक्ल स० २७५-३०३।

किशोरी दास बाजपेयी पत्र स० ३०६।

१५ - उदय शकर भट्ट के पत्र

प्रभात शास्त्री स० ३०७ स० ३२८

देवीदत्त शुक्ल स० ३२९-४३।

प्रभात शुक्ल स० ३०९।

उपर्युक्त पत्रो के माध्यम से हिन्दी भाषा जनमानस तक पहुचाने मे सम्मेलन के पत्रो का प्रकाशन होने से आसानी हुयी। सम्मेलन की यह उपलब्धि मील का पत्थर साबित होगी।[1]

सम्मेलन पत्रिका का श्री गणेश सन् १९१३ ई० मे अश्विन महीने की १०वी तारीख को बाबू गिरिजा कुमार घोष के सम्पादन मे हुआ। सम्मेलन पत्रिका का प्रकाशन हिन्दी साहित्य सम्मेलन की कार्यकरिणी समिति की ओर से प्रतिमास प्रकाशित होना निश्चित किया गया। गिरिजा कुमार घोष ने सम्मेलन प्रत्रिका के प्रथम भाग के प्रथम अक मे सम्पादकीय निवेदन के अन्तर्गत लिखा है।" मेरे ऊपर इस पत्रिका के सम्पादन का दायित्व लाद दिया गया है। परन्तु यह सम्भव नही कि मै अपनी राम मडैया मे अकेला बैठा हुआ इस भारी दायित्व को पूरा कर सकूँ। इस पत्रिका से सर्वसाधारण को लाभ पहुचाना। इसे लोकप्रिय बनाकर इसके प्रचार मे सहायता करना अकेले मेरे हाथ मे नही है। यह कार्य हिन्दी भाषा के प्रेमी भात्र का है। जब तक सब ओर से शक्ति संचार नही होगा यह पत्रिका आशक्त रह जायेगी। दानव दल को नाश करने के लिए देवगणो ने मिलकर अपनी शक्ति प्रदान करके आद्यशक्ति की रचना की थी। उसी प्रकार सम्मेलन पत्रिका को भी अपने विचारो का केन्द्र मानकर हिन्दी भाषा की उन्नति और हिन्दी साहित्य सम्मेलन के उद्देश्यो की पूर्ति करना प्रत्येक हिन्दी रसिक का धर्म है।"[2]

प्रारम्भ के सम्मेलन पत्रिका के तीनो अको मे सम्पादक की दृष्टि हिन्दी साहित्य की

---

१ सम्मेलन पत्रिका विशेषाक पृ०१५।

२ अमृत महोत्सव- डॉ० सत्य प्रकाश मिश्र पृ०१६०पृ०

सच्ची उन्नति, हिन्दी भाषा का सच्चाई के साथ प्रचार-प्रसार, हिन्दी मे उच्च शिक्षा की आवश्यकता, हिन्दी साहित्य सम्मेलन की कार्यवाहियो एव हिन्दी जगत की गतिविधियो को जन मानस तक पहुचाने के अतिरिक्त पुस्तको के परिचय और वैज्ञानिक गतिविधियो पर भी रही। सामग्री सकलन की योजना को देखते हुए कहा जा सकता है कि गिरिजा कुमार घोष के ऊपर जो भार सौपा गया था उसके इस पत्रिका के माध्यम से हिन्दी भाषा का प्रचार एव प्रसार तीव्रता के साथ सम्पन्न हुआ। इस पत्रिका मे शोध निबन्धो का प्रकाशन भी होता है। १९७५ -७६ मे सम्मेलन पत्रिका का बाबू श्याम सुन्दर दास जन्मशती विशेषाक प्रकाशित किया गया है जो ३०० पृष्ठो का है। और जिसमे बाबू श्यामसुन्दर दास जी से सम्बन्धित अनेक अनुपलब्ध सामग्रियां, लेख, विविरण आदि सकलित है। बाबू श्यामसुन्दर दास जन्मशती विशेषाक का स्वागत हिन्दी जगत मे उत्साहवर्द्धक रहा है। हिन्दी की सम्मेलन की पत्रिका के कला विशेषाक तथा गॉधी टण्डन स्मृति अक सदैव चर्चित एव सग्रहणीय माने गये है। बाबू श्यामसुन्दर दास विशेषाक उसी परम्परा की एक कडी है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रकाशन विभाग द्वारा हिन्दी राष्ट्रभाषा सदेश पाक्षिक मुखपत्र सन् १९६५ से अब तक लगातार साहित्यकारो, रचनाओ, उनकी जयतियो, हिन्दी साहित्य के विभिन्न विधाओ, निबन्ध, कविता, उपन्यास, कहानी, नाटक आदि रचनाओ के माध्यम से करता आ रहा है।[1]

राष्ट्र भाषा सन्देश पाक्षिक पत्रिका हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रचार विभाग द्वारा किया जाता है। विदेशो मे हिन्दी प्रचार के समाचारो को उपयुक्त स्थानो तक निरन्तर पहुचाया करता है। यही नही हिन्दी सम्बन्धी समस्याओ तथा भ्रातियों आदि के समाधान तथा निराकरण का माध्यम भी राष्ट्र भाषा सन्देश बना हुआ है। अहिन्दी भाषी क्षेत्रो मे यह पत्र अपनी प्रचार सामग्री के प्रस्तुतीकरण तथा समाचारो की विविधता और महत्वपूर्ण जानकारी देने के कारण बहुत ही लोकप्रिय है। इस क्षेत्र मे राष्ट्रभाषा सन्देश सर्वमान्य एक मात्र महत्वपूर्ण पत्रिक पत्र है। इसके अतिरिक्त यह विभाग देश मे बिखरी हुई सैकडो हिन्दी प्रचारिणी संस्थाओ के माध्यम से देश मे निरन्तर राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति लोगो की आस्था बढाने का कार्य करता है। हिन्दी दिवस महाकवियो तथा हिन्दी के महापुरुषों की जयंतियो आदि सामारोहो

---

१ सम्मेलन पत्रिका नरेश मेहता विशेषाक पृ०२६२

का आयोजन सम्मेलन मे तो किया ही जाता है देश की जनता को भी सस्थाओ, विद्यालयो के माध्यम से इस ओर प्रेरित किया जाता है।[1]

१- सम्मेलन पत्रिका के हिन्दी सम्बन्धी प्रमुख अक गॉधी टण्डन स्मृति अक।

२-श्रद्धाजलि विशेषाक मालीय, निराला त्रिपाठी।

३- मानस का चतुशती विशेषाक।

४- श्याम सुन्दर दास जन्मशती विशेषाक।

५- जन्मशती विशेषाक, जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी, कामता प्रसाद गुरु, पद्म सिह शर्मा, रवि शकर शुक्ल।

९- राजर्षि टन्डन जन्मशती विशेषाक।

१०- महत्वपूर्ण साहित्यकारो के पत्र विशेषाक।

११- आचार्य नन्द दुलारे बाजपेयी का विशेषाक।

१२- आचार्य राम चन्द्र शुक्ल जन्मशती विशेषाक।

१३- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी विशेषाक।

१४- राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त जन्मशती विशेषाक।

१५- माखन लाल चतुर्वेदी जन्मशती विशेषाक।

१६- राहुल सांकृत्यायन जन्मशती विशेषाक।

१७- निराला जन्मशती विशेषाक।

पत्रिकाये-

१- मध्यमा - बाल कृष्ण राव सन् १९६४।

२- सम्मेलन पत्रिका गिरिजा कुमार घोष सन् १९१३।

३- राष्ट्रभाषा सन्देश १९६४ ई०।

---

१ सम्मेलन दैनन्दिनी पृ०११

(घ) दुर्लभ पुस्तिकाओं के माध्यम से

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना के बाद से ही हिन्दी पुस्तको तथा संबन्धित अन्य वस्तुओ के रख-रखाव के लिए हिन्दी सग्रहालय की भूमिका तैयार होती रही और हस्तलिखित ग्रन्थो का भी संचयन होता रहा। इस दिशा मे सर्वप्रथम आनन्द देव मालवीय ने दिनाक ३०-१-९१ को हस्तलिखित सन्तस्रन (सन्त काव्य) पुस्तक प्रदान कर हिन्दी सग्रहालय की वाड्मयी आधारशिला रक्खी।[1] इसके बाद तीन हस्तलिखित ग्रन्थ रामचरित मानस, दादू की वाणी, सन्तदास की अनुभववाणी सम्मेलन की तरफ से खरीदे गये, जिसका प्रभाव सम्मेलन के शुभचिन्तको पर बहुत पडा और वे इस दिशा मे अधिक जागरूक हुए। इसी का परिणाम था कि कानपुर अधिवेशन मे श्री पुरुषोत्तम दास टण्डन ने सग्रहालय की योजना के सम्बन्ध मे प्रस्ताव रखते हुए कहा कि 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अन्तर्गत एक ऐसे विशाल सग्रहालय की आवश्यकता है, जिसमे हिन्दी के प्रामाणिक ग्रन्थ हो, जिसके आधार पर अनुशीलताकर्ता हिन्दी को अधिक से अधिक समृद्ध और पुष्ट कर सके।[2]

दो वर्ष के अन्दर ही एक पुस्तकालय के रूप मे हिन्दी सग्रहालय का बीज बो दिया गया। जिसका विवरण देते हुए देहरादून के १५वे अधिवेशन मे तत्कालीन प्रधानमंत्री पं० माधवराव सप्रे ने बताया कि सम्मेलन का सग्रहालय अभी एक पुस्तकालय के रूप मे है जिसमे ३,५१७ पुस्तके है।[3] सग्रहालय और उसके भवनो की स्थापना के लिए सम्मेलन बार-बार महत्वपूर्ण वक्तव्य और प्रार्थनाए प्रकाशित करता रहा। फलस्वरूप कलकत्ता के श्री बहादुर सिह सिन्धी, श्री भागीरथ जी कनोडिया और महाराजा पडरौना आदि दानदाताओ द्वारा लगभग ७००० का दान प्राप्त होने पर सग्रहालय भवन निर्माण का सकल्प किया गया।

दिनाक १६ मई १९३२ को अयोध्यावासी स्व० लाला सीताराम जी ने संग्रहालय की नीव रखी। निर्माण के समय प्रयाग नगरपालिका ने भी २५०० रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की। श्री बहादुर सिंह ने २५०० तथा अन्य धन का प्रबन्ध श्री टण्डन जी ने किया।

---

१ हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इतिहास - श्री नरेश मेहता पृ०-२२५

२ हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इतिहास - श्री नरेश मेहता पृ०-२५५

३ हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इतिहास - श्री नरेश मेहता पृ०-२५६

इस प्रकार सहायता प्राप्त कर सग्रहालय भवन दो वर्ष आठ माह मे निर्मित होकर पूर्ण हो गया। इसमे कुल ३२४५५ का खर्च आया।[1]

राष्ट्रीय और सास्कृतिक गर्व-गौरव से समुन्नत सग्रहालय का उद्घाटन ५ अप्रैल। १९३६ को राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी ने सहस्रो जनता की उपस्थिति मे किया। साधारण जनता के अतिरिक्त माता कस्तूरबा, जवाहर लाल नेहरू, काका कालेकर, सेठ जमुना लाल बजाज, महादेव देसाई, शकर दाते, यशवत राव दाते, कैलाश नाथ काटजू, विजय लक्ष्मी पण्डित, पुरुषोत्तम दास टण्डन आदि राष्ट्रीय नेता तथा डॉ० गंगानाथ झा, डॉ० अमरनाथ झा, डॉ० लक्ष्मणस्वरूप, डॉ० रघुवीर, डॉ० ताराचन्द, डॉ० धीरेद्र वर्मा, डॉ० बाबू राम सक्सेना आदि उपस्थित थे।

सम्मेलन मे हस्तलिखित प्रकाशित ग्रन्थो और ऐतिहासिक वस्तुओ सग्रह जब वामन से विराट बनने लगा तो सम्मेलन ने इसे एक पृथक समिति के अधीन कर देने का निश्चय किया।

सग्रहालय की पुस्तको की बढती सख्या देखकर सम्मेलन का ध्यान वर्गीकरण व्यवस्था की ओर गया और पुस्तको को सुव्यस्थित ढग से रखने के लिए दो रुखी सोलह आलमारियो की व्यवस्था की गयी। विविध विषयो की हस्तलिखित और प्रकाशित पुस्तको तथा चित्र और ऐतिहासिक वस्तुओ को सुव्यवस्थित रूप से रखने के लिए कक्षो का विभाजन किया गया जो राजर्षि कक्ष, बसु कक्ष, वाचनालय कक्ष और अनुशीलन कक्ष इन पॉच नामो से विभक्त है। इन कक्षो मे विषय और सामग्री विभिन्न हैं। इसके अतिरिक्त बाल साहित्य, महिला साहित्य और गॉधी साहित्य कक्षो का भी विभाजन किया गया है।[2]

राजर्षि टण्डन को व्यक्तिगत और सामाजिक रूप मे जो भी वस्तुएँ प्राप्त होती रही है, उनका अधिकाश संग्रह हिन्दी - सग्रहालय के राजर्षि-कक्ष में सगृहित हैं। ये वस्तुएँ वही हैं जो टण्डन जी के सम्मान में जनता या व्यक्ति विशेष द्वारा अभिनन्दन या भेट स्वरूप उन्हे प्रदान की गयी हैं। इसमे से अनेक अलंकृत, कलात्मक अभिनन्दन पत्र हा जो उक्त कक्ष की भित्ति पर सुव्यवस्थित रूप से सजा दिये गये हैं। इसके साथ-साथ अनेक चॉदी

---

१ हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इतिहास - श्री नरेश मेहता पृ०-२५६

२ हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इतिहास - नरेश मेहता पृ०२५७।

के ताले कूजी, कतरनी, कन्नी, तश्तरी आदि और बहुमूल्य पच्चीकारी किया हुआ अशोक स्तम्भ, कास्यपात्र पर अकित जयपुर के ऐतिहासिक चित्र, राजर्षि कक्ष मे सजाये गये है।

सग्रहालय के रणवीर कक्ष मे हस्तलिखित ग्रन्थो का एक विशाल सग्रह है। जिसमे श्रीमद्भागवत, महाभारत देवी भागवत, कल्कि पुराण, गरुण पुराण, हरिवश पुराण, रघुवश कुमार सभव, गीतगोविद, व्याकरण, ज्योतिष, कोष अभिधान आदि महत्वपूर्ण विषयो के अनेक बहुमूल्य ग्रन्थ हिन्दी की पोथियो मे ब्रजविलास, भिखारीदास कृत काव्य निर्णय, छन्दार्णव, महाराज रघुराजसिह का रुक्मणी परिणय आदि अनेक उपादेय ग्रन्थ है। प्रयाग के हकीम श्री मोहनलाल जी ने ३० हस्तलिखित तथा २५ मुद्रित प्राचीन ग्रन्थ प्रदान किये है। सम्मेलन के, १९९६ के पुस्तक अन्वेषक ने राजस्थान का भ्रमण कर लगभग ३५०० प्राचीन पाण्डुलिपियॉ प्राप्त की है। इसके अतिरिक्त १२०० पाण्डुलिपियॉ सम्मेलन की पुरानी सगृहीत निधि है।[1]

प्रयाग के लब्धप्रतिष्ठित डॉ० ललित मोहन बसु महोदय ने अपने स्व० पिता वामनदास बसु की पुण्य स्मृति मे उनकी पुस्तको का विशाल सग्रह सम्मेलन को भेट किया है। इस सग्रह मे विभिन्न विषयो की अग्रेजी की चार हजार पुस्तके तथा पत्र-पत्रिकाएँ है।

विद्यार्थियों तथा साहित्यिको के विशेष लाभ के लिए एक अलग वाचनालय स्थापित किया गया। जिसमे शोधकार्य के लिए पुस्तको का संग्रह किया गया। १९९६ तक इसमे ४००० पुस्तके सग्रहीत थी।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अनुशीलन कक्ष मे हिन्दी, सस्कृत, अग्रेजी तथा प्राय समस्त भारतीय भाषाओ की विविध विषयो की मुद्रित पुस्तके सगृहीत है। इस समय लगभग २५६०० पुस्तके ड्यूवी-पद्धति के अनुसार सुन्दर दो रूखी आलमारियों में व्यवस्थित रूप से रखी गयी है। वेदो से लेकर महाभारत काल तक का सस्कृत साहित्य तथा हिन्दी का समस्त उच्चकोटि का साहित्य अनुशीलन कक्ष मे संग्रहीत है जो अनुशीलनकर्ता को सहायता देता है। इसके साथ-साथ भारत वर्ष तथा विदेशो से प्रकाशित होने वाले हिन्दी के प्राय सभी उच्चकोटि के दैनिक, साप्ताहिक, मासिक पत्र-पत्रिकाओ को इसी कक्ष मे सगृहीत किया जाता है।

---

१ हिन्दी साहित्य का इतिहास - नरेश मेहता पृ०-२५८

हिन्दी सग्रहालय जिस उद्देश्य से सचालित किया गया था उसी पूर्ति और सफलता सगृहीत ग्रन्थो से ही आकी जा सकती है। इस समय सग्रहालय मे वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद्, सूत्रग्रन्थ, पुराण, तन्त्र काव्य, कोश, अभिधान, व्याकरण, साहित्य, ज्योतिष, दर्शन, न्याय, तर्क, मीमासा साख्य विषयो के सस्कृत ग्रन्थ, हिन्दी के भाषा विज्ञान शिला, ललित कला, चित्रकला मूर्तिकला, वस्तुकला, इतिहास, भूगोल, भूमिति, ज्यामिति गणित, मनोविज्ञान, शरीर विज्ञान, अध्यात्म, समाज, धर्म, सस्कृति, कथा, उपन्यास, विज्ञान, नागरिक शास्त्र, नृतत्व, जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान आदि विषयो के भौलिक और अनूदित प्राय· सभी प्रकाशित ग्रन्थ है अन्य प्रातीय बोलियो तथा भाषाओ के अनूदित ग्रन्थ है। ससार के प्रमुख धर्मो के धार्मिक और सामाजिक उपयोगी अग्रेजी भाषा के ग्रन्थ कुल मिलाकर २६०० के लगभग है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सग्रहालय मे आकड़ो के अनुसार अब तक विश्व के लगभग डॉ० शोध छात्र हिन्दी के दुर्लभ पुसतिकाओं का अध्ययन हेतु अनेक विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राए एव विद्वान आ चुके है।[1]।

ये समस्त शोध छात्र अपने देशो मे हिन्दी भाषा के गौरव को बढाने का कार्य किया है। इनमे तुलसी पर कार्य करने वाले कादर कामिल बुल्के का नाम बडे ही गर्व के साथ लिया जा सकता है।[2] इग्लैड 'आस्ट्रेलिया न्यूजीलैड आदि देशो के हिन्दी प्रेमी विद्वान यहां आकर शोध कार्य के माध्यम से हिन्दी भाषा और उसके साहित्य की समृद्धि मे योगदान दिया है। भारतीय विश्वविद्यालयो के अनेक हिन्दी विभागो के शोध छात्र १००० की संख्या मे प्रतिवर्ष आकर हिन्दी के दुर्लभ ग्रथो का अध्ययन करके हिन्दी भाषा के दुर्लभ ग्रथो के विचारो और साहित्य विशेषता का आम जन मानस तक पहुचाने का प्रयास किया है। स्वय सेवी हिन्दी सस्थानो एवं हिन्दी प्रेमी के लिए हिन्दी साहित्य सम्मेलन के दुर्लभमय हिन्दी की समृद्धि मे अपना योगदान दे रहे है और विश्व के कोने कोने मे हिन्दी भाषा और सम्मेलन की प्रतिष्ठा स्थापित करने मे विशेष योगदान रहा है।[3]

---

१ सम्मेलन पत्रिका (माध्यम) अक्टूबर अक पृ०६०। सम्पादक डॉ० सत्यप्रकाश मिश्र

२ माध्यम जून २००१ पृ०१३ डॉ० सत्यप्रकाश मिश्र

३ सम्मेलन प्रतिका माध्यम जून पृ०६५। सम्पादक-सत्य प्रकाश मिश्र

(ङ) पा० लिपियों के संकलन एवं संख्या

भारत की प्राचीन वास्तविक सम्पदा वस्तुत पुस्तके और पुस्तकालय ही रहे। प्रत्येक भारतीय घर मे एक निजी पुस्तकालय अवश्य रहता है। यही कारण है कि इस गये बीते युग मे भी खोज करने पर बिखरा हुआ भारतीय भण्डार प्रचुर मात्रा मे मिला करता है। इस बौद्धिक सम्पत्ति को समेटकर हिन्दी-सग्रहालय मे एकत्र करने के लिए सम्मेलन उद्योगशील अवश्य है किन्तु अर्थ सकट इस उद्योग को आगे नही बढने देता। यह कार्य केवल सम्मेलन या उसके अकेले अन्वेषक से साध्य नही है। इस पुण्य सचय के लिए तो भारतीय बुद्धिवादी जनता को भी हॉथ बटाना चाहिए। इसी उद्देश्य से सम्मेलन ने समय-समय पर अभ्यर्थनाए प्रकाशित कर इस ओर जनता का ध्यान आकृष्ट किया है। जिससे कुछ न कुछ सफलता भी मिली है। उसी के परिणामस्वरूप आज सग्रहालय के अन्तर्गत रणवीर - कक्ष हस्तलिखित पाण्डुलिपियो द्वारा गौरवास्पद है। पाण्डुलिपियो की सख्या मे यथाशक्ति आशाजनक अभिवृद्धि होती रही—[1]

सं०	पुस्तकें
१९९६	५२५
१९९७	६१४
१९९९	९००
२००३	१०१६
२००६	१६०७
२००७	३७००

मे पाण्डुलिपियॉ सग्रहित हुई। इनमे सस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी भाषा के ग्रन्थ है। कुछ ग्रन्थ तो अपनी प्राचीनता और विषय की उपयोगिता के कारण इतने बहुमूल्य है कि अब उसका मिलना प्राय. असम्भव है।[2]

सग्रहालय मे जब हस्तलिखित, प्रकाशित ग्रन्थों और ऐतिहासिक वस्तुओं का संग्रह वामन से विराट रूप बनने लगा तो सम्मेलन ने इसे एक पृथक् समिति कर देने का निश्चय

---

१ हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इतिहास - भाग १ नरेश मेहता पृ०-२६०

२ हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इतिहास - नरेश मेहता पृ० २६०

किया। विविध विषयो की हस्तलिखित और प्रकाशित पुस्तको तथा चित्र एव ऐतिहासिक वस्तुओ को सुव्यवस्थित रूप मे क्रम से रखने के लिए कक्षो का विभाजन किया गया है जो राजर्षि कक्ष, रणवीर कक्ष, वसु कक्ष वाचनालय कक्ष और अनुशीलन कक्ष इन पॉच नामो से विभक्त है।

अब तक जो हस्तलिखित ग्रन्थ भेट स्वरूप प्राप्त हुए है उनमे अमेठी के महाराज कुमार श्री रणञ्जय सिह जी द्वारा अपने स्वर्गीय अग्रज महाराज कुमार रणवीर सिह जी की स्मृति मे प्रदत्त हस्तलिखित ग्रन्थो का एक विशाल सग्रह उल्लेखनीय है। इसी से हस्तलिखित पुस्तको के कक्ष का नाम महाराज कुमार की स्मृति मे रणवीर कक्ष रखा गया।[1] इनमे प्रमुख श्रीमद्भागवत, महाभारत, देवी भागवत कल्कि पुराण, गरुण पुराण, हरिवश पुराण, रघुवश कुमार सभव, गीत गोविन्द के अतिरिक्त ज्योतिष, कोष अभिधान आदि महत्वपूर्ण विषयो पर अनेक बहुमूल्य ग्रन्थ है।

प्रयाग हकीम श्री मोहनलाल जी ने ३० हस्तलिखित तथा २५ मुद्रित प्राचीन ग्रन्थ प्रदान किये। इसी कक्ष मे हास्यरसाचार्य श्री जगन्नाथ चतुर्वेदी का चश्मा, कलम, दवात तथा उनके दॉतो का सेट, राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त जी के जेल की कमीज, स्व० श्री महावीर द्विवेदी आदि अनेक प्रमुख साहित्यकारो का हस्तलिखित पत्र प्रदर्शन पेटिका मे सुसज्जित है।[2]

हिन्दी सग्रहालय जिस उद्देश्य से सचालित किया गया है उसकी पूर्ति और सफलता सग्रहीत ग्रन्थो से ही आकी जा सकती है। इस सग्रहालय मे वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद् सूत्रग्रन्थ, पुराण, तत्र, काव्य, कोश, अभिधान व्याकरण, साहित्य ज्योतिष, दर्शन, न्याय, तर्क, मीमासा साख्य विषयो के सस्कृत ग्रन्थ तथा हिन्दी के भाषा विज्ञान शिला, ललित कला, चित्रकला, मूर्तिकला, वस्तुकला, इतिहास, भूगोल, भूमिति, ज्यामिति गणित, मनोविज्ञान, शरीर विज्ञान, आध्यात्म, समाज, धर्म, संस्कृति, कला, उपन्यास, विज्ञान, नागरिकशास्त्र, जीवविज्ञान आदि विषयो के मौलिक और अनूदित प्राय· सभी प्रकार के हिन्दी ग्रन्थ है।[3]

---

१ हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इतिहास - नरेश मेहता - पृ०२५८

२ हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इतिहास - नरेश मेहता - पृ०२५८

३ हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इतिहास - नरेश मेहता - पृ०२६०

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना १९१० ई० मे हुई और शनै.-शनै सम्मेलन के क्रिया कलापो का सम्बर्द्धन एव विकास होता गया।

उद्देश्यो के अन्तर्गत एक वृहत सग्रहालय की स्थापना की गयी, जिसका उद्घाटन विश्ववद्य महात्मा गॉधी जी ने ५ अप्रैल १९३६ ई० को किया था।[1] इस संग्रहालय मे हस्तलिखित पोथियो, मुद्रित ग्रन्थो, पत्र-पत्रिकाओ, समाचार पत्रो, चित्रो तथा स्मृति-चिन्हो का सग्रह किया गया है। आज सम्मेलन का हिन्दी सग्रहालय देश-विदेश के अनुसधानको का केन्द्र बना हुआ है।

इस सग्रहालय मे हस्तलिखित ग्रन्थो का सग्रह सम्मेलन ने अपने साहित्यन्वेषको के माध्यम से प्रारम्भ किया था। कुछ वर्षो के पश्चात अमेठी राज्य के राजकुमार रणञ्जय सिह ने अपने अग्रज राजकुमार रणवीर सिह जी की स्मृति मे संस्कृत और हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थो का निजी संग्रह भेट स्वरूप सम्मेलन को प्रदान किया। सम्मेलन के द्वारा सगृहीत हस्तलिखित ग्रन्थो को इस सग्रह मे मिलाकर राजकुमार रणवीर सिह जी की स्मृति मे 'रणवीर कक्ष' स्थापित करके उसमे विधिपूर्वक व्यवस्थित किया गया है। इसकी सूची सम्मेलन द्वारा 'पाण्डुलिपियो' नामक ग्रन्थ के रूप मे २०१४ वि० मे प्रकाशित की गयी।[2]

सन् १९६३ मे ग्वालियर निवासी सूरजराज धारीवाल जी ने अपना बहुमूल्य हस्तलिखित ग्रन्थ सग्रह सम्मेलन के हिन्दी - सग्रहालय को भेट स्वरूप प्रदान किया। इस संग्रह को भी श्री धारीवाल जो और उनकी पत्नी सुभद्रा देवी के सयुक्त नाम से सूरज-सभद्रा कक्ष मे व्यवस्थित रखा गया है।

'रणवीर कक्ष' और 'सूरज-सुभद्रा कक्ष' इन दोनो कक्षो मे सुव्यवस्थित हस्तलिखित ग्रन्थो की सख्या लगभग ८५०० है। सम्पूर्ण संग्रह के हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थों की विवरणात्मक सूची १९७१ मे शिक्षा मंत्रालय के वित्तीय अनुदान से सम्मेलन द्वारा प्रकाशित हुई थी। उसमे हिन्दी के १८२ ग्रन्थो का विविरण प्रस्तुत किया गया था।

सम्मेलन के हिन्दी सग्रहालय को निरतर ग्रन्थ-दाताओं का सहयोग प्राप्त होता जा

---

१ हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थो की विवरणात्मक सूची स० पारसनाथ।

२ हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थो की विवरणात्मक सूची - स० पारसनाथ पृ०।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना १९१० ई० मे हुई और शनै -शनै· सम्मेलन के क्रिया कलापो का सम्बर्द्धन एव विकास होता गया।

उद्देश्यो के अन्तर्गत एक वृहत संग्रहालय की स्थापना की गयी, जिसका उद्घाटन विश्ववद्य महात्मा गॉधी जी ने ५ अप्रैल १९३६ ई० को किया था।[1] इस संग्रहालय मे हस्तलिखित पोथियो, मुद्रित ग्रन्थो, पत्र-पत्रिकाओ, समाचार पत्रो, चित्रो तथा स्मृति-चिन्हो का सग्रह किया गया है। आज सम्मेलन का हिन्दी सग्रहालय देश-विदेश के अनुसंधानको का केन्द्र बना हुआ है।

इस सग्रहालय मे हस्तलिखित ग्रन्थो का संग्रह सम्मेलन ने अपने साहित्यन्वेषको के माध्यम से प्रारम्भ किया था। कुछ वर्षो के पश्चात अमेठी राज्य के राजकुमार रणञ्जय सिह ने अपने अग्रज राजकुमार रणवीर सिह जी की स्मृति मे सस्कृत और हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थो का निजी सग्रह भेट स्वरूप सम्मेलन को प्रदान किया। सम्मेलन के द्वारा सगृहीत हस्तलिखित ग्रन्थो को इस सग्रह मे मिलाकर राजकुमार रणवीर सिह जी की स्मृति मे 'रणवीर कक्ष' स्थापित करके उसमे विधिपूर्वक व्यवस्थित किया गया है। इसकी सूची सम्मेलन द्वारा 'पाण्डुलिपियो' नामक ग्रन्थ के रूप मे २०१४ वि० मे प्रकाशित की गयी।[2]

सन् १९६३ मे ग्वालियर निवासी सूरजराज धारीवाल जी ने अपना बहुमूल्य हस्तलिखित ग्रन्थ सग्रह सम्मेलन के हिन्दी - सग्रहालय को भेट स्वरूप प्रदान किया। इस सग्रह को भी श्री धारीवाल जो और उनकी पत्नी सुभद्रा देवी के सयुक्त नाम से सूरज-सभद्रा कक्ष मे व्यवस्थित रखा गया है।

'रणवीर कक्ष' और 'सूरज-सुभद्रा कक्ष' इन दोनो कक्षो मे सुव्यवस्थित हस्तलिखित ग्रन्थो की सख्या लगभग ८५०० है। सम्पूर्ण सग्रह के हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थो की विवरणात्मक सूची १९७१ मे शिक्षा मंत्रालय के वित्तीय अनुदान से सम्मेलन द्वारा प्रकाशित हुई थी। उसमे हिन्दी के १८२ ग्रन्थों का विविरण प्रस्तुत किया गया था।

सम्मेलन के हिन्दी सग्रहालय को निरतर ग्रन्थ-दाताओ का सहयोग प्राप्त होता जा

---

१ हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थो की विवरणात्मक सूची स० पारसनाथ।

२ हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थो की विवरणात्मक सूची - स० पारसनाथ पृ०।

रहा है। विगत वर्षो मे दतिया (मध्य प्रदेश) के श्री बृजकिशोर शर्मा, श्रीराम शर्मा, श्री श्यामा चरण खरे, श्री मुन्नालाल पटसारिया, श्री केशव किशोर तिवारी, श्री जगदीश शरण बिलगइयॉ, श्री बाबू लाल गोस्वामी, प्रसिद्ध साहित्यकार श्री उदयशकर भट्ट, श्री अटल बिहारी श्रीवास्तव, श्री सोमकान्त त्रिपाठी, डॉ० नवल बिहारी मिश्र तथा माताम्बर द्विवेदी आदि महानुभावो के सहयोग से प्राप्त हस्तलिखित ग्रन्थो की सूची प्रकाशित की गयी जिसमे ७८३ ग्रन्थो का विवरण सकलित किया गया।

आख्यानक काव्य -

१- उत्तराध्ययन स्तवक - १८५० ई० सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर

२- ऊषा अनिरुद्ध चरित्र - १६४४ ई० १८४० ई० श्री बलबीर सिह, दतिया

३- गुणावली १६३६ ई०

४- पद्मावत की कथा - डॉ० नवल बिहारी मिश्र, सीतापुर

५- पूर्गाल पिगल राउ - श्री सूरज राज धारी लाल, ग्वालियर

६- मधुमालती - डॉ० माता प्रसाद गुप्त, हिदी गद्य

७- मानयुग चौपाई - अज्ञात हिन्दी राजस्थानी

आयुर्वेद -

८- अज्ञात - डॉ० नवल बिहारी मिश्र, सीतापुर (अवधी)

९- अज्ञात - प्राकृत अपभ्रश सूरज राज धारीवाल, ग्वालियर

१०- अज्ञात हिदी अवधी श्यमाचरण खरे, दतियॉ

११- अज्ञात हिन्दी ब्रज - डॉ० नवल बिहारी मिश्र, सीतापुर

१२- अज्ञात हिन्दी अपभ्रश (गद्य) नागरी भाण्ड पत्र

१३- अश्व चिकित्सा हिन्दी अवधी - पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल, प्रयाग

१४- अश्व चिकित्सा हिन्दी अवधी - डॉ० नवल बिहारी मिश्र, सीतापुर

१५- औषध १८२३ ई० हिन्दी - सूरज राज धारीवाल, ग्वालियर

१६- औषध कव्य हिन्दी राजस्थानी, मुजफ्फरनगर

१७- औषधि शास्त्र - बुन्देली हरिदास, मुखियानौरा झॉसी

१८- चिकित्सा मजरी हिन्दी अवधी - डॉ० नवल बिहारी मिश्र, सीतापुर

१९- जहर दिनाडी कौ उपचार १८१४ ई० हिन्दी अवधी - श्यामाचरण खरे, दतिया

२०- दिल्लग्न चिकित्सा १७७४ ई० जियालाल १८८१ ई० - डॉ० नवल बिहारी मिश्र, सीतापुर

२२- नाडी परीक्षा हिन्दी ब्रज - डॉ० नवल बिहारी मिश्र, सीतापुर

२३- नारी परीक्षा हिन्दी ब्रज - डॉ० नवल बिहारी मिश्र, सीतापुर

२४- पूतना विधान १७३४ हिन्दी श्यामाचरण खरे, दतिया

२५- फिरग उपाय हिन्दी राजस्थानी सूरजराज धारीवाल, ग्वालियर

२६- भाषा वैघरत्न १८३९ ई० जनाप्रसाद हिन्दी गद्य सूरज राजधारीवाल, ग्वालियर

२७- योग चिन्तामणि हिन्दी गद्य सूरज राज धारीवाल, ग्वालियर

२८- रामाविनोद १७१९ ई० हिन्दीराज सूरज राजधारीवाल, ग्वालियर

२९- बंग बनाने की विधि हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र, सीतापुर

३०- वैधक हिन्दी राजस्थानी अज्ञात नागरी माण्डपत्र

३१- वैधक हिन्दी डॉ० नवल बिहारी मिश्र, सीतापुर

३२- वैद्यमनोत्सव हिन्दी नागरी माण्डपत्र

३३- वैद्यरत्न १६९२ ई० हीरालाल कायस्थ १८५४ ई० हिन्दी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

३४- वैद्यरत्न हिन्दी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र

३५- वैद्यरत्नसार केदारनाथ १८३३ ई० हिन्दी डॉ० नवल बिहारी मिश्र

३६- वैद्य विलास हिन्दी नागरी माण्डपत्र डॉ० नवल बिहारी मिश्र

३७- वैद्य विलास हिन्दी नागरी माण्डपत्र डॉ० नवल बिहारी मिश्र

३८- शालिहोत्र १७४३ स० हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र

३९- सालहोत्र कासीराई हिन्दी डॉ० नवल बिहारी मिश्र

कामशास्त्र

४०- लोकशास्त्र हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४१- कोकसार सेवाराम १७५८ ई० हिन्दी नागरी माण्डपत्र

४२- कोकसार तुलाराम पाण्डेय १८८० ई० हिन्दी ब्रज माण्डपत्र

४३- कोकसार ११२६ ई० हिन्दी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४४- कोकसार हिन्दी अवधी नागरी भाण्डपत्र डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

काव्य शास्त्र

४५- अमर चन्द्रिका १८९२ ई० हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४६- अलकार चद्रोदय हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४७- अलकार चद्रोदय हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४८- अलकार चिन्तामणि प्रताप साहित्य हिन्दी ब्रज कन्हैया लाल सिरोहिया चरखारी हमीरपुर

४९- अलकार प्रदीप ११-३-२६ हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर भोगीलाल लिपिकार जिसका काल १८०० ई० है

५०- अलकार माला हिन्दी राजस्थानी सुरजराज धारीवाल ग्वालियर

५१- अलंकार रत्नाकर १७३४ ई० मुगलकिशोर मिश्र १८८२ ई० हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५२- कण्ठाभरण १८८८ ई० हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५३- कविप्रिया सटीक लाला चित्र सिह १७९९ ई० हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५४- कविप्रिया हिन्दी ब्रज मिश्रित बुन्देली डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५५- कविप्रिया १६०१ ई० भवानी प्रसाद मिश्र १७९३ ई० हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५६- कविप्रिया १६०१ ई० विप्रगणेवा १८५१ ई० हिन्दी ग्रंथ डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५७- कवि प्रिया सरीक बलीभद्र चन्द्रिका शिव दीन मिश्र १८६६ ई० डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५८- काव्य कलानिधि हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५९- काव्य विनोद हिन्दी ब्रज कन्हैया लाल सिरोहिया चरखारी हमीरपुर

६०- काव्य विलास हिन्दी ब्रज कन्हैया लाल सिरोहिया चरखारी हमीरपुर

६१- काव्य रसायन १८१० ई० हिन्दी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६२- काव्य सुधाकर १७२० ई० राम सहाय तिवारी हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६३- गगाभरण १८८२ ई० से १८८२ ई० हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६४- गगाभूषण १८७८ हिन्दी ब्रज नागरी माण्डपत्र

६५ - गुलाल चन्द्रिका १७६३ ई० हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६६- पद्याभरण प्रोहित अम्बर प्रसाद १८८८ ई० हिन्दी ब्रज केशव किशोर तिवारी दतिया

६७- फाजिल अली प्रकाश १६७६ ई० १८३८ हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६८- फाजिल अली प्रकाश छेदाराई बन्दीजन १८०६ ई० हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६९- फाजिल अली प्रकाश १६८० ई० हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

७०- भावविलास हिन्दी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

७१- भाषा भरण वैद्यनाथ पण्डित मुदर्रिस १८७८ हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

७२- भाषा भरण १७६८ ई० बलदेव मिश्र १८७९ ई० हिन्दी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

७३- भाषा भरण १८९२ ई० हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

७४- भाषा भूषण १८५९ ई० हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

७५ - भाषा भूषण हिन्दी ब्रज नागरी बलधीर सिह दतिया म०प्र०

७६- भाषा भूषण (तिलक) १८७२ हिन्दी ब्रज नागरी कन्हैया लाल चरखारी हमीरपुर

७७- भाषा भूषण महाराज कुँवर दिल्ली पतिजू १९३६ ई० हिन्दी नारी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

७८- भाषा भूषण प० गगा दीन १८३७ ई० हिन्दी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

७९- रसपीयूष निधि बलदेव मिश्र १८९० ई० हिन्दी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

८०- रस रहस्य भाषा काव्य हिन्दी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

८१- रसराज तिलक १६५० ई० प्रताप साहितत्य १८३९ हिन्दी नागरी कन्हैयालाल सिरोहिया चखारी हमीरपुर

८२- ललितललाम हिन्दी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

८३- ललित ललाम बृजलाल दीक्षित १७५५ ई० हिन्दी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

८४- ललित ललाम १८३९ हिन्दी नागरी दतिया

८५ - वषत विकास हिन्दी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

८६- व्यग्यार्थ महाराज कुंवर दिल्ली पति जूदेव १९३६ हिन्दी नागरी कन्हैया लाल चरखारी हमीरपुर

८७- व्यग्यार्थ कौमुदी बलदेव मिश्र १८७९ ई० हिन्दी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

८८- शब्द रसायन हिन्दी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

८९- शब्द विभूषन गिरा विभूषण हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

९०- शिवराज भूषण हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

९१- श्री मुनीश्वरभूषण १९२१ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

कृष्ण काव्य

९२- अजात हिन्दी राजस्थानी कैथी कोटा राजस्थान

९३- अज्ञात हिन्दी राजस्थानी नागरी अपूर्ण मुजफ्फरनगर

९४- इन्द्रभान के पद हिन्दी ब्रज नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

९५- उद्योग पर्व भाषानुवाद महाभारत गगा सिह १७६२ ई० हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

९६- उद्योग पर्व भाषानुवाद १८४४ ई० हिन्दी अवधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

९७- उषाहरण हिन्दी राजस्थानी नागरी कैथी मुजफ्फरनगर

९८- कस वध हिन्दी ब्रज मिश्रित अवधी नागरी श्री अटल बिहारी श्रीवास्तव दतिया

९९- कृष्ण अर्जुन सवाद हिन्दी ब्रजगद्य श्री बलवीर सिह दतिया म०प्र०

१००- कपरा चेतावनी लाल बख्त सिह १८३२ हिन्दी ब्रज दतिया

१०१- करुणा पचीसी शकर प्रसाद १८७९ हिन्दी ब्रज श्री ब्रज किशोर शर्मा भरतगढ दतिया म०प्र०

१०२- कपित्त सग्रह हिन्दी ब्रज नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म० प्र०

१०३- कृष्ण सैर हिन्दी नागरी श्री जगदीश शरण बिलगडया मधुप पट्टापु दतिया

१०४- गिराज (गिरिराज) चरित्र १८३६ ई० हिन्दी नागरी आज्ञात

१०५- गीता कथा अनुवाद १९३५ हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

१०६- गीता भाषा अनुवाद हिन्दी ब्रज नागरी श्री केशवकिशोर तिवारी दतिया

१०७- गोपी विरह लीला हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

१०८- गोविन्द विवाहोत्सव १९५८ ई० हिन्दी ब्रज नागरी अज्ञात

१०९- झूमका हिन्दी ब्रज नागरी माण्डपत्र डा० राजेन्द्र कुमार मिश्र नौटा झॉसी

११०- दशम स्कन्ध पद संग्रह हिन्दी ब्रज नागरी अपूर्ण

१११- नाग लीला १६५८ ई० माणिक्य चन्द्र १६३६ ई० हिन्दी ब्रज

११२- नाम माला हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर म० प्र०

११३- नित्य बिहारी जुगल ध्यान हिन्दी ब्रज नागरी श्री अटल बिहारी श्रीवास्तव दतिया म० प्र०

११४- पद हिन्दी ब्रज नागरी कोटा राजस्थान

११५- पद हिन्दी ब्रज नागरी कोटा राजस्थान

११६- पद हिन्दी राजस्थानी नागरी भुजफ्फरनगर

११७- पद सग्रह हिन्दी ब्रज नागरी अपूर्ण श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म० प्र०

११८- पद सग्रह हिन्दी ब्रज श्री अटल बिहारी श्रीवास्तव दतिया

११९- पद सग्रह हिन्दी ब्रज नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

१२०- पद सग्रह हिन्दी ब्रज नागरी श्री श्यामाचरण खरे दतिया म० प्र०

१२१- पद सग्रह हिन्दी ब्रज नागरी श्री बलवीर सिह दतिया म०प्र०

१२२- प्रतीति परीक्षा हिन्दी ब्रज नागरी श्री बलवीर सिह दतिया म०प्र०

१२३- प्रेम परीक्षा हिन्दी ब्रज नागरी बलवीर सिह दतिया म० प्र०

१२४- प्रेम सागर भाषा १७७० ई० हिन्दी ब्रज नागरी अज्ञात

१२५- बारामासी हिन्दी ब्रज नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

१२६- बारामासी हिदी ब्रज नागरी श्री मुन्नालाल परसरिया दतिया म०प्र०

१२७- विट्ठल विपुल जी की बानी श्री राजेन्द्र कुमार मिश्र नौटा झॉसी उ०प्र०

१२८- विट्ठल विपुल जी की बाती हिन्दी ब्रज नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

१२९- भगवढ गीता हिन्दी पद्यानुवाद १७९१ ई० हिन्दी ब्रज आज्ञात

१३०- भागवत हिन्दी अवधी नागरी अज्ञात

१३१- भागवत एकादश स्कन्ध की टीका १६३५ गुमानी राम १८२६ ई० हिन्दी अवधी डॉ० माताम्बर द्विवेदी श्री निवासधाम मिर्जापुर उ० प्र०

१३२- भागवत दशम स्कन्ध प्रधान छोटे लाल हिन्दी ब्रज गद्य - हरदयाल सक्सेना मु०पो० बरहा जिला भिण्ड म०प्र०

१३३- भागवत पचम स्कन्ध प्रधान आनन्द सिह कुडरा १८३६ ई० हिन्दी बृरज श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

१३४- भागवत भाषाअनुवाद हिन्दी ब्रज गद्य श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

१३५- भील्मपर्व भाषाअनुवाद महाभारत १८४१ हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

१३६- भ्रमर गीत हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

१३७- भ्रमरगीत भॅवर गीता हिन्दी ब्रज नागरी श्री सूरज राजधारीवाल ग्वालियर

१३८- मथुरा वर्णन अनुवाद हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

१३९- महाभारत उद्योग पर्व कमलाराम मिश्र १८३६ ई० हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

१४०- महाभारत कर्ण पर्व १६७७ ई० भवन त्रिवेदी १८५३ ई० हिन्दी अवधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

१४१- महाभारत गदापर्व गजराज १८८१ हिन्दी अवधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

१४२- महाभारत गदापर्व १८५२ हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

१४३- महाभारत भवन त्रिवेदी १८५३ ई० हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

१४४- महाभारत द्रोणपर्व भवन त्रिवेदी १८५३ ई० हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

१४५- महाभारत नीलकाण्ड अश्वमेघ माहात्म्य १८५९ ई० हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

१४६- मोहन विलास हिन्दी ब्रज नागरी श्री राम वर्मा दतिया

१४७- महाभारत विराट पर्व कमला राम मिश्र १८३७ ई० अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

१४८- महाभारत शल्यपर्व गजराज १८८१ ई० हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

१४९- रसखान के कवित्त हिन्दी ब्रज नागरी श्री सूरज राज धारीवाल ग्वालियर

१५०- राधाकृष्ण बिहार चौदही हिन्दी नागरी श्री मुन्नालाल परसरिया दतिया

१५१- लाल जी की बधाई हिन्दी ब्रज नागरी श्री अटल बिहारी श्रीवास्तव दतिया म०प्र०

१५२- विनय मजरी मूलचन्द्र १९८० ई० हिन्दी ब्रज श्री राम वर्मा दतिया

१५३- विराट पर्व भाषानुवाद हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

१५४- वृन्दावन महिमा हिन्दी ब्रजनागरी श्री श्यामा चरम खरे दतिया

१५५- वृन्दावन शत लाला जगन्नाथ १८७० ई० हिन्दी ब्रज श्री राम वर्मा दतिया म०प्र०

१५६- ब्रज विलास भवन त्रिवेदी १८६० ई० हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

१५७- व्यास जी के दोहा हिन्दी ब्रज श्री श्यामा चरण खरे दतिया

१५८- व्यास जी के बानी के पद हिन्दी ब्रज श्री अटल बिहारी श्रीवास्तव दतिया

१५९- श्यामा श्याम बिहार काशी राम सौधी १८२१ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

१६०- श्री कृष्णा हिन्दी ब्रज नागरी श्री श्यामाचरण खरे दतिया

१६१- श्री मद्भागवत जन्म काण्ड बखतावर मिश्र १७८७ ई० हिन्दी अवधी नागरी

१६२- श्री मद्भागवत दशम स्कन्ध हिन्दी ब्रज श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

१६३- श्री मद्भागवत पारायण काण्ड हिन्दी अवधी नागरी

१६४- श्री राधाकृष्ण जू की सगारथ लीला हिन्दी ब्रज श्री राम वर्मा दतिया म०प्र०

१६५- श्री हरिनाम सुधा निधि रस विलास हिन्दी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

१६६- सनेह सागर हिन्दी ब्रज नागरी श्री ब्रज किशोर शर्मा भरतगढ दतिया म०प्र०

१६७- सभापर्व हिन्दी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

१६८- सभा पर्व अनुवाद हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

१६९- सिद्धान्त के पद हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० राजेन्द्र कुमार मिश्र नौटा झॉसी

१७०- सुतमा चरित्र हिन्दी नागरी मुजफ्फरनगर

१७१- सूर के पद दशम स्कन्ध हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

१७२- सूरमजरी हिन्दी ब्रज नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

१७३- सूरमंजरी लालाराम प्रसाद वैद १८७५ ई० हिन्दी ब्रज नागरी श्री अटल बिहारी श्रीवास्तव

१७४- सूरसागर गुलाब १८५३ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

१७५- स्नेह सागर हिन्दी ब्रज नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

१७६- स्फुट कवित्त हिनदी ब्रज नागरी मुजफ्फरनगर

१७७- स्फुट पद हिन्दी ब्रज नागरी कोटा राजस्थान

१७८- स्फुट पद हिन्दी ब्रजनागरी श्री श्यामाचरण खरे दतिया

१७९- स्फुट पद हिन्दी ब्रजनागरी श्री श्यामाचरण खरे दतिया म०प्र०

१८०- स्फुट पद संग्रह हिन्दी राजस्थानी कैथी महाजनी कोटा राजस्थान

१८१- स्फुट पद सूरदास १८४६ ई० हिन्दी ब्रज नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

१८२- स्वाध्याय हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरज राजधारी बाल ग्वालियर

१८३- हरिदास की बानी हिन्दी ब्रज श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

१८४- हरिदास जी के पद हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० राजेन्द्र कुमार मिश्र नौटा झॉसी

कोश

१८५- अनेकार्थ १८८० ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

१८६- अनेकार्थ ठाकुर विभूति सिह १८५४ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

१८७- अनेकार्थ मजरी १७८५ ई० हिन्दी ब्रज नागरी श्री श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

१८८- अनेकार्थ मजरी गगासिह १८५९ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

१८९- अनेकार्थ मजरी १८३५ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

१९०- उमराउ कोश बलदेव मिश्र १८९० ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

१९१- नाम माला सीताब सिह पवार १८३० ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

१९२- नाम माला शिवराम १८२८ ई० हिन्दी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

१९३- नाम माला कोश कालिका १८५४ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

चरित काव्य

१९४- अज्ञात हिन्दी गद्य नागरी श्री सुराजराज धारीवाल ग्वालियर

१९५- छत्रसाल गौरवगाथा हिन्दी खड़ीबोली नागरी श्री अटल बिहारी श्रीवास्तव अधुनिक प्रेस दतिया

१९६- जसवंत विलास हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

१९७- ज्ञानेश्वर चरित आर्या- हिन्दी गुजराती नागरी श्री सूरजराजधारीवाल ग्वालियर

१९८- दिग्विजय प्रकाश १८९१ ई० हिन्दी अवधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

१९९- पृथ्वीराज राइसो (रासो) १०९४ ई० माल हरी सिह कायस्थ १८१६ ई० हिन्दी राजस्थानी नागरी दतिया

२००- श्रृग रोहनी पाण्डव चरित हिन्दी ब्रज नागरी ब्रज किशोर शर्मा भरतगढ दतिया

२०१- सुदामा चारित शकर प्रसाद १८७९ ई० हिन्दी उर्दू ब्रज नागरी ब्रजकिशोर शर्मा भरतगढ दतिया

७· - शास्त्र

२०२- उमरा उपिगल हिन्दी व्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

२०३- गण विचार हिन्दी ब्रज नागरी अपूर्ण कीट देशित डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

२०४- चिन्तामणि पिगल १९०४ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

२०५ - छन्द छप्पयनी हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

२०६- पिगल १८०२ ई० काशीनाथ मिश्र १८५९ हिन्दी ब्रजनागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

२०७- पिगल हिन्दी ब्रजनागरी मुजफ्फरनगर

२०८- पिगल प० गगादीन १८३६ ई० हिन्दी ब्रजनागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

२०९- पिगल ग्रन्थ माला वृत्त प्रबन्ध शकर पाठक १८७२ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

२१०- पिगल मात्रावृत्त प्रबन्ध हिन्दी ब्रजनागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

२११- पिगल शास्त्र १७५७ ई० प्राकृत नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

२१२- वृत्त तरगिणी १८१३ ई० हीरा लाल पाठक १८४३ ई० हिन्दी ब्रज नागरी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

जैन धर्म

२१३- अज्ञात हित शिक्षा हिन्दी राजस्थानी अपभ्रंश नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२१४- अज्ञात हिन्दी अप्रभश राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२१५- अज्ञात केहर सिह १७३५ ई० हिन्दी अप्रभ्रश नागरी

२१६- अज्ञात हिन्दी राजस्थानी नागरी

२१७- अठ्ठारह ढाल १६९८ ई० हिन्दी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२१८- अष्टपदी गीतम् हिन्दी राजस्थानी नागरी अज्ञात

२१९- अतीचार हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२२०- अतीचार श्रावक हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२२१- आत्मा परिस्वाध्याय हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२२२- उपदेश माला प्रकरण हिन्दी राजस्थानी प्राकृत नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२२३- एको भाव भाषा हिन्दी ब्रज नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२२४- कर्मकाण्ड भाषा हिन्दी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२२५- कल्पवसान बोध हिन्दी राजस्थानी नागरी सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२२६- कल्प सूत्र हिन्दी राजस्थानी नागरी

२२७- कल्याणमन्दिर भाषा कुमद चन्द हिन्दी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२२८- कामधेनु वाडर वाई हिन्दी राजस्थानी नगरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२२९- काय स्थिति की तिर्गणि १४८२ ई० हिन्दी राजस्थानी नगरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२३०- कुशीलरासख्यात गुणानिपगरी थोकडो हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२३१- गुरु परम्परा पदावली ढाल वध मास हिन्दी राजस्थानी नगरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२३२- गुरु पूजा हिन्दी राजस्थानी नागरी मुजफ्फरनगर

२३३- गुरुवर्णन हिन्दी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२३४- हिन्दी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२३५- गौतम पृच्छा बाला बली शिवसुन्दरराम १५३१ ई० हिन्दी राजस्थानी नगरी श्री सूरज राज धारीवाल ग्वालियर

२३६- व्याख्यान पर्वण व्यलाक हीसु १८८८ ई० हिन्दी प्राकृत राजस्थानी नागरी सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२३७- चतुविशति जिनस्तवन्म हिन्दी अपभ्रश राजस्थानी नागरी सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२३७- चतुर्मासी व्याख्यान पर्वम व्यलाक हीसु १८८८ ई० हिन्दी प्राकृत राजस्थानी नगरी

२३८- चिन्ता निर्गुणन १५९२ ई० हिन्दी राजस्थानी नगरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२३९- चेतन कर्म चरित्र भाषा १६७३ ई० ऋृषि विजय वदेन हिन्दी ब्रजपद्य नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२४०- चौढालियॉ हिन्दी राजस्थानी नगरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२४१- चौदह चवैद गुण स्वानक स्तवन हिन्दी राजस्थानी नगरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२४२- चौतीस अतिशयना नाम हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२४३- चौबीस जिनस्तवनम्र हिन्दी अपभ्रंश राजस्थानी नागरी

२४४- चौबीस जिनस्तवन हिन्दी राजस्थानी नागरी

२४५- चौबीस जिनेश्वर जी स्तवन हिन्दी राजस्थानी नागरी

२४६- चौबीस खण्डक १७९९ ई० हिन्दी प्राकृत नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२४७ - चौमासी देव वन्दन हिन्दी राजस्थानी नगरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२४८- चौरासी अक्षादन जवार १८५१ ई० हिन्दी ब्रज नागरी कोटा राजस्थान

२४९- चौससी आक्षातना स्तवन हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२५०- जिन पद हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२५१- जीव विचार १८१६ ई० हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२५२- जीवकाया १६३८ ई० हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२५३- जीव विचार प्रकरण हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२५४- जूसण सिझाय हिन्दी राजस्थानी नागरी मुजफ्फरनगर

२५५- जैन के कवित्त हिन्दी राजस्थानी नागरी मुजफ्फरनगर

२५६- जैन शतक १७३४ ई० भगुअनदास १८७० हिन्दी ब्रज नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२५७- तय· कल्प हिन्दी राजस्थानी गद्य नागरी

२५८- त्वर मरोनेच्मलमुये थोवडो हिन्दी राजस्थानी श्री शिवदत्त नागर बूँदी

२५९- दस क्षनिक पूजा हिन्दी राजस्थानी नागरी मुजफ्फरनगर

२६०- दसण सुद्धि पद्यास हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२६१- दान विषयक श्लोक कल्याण सुन्दर हिन्दी अपभ्रश राजस्थानी नगरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२६२- धर्मोपदेश हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२६३- नन्दीश्वर पूजा हिन्दी राजस्थानी नागरी मुजफ्फरनगर

२६४- नवतत्व हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२६५- नवतत्व विनायक सुन्दर १८२५ ई० हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२६६- नवतत्व प्रकरण हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२६९- नव तत्व राम नाम हिन्दी राजस्थानी नागरी

२६८- नेमिनाथ रास हिन्दी राजस्थानी नागरी

२६९- निर्वाण काण्ड हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२७०- पच कल्याण करो स्तवन हुकुम चन्द्र १८३८ ई० हिन्दी राजस्थानी नागरी

२७१- पठभरो थोवडो हिन्दी राजस्थानी नागरी शिवदन्त नागर राजस्थान

२७२- पद हिन्दी राजस्थानी नागरी अज्ञात

२७३- पद सग्रह हिन्दी राजस्थानी नागरी

२७४- पद सग्रह हिन्दी राजस्थानी नगरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२७५ - पद्म हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२७६- पद्म स्तवन हिन्दी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२७७- पॉच परित्राणि हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२७८- पार्श्वनाथ जिनस्तवनम् हिन्दी राजस्थानी नागरी

२७९- पार्श्वनाथ जिनस्तवन हिन्दी अपभ्रश नागरी

२८०- पूजा हिन्दी राजस्थानी नगरी मुजफ्फरनगर

२८१- बत्तीस दोष स्वाध्याय हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२८२- ब्रह्मव्रतो परिशीलनी कक्षा सूक्तावली हिन्दी अपभ्रश राजस्थानी नागरी श्री सूरज राज धारीवाल ग्वालियर

२८३- बन्धन तत्वभेद हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२८४- बीस तीर्थकर पूजा हिन्दी राजस्थानी नगरी मुजफ्फरनगर

२८५ - भक्ताभर भाषा हिन्दी ब्रज नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२८५ - भवस्थिति अनन्त कीर्तिगण १४८२ ई० हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२८७- भूपाल चौबीसी हरिवाच आनन्द हिन्दी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२८८- महावीर स्तवन हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२८९- माडला विधि हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२९०- मुक्ति जाणकी डीगरी हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२९१- मौन एकादशी देव वदन विधि हिन्दी राजस्थानी नागरी

२९२- रात्रीभोजन चौपाई हिन्दी अपभ्रश राजस्थानी काण्ड पत्र श्री सूरज राज धारीवाल ग्वालियर

२९३- रिषभदेव धवल बेध हिन्दी अपभ्रश राजस्थानी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२९४- रीषि मडल रामविजय १८४३ ई० हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२९५ - लघुसंग्रहणी मंत्र हिन्दी राजस्थानी नगरी श्री सूरज राज धारीवाल ग्वालियर

२९६- विषैपहार हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२९७- शांति हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२९८- शिक्षाय हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२९९- श्रावकरी करणी हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३००- श्रावकरी करणी हिन्दी राजस्थानी नागरी गद्य श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३०१- श्रावकरी करणी हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३०२- श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन १८३३ ई० हिन्दी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३०३- श्री पाल दरसन हिदी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३०४- श्री वर्द्धमान जी नी पारणों हिन्दी अप्रभ्रंश नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३०५ - श्री ऋृषभदेव फूल पड़रस्याख्याने हिन्दी राजस्थानी नागरी

३०६- श्री स्तवन हिन्दी राजस्थानी नागरी

३०७- षडसीतिक चतुर्थी कर्म हिन्दी अपभ्रश राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३०८- षदक का चौढालियो जयराम हिन्दी अपभ्रश नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३०९- सत्तरभेद पूजा विधि थान सिह १८४९ ई० हिन्दी राजस्थानी नागरी

३१०- सप्रदेशी अप्रदेशी रोथोवडो हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री शिवदत्त नागर बूँदी राजस्थान

३११- सम्बोध हिन्दी राजस्थानी अपभ्रश नागरी

३१२- सम्बोध सत्तरि हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३१३- सम्बोध सत्तरी राजस्थानी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३१४- सम्यक हिन्दी राजस्थानी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३१५- परीक्षा सन्तरी की वचनिका हिन्दी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३१६- सरस्वती पूजा हिन्दी राजस्थानी नागरी मुजफ्फरनगर

३१७- साधू गूँण विभाई हिन्दी राजस्थानी नागरी

३१८- सिद्धपूजा भणुवादास १८७१ ई० हिन्दी ब्रज नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३१९- सिद्ध पचाशिका काला बोध निहालपुर १८५० ई० हिन्दी राजस्थानी नागरी सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३२०- सीतल नाथ जी स्तवन - हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३२१- सीष भाण स्वाध्याय हिन्दी राजस्थानी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३२२- स्तवन हिन्दी अपभ्रश श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३२३- स्तवन हिन्दी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३२४- स्तवन हिन्दी ब्रज नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३२५ - स्तवन संग्रह १८१६ हिन्दी अपभ्रश नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३२६- स्तवन श्री सकलित समसद्विवोलस्वाध्या हिन्दी अपभ्रश नागरी सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३२७- स्फुट पद - हिन्दी नागरी सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३२८- स्फुट पद हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३२९- स्याद्रवाद मत हिन्दी प्राकृत नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३३०- स्याद्रवाद सूचक स्तवन हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

ज्योतिष

३३१-गति ग्रहकरण विधि हिन्दी राजस्थानी नागरी

३३२- ग्रह फल एवं लग्न विचार हिन्दी नागरी

३३३- ग्रहलाघ व सारिणी ग्रह स्पष्ट हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३३४- चिन्तामणि प्रश्न हिन्दी नागरी मुजफ्फनगर

३३५ - चौपहरा १८५३ हिन्दी नागरी श्री हर दयाल सक्सेना बरहा

३३६- चौबीस दण्डक विचार हिन्दी नागरी

३३७- जय सिह प्रकाश १८०४ ई० हिन्दी ब्रज नागरी श्री कन्हैया लाल सिरोहिण चरखारी हमीरपुर

३३८- ताजिक नीलकंठी भाषा हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३३९- ताजिक सार हिन्दी अपभ्रश नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३४०- द्वादश भाव विचार हिन्दी अपभ्रंश नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३४१- पारसी गुरा लाल बखत सिह १८३२ हिन्दी ब्रज नागरी दतिया

३४२- प्रश्नोत्तर हिन्दी ब्रज नागरी मुजफ्फरनगर

३४३- मगध ईरमल हिन्दी गद्य नागरी

३४४- रतन सागर १६६८ ई० हिन्दी ब्रज केशव किशोर तिवारी दतिया

३४५- रमल हिन्दी ब्रज नागरी

३४६- रमल हिन्दी ब्रज नागरी

३४७- रमल शास्त्र हिन्दी ब्रज नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३४८- रमलसार १८१७ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

३४९- राजयोग हिन्दी ब्रज नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

३५०- रामाज्ञा प्रश्न - हिन्दी अवधी नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

३५१- राशि विचार एव फलादेश - टीकाराम १९०८ ई० हिन्दी अवधी नागरी

३५२- विवाह पटलराआव दूषण भाषा सहित हिन्दी संस्कृत श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

२५३- विवाह सहारी विधि हिन्दी राजस्थानी गद्य नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३५४- शकुन विचार हिन्दी ब्रज नागरी श्री बाबूलाल गोस्वामी बिहारी जी का मन्दिर दतिया

२५५- श्रावकाचार भाषा टीका हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३५६- श्री सिरोदे स्वरोदय हिन्दी ब्रजनागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

३५७- सगुन वर्णन हिदी ब्रज मिश्रित अवधी नागरी श्री कन्हैया लाल सिरोहिया चरखारी हमीरपुर

३५८- सगुन विचार हिन्दी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

३५९- सगुन विचार हिन्दी नागरी श्यामा चरण दतिया म०प्र०

३६०- सगुन विचार हिन्दी ब्रज नागरी श्री मुन्नालाल वरसिया दतिया

३६१- सगुनावली हिन्दी अवधी नागरी श्री श्यामाचरण खरे दतिया

३६२- सम्वत्सरी हिन्दी नागरी श्री हरदयाल सक्सेना लहार भिण्ड

३६३- सामुद्रिक हिन्दी ब्रज नागरी

३६४- सूर्यग्रहण हिन्दी अपभ्रश नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

तन्त्र मन्त्र यन्त्र

३६५ - अज्ञात हिन्दी गद्य नागरी

३६६- गणपति आराधना हिन्दी अपभ्रश श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३६७- डाकिनी के जत्र १८८५ ई० हिन्दी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

३६८- विषहरण मत्र हिन्दी राजस्थानी नागरी

३६९- साबरतत्र हिन्दी ब्रज गद्य नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

दर्शन वेदान्त

३७०- आनन्दानुभव हिन्दी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३७१- उपनिषद् स्मृति टीका हिन्दी गद्य नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३७२- विचार षट् बिशका बीस १८४५ ई० प्राकृत नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

नीति एवं उपदेश

३७३-आर्याभारत हिन्दी मराठी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३७४- कवित्त हिन्दी ब्रज नागरी मुजफ्फरनगर

३७५ - कवित्त एवं कुण्डलिया १७३६ ई० हिन्दी ब्रज नागरी

३७६- कवित्त सग्रह हिन्दी ब्रज बलवीर सिह दतिया म०प्र०

३७७- कवित्त सग्रह हिन्दी ब्रज नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३७८- कुण्डलियॉ हर प्रसाद १८४५ ई० हिन्दी ब्रज नागरी श्रीराम वर्मा दतिया

३७९- गिरधरदास की कुण्डलिया हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

३८०- गिरधर की कुण्डलिया १८३६ ई० हिन्दी अवधी नागरी श्री बनवीर सिह दतिया म०प्र०

३८१- जमीदार चरित्र हिन्दी ब्रज नागरी श्री बलवीर सिह दतिया

३८२- ज्ञान माला १८५५ ई० हिन्दी ब्रज नागरी केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

३८३- नवरत्न के कवित्त हिन्दी अपभ्रश नागरी

३८४- ब्रह्मोत्तर खण्ड हिन्दी मराठी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३८५- भर्तृहरि शतक टीका प० हरिदेव १७५२ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

३८६- महाभारत ललितकाड हिन्दी अवधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

३८७- महाभारत दर्पण भाषा १८७६ ई० हिन्दी अवधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

३८८- मूर्ख शतक हिन्दी अपभ्रंश प्राकृत नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

३८९- रग बऊतरी हिन्दी अपभ्रंश नागरी

३९०- रहीम के दोहे पं० लाला माखन १७४४ ई० हिन्दी अवधी श्रीराम वर्मा दतिया म०प्र०

३९१- रहीम के दोहे हिन्दी अवधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

३९२- लघुचरनाइके हिन्दी ब्रज मिश्रित अवधी नागरी श्री मुन्नालाल परसरिया दतिया

३९३- वृक्ष चेताउनी १८२७ ई० हिन्दी नागरी डॉ० मुन्ना लाल परसरिया दतिया म०प्र०

३९४- सभानीत के दोहे हिन्दी ब्रज नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

३९५- सभा विलास प्रधान राम चन्द्र कुंडरा १८३५ ई० हिन्दी ब्रजनागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

३९६- सोरहो चरन नाइको हिन्दी ब्रज नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

३९७- स्फुट कवित्त हिन्दी ब्रज नागरी श्री श्यामाचरण खरे

३९८- स्फुट कवित्त दोहा हिन्दी ब्रज नागरी श्री राम वर्मा दतिया

भक्ति काव्य

३९९- अज्ञात हिन्दी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

४००- अज्ञात हिन्दी अवधी नागरी रायबरेली

४०१- अज्ञात-हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

४०२- अतरीदेव की कथा - हिन्दी अवधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४०३- अध्यात्म प्रकाश १६९८ ई० १८३७ ई० हिन्दी ब्रज नागरी श्री बलवीर सिह दतिया म०प्र०

४०४- अनित्य निश्चयात्मक हिन्दी ब्रज नागरी श्री अटल बिहारी श्रीवास्तव दतिया

४०५ - अभग पद हिन्दी अवधी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

४०६- अमरलोकलीला १८७१ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४०७- अम्बानन्द विलास १८८१ ई० हिन्दी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४०८- आदितवार व्रत कथा - हिन्दी राजस्थानी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

४०९- उपदेश बत्तीसी हिन्दी ब्रज मिश्रित राजस्थानी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४१०- उषाचरित्र हिन्दी ब्रज नागरी अवधी नागरी श्री बाबूलाल गोस्वामी बिहारी जी का मंदिर दतिया म०प्र०

४११- करम हिडोल्पा हिन्दी ब्रज नागरी कोटा राजस्थान

४१२- कवित्त अष्टक १८८० ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४१३- कवित्त महादेव - हिन्दी ब्रज नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

४१४- कवित्त संग्रह हिन्दी ब्रज मिश्रित अवधी नागरी श्री जगदीश शरण मधुन बिलगइयॉ दतिया

४१५ - कुण्डलिया हिन्दी नागरी श्री बलवीर सिह जी दतिया

४१६- गंगा लहरी बैजनाथ १८७५ ई० हिन्दी ब्रज नागरी श्री ब्रज किशोर शर्मा भारतगढ़ दतिया

४१७- गंगा स्तुति हिन्दी अवधी नागरी श्री जगदीश शरण बिलगइयॉ पट्टापुरा दतिया

४१८- गणेश की पोथी - हिन्दी नागरी श्री हरिदास मुखिया ग्राम पो० नौटा झॉसी

४१९- गणेश पुराण हिन्दी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४२०- गणेश पूजन विधि हिन्दी ब्रज नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

४२१- गुण हरिरस हिन्दी अपभ्रश नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

४२२- गुरुन्याय ज्ञान दीपिका - रिषिनाथ हिन्दी अवधी नागरी श्री जगदीश प्रसाद देवरिया

४२३- गुरु महिमा हिन्दी ब्रज नागरी श्री ब्रज किशोर शर्मा भरतगढ दतिया

४२४- गीता हिन्दी अवधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४२५- चरन दास हिन्दी ब्रज नागरी श्री श्यामाचरम खरे दतिया

४२६- चिन्तावरणी हिन्दी ब्रज मिश्रित अवधी नागरी श्री ब्रजकिशोर शर्मा भरतगढ दतिया

४२७- चिन्तावरणी हिन्दी राजस्थानी नागरी

४२८- चौपही १८३७ ई० हिन्दी अवधी नागरी श्री बलवीर सिंह दतिया म०प्र०

४२९- छन्द सग्रह हिन्दी अवधी नागरी श्री जगदीश शरण बिल गइयां दतियॉ म०प्र०

४३०- जैमिनि पुराण १८२३ ई० झाऊराम मिश्र १८३८ ई० हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४३१- तैतीस अक्षरी १९१५ ई० हिन्दी ब्रज नागरी श्री मुन्नालाल पटसारिया दतिया म०प्र०

४३२- दशावतार रिषिनाथ हिन्दी अवधी नागरी

४३३- दोहा एवं पद हिन्दी ब्रज नागरी श्री अटल बिहारी श्रीवास्तव आधुनिक प्रेस दतिया म०प्र०

४३४- नाममहातम हिन्दी नागरी श्री हरदयाल सक्सेना मु०+ पो० बरहा जिला भिण्ड म०प्र०

४३५- निरधार के दोहे १८१० ई० हिन्दी ब्रज श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

४३६- निर्विहन मनरंजन हिन्दी ब्रज श्री अटल बिहारी श्रीवास्तव दतिया

४३७- पच को सार हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४३८- पचीकर्ण श्री रामदास स्वामी समर्थ १८२९ ई० श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

४३९- पद सग्रह हिन्दी नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

४४०- प्रभाती श्री ठाकुराइन साहिब १८९५ ई० हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४४१- प्रहलाद चरित्र कुन्दन पाठक १८२७ ई० हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४४२- प्रहलाद चरित्र बेनी शुक्ल १८५८ ई० हिन्दी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४४३- बाईसी १८३७ ई० हिन्दी डॉ० बलबीर सिह दतिया म०प्र०

४४४- भक्त माल टीका १७११ ई० हिन्दी ब्रज पद्य श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

४४५- भक्त माल टीका १८६९ ई० हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४४६- भक्ति हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४४७- भक्ति योग हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४४८- भगत विरदावली हिन्दी ब्रज नागरी श्री श्यामा चरण खरे दतिया

४४९- भगति विवेक १७४४ ई० हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४५०- भजन हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४५१- भवानी उत्तम चरित्र हिन्दी नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

४५२- भ्रमर गीत गुलाब पाठक १८५३ ई० हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४५३- भारती सरुप हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४५४- मंजे हिन्दी ब्रज श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

४५५- रामायण माहात्म्य १८८२ ई० हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४५६- बन्दी मोचन बाल गोविन्द १८९५ ई० डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४५७- विज्ञान गीता हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४५८- विज्ञान गीता १८०२ ई० हिन्दी ब्रज मिश्रित बुन्देली डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४५९- विनय माल १८८० ई० हिन्दी ब्रज श्री ब्रजकिशोर शर्मा भरतगढ दतिया

४६०- वियोग शतक हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४६१- विरह अंग वर्णन शतक १८३८ ई० हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४६२- विवेक तरंग १८३७ ई० हिन्दी श्री बलवीर सिह दतिया म०प्र०

४६३- विवेक शतक हिन्दी ब्रज नागरी श्री बलवीर सिह दतिया म०प्र०

४६४- विशापहार हिन्दी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

४६५ - वैराग्य शतक १९२६ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४६६- शब्द सागरबानी राम अधीन १९०१ ई० हिन्दी अवधी नागरी श्रीमती रानी टण्डन एव श्री सन्त प्रसाद टण्डन इलाहाबाद

४६७- शिव माहात्म्य हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरज राज धारीवाल ग्वालियर

४६८- शिव स्तुति हिन्दी ब्रज नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

४६९- श्री सत्यनारायण कथा हिन्दी राजस्थानी नागरी अज्ञात

४७०- सतसई १७९४ ई० १८२३ ई० हिन्दी ब्रज गद्य नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

४७१- सत्य नारायण कथा संस्कृत नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

४७२- सनेह लीला १८२६ ई० हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४७३- सप्त भूमिका हिन्दी ब्रज नागरी

४७४- स्फुट छन्द हिन्दी नागरी अस्पष्ट भेंट मुजफ्फरनगर

४७५ - स्फुट पद १८५१ हिन्दी ब्रज नागरी भेट स्वरूप कोटा राजस्थान

४७६- चर्चरी स्फुट पद हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४७७- स्फुट भजन गुलाब पाठक १८६९ ई० हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४७८- सारगीता हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४७९- सावित्री कथा गौरी शकर मिश्र १८६५ ई० हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४८०- सुखसनाथ हिन्दी अवधी नागरी रायबरेली

४८१- सुखसागर, भाषाबानी रामअधीन १९०० ई० हिन्दी अवधी नागरी श्रीमती रानी टन्डन एवं श्री सन्त प्रसाद टण्डन इलाहाबाद

४८२- सुक्त संग्रह १७८५ ई० हिन्दी ब्रज नागरी अज्ञात

४८३- सूर्य पुराण अनुवाद १८८० ई० हिन्दी अवधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४८४- हनुमान बाहुक हिन्दी ब्रज मिश्रित अवधी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

राम काव्य

४८५- अध्यात्म रामायण भाषा मोती राम १७५३ ई० रास्थानी गद्य श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

४८६- अन्तर्दशन राव उदय शकर भट्ट १९५७ ई० हिन्दी पद्य श्री उदय शंकर भट्ट

४८७- अवध विलास १९०७ ई० हिन्दी अवदी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४८८- उपासना शतक १८३८ ई० हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४८९- कवित्त रामायन छेदाराइ बन्दीजन १८३३ ई० हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४९०- कवित्त रामायन के १७३६ ई० हिन्दी ब्रज नागरी

४९१- कवितावली १७३७ ई० १८३६ ई० हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४९२- गीतावली हिन्दी अवधी नागरी

४९३- गीतावली हिन्दी ब्रज नागरी श्री ब्रज किशोर शर्मा भारतगढ दतिया

४९४- चिन्प्राण हिन्दी ब्रजमिश्रित अवधी नागरी श्री ब्रज किशोर शर्मा भारतगढ दतिया

४९५- दोहावली ठाकुर प्रसाद शुक्ल १९०५ ई० नागरी हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४९६- दोहावली हिन्दी अवधी नागरी

४९७- दोहावली १८३० ई० हिन्दी अवधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४९८- दोहावली हिन्दी अवधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

४९९- दोहावली रामायण १८६६ ई० हिन्दी अवधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५००- नृत्य राघव मिलन १७४७ ई० राम सुख हिन्दी ब्रज पद्य श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

५०१- पद्य संग्रह हिन्दी ब्रज नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

५०२- पदावली रामायण हिन्दी अवधी नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

५०३- पदावली रामायण हिन्दी ब्रज मिश्रित अवधी नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

५०४- बरवै रामायण सीता १८४३ ई० हिन्दी अवधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५०५- बारामासी हिन्दी ब्रज मिश्रित अवधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५०६- बारामासी गोकुल प्रसाद १८५९ ई० हिन्दी अवधी नागरी श्री ब्रज किशोर शर्मा भारतगढ़ दतिया

५०७- भजन पदावली हिन्दी अवधी नागरी श्री हरिदास मुखिया नौटा झॉसी

५०८- भरथ की बारामासी हिन्दी ब्रज नागरी श्री जगदीश शरम बिलगइयॉ मधुप पट्ठापुर दतिया

५०९- भगनमस्त की बारामासी हिन्दी ब्रजनागरी जगदीश शरण बिलगइयां

५१०- राम अनुग्रह १८१६ ई० प्रधान रघुनाथ सिह १८४० ई० हिन्दी ब्रज श्री भरतकिशोर शर्मा भारतगढ

५११- राम गीतावली १८१२ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५१२- राम चन्द्रिका १८३५ ई० हिन्दी अवधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५१३- राम चन्द्रिका कुशाल दुबे १८०० ई० हिन्दी ब्रज मिश्रित बुन्देली नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५१४- राम चन्द्रिका १८६१ ई० हिन्दी ब्रज मिश्रित बुन्देली श्री ब्रज किशोर शर्मा भारतगढ दतिया

५१५- राम चन्द्रिका सेवक राम त्रिपाठी १७८७ ई० हिन्दी ब्रजनागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५१६- राम चन्द्रिका ठाकुर सिह १८३७ ई० हिन्दी ब्रज बुन्देली ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५१७- राम चन्द्रिका लवकुशाया १८३७ ई० इहन्दी बुन्देली ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५१८- राम चरित्र मानस मिट्‌ठूलाल प्रधान १८१५ ई० हिन्दी अवदी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

५१९- राम चरित्र मानस १५७४ ई० हिन्दी अवधी नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

५२०- रामचरित मानस अयोध्या काण्ड १५७४ हिन्दी अवधी अज्ञात

५२१- राम चरित मानस अयोध्या काण्ड शीतल ठढेर १८५० ई० हिन्दी अवधी अज्ञात

५२२- राम चरित मानस अयोध्याकाण्ड १५७४ ई० मे दयाराम तिवारी १७४३ ई० हिन्दी अवधी नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

५२३- राम चरित मानस अयोध्याकाण्ड १८२७ ई० हिन्दी अवधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५२४- रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड १७५८ ई० हिन्दी अवधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५२५- रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड बहावदासेन १५७४ हिन्दी वधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५२६- रामचरित मानस अरण्यकाण्ड वैष्णव दास १७८८ ई० हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५२७- रामचरित मानस अरण्य काण्ड १५७४ ई० हिन्दी अवधी नागरी अज्ञात

५२८- रामचरित मानस ख्यकाण्ड १५७४ ई० १८७८ ई० हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५२९- रामचरित मानस अरण्यकाड हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५३०- रामचरित मानस अख्यकाड हिन्दी अवधी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

५३१- रामचरित मानस अरण्य कांड १५७४ ई० हिन्दी अवधी नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

५३२- रामचरित मानस अरण्यकांड १८५७ ई० अवधी हिन्दी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५३३- रामचरित मानस अरण्यकाण्ड हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५३४- रामचरित मानस उत्तर कांड १५७४ ई० हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५३५- रामचरित मानस उत्तरकांड लेखनी मिश्र १८५८ ई० हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५३६- राम चरित मानस वैष्णव दास १७८८ ई० हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५३७- राम चरित मानस किष्किन्धाकाण्ड हिन्दी अवधी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया १८४८ ई० मुन्ना लाल परसरिया दतिया

५३८- रामचरित मानस किष्किन्धा काड हिन्दी अवधी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

५३९- रामचरित मानस किष्किन्धाकाण्ड हिन्दी अवधी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

५४०- रामचरित मानस किष्किन्धाकाण्ड हिन्दी अवधी श्री बलवीर सिह दतिया

५४१- रामचरित मानस किष्किन्धा काण्ड हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५४२- रामचरित मानस किष्किन्धा काण्ड हिन्दी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५४३- रामचरित मानस बालकाण्ड हिन्दी अवधी मुजफ्फरनगर

५४४- रामचरित मानस बाल काण्ड मुजफ्फरनगर

५४५- रामचरित मानस बाल काण्ड १५७४ ई० हिन्दी अवधी नागरी अज्ञात

५४६- रामचरित मानस बाल काण्ड १८६५ ई० हिन्दी अवधी नागरी

५४७- रामचरित मानस १५७४ ई० १८५१ ई० हिन्दी अवधी माताम्बर द्विवेदी श्री निवास धाम मिरजापुर

५४८- रामचरित मानस हिन्दी अवधी नागरी

५४९-रामचरित मानस बाल काण्ड १८३१ हिन्दी अवधी नागरी

५५०- राम चरित मानस बाल काण्ड १७८७ ई० हिन्दी अवधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५५१- रामचरित मानस बालकाण्ड १५७४ ई० छविनाथ पण्डित हिन्दी अवधी नगरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५५२- रामचरित मानस बालकांड हिन्दी ब्रज अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५५३- रामचरित मानस लका कांड हिन्दी अवधी नागरी

५५४- रामचरित मानस लका काड १८५८ ई० हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५५५- रामचरित मानस लका काड लाल द्वारिका १८४१ ई० हिन्दी अवधी नागरी हरदयाल सक्सेना मु०पो० बरहा भिण्ड

५५६- रामचरित मानस लका काड हिन्दी अवधी नागरी श्री बलवीर सिह दतिया म०प्र०

५५७- रामचरित मानस लका काड हिन्दी अवधी नागरी श्री हरिदास मुखिया झॉसी

५५८- रामचरित मानस लका काड वैष्णवदास १७८२ ई० हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५५९- रामचरित मानस लंका काड वाकल मगजराज चौहान १८७७ ई० हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५६०- रामचरित मानस लका काड हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५६१- रामचरित मानस सुन्दर काड लेखनी मिश्र १८५८ ई० हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५६२- रामचरित मानस सुन्दर कांड हिन्दी अवधी नागरी श्री ब्रज किशोर शर्मा भारतगढ दतिया म०प्र०

५६३- रामचरित मानस सुन्दर काड हिन्दी अवधी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

५६४- रामचरित मानस सुन्दर कांड रामजी उसहा १८३३ ई० हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५६५- रामचरित मानस सुन्दर काड १८७८ ई० हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५६६- रामचरित मानस १८३८ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५६७- राम नाम शतक १८३८ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५६८- राम सलाका हिन्दी अवधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५६९- राम सलाका १८८० ई० हिन्दी अवधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५७०- रामाश्वमेघ भाषानुवाद मधुसूदन दास १८३२ ई० हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५७१- रामाज्ञा प्रश्न १८६८ ई० हिन्दी अवधी श्री ब्रज किशोर शर्मा भारतगढ़ दतिया

५७२- विनय पत्रिका हिन्दी अवधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५७३- विनय पत्रिका हिन्दी अवधी नागरी श्री बलवीर सिह दतिया म०प्र०

५७४- विनय पत्रिका इन्दपूर्ण चौबे १८३४ ई० हिन्दी ब्रजभाषा नागरी श्री बलवीर सिह दतिया

५७५- विनय पत्रिका १८५३ ई० हिन्दी अवधी नागरी श्री बलवीर सिह दतिया

५७६- विनय पत्रिका की टीका हिन्दी ब्रज भाषा गद्य नागरी मुजफ्फरनगर

५७७- सिया सहचरी कालिका प्रसाद १८४८ ई० हिन्दी ब्रज श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

५७८- स्तुति संग्रह गंगा प्रसाद मिश्र १८८१ ई० हिन्दी अवधी नागरी श्री श्यामाचरण खरे दतिया

५७९- हनुमान कवच मोचन १८४९ ई० हिन्दी ब्रज मिश्रित अवधी नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

५८०- हनुमान चालीसा हिन्दी नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म० प्र०

५८१- हनुमान चालीसा १८८७ ई० हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५८२- हनुमान बाहुल हिन्दी अवधी नागरी श्री सूरज राज धारीवाल ग्वालियर

५८३- हनुमान बाहुल मेहरबान दुबे १८६१ ई० हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५८४- हनुमान विक्रम हिन्दी ब्रजनागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

विविध

५८५- अजात समुद्र मन्थन १६०२ ई० हिन्दी राजस्थानी नागरी अज्ञात

५८६- अहिंसा पच्चीसी १९१७ ई० हिन्दी देवनागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

५८७- गुरु प्रकाश १८४७ ई० हिन्दी ब्रज नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

५८८- ग्वाल पहेली हिन्दी ब्रज नागरी श्री बलवीर सिह दतिया

५८९- चतुर्दिशतिनाम प्राकृत नागरी श्री बलवीर सिह दिया, श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

५९०- चनुसूरज सरोदय १८५४ ई० हिन्दी ब्रज नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

५९१- चन्द्रलोक डॉ० राम कुमार शर्मा १९६० ई० हिन्दी गद्य डॉ० राम कुमार वर्मा इलाहाबाद

५९२- तीरंदाजी हिन्दी ब्रज नागरी श्री बलवीर सिह दतिया

५९३- दली दिल्ली की पातसाही हिन्दी गद्य नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

५९४- धनतेरस के पद हिन्दी ब्रज श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

५९५- धनुविचार १८१० ई० हिन्दी ब्रज नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

५९६- धनुविद्या हिन्दी ब्रज नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

५९७- धनुवेदं हिन्दी ब्रज नागरी श्री बलवीर सिह दतिया म०प्र०

५९८- धनर्वेद भाषा १७४४ ई० हिन्दी ब्रज बलवीर सिह दतिया

५९९- नशे बाजो की लावनी हिन्दी उर्दू मिश्रित नागरी श्री हरदयाल सक्सेना बरहा भिण्ड

६००- नहुष निपात उदयशंकर भट्ट हिन्दी खडी बोली उदय शकर भट्टजी

६०१- पत्र मालिका हिन्दी नागरी श्री हरदयाल सक्सेना भिण्ड म०प्र०

६०२- पार्वती उदयशकर भट्ट हिन्दी नागरी श्री उदयशंकर भट्ट

६०३- प्रबोध चन्द्रोदय १७५९ ई० गनेश १८२७ ई० हिन्दी ब्रज श्री बलवीर सिह दतिया म०प्र०

६०४- बिहार के ठाकुरो की वसावली १९२९ ई० हिन्दी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

६०५- भारत सार समुच्चय १५२६ ई० देवीदत्त १७८८ ई० हिन्दी अवधी श्री प्रभाकर शास्त्री मुजफ्फर नगर

६०६- भागल भूगोल पुराण रामरतन १७८६ ई० हिन्दी गद्य श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

६०७- मदन दहन उदयशकर भट्ट हिन्दी खडी बोली नागरी उद्यशकर भट्ट

६०८- मसला हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६०९- यन्त्र विधि हिन्दी अपभ्रंश राजस्थानी नागरी अज्ञात

६१०- रतन सागर १७१३ ई० गुरुप्रसाद १७१३ ई० हिन्दी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

६११- राममाला गुलाब पाठक १८५३ ई० हिन्दी अवधी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६१२- रामानुग्रह १८२७ ई० हिन्दी ब्रज श्री बलवीर सिह दतिया म०प्र०

६१३- लघु कौमुदी सूत्रार्थ हिन्दी गद्य नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

६१४- लीलावती १८५० ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६१५- लोक परलोक उदयशंकर भट्ट हिन्दी गद्य नागरी श्री उदय शकर भट्ट

६१६- वंशावली हिन्दी नागरी श्री ब्रज किशोर शर्मा भरतगढ़ दतिया

६१७- वशावली हिन्दी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६१८- वह जो मैनें देखा तीसरा भाग उदयशंकर भट्ट हिन्दी नागरी श्री उदयशंकर भट्ट

६१९- बिकिथंकर की पूजा हिन्दी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

६२०- शहनाई की शर्त डॉ० राम कुमार वर्मा १९६० ई० हिन्दी गद्य नागरी डॉ० राम कुमार वर्मा

६२१- श्री राधा उदयशंकर भट्ट हिन्दी खड़ी बोली नागरी श्री उदय शंकर भट्ट

६२२- समय सार नाटिका हिन्दी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

६२३- सागर लहरे और मनुष्य उदयशकर भट्ट हिन्दी नागरी श्री उदय शकर भट्ट

६२४- सगीत की राजकुमारी चन्द्रमुखी १९२१ ई० हिन्दी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६२५- सोने लोही की मुगेरी हिन्दी ब्रज मिश्रित अवधी नागरी मुन्नालाल पर सारिया दतिया

६२६- हरतालिका ब्रत कथा द्वारका नाथ जू १९२१ हिन्दी ब्रज नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

वैदिक धर्म

६२७- नासिकेत की कथा १५६७ ई० देवी दत्त १७८८ ई० हिन्दी अवधी नागरी श्री प्रभाकर शास्त्री १९ अम्बापुरी मुजफ्फर नगर

६२८- निबन्ध तीन प्रति हिन्दी गद्य डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

श्रृंगार काव्य

६२९- अज्ञात हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६३०- अंगदर्पन नखशिख १८८८ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६३१- अनवर चन्द्रिका बिहारी सतसई १७१४ हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६३२- अनवर चन्द्रिका हिन्दी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६३३- अध्यान १९२७ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६३४- असफुटि दोहरा स्फुट दोहा हिन्दी ब्रज नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

६३५- आनन्द धन के कवित्त हिन्दी ब्रज पद्य नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

६३६- ईश्क चमन हिन्दी ब्रज नागरी श्री अटल बिहारी श्रीवास्तव दतिया

६३७- कमला लैनी हिन्दी ब्रज नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

६३८- कवित्त संकलन हिन्दी ब्रज नागरी श्री राम वर्मा दतिया

६३९- कवित्त सग्रह हिन्दी ब्रज नागरी श्री श्यामा चरनखरे दतिया म०प्र०

६४०- कवित्त सग्रह खूब चन्दर १८५३ ई० हिन्दी ब्रज नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

६४१- कवित्त सग्रह हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६४२- कवित्त सग्रह हिन्दी नागरी डॉ० अटल बिहारी श्रीवास्तव दतिया म०प्र०

६४३- काव्य कला १८८९ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६४४- कुशल विलास हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६४५- गहनौ चेतावनी हिन्दी ब्रज पद्य नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

६४६- जगत विनोद गगा सिह १८६४ ई० हिन्दी ब्रजनागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६४७- जगद विनोद हिन्दी ब्रज नागरी दतिया

६४८- जल बिहार हिन्दी ब्रज नागरी श्री जगदीश शरण मधुप पद्‌कापुरा दतिया म०प्र०

६४९- जाति विलास इहन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६५०- जुगल सिषनष १८२९ ई० प्रताप साह १८२९ ई० हिन्दी ब्रज कन्हैया लाल सिरोहिया हमीरपुर

६५१- तेरह मासी हिन्दी अवधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर उ०प्र०

६५२- देवी दास के कवित्त हिन्दी ब्रज नागरी श्री बलवीर सिह जी बड़ा बाजार दतिया म०प्र०

६५३- दोहा संग्रह हिन्दी ब्रज नागरी श्री हरि दास मुखिया ग्रा०पो० नौटा झॉसी

६५४- नवरस तरंग बलदेव मिश्र १८८४ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६५५- पचवर्ण कवित्त भगुवन दास १८७२ ई० हिन्दी ब्रज नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

६५६- पक्षी चेताउनी १८१५ ई० १८१५ ई० हिन्दी ब्रज नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

५५७- प्रेम चन्दिका हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५५८- प्रेम तरंग हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

५५९- प्रेम तरंग २८-१-१९२७ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६६०- फासा खेलबे के पद हिन्दी ब्रज नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

६६१- फुटकर कवित्त हिन्दी ब्रज नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

६६२- फूल चेताउनी १८१५ ई० १८१५ ई० हिन्दी ब्रज नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

६६३- फूल माला १८३६ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६६४- वरवै नायिका भेद १९१६ ई० हिन्दी अवधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६६५- बारहमासा हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

६६६- बारहमासा हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६६७- बारहमासी (बारहमासा) गुलाब पाठक १८६९ ई० हिन्दी ब्रज डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६६८- बारह मासा एवं अन्य स्फुट पद हिन्दी ब्रज नागरी अज्ञात

६६९- बारहमासी गंगा प्रसाद कटवरवार १८५२ ई० हिन्दी ब्रज श्री राम शर्मा दतिया म०प्र०

६७०- बारामासी हिन्दी ब्रज मिश्रित अवधी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

६७१- बारामासी हिन्दी नागरी १८७२ ई० श्रीराम शर्मा दतिया म०प्र०

६७२- बसन्त ऋृतु के कवित्त हिन्दी ब्रज नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

६७३- बिहारी सतसई सटीक अमरचन्द्रिका १९१६ हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६७४- बिहारी सतसई कान्हजी ब्राह्मण १७५७ ई० हिन्दी बुन्देलखण्डी ब्रज नागरी श्री कन्हैया लाल सिरोहिया

६७५ - बिहारी सतसई हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६७६- बिहारी सतसई श्री लाला गगा प्रसाद १८४३ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६७७- बिहारी सतसई हिन्दी नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

६७८- बिहारी सतसई रामदीन पण्डित १८४१ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६७९- बिहारी सतसई हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर म०प्र०

६८०- बिहारी सतसई हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६८१- बिहारी सतसई रतन लाल १८५२ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६८२- बिहारी सतसई १८१० ई० हिन्दी ब्रज नागरी श्री ब्रज किशोर शर्मा भरतगढ दतिया

६८३- ब्रज राजीव काव्य हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६८४- भवानी विलास हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६८५ - भाव पंचासिका १९२६ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६८६- भाव विलास हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६८७- मुदरी तरंग १८६६ ई० हिन्दी ब्रज नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

६८८- रसराज छेदाराई बन्दीजन हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६८९- रसराज सेवक प्रसाद हिन्दी ब्रज नागरी श्री ब्रज किशोर शर्मा भारतगढ दतिया म०प्र०

६९०- रसराज हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६९१- रसराज गंगा सिह बैस १८५८ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६९२- रस विलास १७२६ ई० प्रधान १८५० ई० हिन्दी ब्रज नागरी दतिया म०प्र०

६९३- रस विलास १९२७ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६९४- रस श्रृंगार केल सागर हिन्दी ब्रज मिश्रित खडी बोली नागरी श्री अटल बिहारी श्रीवास्तव दतिया

६९५- रसिक प्रिया १५९१ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६९६- रसिक प्रया १५९१ ई० विप्रगणेश १८५१ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६९७- राम रत्नाकर २७-१-१९२७ हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६९८- राम चन्द्र शिषनख १८८८ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

६९९- ललित ललाम (स्फुट भक्ति) हिन्दी ब्रजन नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

७००- लैला मजनू हिन्दी ब्रज मिश्रित अवधी श्री मुन्ना लाल परसारिया दतिया

७०१- विक्रम विलास १८१० ई० गंगेश मिश्र १८१० ई० हिन्दी ब्रज नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

७०२- विद्वन्मोद तरंगिणी १८२७ ई० १८३१ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

७०३- वृक्ष चेतावनी १८१५ ई० १८१५ ई० देवनागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

७०४- श्रृगार निर्णय १७५० ई० बलदेव मिश्र १८८९ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

७०५ - श्रृगार सौरभ बलदेव मिश्र १८९१ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

७०६- श्रृगारिक दोहा सग्रह हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

७०७- षट्ऋतु प्रकाश हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

७०८- षटऋतु प्रकाश हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

७०९- सतसई हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

७१०- सतसई हिन्दी ब्रज नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

७११- सर्वसंग्रह हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

७१२- सुखमा सागर तरंग बलदेव मिश्र १८८९ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

७१३- सुख सागर तरंग हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

७१४- सुख सागर सार तरंग १९२७ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

७१५ - सुजान विनोद १८८९ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

७१६- सुजान विनोद २६-१-१९२७ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

७१७- सुन्दर श्रृंगार १६३१ ई० हिन्दी ब्रज नागरी दतिया

७१८- सुन्दरी सिंगार हिन्दी ब्रज नागरी कोटा राजस्थान

७१९- स्फुट कवित्त १८३७ ई० हिन्दी बृरज खड़ी बोली नागरी श्री बलवीर सिह दतिया

७२०- स्फुट कवित्त हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

७२१- हस्तमलिका हिन्दी ब्रज नागरी श्री हरिदास मुखिया झॉसी

सन्तकाव्य

७२२- अधविनाश भगवान दास मुहर्रिर १९२९ ई० हिन्दी अवधी नागरी रानी टन्डन एवं सन्त प्रसाद टन्डन इलाहाबाद

७२३- गुण स्थान मार्ग ८१ पाठ हिन्दी राजस्थानी नागरी अज्ञात

७२४- ग्यान दीपिका हिन्दी ब्रज नागरी माण्ड श्री केशव किशोर तिवारी दतिया म०प्र०

७२५- ग्यान समाधि हिन्दी अवधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

७२६- ज्ञात प्रश्नोत्तर हिन्दी ब्रज नागरी अज्ञात

७२७- ज्ञान वचन चूर्णिका १७८५ ई० हिन्दी ब्रज नागरी अज्ञात

७२८- ज्ञान स्वरोदय हिन्दी ब्रज नागरी श्री श्यामा चरण खरे दतिया म०प्र०

७२९- दादू वाणी हिन्दी ब्रज मिश्रित अवधी नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

७३०- दाइवाणी हिन्दी ब्रज मिश्रित अवधी नागरी श्री केशव किशोर तिवारी दतिया

७३१- नाम प्रताप हिन्दी नागरी श्री ब्रज किशोर शर्मा भारतगढ दतिया म०प्र०

७३२- निर्धारशत हिन्दी नागरी श्री बलवीर सिंह दतिया म०प्र०

७३३- पद हिन्दी नागरी श्री बलवीर सिह दतिया म०प्र०

७३४- परमामृत हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

७३५- भ्रमनाश धवकस राम हिन्दी अवधी नागरी क्रीत राय बरेली

७३६- विवेक सागर १७४४ ई० हिन्दी ब्रजनागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

७३७- वेदान्त महावाक्य हिन्दी ब्रज नागरी अज्ञात

७३८- संतसरन हिन्दी अवधी नागरी

७३९- सतनामा हिन्दी प्राचीन नागरी मुजफ्फरनगर

७४०- सवैया १७८५- ई० मोतीराम हिन्दी ब्रज नागरी अज्ञात

७४१- राक्षीरूप हिन्दी ब्रज नागरी अज्ञात

७४२- सुन्दरदास के सवैया रघुनाथ भगत १८६६ ई० हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

समीक्षा ग्रन्थ

७४३- उदात्त का स्वरूप पेरिइव्सुस का हिन्दी अनुवाद डॉ० नागेन्द्र हिन्दी गद्य नागरी डॉ० नागेन्द्र नई दिलई

७४४- ज्योतिविहग श्री कृष्ण दबे १९४९ ई० हिन्दी गद्य नागरी श्री शाति प्रिय द्विवेदी काशी

७४५ - नया समाज उदयशंकर भट्ट हिन्दी गद्य नागरी श्री उदयशंकर भट्ट

७४६- राम कथा फादर कामिल बुल्के हिन्दी गद्य नागरी डॉ० कादर कामिल बुल्के

स्तोत्र ग्रन्थ

७४७- अज्ञात हिन्दी अपभ्रश नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर म०प्र०

७४८- आरती अज्ञात हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर म०प्र०

७४९- कल्याण कल्पद्रुम स्तोत्र जवाहर १८६२ ई० हिन्दी ब्रज नागरी मुजफ्फरनगर

७५०- कल्याणमन्दिर स्तोत्र हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर म०प्र०

७५१- क्षेत्रपाल पूजा हिन्दी प्राकृत नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर म० प्र०

७५२- गौड़ीजी स्तवन हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर म०प्र०

७५३- जिन स्तवन हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर म०प्र०

७५४- जिनेन्द्र स्तुति भगवान दास हिन्दी राजस्थानी नागरी कोटा राजस्थान

७५५- देवपूजा हिन्दी अपभ्रंश नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर म०प्र०

७५६- देवस्तुति चम्पाकाल शर्मा १९०८ ई० हिन्दी नागरी अज्ञात

७५७- नेमिमिनस्तवन साहजीवराज १५९१ ई० हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

७५८- नेमिनाथ स्तोष हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर म०प्र०

७५९- पंचमी स्तवन हिन्दी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

७६०- परमानन्दस्तोत्र हिन्दी ब्रज नागरी कोटा राजस्थान

७६१- पार्श्वजिन स्तवन १८४३ ई० हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर

७६२- पार्श्वनाथ स्तवन सग्रह हिन्दी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर म०प्र०

७६३- बन्दी मोचन हिन्दी अवधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर उ०प्र०

७६४- बन्दी मोचन १९२० ई० हिन्दी अवधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर उ०प्र०

७६५ - भयहरस्त्रोत्र हिन्दी अपभ्रश मिश्रित नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर म०प्र०

७६६- भवानी स्तोत्र हिनदी अपभ्रंश मिश्रित नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर म०प्र०

७६७- मुंध्वरजीवृद्ध स्तवनम् हिन्दी राजस्थानी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर म०प्र०

७६८- महावीर स्तवन हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर म०प्र०

७६९- लक्ष्मी चरित्र हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर उ०प्र०

७७०- विनती आदिनाथ हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर म०प्र०

७७१- शंकरस्तोत्र हिन्दी ब्रज नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर उ०प्र०

७७२- शभुरुद्री मातादीन मुलाजिम हिन्दी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर उ०प्र०

७७३- शंभुरुद्री बालगोविन्द शुक्ल हिन्दी अवधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर उ०प्र०

७७४- शबुरुद्ही हिन्दी अवधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर उ०प्र०

७७५ - शंभुरुद्री स्तोत्र हिन्दी अवधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर उ०प्र०

७७६- शिव लीला मत हिन्दी ब्रज सस्कृत निष्ट नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर उ०प्र०

७७७- सिद्धांचलस्तवन हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरजराज धारीवाल ग्वालियर उ०प्र०

७७८- सूर्य माहात्म्य महापुराण हिन्दी वधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर

७७९- सुमतिनाथ विनती स्तवन हिन्दी राजस्थानी नागरी श्री सूरज राज धारीवाल ग्वालियर उ०प्र०

७८०- स्तवन संग्रह हिनदी राजस्थानी नागरी श्री सूरज राज धारीवाल ग्वालियर उ०प्र०

७८१- स्तोत्र हिन्दी राजस्थानी श्री सूरज राज धारीवाल ग्वालियर म०प्र०

७८२- स्तोत्र हिन्दी अवधी नागरी डॉ० नवल बिहारी मिश्र सीतापुर उ०प्र०

७८३- स्फुट छन्द हिन्दी ब्रज नागरी कोटा राजस्थान

अध्याय - ५

(क) परीक्षाओं के सचांल· के माध्यम से

परीक्षाओं के संचालन के माध्यम से

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रमुख विभागो मे परीक्षा विभाग सबसे अधिक महत्वपूर्ण विभाग है, क्योकि हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना के समय ही सस्थापको ने यह चाहा था कि हिन्दी के शिक्षण-प्रशिक्षण का कार्य काफी बड़े पैमाने पर पूरे देश मे चलाया जाए और हिन्दी, जैसे कि विदेशी शासन-प्रशासन की ओर से कोई सहायता देने के लिए इच्छुक नही था और न वह चाहता ही था। १९१० तक एक नगण्य और उपेक्षित भषा के रूप मे ही जी रही थी। १९१० से १९१८ तक सम्मेलन के पास तैयारी और साधन के अभाव मे कोई व्यवस्था नही थी। १९१३ के भागलपुर अधिवेशन मे स्वामी श्रद्धानन्द ने सभापतित्व मे परीक्षाओं के संयोजन का प्रस्ताव तो पारित हो गया था, किन्तु वह केवल कागज पर ही था, क्योंकि पहले वर्ष हिन्दी परीक्षाओ मे कुल १८ या २० परीक्षार्थियो ने आवेदन पत्र भरा था, उसमे से केवल १७ या १८ ही बैठे थे। यह स्थिति लगभग १९१८ तक रही। १९१८ मे गॉधी जी के सभापतित्व मे पहली बार दक्षिण मे हिन्दी के प्रचार के लिए देवदास गॉधी के नेतृत्व में एक दल गया और वास्तविक परीक्षाओं का दौर उसके बाद से शुरू हुआ।[1] आज तो लगभग पचास हजार परीक्षार्थी सम्मेलन की परीक्षाओ में बैठ़ते हैं और हिन्दी के स्तरीय ज्ञान से लाभान्वित होते है।

सम्मेलन का परीक्षा-विभाग वस्तुतः सम्मेलन का मेरुदण्ड है और सम्मेलन की मान और प्रतिष्ठा का वाहक भी। इसी के माध्यम से सम्मेलन ने हिन्दी विश्वविद्यालय की भी कल्पना की है और यह आकांक्षा व्यक्त की है कि कभी सम्मेलन एक ऐसा विश्वविद्यालय स्थापित करेगा, जिसमें काल विज्ञान आदि गम्भीर से गमभीर विषय हिन्दी के माध्यम से पढाये जायॅगे और उनमे परीक्षाएँ भी होगी।

१९५२ तक सम्मेलन की परीक्षाओं का व्यापक स्तर पर विस्तार रहा है। १९५२ से लेकर १९७१ तक का काल सम्मेलन की परीक्षाओं के ह्रास का काल रहा है। १९५२ मे

---

१ हिन्दी साहित्य का इतिहास डॉ० नरेश मेहता पृ० २४९, २५०, २५१।

कोटा अधिवेशन के समय सम्मेलन के परीक्षार्थियो को सख्या ३३५२० थी। आय ३२७००३ रुपये थी, लेकिन जैसे ही आदाता ने कार्य-भार सभाला और सम्मेलन की जनतात्रिक व्यवस्था समाप्त हुई । १९५३ मे परीक्षार्थियो की संख्या घटकर ३१३९४ हो गयी और आय भी घटकर ३२२२३५ रुपये रह गयी। फिर १९५४ मे परीक्षार्थियो की सख्या २९३८३ हुई और आय २९२९७० रुपये हो गयी। १९५६ मे तो वह संख्या और भी नीचे गिर गयी और केवल २७११५ परीक्षार्थी ही शेष बचे।

१९६२ में सरकारी निकाय की स्थापना हुई, किन्तु इस कार्यकाल मे भी परीक्षार्थियो की संख्या मे कोई विशेष वृद्धि नही हुई। १९५२ को संख्या तक तो सरकारी निकाय पहुंचा ही नही। १९६५, ६६, ६७ मे तो सख्या गिरकर २४०००, २५००००, २७००० तक रह गयी। १९७१ मे जब उच्च न्यायालय के फैसले के बाद पहली बार केवल आधी सत्ता सर्वाजनिक लोगो के हाथ मे आयी, तो पहले ही वर्ष परीक्षार्थियो की संख्या कोटा अधिवेशन अर्थात १९५२ को सख्या ३३५२० से बढकर ३७०७६ हो गयी। १९७१ से १९७५ के बीच उत्तरोत्तर संख्या मे वृद्धि ही होती गयी। वर्तमान प्रशासन के कार्यकाल १९७५ में परीक्षार्थियो की संख्या ५२,५८० थी। १९७० मे जब सरकारी निकाय का हो प्रशासन था, परीक्षार्थियो की संख्या ३२४१५ थी, किन्तु १९७१ से यदि गणित के अनुसार देखा जाए, तो १९७५ तक प्रतिवर्ष ३००० विद्यार्थियो की औसत वृद्धि हुई है और उसी अनुपात मे आर्थिक वृद्धि का भी अनुमान लगाया जा सकता है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की परीक्षाओ का प्रचार-प्रसार इस वर्ष अपेक्षाकृत आशाओ से कहीं अधिक हुआ है। इसका अनुमान पिछले एक वर्ष मे उन नयी संस्थाओ द्वारा सम्मेलन की परीक्षाओं को मान्यता देने की सूची से मिल सकता है।

इस ७५-७६ में सम्मेलन की परीक्षाओं को केन्द्रीय सरकार के अतिरिक्त अनेक राज्य सरकारों, विश्वविद्यालयों तथा शिक्षा परिषदों द्वारा विशष सुविधाएं प्राप्त हुई हैं। सम्मेलन की परीक्षा के आधार पर छात्र बी०ए०, एम०ए०, शास्त्री, आचार्य आदि परीक्षाओं में सीधे सम्मिलित हो सकते हैं। नौकरी की दृष्टि से भी सम्मेलन की परीक्षाओ को पर्याप्त मान्यता मिल गयी है।

पिछले २५ वर्षों की निष्क्रियता और सम्मेलन की स्थितियों के कारण केन्द्रों के संचालन में गड़बड़ियाँ रही हैं। १९७५-७६ में नये केन्द्रों की व्यवस्था भी की गयी है और

बहुत ऐसे केन्द्र, जहाँ परीक्षा के नाम पर अनेक प्रकार की अव्यवस्थाएँ थी, उनको तोडा भी है। और अनेक परीक्षा केन्द्रो का विस्तार व्यापक रूप मे किया गया है। विशारद और रत्न परीक्षाओ के लिए मान्यता प्राप्त डिग्री कालेजो या प्रतिष्ठित मान्यता प्राप्त सस्थाओ मे ही केन्द्र को खोलने की व्यवस्था की गयी थी।

सम्मेलन की परीक्षाओ को प्रामाणिक एव अन्य परीक्षाओ के अनुकूल बनाने के लिए हिन्दी साहित्य सम्मेलन की परीक्षा समिति ने पूरे पाठ्यक्रम का विवरणात्मक विश्लेषण किया है। साहित्य रत्न और विशारद के पाठ्यक्रम के निर्धारण मे विषय के विशेषज्ञो एव विश्वविद्यालय तथा प्रतिष्ठित डिग्री कालेज के अध्यापकों द्वारा पुनः परीक्षण एव निरीक्षण कराने की योजनाएँ बनी है। पाठ्यक्रमो मे इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि दक्षिण और विदेशो में होने वाली सम्मेलन की परीक्षाओं का स्तर समान रहे। साथ ही इस बात की भी चेष्टा होती रही है कि हम अहिन्दी भाषा-भाषी प्रदेशों और विदेशों मे पढने वाले विद्यार्थियों की सुविधाओं और विवशताओ को ध्यान मे रखकर पाठ्य का निर्धारण करे।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की परीक्षाएं मारीशस, फिजी, सूरीनाम तथा बर्मा एवं ब्रिटिशगाइना में होती हैं। इन प्रदेशो मे प्रतिवर्ष पॉच हजार विद्यार्थी परीक्षाओं में सम्मिलित होते हैं। विदेशो में उत्तरोत्तर सम्मेलन के परीक्षाओ की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है और इस स्थिति को देखते हुए सम्मेलन ने विदेशों की परीक्षाओं के सम्बन्ध मे कुछ नये प्रकार से सोचने का संकल्प किया है। आशा है कि निकट भविष्य मे उन योजनाओं को प्रस्तुत किया जाएगा। स्वतन्त्रता आन्दोलन में जो भूमिका अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की रही वही राष्ट्र भाषा हिन्दी एवं देवनागरी लिपि के विकास मे हिन्दी साहित्य की रही है।[1] इसी सिद्धान्त को अपनाकर सम्मेलन विगत ८८ वर्षो से अपनी विभिन्न परीक्षाओं के माध्यम से सम्पूर्ण देश विदेशो में हिन्दी प्रचार एवं प्रसार का कार्य कर रहा है। हिन्दी साहित्य की उन्नति और प्रचार के लिए सम्मेलन सन् १९१४ ई० से परीक्षाओं का संचालन करता आ रहा है। जिसका दायित्व परीक्षा विभाग निभाता है। इस विभाग का मंत्री परीक्षा मन्त्री कहलाता है। सम्मेलन प्रथम, उपवैद्य, साहित्य विशारद मध्यमा, शिक्षा विशारद, पत्रकारिता एवं जन

---

१ हिन्दी सा०का इतिहास पृ०२६७ नरेश महेता।

सचार विशारद विधि विशारद समिति प्रवेश परीक्षा सगीत विशारद वैद्य विशारद साहित्य रत्न आयुर्वेद रत्न, साहित्य महोपाध्याय आदि परिक्षाओ का सचालन करता है। ये सभी परीक्षाएँ सम्पूर्ण भारत के अतिरिक्त मारिशस, थाईलैण्ड, हालैण्ड, इग्लैण्ड, अमेरिका, सूरीनाम, बर्मा आदि मे अधिकृत केन्द्रो पर होती है। साहित्य महोयाध्याय शोधोपाधि है। अब तक कुल ५१ शोधकर्मियो को यह उपाधि प्रदान की गयी है। श्री राम बहोरी शुक्ल प्रथम साहित्य महोपाध्याय है। जिन्होने तुलसी पर शोध प्रबन्ध लिखा। श्री रामेसर ओरी और राजपन्ती अजोधा मारिशस के शोधार्थी है। इस तरह परीक्षा अरासन १९१४ मे ६० परीक्षार्थी थे। आज बढकर लगभग, ८०,००० प्रति वर्ष छात्र परीक्षा विभाग मे पजीकृत होते हैं। यह हिन्दी भाषा की लोक प्रियता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इससे परीक्षा अत्यधिक लोकप्रिय हुआ।[1]

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रथमा, मध्यमा (विशारद) उत्तमा (साहित रत्न) उपवैद्य, वैद्य विशारद आयुर्वेदरत्न, शिक्षा विशारद, पत्रकारिता तता विधि विशारद आदि परीक्षाएँ संचालित करता है। विगत कुछ वर्षों से सम्मेलन ने संगीत परीक्षाओ के अन्तर्गत संगीत प्रवेश, संगीत विशारद, संगीत रत्न, संगीत, मार्तण्ड, परीक्षाओं का संचालन परारम्भ कर दिया है। जिसमे लिखित तथा क्रियात्मक दोनो विधाओ की व्यवस्था की गयी है। उपर्युक्त सभी परीक्षाएँ सम्पूर्ण भारत के अतिरिक्त मारीशस, थाइलैण्ड, सूरीनाम बर्मा, अमेरिका, इण्लैण्ड आदि देशों में सम्मेलन द्वारा अधिकेन्द्रों मे सम्पन्न होती है। विगत वर्षो मे जहॉ केन्द्रो की सख्या १६०० थी वहीं संवत २०५७ सन् २००० मे केन्द्रो की संख्या में वृद्धि हुई। सम्प्रति लगभग १८०० केन्द्रों मे परीक्षायें सम्पन्न करायी गयी। इधर सम्मेलन अपनी परीक्षाओं की मान्यता के सम्बन्ध मे बराबर प्रयत्नशील रहा है। फलस्वरूप देश के अनेक वि[illegible]लय ने सम्मेलन की मध्यमा (विशारद) एव उत्तमा (साहित्य रत्न) परीक्षा क्रमशः बी०ए० प्रथम वर्ष एवं एम०ए० प्रथम वर्ष में प्रवेश की सुविधा प्रदान की है। संक्षेप में आगरा कुमार्यू, नैनीताल, गढ़वाल, जोधपुर, काशी विद्यापीठ वाराणसी, सूरत, इन्दौर, लखनऊ, अवध पूर्वाचल आदि विश्वविद्यालयों की मान्यताएं उल्लेखनीय हैं।—सम्मेलन दैनन्दिनी पृ०१३, १४

१ सम्मेलन एक परिचय २००२।

बिहार, आन्ध्र प्रदेश, उडीसा राज्य सरकारो ने सम्मेलन की परीक्षाओ को सरकारी सघ के लिए मान्यता प्रदान की है। केन्द्रीय सरकार के शिक्षा मन्त्रालय ने अपनी प्रेस विज्ञप्ति संख्या ७/५०/६८ एच दिनाक १८ फरवरी १९७० के द्वारा प्रथमा को एस एल सी मध्यमा (विशारद) परीक्षा को बी०ए० एव उत्तमा (साहित्यरत्न) परीक्षा को बी०ए० आनर्स के समकक्ष हिन्दी स्तर के लिए मान्यता प्रदान की है। इधर मानव ससाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार शिक्षा विभाग नयी दिल्ली द्वारा हिन्दी साहित्य सम्मेलन इलाहाबाद की प्रथमा परीक्षा को नियुक्त कार्य के लिए मैट्रिक के समकक्ष मान्यता प्रदान की है। सरकारी अधिसूचना 63 सं० F 24-4/2001 T S. III मे कहा गया है कि शैक्षिक अर्हता की मान्यता हेतु उच्च स्तरीय समिति की सिफारिशो के आधार पर भारत सरकार में इस पद के लिए शैक्षिक अहर्ता मैट्रिक उत्तीर्ण कर रही है। उस पद हेतु केन्द्र सरकार के अन्तर्गत नियोजन के प्रयोजनार्थ हिन्दी साहित्य सम्मेलन इलाहाबाद द्वारा आयोजित की जा रही, प्रथमा परीक्षा को मान्यता प्रदान करने का निर्णय लिया है। इसके अतिरिक्त देश के प्रायः सभी विश्वविद्यालयो एवं राज्य सरकारों से मान्यता के लिए पत्राचार चल रहा है । सम्मेलन शोधोपाधि से सम्बन्धित साहित्य महोपाध्याय शोध परीक्षा का भी संचालन करता है जिसमे अनेक विषयो पर शोध कार्य की व्यवस्था है। राष्ट्रीय स्तर की परीक्षाओ के माध्यम से भी हिन्दी भाषा की प्रतिष्ठा बढ़ी है।

भारतीय अभियंता संस्थान की परीक्षा भी हिन्दी भाषा मे होने लगी है। भारतीय प्रौद्यौगिकी संस्थान की परीक्षा भी हिन्दी भाषा की चपेट मे आ गयी है। भारतीय प्रशासनिक सेवा से जुडी समस्त सहयोगी परीक्षाये भी अब हिन्दी माध्यम से आयोजित की जाने लगी हैं। हिन्दी भाषा का प्रचार एवं प्रसार अब प्राविधि विधियॉ भी प्रयोग किया जा रहा है। हिन्दी भाषा ने कम्प्यूटर साफ्टवेयर विकसित कर लिया गया है। इस हिन्दी भाषा सम्मेलन के माध्यम से जन मानस की ओर से जन भाषा बनने की बढ़ रही है। व्यावहारिक भाषा के साथ-साथ अब सैद्धान्तिक भाषा बनाकर सम्मेलन ने अपना गौरव बढ़ाने का कार्य किया है।[1]

१ अमृत महोत्सव सम्पादन डॉ० सत्य प्रकाश मिश्र पृ०२६८

(ख) हिन्दी साहित्य सम्मेलन से जुड़े नेताओं की भूमिका

हिन्दी भाषा को सम्पर्क भाषा बनाने मे राष्ट्रीय नेताओ की महत्वपूर्ण भूमिका है। स्वतत्रता सग्राम के दौरान अनेक नेताओ ने अपनी प्रान्तीयता की भावना को छोडकर राष्ट्रीयता को पुष्ट करने का प्रयास किया। सर्वप्रथम हम गॉधी जी के योगदान का उल्लेख कर सकते है। गॉधी जी का पूर्ण विश्वास था कि जब तक भारतीयो मे अंग्रेजी के प्रति मोह बना होगा तब तक भारत स्वतंत्र नही होगा। देश की जनता मे यदि अपनी भाषाओ के प्रति स्वाभिमान पैदा नही होता तो समस्त जीवन ही स्वाभिमानहीन हो जायेगा। उन्होंने १९१७ में स्पष्ट कहा कि हिन्दी ही हिन्दुस्तान के शिक्षित समुदाय की सामान्य भाषा हो सकती है। यह बात निर्विवाद सिद्ध है किन्तु यह कैसे हो केवल यही विचार करना है। जिस स्थान को अग्रेजी भाषा लेने का प्रयास कर रही है और जिसे लेना उसे असम्भव है वही स्थान हिन्दी को मिलना चाहिए क्योकि उस पर हिन्दी का पूर्ण अधिकार है। गॉधी जी का विचार था कि हिन्दी सीखना हर एक भारतीय का धर्म है। हिन्दी को उसका उचित स्थान मिलने मे जितना देर होगी उतना ही देश का नुकसान होगा।[1]

गॉधी जी अंग्रेजी शिक्षा के विरोधी थे। उन्होंने स्पष्ट घोषणा की कि देश सेवा करने के लिए राष्ट्रभाषा का ज्ञान आवश्यक है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के इन्दौर अधिवेशन मे उन्होंने कहा कि हमें ऐसा उद्योग करना चाहिए कि एक वर्ष में राजकीय सभाओं में, कांग्रेस मे प्रान्तीय भाषाओं और अन्य समान सम्मेलनों में अंग्रेजी का एक शब्द भी शब्द सुनायी न पडे। हिन्दी और उर्दू को लेकर जो संघर्ष खडा हो गया था उसके लिए उन्होंने सलाह दी कि हिन्दी और उर्दू का भेद कृत्रिम है। हिन्दुओ को थोड़ा बहुत शब्द फारसी के जानने चाहिए और मुसलमानों को भी थोड़े बहुत शब्द संस्कृत जानने चाहिए। रहा लिपि का प्रश्न तो मुसलमान अरबी लिपिका और हिन्दू नागरी लिपि का प्रयोग कर सकते हैं। जो लिपि सरल होगी अन्त मे उसी की विजय होगी। गॉधी जी का विचार था कि हिन्दी प्रचार-प्रसार के साथ हिन्दी भाषियो को दक्षिण की भाषा भी सीखनी चाहिए। दक्षिण भारत मे हिन्दी प्रचार प्रसार के लिए इन्दौर सम्मेलन में छः सदस्यों की एक समिति बनायी गयी जिसमें गॉधी जी भी एक सदस्य थे।

---

१ हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य- डॉ० राम किशोरक शर्मा पृ०३३३

गॉधी जी के हिन्दी सम्बन्धी विचारो से दक्षिण भारत के कुछ युवक हिन्दी पढने के लिए अग्रसर हुए। गांधी जी ने अपने पुत्र को हिन्दी बढाने के लिए मद्रास भेज दिया। गॉधी जी के प्रयत्नो से मद्रास तमिलनाडु मे हिन्दी के प्रति ऐसा उत्साह आया कि उस प्रान्त के सभी गणमान्य लोग हिन्दी का समर्थन करने लगे।[1]

गॉधी जी किसी भी कीमत पर हिन्दू और मुसलमान के बीच दरार को बढते नही देखना चाहते थे। इसका असर उनकी भाषा नीति पर भी पडा। उन्होंने अन्ततः हिन्दी उर्दू मिश्रित भाषा हिन्दुस्तानी का समर्थन करना शुरू किया। गॉधी जी के अनुसार हिन्दुस्तानी का अर्थ उर्दू नही बल्कि हिन्दी और उर्दू की वह खूबसूरत मिलावट है जिसे उत्तरी हिन्दुस्तान के लोग समझ सकें और नागरी और उर्दू लिपि में लिखी जाती हो।

गॉधी जी की इस नीति को हिन्दू और मुसलमान दोनों ने ही गलत समझा। उन पर लिपि संघर्ष पैदा करने का आरोप भी लगाया। गॉधी जी ने उन आरोपो का उचित जवाब दिया। उन्हें इस तथ्य का पूरा ज्ञान था कि हिन्दी उर्दू विवाद से अंग्रेजी का पक्ष प्रबल होगा। अंग्रेजी के महत्व को कम करना एक जटिल काम है। इसलिए राष्ट्रभाषा के समर्थको को इसके विरुद्ध संघर्षरत होना चाहिए।

राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी हिन्दी साहित्य सम्मेलन के दो बार सभापति चुने गये। ये दोनो अधिवेशन इन्दौर नगर में ही सम्पन्न हुये। पहला अधिवेशन जो सम्मेलन का आठवॉ अधिवेशन था संवत १९७४ तथा दूसरा अधिवेशन जो सम्मेलन का चौबीसवां अधिवेशन था सवत् १९९२ में सम्पन्न हुआ।[2]

भारतीय राजनीति के क्षितिज पर गॉधी जी का उदय ग्रीष्म के बालसूर्य की भॉति बडी प्रखर किरणों के साथ हुआ था और समूचे देश में यह आशा हो गयी थी कि इस महान पुरुष के द्वारा परतंत्रता की बेडियां अवश्य कटेगी और देश के सांस्कृतिक जीवन मे क्रान्ति होगी।

---

१ हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य - डॉ० रामकिशोर शर्मा पृ० ३३४

२ सम्मेलन पत्रिका - स० ज्योतिप्रसाद मिँ निर्मल पृ० ६३

सम्मेलन की परम्परा के अनुसार सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन मे सभापति पद के लिए गाधी जी के साथ महामना मालवीय जी, लाला हंसराज, रीवा नरेश, सर वेकट रमन सिह जी तथा गौरी शंकर हरिश्चन्द्र ओझा के नाम भी प्रस्तावित किये गये थे। जिसमे से मतदाताओ ने गॉधी जी को ही प्राथमिकता प्रदान कर अध्यक्ष पद पर अवस्थित करने का निर्णय किया।[1] सम्मेलन द्वारा जब गॉधी को यह सूचना दी गयी कि सम्मेलन ने उन्हे अपने वार्षिक अधिवेशन का सभापति मनोनीत किया है तो उन्होने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया और हिन्दी के प्रचार-प्रसार की आवश्यकता बताते हुए देश के भिन्न-भिन्न प्रान्तो मे राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचारार्थ अखिल भारतीय स्तर पर एक उप समिति बनाने का सुझाव दिया और यह भी सुझाव दिया कि इस उप-समिति का सदस्य उन्ही सज्ञनो को बनाना चाहिए जो उस समिति में स्वच्छता से तैयार हो।

गांधी अध्यक्ष पद से जब भाषण करने उठे तो सर्वप्रथम उन्होने अधिवेशन मे महामना मालवीय जी की अनुपस्थिति पर खेद व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि मेरे पूज्यनीय तथा स्वार्थत्यागी नेता पण्डित मदन मोहन मालवीय जी नहीं आ सके। मैने उनसे प्रार्थना की थी कि जहॉ तक बने सम्मेलन में उपस्थित रहिएगा। उन्होंने वचन दिया था कि जरूर आयेगे।[2] आगे चलकर गॉधी जी ने कहा कि मैं बड़ी झंझटो मे पड़ा हूँ। मेरी इस समय बड़ी दुर्दशा है। इससे मै अपना व्याख्यान नही तैयार कर सका। पर मैंने कहा था आऊंगा, आ गया। जो चीज सामने रखने का इरादा था, नही रख सका। यह भाषा का विषय बडा भारी और बडा ही महत्वपूर्ण है। यदि सब नेता काम छोडकर केवल इसी विषय पर लगे रहें तो बस है। यदि हम लोग भाषा के प्रश्न को लेकर सम्मेलन से या इधर से मन हटा लेगे तो इस समय लोगो ने जो प्रकृति चल रही है लोगो के ह्रदयों मे जो भाव उत्पन्न हो रहा है, वह निष्फल हो जायेगा।"

"———भाषा माता के समान है । माता पर हमारा जो प्रेम होना चाहिए वह हम लोगो मे नही है।[3]

"विदेशी भाषा द्वारा आप जो स्वतन्त्रता चाहते हैं वह नहीं मिल सकती क्योकि उसमे हम योग्य नही हैं। जैसे अंग्रेज अपनी मादरी जबान मे ही बोलते हैं और सर्वथा उसे ही व्यवहार मे लाते हैं वैसे ही मै आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप हिन्दी को भारत की राष्ट्र

---

१ सम्मेलन पत्रिका स० ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल पृ ६३

२ सम्मेलन पत्रिका - ज्योति प्रसाद मिश्र निर्मल पृ०६६

३ वही

भाषा बनाने का गौरव प्रदान करे। हिन्दी सब समझते है। इसे राष्ट्र भाषा बनाकर हमे अपना कर्तव्य पालन करना चाहिए।

गॉधी जी ने अपने भाषण मे राष्ट्रभाषा हिन्दी की क्षमता, उपयोगिता तथा सार्थकता के सम्बन्ध मे अनेक तर्कपूर्ण विचार प्रस्तुत किये और इस बात पर भी बल दिया कि हिन्दुओ की बोली से फारसी शब्दो का सर्वथा त्याग और मुसलमानो की बोली से सस्कृत शब्दो का सर्वथा त्याग अनावश्यक और कृत्रिम है। दोनो का स्वाभाविक सगम गगा यमुना के सगम की तरह सुशोभित एवं अचल रहेगा।[1]

अपने सभापतित्व के सम्बन्ध मे चर्चा करते हुए गॉधी जी ने कहा कि 'आपने मुझको इस सम्मेलन का सभापति पद देकर कृतार्थ किया है। हिन्दी साहित्य की दृष्टि से मेरी योग्यता इस स्थान के लिए कुछ भी नहीं है। यह मै खूब जानता हूँ। मेरा हिन्दी भाषा का असीम प्रेम ही मुझे यह स्थान दिलाने का कारण हो सकता है। मैं उम्मीद करता हूँ कि प्रेम की परीक्षा में मैं हमेशा उत्तीर्ण रहूगा।[2]

इन्दौर के दूसरे अधिवेशन मे सन् १९३५ मे जब गॉधी जी पुनः सभापति हुए तो सम्मेलन की प्रतिष्ठा और कार्य सीमा बहुत व्यापक बन चुकी थी। उस समय तक गॉधी जी भी विश्व के सामान्य पुरुष बन चुके थे। फलतः इन्दौर का यह अधिवेशन पिछले अधिवेशन की अपेक्षा बहुत विशाल एव व्यापक रहा। अधिवेशन की तिथियॉ २०, २१, २२ और २३ अप्रैल १९३५ थीं। अधिवेशन के विशाल पांडाल के १६ विभाग थे जिनमे हिन्दी जगत् के गणयमान व्यक्ति और इन्दौर नगर के व्यक्ति उपस्थित थे। इस अधिवेशन में भाग लेने वाले कुछ गणमान्य व्यक्ति निम्न प्रकार थे- श्रीमती कस्तूरबा गॉधी, महादेव जी देसाई, मननीय श्री पुरुषोत्तम् दास जी टण्डन, बाबू काशी प्रसाद जायसवाल, श्री सिरेमल जी वापना, महाराज रघुबीर सिंह, पण्डित राम नरेश त्रिपाठी, पं० बालकृष्ण शर्मा नवीन, श्री माखन लाल चतुर्वेदी श्रीमती महादेवी वर्मा, श्रीमती चन्द्रवती लखनपाल, सेठ हुकुमचन्द जी, सेठ जमनालाल जी, श्रीमती कमल बाई किवे, श्री कन्हैयालाल माणिक लाल मुन्शी, लीलावती मुन्शी, श्री काका साहब कालेकर, श्री मीरा बेन, श्री सियारामशरण गुप्त, श्री नाथू राम जी प्रेमी, श्री जैनेन्द्र कुमार जी, डॉ० मथुरा लाल जी शर्मा, बाबू गुलाब राय आदि विशेष रूप में उल्लेखनीय है।[3]

---

१ सम्मेलन पत्रिका - ज्योति प्रसाद मिश्र निर्मल पृ० ६६

२ सम्मेलन पत्रिका - ज्योति प्रसाद मिश्र - निर्मल पृ० ६६

३ सम्मेलन पत्रिका - ज्योति प्रसाद मिश्र निर्मल - पृ०६७

अपने इस भाषण मे गाधी जी ने देश की सभी भाषाओ के लिए एक लिपि की आवश्यकता बताते हुए कहा कि तमिल, तेलुगु आदि भाषाए सस्कृत से भरी हुई हैं। बगला भी सस्कृत मे परिपूर्ण है। जब उनकी अपनी भाषा मे कोई शब्द नही मिलता तो वे इससे शब्द लेते है और प्रयोग मे लाते है। अत· सब भाषाओ का लिपि एक होना आवश्यक है। लिपि एक होने से लिखने समझने मे बडी सुगमता होगी।[1]

सन् १८८५ से लेकर सन् १९१६ तक अखिल भारतीय कांग्रेस के सभी अधिवेशनो की कार्यवाहियॉ अंग्रेजी भाषा में लिखी जाती थी। इन अधिवेशनों में सामान्यतः विचार विनिमय भी इसी भाषा के माध्यम से होते थे। सन् १९१६ ई० मे पुणे मे हुए कांग्रेस के प्रान्तीय सम्मेलन मे पहली बार अंग्रेजी भाषा के प्रयोग को हतोत्साहित किया गया। गुजराती और मराठी भाषा भाषी कांग्रेस कार्यकर्ताओं को गॉधी जी ने हिन्दी भाषा मे सम्बोधित किया।[2]

यह गॉधी जी द्वारा काग्रेस के शीर्षस्थ नेताओ को राष्ट्रीय भाषा के रूप मे हिन्दुस्तानी बोली तथा देवनागरी लिपि अपनाने के लिए की गयी पहल थी। यह वह दिन थे जब अफ्रीका में व्यापक राजनीतिक संघर्ष सचालित करने के उपरात गाधी जी भारत वापस लौटे थे। इस समय तक गांधी जी कांग्रेस की प्रथम पंक्ति के नेता भी नही बन पाये थे। इनके हिन्दी अभिभाषण का कांग्रेस की शीर्षस्थ नेता श्रीमती एनी बेसेन्ट पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। उन्होने कहा कि पुर्ण का राष्ट्रीय सम्मेलन हिन्दी भाषा प्रयोग करने के कारण प्रान्तीय हो गया है। प्रत्युत्तर में गाँधी जी ने यंग इण्डिया के सन् १९२० के जनवरी अंक मे लिखा कि—मैने सन् १९१५ से कांग्रेस के सभी अधिवेशनो मे भाग लिया है। इन अधिवेशनों में मैंने इस अभिप्राय से अध्ययन किया कि कार्यवाही को कांग्रेस अग्रेजी की अपेक्षा हिन्दी मे चलाये तो इसकी उपयोगिता अधिक बढ जायेगी। मै इस दृढ निश्चय पर पहुंचा हूॅ कि हिन्दुस्तानी के अतिरिक्त सम्भवत कोई ऐसी भाषा नही जो विचार विनिमय का राष्ट्रीय कार्यवाही के लिए राष्ट्रीय माध्यम बन सके। मेरा यह दृढ मत है कि विगत के वर्षो में कांग्रेस की कार्यवाही अंग्रेजी मे होने से राष्ट्र को अत्यधिक हानि पहुॅची है। इस युग मे प्रान्तीय भाषाओ तथा हिन्दी का बहुजन लेखन तथा पारस्परिक विचार विनमय तो प्रयोग करते हैं किन्तु समस्त राजकीय कार्य उर्दू अथवा अंग्रेजी भाषा में भी सम्पन्न किये जाते थे। इस प्रकार जनसाधरण को एक ऐसी भाषा के माध्यम से शासन से सम्पर्क करना पडता था जिससे वे सर्वथा अनभिज्ञ होते थे। इस स्थिति पर क्षोम एव चिन्ता प्रकट करते हुए भारतेन्दु हरिश्चन्द ने १८८२ ई० में

---

१ वही

२ अमृत महोत्सव स० डॉ० सत्य प्रकाश मिश्र पृ० ११४

सर विलियम हण्टर की अध्यक्षता मे गठित शिक्षा आयोग के समक्ष हिन्दी का पक्ष प्रस्तुत करते हुए लिखा था कि सभी सभ्य देशो मे इनके नाग शिवो की बोली और लिपि का प्रयोग किया जाता है। भारतेन्दु जी ने इस आयोग को मर्मस्पर्शी शब्दो मे बताया कि यदि हिन्दी अदालती भाषा हो जाये तो सम्मन पढवाने के लिए दो चार आने कौन देगा और साधारण सी अरजी लिखवाने के लिए रुपया आठ आने क्यो देगा। विदेशी भाषा की अनिभिज्ञता के कारण रुपये आठ आने की रिश्वत देना आज भले ही जनसाधारण को आर्थिक रूप से कष्टकर न लगे, परन्तु उस युग मे जब एक अकुशल मजदूर की दैनिक मजदूरी छह पैसे से कम हुआ करती थी तब यह राशि निश्चित रूप से कमर तोड देने वाली होती होगी। सम्भवत यही कारण है कि गॉधी जी से पूर्व जितने भी नेता भारतीय राजनीति के मच पर आये उनमे से अधिकांश निर्विवाद रूप से देशी भाषाओं के समर्थक थे।

हिन्दी के पक्ष मे प्रबल तर्क यह था कि यह विगत कई शताब्दियो से एक ऐसी भाषा रही थी जो कमोवेश पूरे भारत मे बोली जाती है। अतः गांधी जी ने देशी भाषा के रूप मे हिन्दी को वरीयता प्रदान की । भारतीय इतिहास मे आधुनिक युग के प्रणेता माने जाने वाले राजाराम मोहन राय यद्यपि पाश्चात्य भाषा के तथा विज्ञान के प्रबल समर्थक थे किन्तु फिर भी इन्होने बंगाल मे स्वयं द्वारा प्रतिपादित ब्रह्म समाज नामक धर्म का प्रचार एवं प्रसार हिन्दी भाषा एव देव नागरी लिपि के माध्यम से किया। इन्होने स्वयं हिन्दी मे ब्रह्म समाज के प्रचारार्थ कुछ पुस्तकें लिखीं तथा हिन्दी भाषा मे हिन्दी भाषी नामक पत्र का भी प्रकाशन प्रारम्भ किया। इनके प्रमुखतः शिष्य तथा बंगाल के जाने माने राजनीतिक एवं सामाजिक कार्यकर्त्ता केशव चन्द्र सेन ने हिन्दी भाषा के पक्ष में अपना मत स्पष्ट करते हुए कहा कि-----हिन्दी ही स्वप्रचलित हैं। हिन्दी को यदि भारत वर्ष की एक भाषा स्वीकार कर लिया जाय तो सहज में ही एकता सम्भव हो सकता है। आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द गुजराती थे तथा इन्हें संस्कृत एवं गुजराती दोनो भाषाओं का असाधारण ज्ञान था। इन भाषाओ के पण्डित होते हुए भी इन्होंने आर्य समाज के प्रचार एवं प्रसार हेतु हिन्दी भाषा एव देव नागरी लिपि का ही प्रयोग किया। इन्होंने सभी कृतियो की रचना भी हिन्दी भाषा मे की। इसी प्रकार लोकमान्य तिलक मराठी भाषी होते हुए भी हिन्दी भाषा के प्रबल समर्थक थे। इन्होंने हिन्दी पक्ष का समर्थक इन शब्दों मे किया" हिन्दी पुस्तको का प्रचार होना चाहिए। हिन्दी भारत की सामान्य भाषा होनी चाहिए। कोई प्रान्तीय भाषा हिन्दी का स्थान नही ले सकती। महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय ने विगत सभापतियों के भाषण भाग

१ डॉ० लक्ष्मी शंकर व्यास पृ० ३३४, ३३३।

(ख) हिन्दी सहित्य सम्मेलन से जुड़े नेताओं की भूमिका

मदन मोहन मालवीय का योगदान

पण्डित मदन मोहन मालवीय देश के ऐसे महान पुरुष थे जिन्होने भारत, भारतीयता और भारतीय की आजन्म साधना की। देश के स्वाधीनता सग्राम मे तथा राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था की नीव डालने मे आपका महान योगदान रहा है। आप महान देश भक्त, शिक्षाशास्त्री तथा सम्पादकाचार्च थे। आपका जन्म २५ दिसम्बर १८६१ ई० की इलाहाबाद मे हुआ था। सन् १८८४ ई० मे उच्च शिक्षा समाप्त कर आपने अध्यापन तथा लेखन का कार्य आरम्भ किया। सन् १८८५ ई० मे काग्रेस के दूसरे अधिवेशन मे महामना मालवीय जी का भाषण इतना सारगर्भित तथा प्रभावशाली था कि कालाकाकर के राजा राम पाल सिह ने उन्हे अपने हिन्दी दैनिक हिन्दोस्थान का सम्पादक बनाया। हिन्दोस्थान के माध्यम से महामना मालवीय जी ने मातृभूमि और मातृभाषा की महान सेवा की। सन् १९०७ ई० मे आपने अभ्युदय की स्थापना की। अंग्रेजी पत्र लीडर तथा हिन्दुस्तान टाइम्स की स्थापना का श्रेय भी आपको ही है। सन् १९३३ ई० मे महामना के सरक्षण मे सनातन धर्म नामक पत्र निकला जो अपने देश का विशिष्ट पत्र रहा है। राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए महामना मालवीय जी ने असाधारण महत्व के कार्य किये। उत्तर प्रदेश की आदालतों और सरकारी कार्यालयो मे हिन्दी को व्यवहार योग्य भाषा के रूप मे आपने ही स्वीकृत कराया।[1]

मालवीय जी राष्ट्रोन्नि के लिए प्रयत्नशील संस्थाओं क संस्थापक रहे है। स् १९१६ ई० मे आपने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की जो विश्व मे अपने ढंग का अनोखा विश्वविद्यालय है। सन् १८९३ ई० में काशी नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना मे भी आपका योगदान रहा है। सन् १९१० ई० में प्रयाग के अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना में आपका प्रमुख सहयोग था। उसी वर्ष अक्टूबर मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन आपकी अध्यक्षता मे हुआ। आपकी सहनीय हिन्दी सेवा सम्मान करते हुए संवत १९७५ ई० मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन के बम्बई अधिवेशन के भी आप सभापति निर्वाचित किये गये थे। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय आपका सबसे बड़ा स्मारक है। मातृभूमि मातृभाषा

---

१ हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इतिहास डॉ० नरेश मेहता पृ०३९, ४०, ४१, ४३

और भारतीय सस्कृति की सेवा के लिए ही आपका जीवन समर्पित था। आपका महिमामय व्यक्ति चिरकाल तक देश वासियो को प्रेरणा तथा शक्ति प्रदान करता रहेगा। हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इतिहास डॉ० नरेश महेता पृष्ठ ३९, ४०, ४१, ४२, ४३।

आज की दृष्टि से देखने पर यह आश्चर्यजनक लग सकता है कि इतने महत्वपूर्ण प्रश्न पर हिन्दी भाषियो ने कोई आन्दोलन क्यो नही किया। आज जबकि छोटी सी छोटी बात पर भी राष्ट्रव्यापी आन्दोलन हो जाते है। तब उस काल मे इस राष्ट्रव्यापी समस्या के लिए कोई छोटा सा भी आन्दोलन क्यो नही हुआ। स्पष्ट है कि वह आन्दोलन का युग नही था, क्राति और आन्दोलन मे अन्तर होता है। आन्दोलन बहुत कुछ २०वी शताब्दी की देन है। सन् १८५७ ई० की क्रांति के निष्फल हो जाने के फलस्वरूप भारतीय जनता एक प्रकार से न केवल निष्क्रिय बल्कि राजनीति से ही हताश हो गयी थी। इसीलिए भाषा और लिपि का महत्वपूर्ण प्रश्न जो कि सम्पूर्ण समाज का प्रश्न होना चाहिए था वह केवल इने गिने व्यक्तियों, समाज सुधारकं तथा साहित्यिक पत्रो का ही दायित्व हो गया था। इसीलिए आन्दोलन की भाषा के स्थान पर हमें इनमे आद्यन्त एक ऐसे विनय से साक्षात होता है जिसमे किसी भी प्रकार राजकीय सत्ता से विवेक पूर्ण तरीके से टकराने की प्रति भी नही मिलती। इतिहास का यह प्रदोश काल था। चीजे समस्याए तथा निर्णय सब कुछ धुंधलेके से थे। १९वी शती समाप्त होने को थी। यूरोप गये हुए नवयुवक नये विचार और नये चिन्तन को इस देश मे ला रहे थे। देश मे कई स्थानो पर अंग्रेजी माध्यम के कालेज आदि खुल चुके थे। काग्रेस का जन्म हो चुका था। सरकार अब अंतिम रूप से राजकाज मे न केवल अग्रेजी को ही प्रमुखता देने को सोच रही थी। बल्कि भारतीय भाषाओं के लिए भी एक सामान्य लिपि के नाम पर रोमन लिपि प्रचारित करने की सोच रही थी। यह एक ऐसा षडयन्त्र था कि जो यदि सफल हो जाता तो उस आन्दोलनहीन युग के अन्धकार मे भारतीय अस्मिता सदा के लिए तिरोहित हो जाती। परन्तु सन् १८९३ मे काशी मे काशी नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई और सभा में एक प्रस्ताव पारित किया कि सरकार के इस रोमन लिपि के निर्णय का विरोध के लिए जनमत तैयार करने हेतु तथा सरकार का ध्यान आकृष्ट करने के लिए सन् १८९६ में नागरी कैरेक्चटर नामक एक पुस्तिका का प्रकाशन किया तथा जिसमें नागरी लिपि की वैज्ञानिकता तथा रोमन लिपि की अनुपयुक्त को तर्क के साथ प्रस्तुत किया गया। इस विरोध का तत्काल नतीजा यह हुआ कि सरकार ने रोमन लिपि के प्रचार के योजना को रद्द कर दिया। सभा की तथा विशेष कर बाबू श्याम सुन्दर

दास की सफलता के कारण ही आगे चलकर महामना मदन मोहन मालवीय जैसे नेता ने हिन्दी आन्दोलन का नेतृत्व ग्रहण किया। मालवीय जी के आ जाने से अब हिन्दी का प्रश्न विशाल सामाजिक एव राष्ट्रीय स्वरूप ग्रहण करने लगा। कचहरियो तथा प्रारम्भिक पाठशालाओं मे फारसी लिपि के स्थान पर देवनागरी लिपि का प्रचार कराने के लिए उन्होने कोर्ट कैरेक्टर एण्ड प्राइमरी एजुकेशन इन नार्थ वैष्टर्न प्राविसेज (पश्चिमोत्तर प्रान्त मे अदालती लिपि तथा प्रारम्भिक शिक्षा) नामक एक तथात्मक पुस्तिका तैयार की । जिसमे उन्होने ऐतिहासिक, वैज्ञानिक तथा पारस्परिक कारण तो प्रस्तुत किया जाना चाहिए। बल्कि जनगणना के प्रतिवेदनों तथा शिक्षा विभाग के वार्षिक प्रतिवेदनो से तथ्य तथा आकडे लेकर यह सिद्ध कि हिन्दी भाषा बोलने तथा नागरी लिखने पढ़ने वालों की जनसख्या उर्दू भाषा के बोलने वालो और फारसी लिपि जानने वालो से कई गुनी अधिक है। पुस्तक प्रकाशन के भी आगे एकत्र किये गये और यह बताया गया कि उर्दू के प्रकाशनों से हिन्दी के प्रकाशनो की संख्या पाँच गुनी से भी अधिक है। शायद हिन्दी भाषा और नागरी लिपि के पक्ष की ऐसी विवेक पूर्ण तथा सर्वागीण वकालत मालवीय जी के पहले और बाद में भी किसी ने नहीं की होगी। जब यह ऐतिहासिक पुस्तिका तैयार हो गयी तो प्रान्त के लेफ्टिनेण्ट गर्वनर के पास नागरिकों का एक डेपुटेशन ले जाना निश्चित हुआ। उक्त अवसर के लिए एक अभ्यर्थना पत्र भी तैयार किया गया। मालवीय जी चाहते थे कि यह अवसर अधिक से अधिक ऐतिहासिक महत्व का हो तथा एक ओर जहाँ सरकार पर इसका प्रभाव पडे तो दूसरी ओर हिन्दी भाषी जनता मे अपनी भाषा के स्वत्व एवं अधिकार के प्रति चेतना भी जागृत हो। अत. इस अभ्यर्थना पत्र के सार्वजनिक दस्तावेज का स्वरूप देने के लिए तत्कालीन पश्चिमोत्तर प्रान्त के लगभग सभी जिलो से २०००० व्यक्तियों के हस्ताक्षर करवाये गये थे और जिन्हें १६ जिल्दों में बॉधकर लेफ्टिनेट गर्वनर महोदय को अभ्यर्थना पत्र के साथ दिये गये थे। इस शिष्टमण्डल मे सत्रह व्यक्ति थे और मालवीय जी ने इसका नेतृत्व किया था। २ मार्च १८९८ को लेफ्टिनेंट गर्वनर सर एण्टोनी ऐकडोनेल से यह शिष्ट मण्डल इलाहाबाद के राज भवन में मिला था। अभ्यर्थना पत्र के उत्तर में लेफ्टिनेंट गर्वनर महोदय ने सारांश में उत्तर इस प्रकार दिया कि आप लोगों का यह प्रस्ताव है कि फारसी के स्थान पर नागरी अक्षरों का जिसमें हिन्दी साधारणतः लिखी जानी चाहिए। प्रचार किया जायं। इसमें सन्देह नही कि इस प्रस्ताव के पक्ष मे बहुत कुछ कहा जा सकता है। इन प्रान्तो में चार करोड़ सत्तर लाख मनुष्य बसते हैं और जो अनुसन्धान प्रसिद्ध भाषातत्ववेत्ता डाक्टर ग्रियर्सन प्रत्येक जिले

की भाषाओ की जॉच के सम्बन्ध मे कर रहे हैं। जिसमे यह प्रकट होता है कि इन चार करोड सत्तर लाख मनुष्यो मे ४ करोड लाख मनुष्य हिन्दी या उसकी कोई बोली बोलते है। अब यदि ४ करोड ५० लाख मनुष्य उस भाषा को लिख भी सकते जिससे वे बोलते है तो निसदेह फारसी के स्थान पर नागरी के अक्षरो का प्रचलित किया जाना अत्यन्त आवश्यक होता। इन ४ करोड़ ५० लाख मनुष्य मे से तीन लाख से कुछ कम लिख और पढ सकते है और इन शिक्षित लोगो मे एक अच्छा अश मुसलमानों का है जो उर्दू बोलते हैं और फारसी अक्षरो का व्यवहार करना पसन्द करते है। इससे आप लोग समझ सकते है कि यद्यपि मै नागरी अक्षरो के विशेष प्रचार के पक्ष मे हूँ पर मै यह बात कह देना उचित समझता हूँ कि जितना आप लोग समझते हैं उससे अधिक आपत्तियां इसके पूर्ण प्रचार की अवरोधक है।

मुसलमान लोग जैसा कि आप लोग अनुमान करते हैं इस परिवर्तन का विरोध करेगे। अभी तक आप लोगों ने उनका विरोध दूर करने और उन्हे अपने पत्र में लाने के लिए कोई ऐसा कार्य नहीं किया। जिससे यदि वे आपके विचारों से सहमत न हो तो कम से कम आपस में निपटारा तो कर लें। हम लोगों को दूरदर्शिता पर ध्यान देकर यह देखना चाहिए कि कोई ऐसा बीच का उपाय हो सकता है या नहीं जिससे दोनो ओर का विरोध दूर हो जाये।

परन्तु सर एण्टोनी ने यह स्वीकार किया कि यह उचित नही है कि ऐसा पुरुष जो नागरी लिख सकता हो सरकार के पास भेजने के लिए अपने आवेदन पत्र या मेमोरियल को फारसी भाषा मे लिखवाने का कष्ट सहन करे। यह भी अनुचित लगता है कि एक सरकारी आज्ञा जो ऐसे गॉवो के लिए निकाली जाय जहां के वासी हिन्दी बोलते हो फारसी अक्षरों में लिखी हो जिसे उस गॉव मे कोई भी न पढ सके। ऐसा प्रबन्ध करना असम्भव न होना चाहिए। जिसमें हिन्दी या उर्दू बोलने वालो में से सबको अपने आवेदन पत्रों को सरकार तक पहुँचाने में तथा सरकार को उनकी इच्छाओं को जानने मे सुभीता हो और किसी प्रकार का कष्ट या व्यय न सहन करना पड़े। इस प्रकार बन्धन से यदि हो सके तो यद्यपि वे सब बातें प्राप्त न होगी। जो आप लोगों का तथा इस मेमोरियन के दूसरे समर्थको का लक्ष्य है, तथापि उससे कुछ बातें अवश्य प्राप्त होगी। यह समझ लेना चाहिए कि ३०० वर्षो से जो कार्य होता आ रहा है वह एक दिन में नहीं हो सकता। मैं समझता हूँ कि बादशाह अकबर के पहले भारत के इस भाग में सब राजकीय तथा घरेलू कार्यों में हिन्दी

भाषा तथा नागरी अक्षरो का व्यवहार होता था। लेफ्टिनेट गवर्नर ने तुरन्त कोई निर्णय नही लिया और डेपुटेशन को यह कहकर विदा किया कि हम लोगो को जो कुछ करना है पूरी जॉच और विचार के बाद करना चाहिए। उपरोक्त घटना शायद भारतीय सामाजिक एव राजनीतिक आन्दोलन के जीवन की प्रथम घटना है जिसमे प्रकारान्तर से ६०००० व्यक्ति सरकार के सामने भाषा के प्रश्न को लेकर विनम्र विद्रोह के साथ खडे हुए । अत यह कहा जा सकता है कि यह भारत का प्रथम सविनय अवज्ञा आन्दोलन था और जिसके नेता महामना मालवीय थे। जाहिर था कि इस शिष्टमंडल द्वारा दी गयी पुस्तिका और अभ्यर्थना पत्र की प्रतिक्रिया सामने आयी कि उसमे एक ही बात स्पष्ट की गयी कि जिन सरकारी महकमो में अब तक केवल फारसी तिथि दो प्रयुक्त होती थी यहाँ अब नागरी लिपि के प्रयोग की भी छूट दे दी गयी। सरकार का यह प्रस्ताव हिन्दी के स्वाभिमान की रक्षा नहीं करता था बल्कि एक प्रकार से उसके प्रति छाया का ही भाव प्रदर्शित किया गया था। क्योकि जहां तक राज काज की भाषा का प्रश्न था वह भी उर्दू भाषी सहन न कर पाये। सन् १९०० मे थे अज्युमन-ए-उर्दू के तत्वावधान मे लखनऊ में नवाब मोहसिन उल मुल्क के सभापतित्व में एक सभा हुई और उसमे यह मांग की गयी कि सरकार अपने प्रस्ताव को वापस ले मुसलमानों द्वारा इस प्रस्ताव के विरोध का नतीजा यह हुआ कि हिन्दी भाषियो को उस नकारा प्रस्ताव के विशेष का नतीजा यह हुआ कि उस नकारा प्रस्ताव का भी समर्थन करना पडा। आगामी जनगणना के अवसर पर उर्दू के नेताओं ने धाधंली के द्वारा सरकार को यह दिखलाने की चेष्टा की कि पूरे पश्चिमोत्तर प्रान्त में उर्दू भाषा और फारसी लिपि के लोगो की संख्या बहुमत में है। यह बात २०वी शती के आरम्भ मे स्पष्ट हो गयी कि उर्दू राष्ट्रीय परिवेश और समस्या के स्तर पर केवल मुस्लिम हितो और स्वार्थों की पूर्ति के लिए कटिबद्ध एवं संकल्पित है। जो बात अभी तक ह्रदय रूप से की यह अब एकदम स्पष्ट हो चुकी थी कि उर्दू का इस देश और इस शब्द की सभ्यता संस्कृति साहित्य और इतिहास से केवल सम्बन्ध ही नही है। बल्कि वह राष्ट्रीय स्तर पर निश्चित ही एक प्रतिविरोधात्मक शक्ति हैं।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इतिहास डॉ० नरेश मेहता पृ ४७-४८ नवरात्रि के पुण्य अवसर पर १० अक्टूबर १९१० को दिन के साढ़े ग्यारह बजे देश के विभिन्न अंचलों से आये हुए ५०० हिन्दी प्रेमियों तथा हजारों की संख्या में उपस्थित दर्शकों श्रोताओं की उपस्थिति मे तीन दिन तक हिन्दी साहित्य सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन काशी नागरी प्रचारिणी सभा के खुले प्रागडा में एक सज्जित विशाल मण्डप के नीचे सम्पन्न हुआ। यह संयोग ही था कि

भाषा यज्ञ का यह सकल्प अनुष्ठान नवरात्रि जैसे पुण्य क्षण मे आरम्भ हुआ। स्वागत गान आदि के उपरान्त स्वागत समिति के सभापति ने इस आयोजन की महत्ता एव सार्थकता पर प्रकाश डाला। उन्होने देश मे काम करने वाली अनेक हिन्दी सस्थाओ की चर्चा तथा उल्लेख किया । साथ ही इस बात पर बल दिया। भाषा जागृति के इस कार्यक्रम को एक सूक्ति तो किया ही जाय साथ ही सामयिक दिशा निर्देश भी दिया जाय। उन्होने सन् १९०१ की ससार की जनसख्या गणना के आधार पर बताया कि इस ससार मे १८५ भाषाए हैं। विश्व भाषाओ के इस परिवार में २५ आर्य भाषाएं बोलने वालो की सख्या सन् १९०१ मे एक करोड के लगभग थी उन दिनो की गणना के अनुसार हिन्दी भाषियो की सख्या लगभग १३ करोड थी। यदि उसमे हिन्दी समझने वालो की सख्या शामिल कर ली जाती तो निश्चय ही हिन्दी भारत की एकछत्र राष्ट्र भाषा मानी जा सकती थी। भारत के लिए एक सामान्य भाषा की परिकल्पना का स्वप्न हिन्दी क्षेत्र के बाहर भी लोग देखने लगे थे। और वे अहिन्दी भाषी हिन्दी को ही इस योग्य समझते थे। इस सम्बन्ध मे गुजरात के बड़ौदा नरेश, बगाल के रमेशचन्द्र दत्त तथा महाराष्ट्र के डॉ० रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर जैसे विद्वान मनीषियो ने बड़ौदा मे भाषा की इस समस्या को लेकर एक महत्वपूर्ण आयोजना किया था। इस दृष्टि से देखने पर भी एक वर्ष बाद हिन्दी साहित्य का यह प्रथम अधिवेशन हिन्दी भाषियो की उस इच्छा की पूर्ति करने के लिए था कि स्वयं हिन्दी क्षेत्र के लोग भी भाषा की समस्यायो राष्ट्र राज्य और साहित्य तीनों ही स्तर पर एक जागरूक समाज के रूप मे अनुभव करते हैं महामना मालवीय जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे हिन्दी भाषा के स्वरूप, हिन्दी की ऐतिहासिक स्थिति तथा अन्य भारतीय भाषाओ से समकक्षता, हिन्दी भाषियो का अपने भाषा के प्रति दायित्व, हिन्दी और उर्दू का सम्बन्ध तथा अन्त में हिन्दी भाषा के प्रयोग पर उन्होने अभिमत प्रगट किया।

राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन का योगदान

सभापतियों के भाषण भाग १ डॉ० लक्ष्मीशंकर व्यास पृ० ३४५,३४६ राजर्षि श्री पुरुषोत्तम दास टण्डन भारत, भारतीयता और भारती के अनन्य उन्नायक थे। राष्ट्रभाषा हिन्दी का हित चिन्तन ही आपके जीवन का लक्ष्य था। इसे आप जीवन के अंतिम समय तक पूरा करते रहे। आपका जन्म प्रयाग में ११ अगस्त सन् १८८२ ई० को हुआ तथा निधन १ जुलाई १९६२ ई० में। राजर्षि टन्डन जी हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्राण और मुख्य प्रेरक रहे है।

टन्डन जी का जीवन त्याग और तपस्या का जीवन रहा है आप सिद्धान्तों के पालन मे अडिग थे। हिन्दी साहित्य और राष्ट्रभाषा ही आपकी मूल साधना रही है। काग्रेस के आप अखिल भारतीय स्तर के शीर्षस्थ नेता थे पर सिद्धान्तो के लिए आपने पद त्याग करना उचित समझा किन्तु समझौता नही किया। टन्डन जी के जीवन पर सन्तो का प्रभाव पडा था और वे स्वयं भी सन्त सा ही जीवन व्यतीत करते थे। सरलता और सादगी आपके जीवन के प्रधान गुण थे।

सन् १९०९ ई० मे टण्डन जी अभ्युदय के सम्पादक हुए और हिन्दी पत्रकारिता का भी कार्य किया। लाला लाजपत राय द्वारा स्थापित लोक सेवा मण्डल के सदस्य बनकर आपने सेवा को ही जीवन का मुख्य लक्ष्य बनाया। इस सस्था के माध्यम से आपने साहित्य, सस्कृति और शिक्षा का व्यापक प्रचार-प्रसार कार्य किया। हिन्दी शिक्षा की दिशा मे हिन्दी विद्यापीठ की स्थापना टण्डन जी का अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य रहा है। सन् १९२२ ई० मे आप अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कानपुर अधिवेशन के सभापति निर्वाचित हुए। प्रान्तीय साहित्य सम्मेलनों की अध्यक्षता तो आपने अनेक बार की। हिन्दी हिन्दुस्तानी के प्रश्न पर टन्डन जी महात्मा गॉधी के सम्मुख भी नहीं झुके और सदा हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि का अध्यक्ष समर्थन किया। आपने कांग्रेस के राष्ट्रपति अध्यक्ष तथा उत्तर प्रदेश विधान सभा के अध्ययन के रूप मे जो आदर्श रखा उससे दोनो पत्रो का गौरववर्द्धन हुआ। संसद मे तथा साहित्य सम्मेलन के विभिन्न अवसरों पर आपके भाषण हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। राष्ट्रपति डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता मे प्रयाग मे आपका सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया था। सन् १९६१ ई० मे आपको देश की सर्वोच्च भारत रत्न उपाधि का अलंकार प्रदान किया गया था। अमृत महोत्सव डॉ० सत्य प्रकाश मिश्र भाषा की उन्नति का रहस्य श्री पुरुषोत्तम दास टण्डन सभापति कानपुर अधिवेशन सवत १९७९। जिस भाग्यवान को आप सम्मेलन के सर्वोच्च आसन पर बैठाते हैं उससे आप सम्मेलन से साधारणतया आशा रखते है कि वह हिन्दी साहित्य के सम्बन्ध मे प्रतिभा सम्पन्न अथवा पाण्डित्यपूर्ण लेख आपके सामने प्रस्तुत करे। मैंने ही आप की रक्षा की भिक्षा मांगी है। वह इसीलिए कि मै आपकी आशा पूरी नहीं कर सकूँगा। तो भी सम्मेलन के एक अल्प सेवक के नाते मैं अपने बिखरे हुए विचार आपके सामने उपस्थित करता हूं। हिन्दी भाषा की उत्पत्ति किस प्रकार हुई। ''किस वाणी के महास्रोत से उसकी धारा बहती हुई हम तक आयी' मार्ग मे किन पर्वतो और वनो के प्राकृतिक रत्नो को अपने साथ लेती और कहॉ-कहॉ उनको छितराती

आयी है अथवा जिस प्रकार से उसने अपने निर्मल जल से फूलो पर कुजलताएँ पोषित कर और उन कूलो के निवासियो को अपने पवित्र जल से मानसिक जीवनदान दे उन्हे सभ्य बनाया है इसकी चर्चा आपको कतिपय खोज सम्बन्धी ग्रन्थो मे और सम्मेलन के कुछ मेरे पूर्ववर्ती सभापतियो के भाषणो मे मिलेगी। यह विषय जितना रोचक है उतना गम्भीर है। आर्यो का आदिम स्थान कौन था, आर्यो का अदिम स्थान क्या भारत वर्ष के बाहर था। क्या उसी स्थान से उनकी कई शाखाएँ पूर्व और पश्चिम की ओर निकल कर फैली और वह जहाँ-जहाँ गये अपने साथ अपने आदिम स्थान की प्राचीन आर्य भाषा लेते गये। जिसके कारण ही यूरोप की भाषाओं जैसे यूनानी, लैटिन, अग्रेजी, फ्रेच, जर्मनी मे भी आज हमारे देश के कुछ आदि शब्दो से समानता दिखायी पडती है अथवा क्या भारत वर्ष से ही सभ्यता और भाषा की लहर पश्चिमीय देशो मे गयी इस विषय पर इतिहास और भाषा के उच्च कोटि के पण्डित पिछले लगभग दो सौ वर्षो से विचार करते आये हैं और अब भी यह नही कहा जा सकता कि इन विचारों का अंतिम निष्कर्ष निकल चुका। मनुष्य की परिमित शक्ति को देखते यह कहना भी कठिन है कि उसका निकाला हुआ परिणाम कभी भी निश्चयात्मक हो सकेगा। प्रकृति अपने रहस्यों को इस प्रकार से छिपाकर रखती है कि मनुष्य चाहे उसका एक कोना देखकर आनन्द उठा ले किन्तु किसी बढ़े अंश की अच्छी तरह निरीक्षण कर पाना विधाता ने उसके भाग्य मे नही लिखा है। अर्जुन का सा ही कोई कृष्ण का प्रेम पात्र हो तभी क्षण भर के लिए उसे वास्तविक दशा का दर्शन हो जाता है और तब उसके मुख से यही शब्द निकलते है-

पश्यामि देवास्तव देव देहे, सहर्वास्तथा भूत विशेष संधान्।
ब्रह्मणमीश कमला वनस्थ भृषीश्च सर्वानुरमांश्च दिस्यान।।

हिन्दी आन्दोलन सम्पादक लक्ष्मीकान्त वर्मा पृ०२५,२६ मे सदैव इस विचार से पूर्णतया सहमत रहा हूँ और मैंने स्वय भी अनेक अवसरो पर कहा है कि हमने विगत काल में जो कुछ प्राप्त किया है उसी पर सन्तुष्ट नहीं रह सकते और न हम प्राचीन ढाँचो मे अपने को पूर्णतया ढाल ही सकते हैं। मैंने लोगो के सम्मुख यह आदर्श रखे हैं।

समय भेदेन धर्म भेदः अवस्था भदेने धर्म भेद.

समय और परिस्थितियो के अनुसार हमारे धर्म और कर्त्तव्यों मे परिवर्तन होता है। यह प्राचीन सूक्तियाँ हैं। हमे यह स्मरण रखना है कि हमारे जीवन क्रम की साधारण प्रणालियाँ एक समय तक रहती हैं और फिर चली जाती हैं। संसार गतिशील है आज की

प्रणालिया कल की नई प्रणालियो, रीतियो और विचारधारो को स्थान देती है। प्राचीन के पाद मूल के पीछे नवीन सौदर्य चलता रहता है। यदि हम चाहे तो भी जीवन के इस महान मूलभूत तत्व से अपना पीछा नही छुड़ा सकते। हमे यह स्मरण रखना है कि हमारी जड अतीत मे है और उससे हम अपना सम्बन्ध विच्छेद नही कर सकते। एक प्रकार से हम अतीत के सग एक सुदृढ किन्तु अदृश्य आकाशिक श्रृंखला से बॅधे हुए है जो समय के साथ निरन्तर बढती चली जाती है किन्तु न तो टूटती है और न तोडी ही जा सकती है अत. हम जो कुछ भी करने का प्रयत्न करे हमे ध्यान यह रखना चाहिए कि जैसे-जैसे हम अपनी भविष्यता की ओर आगे बढते जायं वैसे अतीत से हमको बॉधने वाली वह लबे और सुदृढ श्रृखला दुर्बल न होने पाये वरन होना तो यह चाहिए कि वह बृहत पग पर और भी दृढ होती जाय। मेरा निवेदन है कि हमारा तात्विक राजनीतिक सिद्धान्त यह होना चाहिए कि हमारा जीवन भूतकालिक न हो वरन् वह उस वर्तमान से हो जो हमे अतीत से बॉधे रखता है। मै उन सब गुणो अथवा अच्छाइयो को ग्रहण करने के पक्ष मे हूँ जो पश्चिम हमे सिखा सकता है। परन्तु मैं यहॉ समुप स्थित सभी सज्ञनो से यह निवेदन कर देना चाहता हूँ कि वे इस बात को स्मरण रखें कि पश्चिम मे चमकने वाली सभी वस्तुएॅ सुवर्ण नही हैं। केवल पश्चिमी होने के कारण कोई वस्तु सर्वथा गुणप्रद नही हो जायेगी। हमारे देश ने भी ऐसी उच्चकोटि की विचारशील संस्कृति को जन्म दिया है जो समय की गति के साथ संभवत: सम्पूर्ण मानव जाति के भाग्य निर्माण पर अधिकाधिक प्रभाव डालेगी। मेरी मान्यता थी कि यद्यपि यह आवश्यक होता कि आने वाले कुछ समय तक अग्रेजी शासकीय कार्यो में चलती रहेगी तथापि वह अवधि इतनी लम्बी नहीं होगी। हमने सोचा था कि इससे बहुत थोडे समय मे ही हम जनता के निकट पहुॅच सकेगे और जनता द्वारा समझी जाने वाली भाषा मे कार्य कर सकेगे। मैं यह बात भूल नहीं जाता कि हमारे दक्षिण के भाइयो के लिए हिन्दी सर्वथा अपरिचित नही है उस राष्ट्रपिता के आदर्शो पर जिसका नाम स्मरण सदैव हमारे हृदय की सूक्ष्म तत्री को स्पर्श करता है। दक्षिण भारत के १९१८ ई० में हिन्दी का कार्य आरम्भ किया था। इस अवधि मे वहॉ के कई लाख पुरुषों और स्त्रियों ने हिन्दी सीख ली थी। मेरी ऐसी धारणा भी थी कि हिन्दी को मद्रास के युवक पीढ़ी के निकट लाने के लिए १५ वर्ष जैसी लम्बी अवधि की आवश्यकता न होगी किन्तु यह बात हमारे दक्षिण के भाइयो के कहने की है कि उन्हें कितने समय भी आवश्यकता है और मैं इस विचार से पूर्णतया सहमत हूँ कि इस विषय मे हमें उनके हाथ नहीं बांधना चाहिए। हम उनको अपनी सेवाएं अर्पित कर

सकते है, परामर्श दे सकते है किन्तु इस बात का फैसला हम उन पर ही छोडते है कि उन्हे कितना समय चाहिए और वह कितने समय मे अपनी जनता को सघ के प्रशासनिक कार्यो मे हिन्दी का व्यवहार करने के लिए तैयार कर सकते है। हमने इसी बात को ध्यान मे रख कर १५ वर्षो की अवधि स्वीकार की। पहले हमने ५ वर्ष फिर बढाकर १० वर्ष और अन्त में जब हमने देखा कि हमारे दक्षिण के भाई १५ वर्ष की अवधि चाहते हैं तो हमने इसे स्वीकार कर लिया। प्रकाशकीय राजर्षि पुरुषोत्तम दास टन्डन लक्ष्मी नारायण सिह सम्पादक पृ० ५, ६, ७, ८, डॉ० प्रेम नरायण शुक्ल १ अगस्त १९८२ को राजर्षि पुरुषोत्तम दास टन्डन के जन्म के १०० वर्ष पूरे हुए थे। इस जन्मशती को हिन्दी जगत मे एक पर्व के रूप मे सम्पन्न किया। ऐसे महान पुरुष की जीवनी व्यक्तियो के प्रति स्वदेश के प्रत्येक जागरूक प्राणी का ध्यान जाना स्वाभाविक है। अनेक व्यक्तियो ने भिन्न-भिन्न दृष्टियो से राजर्षि टडन के जीवन को उनके देश के प्रति समर्पित भाव को समझने का प्रयत्न किया है। टण्डन जी का बाल्य काल विद्यार्थी जीवन राजनीति के क्षेत्र मे प्रवेश, नगरपालिका इलाहाबाद की अध्यक्षता, विधान सभा उत्तर प्रदेश की अध्यक्षता, लोक सेवक मण्डल की अध्यक्षता, सविधान सभा एन, लोक सभा दिल्ली की सदस्यता, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की अध्यक्षता, कृषक आन्दोलन का संचालन, भारतीय संस्कृति सम्मेलन का आयोजन, अनेकानेक सास्कृतिक कार्यो का सम्पादन विविध विषयो से सम्बन्धित लेखन कार्य और हिन्दी साहित्य सम्मेलन की सस्थापना तथा हिन्दी की गरिमा को अक्षुण्ण रखने के लिए अपनी जीवन वर्तिका की अतिम लौ तक सचेष्ट रहना आदि कितने ही ऐसे कार्य उनके सम्पूर्ण जीवन में व्याप्त है जिनकी गरिमा का अकन मूल्यांकन अनेक स्थलो मे हुआ है। मानव प्रकृत्वा सत् का उपासक है संत की साधना ही उसका उन्नयन करती है। राजर्षि का सम्पूर्ण जीवन सत की साधना का जीवन है। उन्होने केवल आदर्शो का पालन ही नहीं किया अपितु आदर्शो का निर्माण भी किया है।

मानव की जीवन चर्या मे श्रद्धा का विशेष महत्व है, वैदिक ऋृषि का कथन है-

श्रद्धायाग्निः स मिध्यते श्रद्धया हूयते द्रविः
श्रद्धभगस्य मूर्धनि वचसा वेदायामास।। ऋृक १०, १५,१, १

राजर्षि टण्डन जो राष्ट्र और राष्ट्र भाषा हिन्दी के लिए ही जिये। हिन्दी के सम्बन्ध में उनकी अपनी मान्यताएं थी उनके अपने विचार थे, जिनके प्रति वे पूर्ण दृढ़ थे। हिन्दी हिन्दुस्तानी के पक्ष पर जब महात्मा गांधी और टण्डन जी के बीच मतभेद हुआ तब टण्डन

जी ने गाधी को छोड़ना स्वीकार किया हिन्दी को नही। जब टण्डन जी ने हिन्दुस्तानी स्वीकार नही की गांधी जी ने सम्मेलन छोड दिया। टण्डन जो महान सकल्पो एव उच्चादर्श के व्यक्ति थे वे अपने मान्य आदर्शो के साथ किसी भी प्रकार का समझौता सहन नही कर सकते थे।

हिन्दी के प्रश्न पर तो उन्हे बडा से बडा त्याग करना स्वीकार्य था। राष्ट्रीय स्वाधीनता के साथ-साथ भाषायी स्वतंत्रता के निमिन्त राष्ट्रभाषा के स्थान पर हिन्दी और राष्ट्र लिपि के रूप मे देव नागरी लिपि को प्रचलित करने के लिए महामना पं० मदन मोहन मालवीय की अध्यक्षता मे नागरी प्रचारिणी सभा के तत्वावधान मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन का जन्म हुआ था। टण्डन जी ने देश की जनाकांक्षा का अध्ययन करके देश की आवश्यकता के अनुरूप हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का सकल्प लिया और अंततः उनके जीवन की सारी आशा आकांक्षा और निष्ठा हिन्दी हित और हिन्दी प्रचार कर्णधार बने जो आज उनकी साधना के ज्वलत स्मारक के रूप में विद्यमान है। हिन्दी के प्रचार एव प्रसार की दृष्टि से टण्डन जी एक व्यक्ति नहीं एक संस्था थे। उनका अपना पृथक व्यक्तित्व था। हिन्दी के प्रति उनकी लगन एवं निष्ठा अप्रतित थी। ऐसा नहीं है कि अपने हिन्दी प्रेम के कारण वे भारत की अन्य भाषाओं का आदर नहीं करते थे। वे उर्दू, फारसी और अंग्रेजी के भी अच्छे ज्ञाता थे। प्रत्येक भाषा अपने-अपने क्षेत्र में विकास करे यह उन्हें मान्य था पर राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी की लिपिगत सुगमता और साहित्यगत सौष्ठव के कारण वे किसी भी अन्य भाषा को सहन नही कर सकते थे। टण्डन जन्मशती वर्ष ने हमारे चिन्तन को हमारी क्रिया शक्ति को, झकझोरा है। हमें सजग किया है यह जानने के लिए कि हम हिन्दी को किस सीमा तक विकास पथ पर अग्रसर कर सकते है। हमारी प्रादेशिक इकाइयों ने इसे किस स्वरूप में स्वीकार किया है और हमारे विश्वविद्यालयो में हिन्दी किस सीमा तक शिक्षा का माध्यम बन सकी है। न्यायालयों एवं अन्य सरकारी संस्थानो में हिन्दी का कितना प्रयोग हो रहा है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के जन्म काल से ही राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन का घनिष्ठ संबंध था। अतएव राजर्षि टण्डन जन्मशती इस संस्थान के लिए के प्रेरक प्रसग के रूप में समुपस्थित हुई। सम्मेलन की स्थायी समिति ने राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन जन्मशती की योजनाओं के क्रियान्वयन का निश्चय किया गया था। उसी के निश्चयानुसार

जन्मशती वर्ष मे राजर्षि टण्डन की लघु जीवनी प्रतीक पुरुषः राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन का लेखन कार्य सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री लक्ष्मीकान्त वर्मा ने किया था जिसकी हजारो प्रतियॉ इस प्रसंग मे नि·शुल्क वितरित की गयी। यह सुखद सयोग ही है कि राजर्षि टण्डन के अतिम वर्षो के अनेक सहयोगी और लोक सेवक मण्डल के कार्यकर्ता श्री लक्ष्मी नारायण जी ने राजर्षि के जीवन काल में ही उनकी जीवनी का लेखन कार्य सम्पन्न कर लिया था। उसी का सशोधित रूप राजर्षि टण्डन की जन्मशती के उपलक्ष्य मे प्रकाशित करते हुए हमे प्रसन्नता हो रही है भारत सरकार ने राजर्षि की जीवनी के निमित्त उदारतापूर्वक आनुदानिक सहायता प्रदान की है। एतदर्थ हिन्दी साहित्य सम्मेलन केन्द्रीय शिक्षा मत्रालय के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता है। विश्वास है यह जीवनी भारतीय स्वाधीनता संघर्ष युग की भाषा के साथ-साथ राष्ट्र भाषा हिन्दी आन्दोलन के विकास की प्रेरक स्मृतियो को उजागर करेगी। हिन्दी सेवा का व्रत राजर्षि पुरुषोत्तम टण्डन लक्ष्मी नारायण सिंह पृ० ४३, ४४, ४५, ४६, ४७।

श्री मालवीय जी महाराज प्रयाग से अभ्युदय नाम का सारताहित पत्र १९०७ के बसन्त पचमी के दिन से निकालते थे। पहले दो वर्षो तक मालवीय जी ने स्वयं उसका सम्पादन किया। जब वे प्रान्तीय कौसिल के सदस्य हो गये। तब कुछ दिनो तक बाबू पुरुषोत्तम दास टण्डन ने उसका सम्पादन किया। फिर पं० सत्यानन्द जोशी सम्पादक रहे। १९१० से स्व प० कृष्णकान्त मालवीय ने उसका सम्पादन भार लिया। बीच मे स्वर्गीय गणेश शंकर विद्यार्थी और पं० वेकटेश नारायण तिवारी ने भी उसका सम्पादन किया। नवम्बर सन् १९१० से एक ऊँचे दर्जे की राजनीतिक मासिक पत्रिका अभ्युदय प्रेस से मर्यादा के नाम से निकली थी। जिसका सम्पादन पहले कुछ दिनों तक बाबू पुरुषोत्तम दास टण्डन ने किया। पं० कृष्णकान्त मालवीय अन्त तक उसके सम्पादक रहे। लगभग ११ वर्ष तक चलकर वह आखिर सम्वत् १९७१ मे काशी के ज्ञान मण्डल को दे दी गयी और वहॉ कुछ दिनो बाद बन्द हो गई। श्री सालिग्राम श्रीवास्तव प्रयाग प्रदीप हिन्दुस्तानी एकेडेमी १९३७ टन्डन जी राष्ट्रीय कार्यो में अबधिक सकलन रहते हैं। परन्तु साहित्य से भी आपका नाता कुछ कम नहीं है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के शैशव काल मे आपही ने उसका पालन पोषण किया था। आपके ही उद्योग से प्रयाग में दो बार सन् १९११ और १९१५ में सम्मेलन के अधिवेशन हो चुके है। सन् १९२३ मे कानपुर में सम्मेलन का जो अधिवेशन हुआ था आप उसके सभापति हुए थे। मर्यादा नामक मासिक पत्रिका जब यहां से निकली थी तो आरम्भ में कुछ दिनों तक आप

ही ने उसका सम्पादन किया था। सम्मेलन की उद्देश्य सिद्धि के लिए साहित्य सम्मेलन के मत्री बाबू पुरुषोत्तम दास टण्डन एम०ए०एम०एल०बी महोदय ने जो अविश्रान्त परिश्रम किया है। उसके लिए यह सम्मेलन उनका उपकृत है और उन्हें हृदय से धन्यवाद देता है। टण्डन जी ने स्वय एक बार कहा था- हिन्दी साहित्य सम्मेलन से मेरा सम्बन्ध उसके प्रारम्भ काल से है। उसके द्वारा हिन्दी के काम मे मेरे जीवन की बहुत मुख्य घडियॉ बीती है सम्मेलन मेरे प्राण मे समा सा गया है। २१ जून १९५१ इस सम्बन्ध मे स्वर्गीय महापण्डित राहुल साकृत्यायन ने कहा है। प्रायः आधी शातब्दी से टण्डन जी हिन्दी के व्रती और सेवक है हिन्दी के लिए इतना करने वाले विरले ही लोग होगे।उनको नजदीक से न जानने वाले उन्हे इस क्षेत्र मे कट्टर कहेगे। टन्डन जी आज हिन्दी के प्रतीक है। उनकी सेवाओ को हिन्दी भाषी तथा भविष्य के सारे भारतीय जो अवश्य हिन्दी के ज्ञाता होगे कभी भूल नही सकते। एक जीवन में जितना आदमी कर सकता है उससे कहीं अधिक टण्डन जी ने हिन्दी के लिए काम किया। उनको कभी भुलाया न जा सकेगा।

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जी का विचार राष्ट्रीय क्षेत्र में विशेष कर हिन्दी प्रचार और प्रसार के क्षेत्र में टण्डन जी की सेवाएं बहूमूल्य हैं लगभग गत ५० वर्षो से उन्होंने विभिन्न परिस्थितियों में जिस निस्वार्थ भाव से सार्वजनिक कार्य किया है उससे सभी कार्यकर्ता प्रेरणा ग्रहण कर सकते है। मातृभाषा के प्रचार मे और मातृ भाषा की सेवा मे टण्डन जी ने अपने तन-मन-धन सबको पूर्णरूप से अर्पण कर दिया। उन्होने अपनी गृहस्थी के हितो की इसके कारण अवहेलना की। गृहस्थी अवस्था मे ऐसा करने के औचित्य मे लोगो को शकार हो सकती है। पर इस बात मे शंका किसी को नही हो सकती है कि जो कुछ टण्डन जी ने किया वह सार्वजनिक हित के लिए किया। सम्मेलन की प्रथम नियमावली आपने ही बनायी थी। सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशनों मे जो भी प्रस्ताव आदि होते थे उसे भी ठीक रूप देने का भार टण्डन जी के ऊपर ही था। इसी प्रकार सम्मेलन की उन्नति के लिए धन संग्रह का सम्पूर्ण दायित्व भी आपके ऊपर ही था। सम्मेलन की आन्तरिक व्यवस्था का सम्पूर्ण रूप से सचालन करते हुए भी टण्डन जी की अपने साहित्यिक बन्धुओं से इतनी घनिष्ठता और आत्मीयता थी कि सम्मेलन के संचालन मे सबका मतैक्य था। सम्मेलन के सम्वर्द्धन मे एक ओर इन्होंने इन साहित्यिको से सहायता ली तो दूसरी ओर हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन करने मे आपने राष्ट्र कमियों से भी सहयोग लिया । राष्ट्रकर्मियों हिन्दी के सेवियों, तथा हिन्दी प्रेमियों एवं साहित्यिकों के बीच सामञ्जस्य एवं समन्वय स्थापित करने का जो

अभूतपूर्व कार्य टन्डन जी ने किया है उसका मूल्यांकन हिन्दी के किसी भी इतिहास लेखक एवं आलोचक ने अभी तक नही किया है। उन्होने सदैव साहित्यको का राजनीतिज्ञो से बढकर सम्मान किया। इसके लिए टण्डन जी ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन मे मगला प्रसाद पारितोषिक की स्थापना की जो प्रत्येक वर्ष किसी न किसी उत्कृष्ट हिन्दी साहित्य सेवी को उसकी उत्कृष्ट कृति पर दिया जाता रहा है। कभी-कभी हिनदी साहित्य सम्मेलन की समितियों की बैठके बहुत देर तक चलती थी और लोग उनसे ऊब जाते थे किन्तु टण्डन जी आदि से अंत तक बिना थके हुए काम करते जाते थे। बौद्ध दर्शन मे एक शब्द आता है सप्रज्ञान जिसका तात्पर्य सम्पूर्ण रूप से जागरूक। टण्डन जी छोटी-छोटी बातो मे भी बहुत ही जागरूक रहते थे। जब कभी उनके सम्मुख श्रेय और प्रेय का द्वन्द्व आया तो उन्होने सदैव प्रेय का त्याग करके श्रेय को ही अपनाया। सदैव अग्रेजी के इस वाक्य का प्रयोग करते रहे। सीजर्स वाइफ मस्त बी एबब ससपीशन सीजर की पत्नी को सन्देह से परे होना चाहिए। हिन्दी के प्राण राजर्षि टण्डन जी नामक डॉ० उदय नारायण तिवारी द्वारा लिखित लेख से उदृत है।

महात्मा गाँधी का याग-ान

अमृत महोत्सव स्मारिका डॉ० सत्य प्रकाश मिश्रा पृ० ११४, ११५ ११६ डॉ० राम गोपाल सन् १८८५ से लेकर सन् १९१६ तक अखिल भारतीय कांग्रेस के सभी अधिवेशनो की कार्याहियो अग्रेजी भाषा में लिखी जाती थी। इन अधिवेशनो मे सामान्यत. विचार विनियम भी इसी भाषा के माध्यम से सम्पन्न होते थे। सन् १९१६ ई० में पुणे मे हुए काग्रेस के प्रान्तीय सम्मेलन में पहली बार अग्रेजी भाषा के प्रयोग को हतोत्साहित किया गया। गुजराती और मराठी भाषा भाषी कांग्रेस कार्यकर्ताओं को गॉधी जी ने प्रयोग हिन्दी भाषा में सम्बोधित किया। यह गॉधी जी द्वारा कांग्रेस के शीर्षस्थ नेताओं को राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दुस्तानी बोली तथा देवनागरी लिपि अपनाने के लिए की गयी पहल थी। यह वह दिन थे, जब अफ्रीका में व्यापक राजनीतिक संघर्ष संचालित करने के उपरान्त गाधी जी भारत वापस लौटे थे। इस समय तक गॉधी जी कांग्रेस की प्रथम पक्ति के नेता भी नही बन पाये थे। इनके हिन्दी अभिभाषण का कांग्रेस की शीर्षस्थ नेता श्रीमती एनी बेसेण्ट पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। उन्होंने कहा कि पुणे का राष्ट्रीय सम्मेलन हिन्दी भाषा के प्रयोग करने के कारण प्रान्तीय हो गया है। प्रत्युत्तर में गॉधी जी ने यंग इण्डिया के जनवरी सन् १९२० के अंक में लिखा—"मैंने सन्

१९१५ से काग्रेस के सभी एक के अतिरिक्त अधिवेशनो मे भाग लिया है। इन अधिवेशनो का मैने इस अभिप्राय से अध्ययन किया है कि कार्यवाही के काग्रेस की अग्रेजी को अपेक्षा हिन्दी मे चलाने से कितनी उपयोगिता बढ़ जायेगी। मै इस दृढ निश्चय पर पहुचा हूँ कि हिन्दुस्तानी के अलावा सम्भवतः ऐसी कोई भाषा नही है जो विचार विनिमय या राष्ट्रीय कार्यवाही के लिए राष्ट्रीय माध्यम बन सके। मेरा यह दृढ़ मत है कि विगत के वर्षो मे काग्रेस की कार्यवाही अग्रेजी मे होने के फलस्वरूप हमारे राष्ट्र को अत्यधिक हानि पहुँची है। इस युग में प्रान्तीय भाषाओं तथा हिन्दी का बहुजन लेखन एवं पारस्परिक विचार विनिमय में तो प्रयोग करते थे। किन्तु समस्त राजकीय कार्य उर्दू अथवा अग्रेजी भाषा मे सम्पन्न किये जाते थे। इस प्रकार जनसाधारण को शासन के साथ एक ऐसी भाषा के माध्यम से सम्पर्क स्थापित करना पडता था जिससे वे सर्वथा अनभिज्ञ होते थे। इस स्थिति पर क्षोम एव चिन्ता प्रकट करते हुए भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने सन् १८८२ ई० मे सर विलियम हण्टर की अध्यक्षता मे गठित शिक्षा आयोग के समक्ष हिन्दी का पक्ष प्रस्तुत करते हुए लिखा था किस भी सभ्य देशो मे इनके नागरिको की बोली और लिपि का प्रयोग किया जाता है। भारतेन्दु जी ने इस आयोग को मर्मस्पर्शी शब्दो मे बताया कि यदि हिन्दी अदालती भाषा हो जाये तो सम्मन पढ़वाने के लिए दो चार आने कौन देगा और साधरण सी अरजी लिखवाने के लिए रुपया आठ आने क्यों देगा। विदेशी भाषा की अनभिज्ञता के कारण रुपये आठ आने की रिश्वत देना आज भले ही जन साधारण को आर्थिक रूप से कष्टकर न लगे, परन्तु उस युग मे जब एक अकुशल मजदूर की दैनिक मजदूरी छह पैसे से भी कम हुआ करती थी तब यह राशि निश्चित रूप से कमर तोड देने वाली होती होगी। सम्भवतः यही कारण है कि गाधी जी से पूर्व जितने भी नेता भारतीय राजनीति के मच पर आये उनमें से अधिकाश निर्विवाद रूप से देशी भाषाओ के समर्थक थे। हिन्दी के पक्ष मे प्रबल तर्क यह था कि यह विगत कई शताब्दियों से एक ऐसी भाषा रही थी जो कमोवेश पूरे भारत में समझी व बोली जाती थी। अतः गाधी जी ने देशी भाषा के रूप मे हिन्दी को ही वरीयता प्रदान की। भारतीय इतिहास मे आधुनिक भाषा तथा विज्ञान के प्रबल समर्थक थे किन्तु फिर भी इन्होने बंगाल में स्वय द्वारा प्रतिपादित ब्रह्म समाज नामक धर्म का प्रचार एवं प्रसार हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि के माध्यम से किया। इन्होने स्वयं हिन्दी में ब्रह्मसमाज के प्रचरार्थ कुछ पुस्तके लिखी तथा हिन्दी भाषा मे हिन्दी भाषी नामक पत्र का भी प्रकाशन प्रारम्भ किया। इनके प्रमुख शिष्य तथा बंगाल के जाने माने राजनीतिक एवं सामाजिक कार्यकर्ता केशवचन्द

सेन ने हिन्दी के पक्ष मे अपना मत व्यक्त करते हुए कहा कि—हिन्दी ही सर्व प्रचलित है। हिन्दी को यदि भारत वर्ष की एक भाषा स्वीकार कर लिया जाय तो सहज मे ही एकता सम्भव हो सकती है। आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती गुजराती थे तथा इन्हे सस्कृत एव गुजराती दोनो भाषाओ का असाधारण ज्ञान था। इन भाषाओ के पण्डित होते हुए भी उन्होने आर्य समाज के प्रचार एव प्रसार हेतु हिन्दी भाषा एव देवनागरी लिपि का ही प्रयोग किया। इन्होने अपनी सभी कृतियो की रचना भी हिन्दी भाषा मे की। इसी प्रकार लोकमान्य तिलक मराठी भाषी होते हुए भी हिन्दी के प्रबल समर्थक थे। इन्होने हिन्दी के पक्ष का समर्थन इन शब्दो मे किया "हिन्दी की पुस्तको का प्रचार होना चाहिए।

हिन्दी भारत की सामान्य भाषा होनी चाहिए कोई प्रान्तीय भाषा हिन्दी का स्थान नही ले सकती। महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय ने विगत शताब्दी के अतिम दशको मे हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि को अदालती भाषा बनाये जाने के लिए संघर्ष करते हुए तात्कालिक ले० गवर्नर के समक्ष एक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। मालवीय जी ने यह तर्क प्रस्तुत किया शिक्षा अपनी उत्तमता के उच्च शिखर तक नही पहुच सकती। जब तक जनता की मातृभाषा अपने उचित स्थान पर शिक्षा के माध्यम तथा सर्वसाधारण के व्यवहार के रूप मे स्थापित न की जाये। गोपाल कृष्ण गोखले, विपिनचन्द्र पाल, लाला लाजपतराय, गोविन्द रानाडे इत्यादि इस युग के प्रबल हिन्दी समर्थक थे।

गॉधी जी के मन में हिन्दी भाषा के प्रति ममत्व जगाने में स्वामी दयानन्द सरस्वती के शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द की अपूर्व भूमिका रही है। २१ अक्टूबर १९१४ को गॉधी जी ने अग्रेजी भाषा मे लिखकर एक पत्र स्वामी जी के पास भेजा था। वे इन दिनो नेट्रोल दक्षिणी अफ्रीका में थे। गॉधी जी के उस पक्ष का उत्तर देते हुए स्वामी श्रद्धानन्द ने लिखा—उस व्यक्ति को जो हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाना चाहता है अपने देशवासियो से अंग्रेजी मे पत्र व्यवहार करने का कोई अधिकार नही है। इस बात का गांधी जी पर दीर्घ कालिक प्रभाव पडा। सन् १९०८ ई० में हिन्द स्वराज मे हिन्दी भाषा की वकालत करते हुए गांधी जी ने लिखा कि यह भारत की सर्वग्राह्य भाषा होनी चाहिए। राष्ट्र भाषा एवं लिपि पर गॉधी जी द्वारा प्रकट किये गये विचारो का राष्ट्र व्यापी प्रभाव पड़ा। इनका व्यक्तित्व असाधारण रूप से चुम्बकीय था तथा इनके प्रबल विरोधी तक इनके प्रभाव से मुक्त नहीं हो पाते थे। इन्होंने सतत प्रयास करते हुए हिन्दी के पक्ष तथा तत्कालीन राज भाषा अंग्रेजी के विपक्ष में प्रबल

जनमत खडा कर दिया। सन् १९१७ ई० मे गुजरात शिक्षा सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए गॉधी जी ने कहा कि यह सोचना कि अग्रेजी हमारी राष्ट्र भाषा हो सकती है दौर्बल्य का प्रतीक है। राष्ट्रीय भाषा मे ४ चीजो की पूर्ति करने की क्षमता होनी चाहिए—

१- सरकारी अमला उसे सुगमता से समझ सके।

२- वह सम्पूर्ण भारत मे धार्मिक-आर्थिक तथा राजनीतिक अन्तर्व्यवहार का माध्यम बन सके।

३- वह संख्यक भारतवासियो की बोली हो ।

४- सम्पूर्ण देश के लोग उसे आसानी से सीख सके।

हमे मानना पड़ेगा कि वह भाषा हिन्दी है। अपने इसी अभिभाषण मे हिन्दी का अन्तर्प्रान्तीयता पर प्रकाश डालते हुए गॉधी जी ने कहा कि हिन्दी भाषी व्यक्ति जहॉ भी जाता है हिन्दी ही बोलता है और इस पर किसी को अचम्भा नहीं होता। हिन्दी भाषी, हिन्दू धर्म प्रचारक और उर्दू भाषी मौलवी सम्पूर्ण भारत मे धार्मिक भाषण हिन्दी या उर्दू मे ही करते है और अशिक्षित जन समूह भी इन्हे समझ लेता है आज जब तक अशिक्षित गुजराती भी उत्तर प्रदेश में जाता है तो वह हिन्दी के कुछ शब्द बोल लेता है। उधर दक्षिण के प्रातों मे हमने लोगो को हिन्दी बोलते हुए सुना है। यह कहना सही नही है कि मद्रास मे बिना अग्रेजी के काम नही चल सकता। हमने अपने सभी कार्यो के लिए सफलतापूर्वक हिन्दी का प्रयोग किया है। रेलगाडियो मे हमने मद्रासी यात्रियो को अन्य यात्रियों के साथ हिन्दी मे बोलते हुए सुना है। मद्रास के मुसलमान भी इतनी हिन्दी जानते हैं कि वे पर्याप्त रूप से अपना काम चला लेते हैं। विदेशी भाषा पर तीखी टिप्पड़ी करते हुए हिन्द स्वराज में गॉधी जी ने सन् १९०८ ई० मे लिखा कि लाखो लोगो को अंग्रेजी पढ़ना उन्हें गुलाम बनाना है। हम एक दूसरे को गलत अग्रेजी में लिखते है और हमारे एम०ए० पास लोग तक इस दोष से मुक्त नहीं है हमारे सर्वोत्तम विचार अंग्रेजी भाषा के माध्यम से प्रकट किये जाते है। कांग्रेस में हमारी अंग्रेजी मे संचालित होती है। हमारे सर्वोत्तम समाचार पत्र अग्रेजी मे प्रकाशित होते हैं। मेरा पूर्ण विश्वास है कि यदि यही सब दीर्घ काल तक चलता रहा तो हमारी सन्ताने हमे कोसेंगी और हमारी निन्दा करेंगी। भारत की सर्वव्यापी भाषा हिन्दी होनी चाहिए। यंग इण्डिया के सितम्बर १ सन् १९२१ के अंक में गाँधी जी ने लिखा कि शिक्षा का विदेशी माध्यम मस्तिष्क की थका डालना है इसने हमारे बालको की शिराओं पर वृथा

बोझ डाला है। इन्हे नकलची और रट्टू बनाया है। इन्हे मौलिक चिन्तन एव मौलिक सृजन हेतु असमर्थ बना दिया। इन्हे अपने परिवार तथा जन साधारण को ज्ञान प्रदान करने मे अक्षम कर दिया है। विदेशी शिक्षा के माध्यम ने हमारे बालको को हमारी ही धरती पर व्यापक रूप से विदेशी बना डाला है। यदि मै तानाशाह होता तो विदेशी माध्यम द्वारा बालक एव बालिकाओ की शिक्षा आज ही बन्द कर देता और जो अध्यापक और प्रोफेसर इस परिवर्तन के लिए तैयार नही होते उन्हे बरखास्त कर देता। मैं पाठ्य पुस्तको के तैयार किये जाने की प्रतीक्षा भी नही करता। सन् १९२४ ई० मे गॉधी जी भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के अध्यक्ष बने। अपने अध्यक्षीय भाषण मे उन्होने कांग्रेस की ओर से यह सकल्प लिया कि काग्रेस की समस्त कार्यवाहियो तथा जो सदस्या इस भाषा को नही जानते है केवल वे ही अपनी बात अंग्रेजी अथवा प्रान्तीय भाषा मे करेगे।

हिन्दुओं और मुसलमानों के प्रमुख धर्मस्थल मुख्यतः उत्तरी भारत मे स्थित है। इन दोनों धर्यों के प्रचारक मुख्यतः उत्तरी भारत के कवि है गायक एवं विचारक रहैं है। आज भी दक्षिण भारत की भक्त मण्डलियों मे कबीर, मीरा, सूर, तुलसी, तुकाराम आदि के पद शौक से गाये जाते हैं। उत्तर एवं दक्षिण के बीच व्यावसायिक एवं व्यापारिक सम्पर्क युगो पुराने रहे है। इन सम्पर्को ने दक्षिण मे भी हिन्दी भाषा को एक सीमा तक सामान्य व्यवहार की भाषा बना दिया है। दक्षिण भारत से निरन्तर हजारों तीर्थ यात्री उत्तर भारत मे आते रहते हैं। यह सिलसिला सदियो पुराना है। यह तीर्थ यात्री उत्तर भारत से अपने साथ हिन्दी के शब्द दक्षिण मे ले जाते रहे हैं और कालान्तर मे इन आमहम शब्दो का सर्वव्यापी प्रचलन हो गया है। ऐतिहासिक तथ्य इस बात की पुष्टि करते है कि वर्तमान हिन्दी या उर्दू बोली दक्षिण से चल कर उत्तर भारत में आयी है। इसी परिप्रेक्ष्य में गांधी जी ने सृन १९१८ ई० मे दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना की। इस सभा ने एक राष्ट्रीय शिक्षा कार्यक्रम बनाया। गॉधी जी के इन प्रयासो के पीछे मन्तव्य यह था कि शिक्षा का माध्यम स्थानीय स्तर पर मातृभाषा तथा राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी भाषा हो। वे शिक्षा का पाठ्यक्रम कुछ इस तरह बनाना चाहते थे जिससे व्यापक राष्ट्रीय हितो की पूर्ति हो सके। गॉधी जी द्वारा प्रारम्भ किये गये इन प्रयासो से पूर्व सन् १९१० में मद्रास उच्च न्यायालय के जज श्री कृष्णा स्वामी अय्यर अपने कुछ मित्रों के साथ सामूहिक रूप से हिन्दी भाषा का पठन-पाठन प्रारम्भ कर इस भाषा के प्रचार एवं प्रसार को एक दिशा दे चुके थे। दक्षिण भारत के प्रमुख सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यकर्त्ता श्री निवास शास्त्री ने स्वयं अंग्रेजी भाषा के प्रकाण्ड

पण्डित होते हुए भी हिन्दी के पक्ष मे यह विचार व्यक्त किये। यद्यपि मै जनतान्त्रिक शासन का समर्थक एवं सहायक हू तो भी मै सोचा करता हूँ यदि मुझमे शक्ति होती तो मैं थोडे समय के लिए भारत का सर्वाधिपति हो जाता। यदि भाग्य से मैं इस पद पर पहुच जाता तो मै कितनी ही योजनाए अमल मे लाने की कोशिश करता कि सारे देश मे यह आज्ञा जारी करता कि सारे स्कूलो, कालेजो, सरकारी कार्यालयो और अदालतो के माध्यम की भाषा हिन्दुस्तानी बनायी जाये हिन्दी प्रचार के आयोजन मे गॉधी जी के पुत्र प्रख्यात पत्रकार देवदास गॉधी ने भी अभूतपूर्व भूमिका निभायी है। देवदास स्वय मद्रास गये तथा इस प्रदेश मे उन्होने हिन्दी भाषा के प्रसार एवं प्रचार के कार्य को आगे बढाने के लिए कठोर परिश्रम किया। महात्मा गॉधी के प्रमुख शिष्य स्वामी सत्यदेव इस कार्य मे देवदास गॉधी के प्रमुख सहायक थे। दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार के लिए होलकर, नरेश, मारवाडी, अग्रवाल, महासभा सेठ घनश्याम दास बिडला आदि से आर्थिक सहायता प्राप्त की गयी इन दिनो चक्रवर्ती राज गोपालाचार्य हिन्दी भाषा के दक्षिण भारत में सबसे प्रबल समर्थक थे। इन्ही दिनों दक्षिण भारत के विभिन्न क्षेत्रो में हिन्दी भाषा के अनेक अनेक पत्रो का प्रकाशन भी प्रारम्भ हुआ। इनमें हिन्दी प्रचारक नामक पत्र ने अपने समय में अभूतपूर्व ख्याति प्राप्त की थी। ३० जनवरी १९४८ का दिन विश्व इतिहास का सबसे अधिक कलंकित दिन था। इस दिन विश्व इतिहास का महानतम व्यक्ति एक पागल आदमी की गोली से भून डाला गया। इसी दिन इस बात का भी फैसला हो गया कि अब भावी भारत में वह भाषा राज भाषा के रूप मे हुकूमत करेगी, जिसे ठीक से समझने वाले कुल जनसंख्या के एक प्रतिशत लोग भी नही है। भारतीय संविधान मे निहित प्राविधानो के अन्तर्गत २६ जनवरी सन् १९६५ से हिन्दी भारत सरकार की राज भाषा बन चुकी है लेकिन यह कैसी राज भाषा है जिसका प्रयोग भारत सरकार के मुट्ठी भर कर्मचारी ही कर पाते हैं। कैसी है हमारी गॉधी जी के प्रति यह निष्ठा।

दीवान बहादुर सर टी विजय राघवाचार्य एम०बी०ई० ने हिन्दी पर भाषण देते हुए कहा—चाहे व्यावहारिक दृष्टि से, चाहे सैद्धान्तिक दृष्टि से या राष्ट्रीय दृष्टि से देखा जाय हिन्दी का कोई दूसरा प्रतिद्वन्द्वी संभव नहीं है। अत. हर स्कूल, कालेज और विश्वविद्यालयों में इसे अनिवार्य कर देना चाहिए। इस बीच मे यह हमारा और विशेषत: नवयुवकों का कर्त्तव्य होना चाहिए कि हम इसे अनिवार्य भाषा मानकर सीखिते रहें। किसी दक्षिण भारतीय ऐसे व्यक्ति को शिक्षित नहीं मानना चाहिए जिसने हिन्दी में कोई लिखत या मौखिक परीक्षा न

पास की हो। मुझे इसका भय नही कि हिन्दी को अनिवार्य विषय बनाने पर वर्तमान भारी पाठ्यक्रम पर विशेष भार पड जायेगा। हिन्दी सुगमता से सीखी जा सकती है। यूरोपीय विद्यार्थी साधारणतः अन्य विषयो के अतिरिक्त दो तीन भाषाए सीख लेते हैं। भारतीयो के लिए हिन्दी उतनी जरूरी है जितनी यूरोपियो के लिए अग्रेजी फ्रेच और जर्मन।[1]

सर पी० पी० रामस्वामी अय्यर मद्रास लिखते हैं कि देश के विभिन्न भागो के निवासियो के व्यवहार के लिए सर्वसुगम व्यापक तथा एकता स्थापित करने के साधन के रूप मे हिन्दी का ज्ञान आवश्यक है। यद्यपि मौजूदा काफी भारी पाठ्यक्रम पर और अधिक बोझ डालने मे नि:सन्देह कठिनाइयॉ हैं। फिर भी मै हिन्दी को एस०एस०एल० सी० इण्टर मीडिएट पाठ्यक्रम मे अनिवार्य विषय बनाने का पक्षपाती हूँ।[2]

श्री निवास अयगर भूतपूर्व सभापति इडियन नेशनल काग्रेस ने हिन्दी पर भाषण देते हुए कहा कि मेरे मन मे यह बात स्पष्ट है कि सरकारी और गैर सरकारी स्कूल और कालेजों मे हिन्दी को अनिवार्य विषय बना देना चाहिए। किसी भाषा के प्रचार का सर्वोत्तम उपाय उसे अपनी शिक्षा प्रणाली का अंग बना लेना है और दक्षिण भारत के स्कूलो मे अनिवार्य होने पर हिदी अपना उचित पद प्राप्त कर लेगी मुझे कोई ऐसा कारण नही दिखता कि मद्रास विश्वविद्यालय इस दिशा मे अपनी स्वतत्रता का उपयोग क्यो नहीं करता।[3] प्रो० सर एस० राधा कृष्णन लिखते हैं—मै उत्तर भारत मे लगभग आठ साल रह चुका हूँ और अपने अनुभव से यह कह सकता हूँ कि दक्षिण भारत वालो के हिन्दी का साधारण ज्ञान बहुत उपयोगी होगा जब तक हम एस०एस० सी० पाठ्यक्रम मे केवल हिन्दी के साधारण ज्ञान पर जोर देते है तब तक उसके अध्ययन और स्टैण्डर्ड मे कोई बाधा नही पड सकती है।[4]

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने हिन्दी का पक्ष रखते हुए हिन्दी का प्रबल समर्थन किया। हिन्दी भाषा के प्रचार का उद्देश्य यही है। अन्य प्रांतीय व्यवहार के लिए एक माध्यम मिल जाय और किसी विदेशी भाषा का आश्रम न लेकर भिन्न-भिन्न प्रान्तो के लोग आपस में विचार विनमय कर सके। हिन्दी भाषा इसके लिए सबसे उपयुक्त है। उन्होने कहा है कि मे चाहता

१ राष्ट्र भाषा प्रचार समिति वर्धा पृ०२३
२ राष्ट्रभाषा सर्व प्रचार समिति वर्धा पृ० २४
३ सर्वभाषा सग्रह पृ० २४
४ सर्व भाषा सग्रह पृ०२५

हूँ हिन्दी को व्यापक और सर्वदेशीय भाषा 'राष्ट्रभाषा' बनाने के लिए उसकी शब्दावली बढाई जाय और उसमे संकोच एव संकीर्णता न करके जहॉ से ऐसे अच्छे शब्द मिल सकें जिनका सुगमता से प्रचार हो सकता है हम ले लेवे। तभी यह भाषा यह भाषा हिन्दुस्तान भर की राष्ट्रभाषा बनने का दावा साबित कर सकती है।[1]

पंडित जवाहर लाल नेहरू का कथन है कि उत्तर भारत मे हिन्दुस्तानी अपने छोटे-छोटे परिवर्तनो के साथ फैली हुई है। जहा तक हो हिन्दुस्तानी को प्रामाणिक भाषा बनाना चाहिए। उत्तर भारत में इसी प्रमाणिक भाषा का प्रचार करना चाहिए और अन्य प्रान्तो मे अनिवार्य रूप से दूसरी भाषा के तौर पर इसका प्रचार करना होगा जिससे हिन्दुस्तानी सारे हिन्दुस्तान को जोड़ने वाली एक कड़ी बन सके।[2]

स्व० लोकमान्य तिलक का कथन है कि हम तो एक ऐसी राष्ट्रभाषा चाहते है जिसे सारे प्रान्तवासी समझ सकें और इसी की चेष्टा भी होनी चाहिए। यह भाषा कोई हो सकती है तो हिन्दी ही हो सकती है। पंजाब से बंगाल तक तो यह कार्य सहज हो जायेगा और मद्रास प्रान्त में भी यह कार्य उतना कठिन नहीं है। मद्रास मे संस्कृत का प्रचार कम नहीं है। सस्कृत के बहुत से शब्द इस प्रान्त की भाषाओं मे मिले हुए हैं। इसलिए हिन्दी भारत के भविष्य की भाषा बनायी जा सकती है।[3]

श्रीमती सरोजनी नायडू के अनुसार कौमी खिदमत है कि सब लोग मिलकर हिन्दी को आमफहम बनावे। अपनी-अपनी जबान रखिये आप को उसे छोडने को कोई नही कहता। पर कौमी खिदमत के लिए हिन्दी या उर्दू जरूर पढो। फक्त अग्रेजी से गॉवो में स्वराज का पैगाम क्या घर-घर पहुचा सकोगे यह मजहब का जिक्र नहीं हिन्दुस्तान का जिक्र है। हिन्दुस्तान हमारा क्यो कर हो इसका जिक्र है। इसलिए सब लोग अपनी अपनी अलग-अलग जबान रखते हुए भी एक जबान कायम करके उसी जबान से देश का विकास करो।[4]

---

१ अमृत महोत्सव स्मारिका सं० सत्य प्रकाश मिश्र पृ०४१

२ सर्व भाषा संग्रह पृ० २५

३ सर्व भाषा सग्रह पृ०२६

४ सर्व भाषा सग्रह पृ० २७

श्री विजय राघवाचार्य के अनुसार हिन्दुस्तान की सभी जीवित और प्रचलित भाषाओ मे मुझे हिन्दी ही राष्ट्रभाषा बनने के योग्य भाषा लगती है। हिन्दी ही भारत के बहुसख्यक लोगो की भाषा है। वह उर्दू से तथा अनेक अन्य भाषाओ से मिलती-जुलती है। हिन्दी सस्कृत के साथ जो घना सम्बन्ध है वह इस बात की गारंटी है कि वैज्ञानिक विषयों तक अन्य आधुनिक आवश्यक बातो के लिए हिन्दी सर्वोत्तम विस्तार योग्य और ग्राह्य भाषा है।[1]

एनी बेसेन्ट के अनुसार होमरूल या स्वराज के लिए देश की एक भाषा होना बहुत जरूरी है। देश की भाषा अग्रेजी कभी भी नही हो सकती और जिस दिन हो गयी उस दिन यह समझ लेना चाहिए कि हमारे देश की बरबादी का प्याला ऊपर तक भर गया है। एक देश के लोगो का दूसरे देश के लोगो पर हुकूमत करना ही एक पूरी मुसीबत है उसके ऊपर देश की भाषा को छीन लेना और भी बुरा है।[2]

श्री रामानन्द चटर्जी का मत था कि भारत वर्ष के एक प्रदेश के शिक्षित दूसरे प्रदेश के शिक्षितो के साथ अग्रेजी मे बातचीत या पत्र व्यवहार करते है किन्तु यदि यह काम किसी देशी भाषा से ही चलाया जाय। देश के पक्ष। यह और भी अच्छा होता । सीधी सी बात तो यह है कि हिन्दी सीख लेने के उत्तर भारत मे सर्वत्र हम अपना काम चला सकते है। दो-तीन माह मे ही काम चलाने भर की हिन्दी भाषा सीखी जा सकती है।[3]

अर्न्तप्रान्तीय व्यवहार के लिए हमारे देश को एक भाषा की आवश्यकता है। वह भाषा हिन्दी या हिन्दुस्तानी ही हो सकती है। देश के उन प्रान्तो के भाइयो से निवेदन करता हूँ जिन्होने अभी तक राष्ट्र भाषा हिन्दी सीखी नही है वे शीघ्र ही हिन्दी सीखें और एक राष्ट्र के निर्माण में सहायता दें।

भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री का मत था कि राजनीति अथवा धर्म सम्बन्धी कोई भी कार्य हो उसमें भावनाओं को प्राधान्य नहीं दिया जाना चाहिए वरन विवेक को प्राथमिकता देकर अपने विचारो को बनाना चाहिए और यही बात भाषा के सम्बन्ध मे भी आवश्यक है। प्रान्तों के नवगठन के पश्चात् कई नयी बातें उभरकर सामने आयी हैं,

---

१ सर्व भाषा सग्रह पृ०२८

२ सर्व भाषा सग्रह पृ० २८

३ सर्व भाषा सग्रह पृ० २९

जैसे प्रान्त की भाषा क्या हो, शिक्षा का माध्यम क्या हो और उसके सरकारी काम-काज की भाषा क्या हो। इस प्रकार के विभिन्न प्रश्नो ने हममें विभिन्न प्रकार के भय और भावनाओ को भी स्थान दिया है। कई ऐसी बाते भी है जिन्हे हम कतई पसन्द नही करते। किन्तु उनकी अवहेलना भी नही की जा सकती ।

(ग) गोष्ठियों एवं समिति के माध्यम से

हिन्दी भाषा के प्रचार एव प्रसार के माध्यमो मे गोष्ठियो की भूमिका अत्यन्त उल्लेखनीय है। सर्व प्रथम व्यावहारिक भाषा गोष्ठी प्रो० शेर सिह की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। इस गोष्ठी की सबसे बडी उपलब्धि यह थी कि तकनीकी प्रशासनिक और अन्य व्यवहार सम्बन्धी हिन्दी के प्रयोग मे क्या कठिनाइयॉ है और उनका निराकरण कैसे सम्भव हो सकता है, हिन्दी और देश की अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति हमारी क्या दृष्टि हो इस पर सम्यक और मूल्यवान विचार विनियम हुआ और हिन्दी के प्रयोग से सम्बन्धित नये कदम कौन-कौन से उठाये जाये इसका दिशा संकेत किया गया। हिन्दी साहित्य सम्मेलन की गोष्ठियो सन् १९७५-१९७६ ई० के सत्र मे कई महत्वपूर्ण विचारगोष्ठियों जयन्तियो और हिन्दी आन्दोलन से सम्बन्धित गोष्ठियों का आयोजन किया गया। पण्डित कामता प्रसाद गुरु जन्म शाताब्दी व्याकरण गोष्ठी मे हिन्दी भाषा का प्रथम प्रामाणिक व्याकरण प्रस्तुत किया गया था और पहली बार अपने युग के अनुसार समस्त उपलब्ध व्याकरण और भाषा सम्बन्धी नियमों के आधार पर हिन्दी भाषा के स्वरूप को निर्धारित करने की चेष्टा की।[1]

उनकी जन्मशती समारोह सन् १९७५ को सम्मेलन के संग्रहालय में केन्द्रीय हिन्दी सस्थान के भाषा विज्ञान और व्याकरण के अध्यक्ष की कृष्ण स्वामी आयंगर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। पंण्डित कामता प्रसाद गुरु के व्याकरण संम्बन्धी सिद्धान्त और हिन्दी के आधुनिक स्वरूप का प्रयाग विश्वविद्यालय के अवकाश प्राप्त रीडर डॉ० हरदेव बाहरी ने एक विषद विवरण विषय प्रवर्तन के रूप में प्रस्तुत किया। जिससे हिन्दी की प्रकृति संस्कृत, व्याकरण के नियम और अंग्रेजी भाषा के व्याकरण से सम्बन्धित अनेक स्तरों से हिन्दी के व्याकरण की समस्याओ पर गम्भीर विवेचन था। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रचार विभाग

---

१ हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इतिहास २४२, २४७

द्वारा समय-समय पर साहित्यकार एव उनकी रचनाओ पर गोष्ठियो एव समितियो के माध्यम जयतियॉ आयोजित की जाती रही है। साहित्य रचनाओ के माध्यम से कहानी, उपन्यास नाटक, निबन्ध एव समकालीन कविता पर समय-समय पर चर्चाये हुआ करती है। साथ ही श्रद्धाजंलि समारोह भी आयोजित की जाती है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के तत्वावधान मे सूर जयन्ती का विशाल समारोह आयोजित किया। इस अवसर पर सूर साहित्य के मर्मज्ञ डॉ० ब्रजेश्वर वर्मा विशेष अतिथि थे। सम्मेलन ने हिन्दी जगत तथा उपस्थित जनता से आगामी सूर जन्य पंचशती समारोह को नितात उत्साह और राष्ट्रीय पर्व के रूप मे मनाने की अपील की।[1] और इस बात की घोषणा की कि वह सूरदास के सवा लाख पदों मे से उपलब्ध और अनुपलब्ध पदों की खोज और उनकी प्रामाणिकता आदि के साथ एक वृहद संकलन प्रकाशित करेगा जिसमे सूरदास के समस्त साहित्य मे से सारगर्भित एव महत्वपूर्ण पद होंगें। राजर्षि टण्डन जयती हिन्दी आन्दोलन के भीष्म पितामह और हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्राण राजर्षि टण्डन जी का जन्म दिवस समारोह १ अगस्त को प्रत्येक वर्ष सम्मेलन द्वारा मनाया जाता है। १९७६ में इस अवसर पर राजनैतिक नेता बाबू सालिक राम जायसवाल, श्री हेमवन्ती नन्दन बहुगुणा, बाचस्वति पाठक ने जिनका सम्बन्ध हिन्दी साहित्य सम्मेलन और राजर्षि जी से सदैव रहा है। तुलसी जयंती प्रत्येक वर्ष की भांति श्रावण शुक्ल पक्ष की सप्तमी जननायक तुलसीदास की जयती मनायी जाती है। इस अवसर पर उनके द्वारा हिन्दी भाषा पर किये कार्य व साहितयिक रचनाओ की चर्चा लेखक,कवि, पत्रकार तथा प्रबुद्ध नागरिकों द्वारा किया जाता है। गोस्वामी तुलसीदास की प्रणामोंजलि अर्पित करते हुए यह विचार किया कि तुलसी की विशिष्ट उनके लोक बेद की मर्यादाओ को निभाने मे है। इस २७ मई को प्रभात शास्त्री का जन्म दिवस मनाया गया। इस अवसर पर विद्वानो, कवियों, साहित्यकारो ने अपने विचार व्यक्त करते हुए उनकी सेवा को स्मरण किया सम्मेलन के विकास मे उनके योगदान को काफी सराहा गया।[2]

सम्मेलन द्वारा हिन्दी दिवस १४ सितम्बर सम्पूर्ण राष्ट्रभाषा आन्दोलन का परम पावन दिन है। इस दिनराष्ट्र ने राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को संविधान मे स्वीकार किया गया था।

---

१ हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इतिहास पृ०२४८ - नरेश मेहता।

२ सम्मेलन पत्रिका जुलाई २००२

प्रत्येक वर्ष हिन्दी दिवस एक नये उल्लास के साथ मनाया। जाता है प्रोफेसर श्री देवनन्दन प्रसाद यादव उपशिक्षा मन्त्री की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। महामहिम श्री एम० चन्ना रेड्डी राज्यपाल उत्तर प्रदेश ने हिन्दी दिवस का उद्घाटन करते हुए कहा कि हिन्दी की व्यापकता, उपयोगिता तथा प्रतिष्ठा तीनो ही अनूठा है और ये निरन्तर देश की वाणी देने मे समर्थ रहेगे। विचार गोष्ठियो का आयोजन किसी भी जागरूक सस्था के लिए यह आवश्यक है कि वह समकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियां और साहित्य कला एवं सस्कृति के विकसित मूल्यो एव मर्यादाओ प्रवृत्तियों के प्रति अपना योगदान दे। आधुनिक युग मे बिना इस कार्य को सम्पन्न किये कोई भी साहित्यिक संस्था अपना दायित्व नही निभा सकती। इस तथ्य को विचार मे रखते हुए हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने सकल्प किया है कि इस दिशा मे विशेष कार्य करेगा। टण्डन जी पर व्याख्यान माला का आयोजन किया जायेगा। इस प्रकार प्रत्येक गोष्ठियो का आयोजन किया जायेगा। इस प्रकार एक सिलसिला चल पडा है।[1] टण्डन जयती, सूरदास जयंती, तुलसी दास जयंती, श्याम सुन्दर दास, जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी, कामता प्रसाद गुरु, पद्म शर्मा, रविशंकर शुक्ल, रामचन्द्र शुक्ल, मैथिली शरण गुप्त, माखन, लाल चतुर्वेदी, राहुल साकृत्यायन और निराला की जन्म शातब्दियों पर सम्मेलन द्वारा प्रत्येक विचार गोष्ठी एव साहित्यकारों का सगम एकत्रित होता है और हिन्दी सेवियो को उनके कार्यो के प्रति किये योगदान को पुनः ताजा किया जाता है। इसके अतिरिक्त महत्वपूर्ण श्रद्धाजलियो का आयोजन किया जाता है। मदन मोहन मालवीय, निराला, पं० रामनरेश त्रिपाठी अब तक सैकड़ो साहित्यकारो की जयंती तथा श्रद्धांजलियों पर गोष्ठी और समिति के माध्यम से जन्यन्तिया मनायी जा चुकी है जो हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में एक नयी उमग एवं जोश हिन्दी प्रेमियो मे पैदा कर देती है। हिन्दी भाषा के विकास मे केन्द्रीय सरकार की विभिन्न समितियों का गठन जिससे राष्ट्र भाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार हो सके।[2] हिन्दी भाषा निदेशालय नई दिल्ली, केन्द्रीय भाषा समिति मन्त्रालय समिति, विभागीय समिति हिन्दी कार्यक्रम, क्रियान्वयन समिति तथा हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार में अन्य केन्द्रीय एजेन्सियो का योगदान को भूला नहीं जा सकता है। राज भाषा, प्रचार समिति, राष्ट्रभाषा प्रसार समिति अर्न्तराज्ययी भाषा समन्वय समिति तथा अर्न्तराज्यीय पत्राचार समिति, विभागीय पत्राचार

१ सम्मेलन पत्रिका पृ०१३

२ राष्ट्र भाषा सदेश - १९९९

समिति आदि के माध्यम से हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार मे इन समितियों का बहुत बडा योगदान रहा है। शोध ग्रन्थो, पौराषिक को और सम्पादित किताबो का अनुवाद करके भी हिन्दी भाषा के प्रचार में काफी सहायता मिली है। इस प्रकार गोष्ठियों एव समितियो के माध्यम से हिन्दी भाषा जन-जन तक सम्मेलन के माध्यम से पहुँचने मे कामभाव हुयी। सम्मेलन के प्रचार विभाग द्वारा सम्मान व पुरस्कार गोष्ठियो एवं समितियो के माध्यम से प्रदान किया गया।[1] सम्मेलन सन् १९३७-३८ से ही हिन्दी भाषा और साहित्य की सेवा करने वालो को सम्मेलन की सर्वोच्च मानद उपाधि साहित्य वाचरस्पति से समलंकृत करता आ रहा है। इसे प्राप्त करने वालो में पण्डित मदन मोहन मालवीय, महात्मा गाधी, हरिऔध, गौरीशकर हीराचन्द्र ओझा, अब्राहन ग्रियर्सन, सर समाजी राव गायकवाड़, महावीर प्रसाद द्विवेदी, मैथिली शरण गुप्त, माखन लाल चतुर्वेदी, डॉ० सम्पूर्णानन्द, डॉ० भगवान दास महीयसी, महादेवी वर्मा, राहुल साकृत्यायन, हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि स्वनामधन्य उल्लेखनीय है। सन् १९८९ से न्याय के क्षेत्र मे हिन्दी प्रयोग को बढावा देने वालों को विधिववाचस्पति से सम्मानित किया जाने लगा है। सन् १९८६ से हिन्दी दिवस के अवसर पर साहित्य महोपाध्याय तथा सन् १९९३ से अधिवेशन के अवसर पर सम्मेलन सम्मान केवल अहिन्दी भाषी हिन्दी प्रचारको और साहित्यकारो को प्रदान किया जाता है। इस मानद सम्मान के अतिरिक्त हिन्दी साहित्य की सेवा करने वाले रचनाकारो को पुरस्कृत करने की परम्परा रही है। मगला प्रसाद पारितोषिक हिन्दी जगत का सर्वप्राचीन पुरस्कार है जो अब भी प्रदान किया जा रहा है। यह पुरस्कार सन् १९२५ से दिया जाता है। गोष्ठियों सम्मितियों के माध्यम से वर्ष भर कार्यक्रम होते हैं। नववर्ष स्वागत स्थापना दिवस, टन्डन जयंती, १ अगस्त तुलसी जयती, श्रावण शुक्ल सप्तमी, हिन्दी दिवस १४ सितम्बर, इन कार्यक्रमों के अतिरिक्त वार्षिक अधिवेशन, महाकवियों तथा हिन्दी के महापुरुषो की जयंतियों, कवि सम्मेलन समसामयिक विषयो पर सगोष्ठिया आयोजित की जाती हैं, जिसमें देश के प्रतिष्ठित कवि और साहित्यकार भाग लेते हैं।[2]

---

१ सम्मेलन एक परिचय २००२

२ सम्मेलन एक परिचय २००२

अध्याय- ६

उपसंहार

ઉપસં .ાર

हिन्दी किसी प्रदेश विशेष की भाषा नही है। वह राष्ट्र भाषा बन चुकी है। उसके राष्ट्रभाषा पद पर व्यवस्थित रूप से प्रतिष्ठित हो सकने के मार्ग मे जितनी प्रकार की बाधाए हैं, हो सकती हैं या खड़ी की जा रही हैं उनका निराकरण हमे अत्यन्त शान्ति, सद्‌भावना और स्नेह से करना होगा हिन्दी भाषा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, स्वामी दयानन्द तथा भारत के अन्य भूभागो के मनीषियो ने हिन्दी भाषा समूचे भारत देश और भारत से बाहर के देशो मे प्रचारित-प्रसारित करने का प्रयत्न किया।

उनकी इच्छा रही कि समस्त भारत जननी हृदय हो उसकी एक वाणी हो। वे हिन्दी को ऐसी सशक्त भाषा बनना चाहते थे जो ज्ञान, विज्ञान, दर्शन और समाज के अनुभवों को व्यक्त कर सके । अपनी सम्पूर्ण सांस्कतिक विरासत को संजो सके। यदि यह न हो सका तो हमारा समस्त साहित्य ऐसी कूड़ा होकर रह जायेगा जिस पर आगामी पीढी आश्चर्य भी करेगी और उससे घृणा भी। हिन्दी के विकास प्रसार में व्यावसायिक कारण भी उल्लेखनीय है। मुगल शासन काल मे देश की शासन व्यवस्था सुगठित होने से जीवन चरित तथा इतिहास को हिन्दी भाषा मे प्रस्तुत किया गया। काश्मीर मे सन् 1572 ई० मे बल्लभ देव ने राम चरितमानस का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया गया। बगाल मे हिन्दी भाषा का सीधा सम्बन्ध बॅगला भाषा के निकट था। चैतन्य महाप्रभु का कृष्ण भक्ति साहित्य इसका प्रमाण है। उडीसा मे हिन्दी भाषा का जगन्नाथपुरी तीर्थस्थान है। जहाँ कई हजार तीर्थ यात्री अत्यन्त प्राचीन काल से हिन्दी प्रान्तों से पहुचते रहते हैं। गुजरात में हिन्दी भाषा का सम्बन्ध बल्लभ सम्प्रदाय की तरह श्री नारायण सम्प्रदाय भी गुजरात मे खूब सक्रिय रहा। स्वामी सहजानन्द ने सामाजिक और धार्मिक रूढियो के विरुद्ध काव्य सृजन में प्रेरणा दी। महाराष्ट्र मे विट्‌ठल सम्प्रदाय के सन्तो ने हिन्दी पदो का सृजन किया। सन्तों ज्ञानेश्वर एकनाथ तुकाराम नामदेव ने अपने उपदेशो का प्रचार-प्रसार हिन्दी में किया है। महाकवि भूषण की ओजस्वी वाणी शिवाजी के संरक्षण में ही प्रस्फुटित हुई। कहा जाता है, कि शिवाजी के पुत्र शम्मा जी हिन्दी में कविता किया करते थे। हिन्दी प्रचार के क्षेत्र में सक्रिय राष्ट्रभाषा प्रचार

समिति महाराष्ट्र के वर्धा जिले मे ही स्थापित है। महाराष्ट्र की जनता की सदाशयता और हिन्दी अनुराग को ही समझ कर महात्मा गॉधी और पुरुषोत्तम दास टडन की प्रेरणा से इस सस्था की स्थापना हुई।

दक्षिण भारत में हिन्दी का प्रचार-प्रसार राजनीतिक एव सास्कृतिक कार्यक्रम के माध्यम से सम्पन्न हुआ। सन् 1347 ई० में बहमनी राज्य की स्थापना हुई जिसका महामत्री उत्तर भारत का गगूं ब्राह्मण था। हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में दो तरह की सस्थाओ का योगदान है। प्रथम वर्ग मे वे संस्थाए आती है जिनका प्रमुख लक्ष्य सामाजिक सुधार तथा सांस्कृतिक पूर्व जागरण था। सांस्कृतिक सामाजिक एव नव जागरण मे स्वदेशी भाषा के महत्व की सहज स्वीकृति होती है। चूंकि भाषा संस्कृति मे घनिष्ठ सम्बन्ध है इसलिए किसी एक के प्रचार-प्रसार पर ध्यान केन्द्रित करने से दूसरे का स्वतः प्रचार-प्रसार होने लगता है। १९वीं शताब्दी में अनेक धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं की स्थापना हुई। ब्रह्मसमाज, आर्यसमाज, प्रार्थना समाज, थियोसोफिकल सोसाइटी, सनातन धर्म सभा आदि संस्थाओ ने हिन्दी के प्रचार में पर्याप्त सहयोग दिया। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा की स्थापना सन् १९१८ ई० मे महात्मा गाँधी के सुझाव पर दक्षिणी भारत में हिन्दी भाषा के प्रचार के लिए हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना के लिए निर्णय लिया गया। वर्धा मे ही अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी भाषा विश्व विद्यालय की स्थापना हो चुकी है। इस समिति के तीन प्रमुख उद्देश्य थे। इसका प्रथम उद्देश्य था समस्त भारत मे राष्ट्रीय भावनाओं को उद्‌बुद्ध करना, उन्हें एक सूत्र मे बॉधना। इस समिति ने 'एक हृदय की भारत जननी, इस उद्‌घोष वाक्य को चुना। इस सस्था का कार्य क्षेत्र मुख्यतया अहिन्दी प्रान्तो मे है। प्रचार समिति सम्पूर्ण भारत वर्ष मे एव विश्व के अधिकांश देशो का हिन्दी भाषा का प्रचार एवं प्रसार किया है। यहॉ से राष्ट्रभाषा नाम की एक मासिक पत्रिका प्रकाशित होती है। जिसमें परीक्षा सम्बन्धी तथा राष्ट्रभाषा से सम्बन्धित विचारों को प्रकाशित किया जाता है। गॉधी जी और टन्डन के विचारों से सम्बन्धित पुस्तको का प्रकाशन भी यहॉ से हुआ। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के द्वारा किया गया विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन इसकी उल्लेखनीय उपलब्धि है। भारत और भारत से बाहर हो रहे हिन्दी के समस्त कार्यों का मूल्यांकन भविष्य में उनके कार्य की दिशाओ का निर्देशन, देश विदेश के समस्त हिन्दी सेवियो और विद्वानों, लेखको को एक मंच पर संगठित करने के लिए ये सम्मेलन आयोजित हुए । इस सम्मेलन मे प्रथम और द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन की उपलब्धियो को स्थायित्व प्रदान करने की दृष्टि से ठोस योजनाओं पर विचार किया गया

तथा हिन्दी राष्ट्रीय स्तर से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ले जाने की प्रक्रिया को बल देने पर विचार हुआ। इसके अतिरिक्त हिन्दी के माध्यम से भारत तथा अन्य देशो के मैत्रीपूर्ण सम्बन्धो को दृढ करने पर उपाय योजना के सम्बन्ध मे सोचा गया। वसुधैव कुटुम्बकम् के सम्बन्ध मे जाति धर्म, वर्ण और राष्ट्रीयता की सकुचित सीमा से परे हिन्दी को प्रेम, सेवा और शाति की भाषा के रूप मे प्रतिष्ठित करने के लिए सभी हिन्दी प्रेमी ने सकल्प किया।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना, हिन्दी साहित्य सम्मेलन का एक आयोजन करने का निश्चय, काशी नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी की एक बैठक मे एक मई सन् १९१० को किया गया। इसी के निश्चयानुसार १० अक्टूबर १९१० को वाराणसी मे ही पण्डित मदन मोहन मालवीय के सभापतित्व मे पहला सम्मेलन हुआ। दूसरा सम्मेलन प्रयाग मे करने का प्रस्ताव स्वीकार हुआ और सन् १९११ मे दूसरा सम्मेलन इलाहाबाद मे पण्डित गोविन्द नारायण मिश्र के सभापतित्व मे सम्पन्न हुआ। दूसरे सम्मेलन के लिए प्रयाग में हिन्दी साहित्य सम्मेलन नाम की जो समिति बनायी गयी वही एक संस्था के रूप मे प्रयाग मे आपके सम्मुख विराजमान है। जो स्वतत्रता आन्दोलन के समान ही भाषा आन्दोलन का साक्षी है और राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक है। टण्डन जी सम्मेलन के जन्म से ही मन्त्री रहे और इसके उत्थान के लिए जिये। इसीलिए उन्हे सम्मेलन के प्राण नाम से अभिहित किया जाता है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का उद्देश्य है देशव्यापी व्यवहारों और कार्यों में सहजता लाने के लिए राष्ट्रलिपि, देव नागरी और राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार करना। हिन्दी प्रदेशो मे सरकारी तंत्र, सरकारी अर्द्ध सरकारी, गैर सरकारी, निगम प्रतिष्ठान, कारखानो, पाठशालाओं विश्वविद्यालयो, नगर निगमों, व्यापार और न्यायालयों तथा अन्य संस्थाओं, समाजों समूहो में देवनागरी लिपि और हिन्दी का प्रयोग कराने का प्रयत्न करना है। हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि के लिए मानविकी समाजशास्त्र, वाणिज्य विधि तथा विज्ञान और तकनीकी विषयो की पुस्तके लिखवाना और प्रकाशित करना। हिन्दी की हस्तलिखित और प्राचीन सामग्री तथा हिन्दी भाषा और साहित्य के निर्माताओ के स्मृति चिन्हों को खोज करना और उनका तथा प्रकाशित पुस्तकों का संग्रह करना। अहिन्दी भाषी प्रदेशों में वहाँ की प्रदेश सरकारों बुद्धिजीवियो, लेखकों, साहित्यकारों आदि से सम्पर्क करके उन्हें देवनागरी लिपि में हिन्दी के प्रयोग के लिए तथा सम्पर्क भाषा के रूप में भी हिन्दी के प्रयोग के लिए प्रेरित करना। हिन्दीत्तर भाषा में उपलब्ध साहित्य का हिन्दी मे अनुवाद करवाने और प्रकाशन करने के

लिए हर सम्भव प्रयत्न करना और ग्रन्थकारो, लेखको, कवियो, पत्र सम्पादको, प्रचारकों को पारितोषिक, प्रशंसापत्र, पदक, उपाधि आदि से सम्मानित करना। हिन्दी भाषा के विकास मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन का योगदान अधिवेशनो के माध्यम से हिन्दी भाषा विभिन्न आयामो को हिन्दी अधिवेशनो का मुख्य विषय मान कर हिन्दी मे विद्वानों, साहित्यकारों, आलोचको, कवियो का अब तक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के इतिहास में ५४ अधिवेशन व विशेष अधिवेशन हो चुके हैं। जिनके माध्यम से हिन्दी के विकास की परम्परा और हिन्दी भाषा की श्रीवृद्धि का लगातार प्रयास हो रहे हैं। हिन्दी सम्मेलन के प्रयास द्वारा आम जनमानस व राष्ट्रभाषा राज भाषा के लिए सम्पूर्ण भारतवासियो के लिए एक अमृतवाणी बन सके और समग्र राष्ट्र मे हिन्दी गौरवशाली परम्परा सम्मेलन द्वारा स्थापित हो सके और भारत राष्ट्र के गैर हिन्दी भाषी क्षेत्रो के साहित्यकारों, रचनाकारो हिन्दी के विद्वानों का संगम सम्मेलन के अधिवेशन के माध्यम से हिन्दी भाषी राज्यो के सम्पर्क मे आकर राष्ट्रीय मुख्य धारा में हिन्दीमय करने प्रयास किया गया है। इस प्रकार सम्पूर्ण जन मानस को हिन्दी भाषा की विशेषताओ को अधिवेशन के माध्यम से हिन्दी भाषा को सर्व सुलभ करने का प्रयास किया गया है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन हिन्दी सेवा को अपना मुख्य दायित्व समझता है।

सम्मेलन के द्वारा अब तक हिन्दी भाषा की श्रीवृद्धि के लिए तीन पत्रिकाओ का प्रकाशन किया है। शोध त्रैमासिकी (सम्मेलन पत्रिका) का प्रकाशन सन् १९१३ से लगातार हो रहा है। जिसके माध्यम से हिन्दी भाषा जन मानस तक पहुँचने में सफल हो रही है। सम्मेलन इसके प्रकाशन से आर्थिक हानि को सहते हुए इस कार्य को सम्पन्न कर रहा है। दूसरी पत्रिका सम्मेलन द्वारा माध्यम सन् १९६४ से प्रकाशित हो रही है। सम्पादक श्री बाल कृष्ण राव ने ५ वर्षो मे हिन्दी भाषा की सर्वप्रियता के लिए केरल विशेषाक व आन्ध्र विशेषाक निकाल कर दक्षिण भारत मे हिन्दी की प्रतिष्ठा स्थापित करने में बहुत बडा योगदान दिया है। सम्मेलन ने इसे प्रकाशित करके हिन्दी सेवा की अविकराल धारा को आगे बढ़ाने का कार्य किया है। माध्यम पत्रिका का प्रकाशन पुनः हिन्दी की समसामयिक विषयो को लेकर डॉ० सत्य प्रकाश मिश्र ने सन् २००१ से लगातार हिन्दी भाषा की विभिन्न विधाओ को जन मानस तक पहुचाने का प्रयास कर रहे हैं। सम्मेलन इस कार्य में सदैव अग्रणी रहा है। सम्मेलन द्वारा तीसरा प्रकाशन राष्ट्र भाषा संदेश को सन् १९६५ से लगातार प्रकाशित करके पाक्षिक मुख्यपत्र का दर्जा पाकर हिन्दी भाषा के विकास में लगातार प्रयास हो रहा है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन का प्रकाशन विभाग द्वारा पुराने दुर्लभ ग्रन्थों हिन्दी की रचनाओं को

पुन· प्रकाशित करके जन मानस तक हिन्दी भाषा की लोकप्रियता को बढाने का प्रयास किया गया है। दुर्लभ ग्रथो का अनुवाद करके हिन्दी भाषा मे उनका प्रकाशन करके हिन्दी के शोधार्थी व विद्वानों तक पहुँचाने का प्रयास किया है। दुलर्भ ग्रथो का प्रकाशन करके हिन्दी के साहित्यकारो को हिन्दी जटिल समस्या को हल करने मे सहायता की है। हिन्दी भाषा की दुर्लभ पांण्डुलिया और उनके सकलन को हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने संग्रहित करके हिन्दी के कोष को बढाने का प्रयास किया गया है और उन पाण्डुलिपियो को पुनः प्रकाशित करके हिन्दी भाषा को सम्मेलन ने एक नया आयाम दिया है। परीक्षाओ को सचालित करके सम्मेलन ने एक बहुत बडे हिन्दी नेटवर्क बनाने का कार्य किया है। सम्मेलन प्रथमा, उपवैद्य विधि विशारद सगीत, उपमा, वैद्य विशारद, साहित्य रत्न आदि परीक्षाओं को सचालित करता है। ये सभी परीक्षाएं भारत के अलावा विदेशो मे भी आयोजित की जाती है। जिसमें हिन्दी प्रेमी लगभग ८०,००० छात्र इस वर्ष सम्मिलित हुए। इससे हिन्दी भाषा की लोकप्रियता मे सम्मेलन का कार्य अत्यन्त उच्चकोटि की भूमिका मे उभरा है। विश्व मंच पर हिन्दी सेवा से जुडे प्रतिष्ठत राजनीतिज्ञ व अन्य सहयोगी ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन के जरिये साहित्य प्रेमियो ने हिन्दी भाषा को संयुक्त राष्ट्र की कार्यालयी भाषा के रूप मे अपनाने के लिए दबाव डाला है । हिन्दी भाषा को राष्ट्र भाषा व राज भाषा का दर्जा दिलाने, महात्मा गॉधी, राजर्षि टन्डन व महामना मालवीय के योगदान को भुलाया नही जा सकता है। इन सभी कर्णधारो का हिन्दी सेवा ही जीवन का उद्देश्य था इसीलिए हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना की गयी। सम्मेलन द्वारा वर्ष भर साहित्यकारो की जयंतियॉ, जन्मशताब्दियां व रचनाओ समकालीन विषयों पर गोष्ठिया और साहित्य संगम हुआ करते हैं। सम्मेलन इस दायित्व को पूर्णतया लगातार निर्वहन कर रहा है। इस प्रकार प्रचार-प्रसार समितियों के जरिये हिन्दी साहित्य सम्मेलन हिन्दी भाषा राष्ट्रीय को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सदैव अग्रसर रहा है।

इस प्रकार हिन्दी भाषा के विकास मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन के योगदान को समसामयिक विषयों से जोडकर हिन्दी भाषा की सर्वग्रहित को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया गया है। हिन्दी भाषा और हिन्दी सेवा ही सम्मेलन मुख्य उद्देश्य है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सम्मेलन अपने विभिन्न विभागो द्वारा व हिन्दी भाषा से सम्बन्धित संस्थाओ को साथ लेकर एक नया प्राविधिक रूप प्रदान किया गया है। हिन्दी भाषा सम्मेलन के द्वारा आधुनिक प्राविधि द्वारा जैसे हिन्दी फिल्म हिन्दी कम्पयूटर व अभिसूचना के विभिन्न तरीको को अपना कर के हिन्दी की श्रीवृद्धि के लिए सदैव तत्पर हैं। इस प्रकार उदारीकरण के

दौर मे हिन्दी भाषा को स्थापित करने मे एक नया बल मिलेगा। हिन्दी भाषा को सम्मेलन के जरिये जीवन की विकास से जोड कर राष्ट्रीय परिवेश मे जोडकर सास्कृतिक जाल बिछाने का प्रयास किया गया है। इस दृष्टि से हिन्दी भाषा के विकास मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन इस युग मे अप्रतिम स्थान का अधिकारी है।

हिन्दी भाषा की संवैधानिक स्थिति के बारे मे स्वतत्र भारत के सविधान के अनुच्छेद ३४३ (1) मे यह उपबन्ध रखा गया कि भारत की राज भाषा हिन्दी और देव नागरी लिपि होगी। इस प्रकार स्वतंत्र भारत के हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार स्वैच्छिक सस्थाओ ने अपने माध्यम एक अच्छा कार्य करने का प्रयास किया लेकिन हिन्दी भाषा की वजह से इस भूमडलीकरण के युग मे आधुनिक ज्ञान विज्ञान की शिक्षा मे अवरोध हुआ और इसी कारण हिन्दी भाषी जनता को बेरोजगारी का सामना करना पडा संघ की भाषा हिन्दी होने के कारण भी आज तक अंग्रेजी का बोलबाला हुआ है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने अपने सभी अधिवेशन मे जो संकल्प लेते हैं उसका क्रियान्वयन होने के बावजूद भी हिन्दी भाषा के भविष्य के बारे मे सभी हिन्दी सेवी संस्थाये आगे भी कार्य करती हैं।

२६ जनवरी १९५० को सविधान लागू हो गया कि हिन्दी को राजभाषा के रूप मे तत्काल लागू नहीं की गयी। इसके बावजूद भी १५ वर्षो तक हिन्दी को राजभाषा का दर्जा नही मिला। अतिम पंक्ति मे इस अवधि को शिथिल कर देती है। इस प्रकार समस्त केन्द्रीय कार्यालयो मे हिन्दी मे किये जाने वाले कार्यो की देख-रेख के लिए हिन्दी अधिकारी की नियुक्ति की गयी है। अनेक मंत्रालयों से हिन्दी मे पत्र पत्रिकाए निकाली जा रही है। उच्चत्तम न्यायालय, निर्णय पत्रिका, उच्चन्यायालय पत्रिका, आज-कल समाचार, जगत योजना खेती, समाज कल्याण विज्ञान, बाल भारती आदि पत्रिकाओं का नामोल्लेख किया जा सकता है। इसे आगे भी हिन्दी भाषा के लिए विद्वान पाठक और उसके अनुयायी उसकी गरिमा को सदैव बढ़ाते रहे और हिन्दी के लिए जितनी भी सेवा हो सके उसकी पूर्ति के लिए हम सभी भारतीय सदैव कुर्बानी देने के तैयार रहेगे। इस प्रकार हिन्दी की सवैधानिक प्रतिष्ठा बरकरार रखने के लिए हम सभी विश्वविद्यालयो की शिक्षा प्रणाली को हिन्दी माध्यम होने के बावजूद भी यह स्थिति नहीं प्राप्त हो सकी। सम्पूर्ण भारत मे शैक्षिक सस्थानो मे शिक्षा पद्धति हिन्दी होने कारण भी हम सभी हिन्दी को अभी पूर्ण रूप से राष्ट्र एवं राज भाषा का दर्जा देने मे असमर्थ रहे हैं। इससे भी हमारे साहित्यकार एवं हिन्दी के प्रतिष्ठित विद्वान

अपने हिन्दी भाषा को सदैव राजभाषा के रूप मे ही देखने का प्रयास किया है। इस प्रकार सम्पूर्ण शोध सामग्री को ध्यान मे रखकर शोधकर्ता अपने छोटे से प्रयास मे यह दिखाने का प्रयास किया है कि हिन्दी भाषा के विकास मे सम्मेलन का जो कार्य था उसको मजिल तक पहुँचाने मे अभी भी सभी के सहयोग एव सघर्ष की आवश्यकता सदैव बनी रहे। तभी हिन्दी भाषा को उसका उचित स्थान प्राप्त होगा। जिसके हिन्दी साहित्य सम्मेलन सदैव हिन्दी सेवा कार्य आगे बढा रहा है।

सहायक ग्रन्थों की सूची

१- ग्रामीण हिन्दी बोलियाँ - डॉ० हरदेव बाहरी

२- हिन्दी भाषा का विकास - डॉ० राम किशोर शर्मा

३- ब्रज साहित्य का इतिहास - डॉ० सत्येन्द्र

४- बुन्देल खण्ड का सक्षिप्त इतिहास - गोरेलाल तिवारी

५- बुन्देल खण्ड का भाषा शास्त्रीय अध्ययन - डॉ० रामेश्वर प्रसाद

६- मैथिली तथा भोजपुरी - डॉ- जयकात मिश्र

७- हिन्दी भाषा - डॉ० हरदेव बाहरी

८- हिन्दी के प्रमुख क्रिया रूप - डॉ० रत्ना शर्मा

९- हिन्दी काव्यधारा - भूमिका भाग राहुल सांकृत्यायन

१०- भाषा विज्ञान के सिद्धान्त और हिन्दी भाषा - डॉ० राम दरश राम

११- हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

१२- नई धारा पटना

१३- भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी - डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी

१४- प्रेम सागर - लल्लू लाल

१५- नासिकेतोपाख्यान - सदल मिश्र

१६- पुरानी हिन्दी नागरी प्रचारणी सभा काशी

१७- हिन्दुस्तानी पत्रिका

१८- हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य - डॉ० राम किशोर शर्मा

१९- हिन्दी भाषा - डॉ० कैलाश चन्द्र भाटिया

२०- भारत का सविधान एक परिचय - डॉ० दुर्गादास बसु

२१- आधुनिक भारत का इतिहास - बी०एल० ग्रोवर

२२- हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ० नगेन्द्र

२३- भारतीय सस्कृति एव कला - डॉ० हरिनारायण दुबे

२४- संस्कृति के चार अध्याय - रामधारी सिह दिनकर

२५- सम्मेलन एक परिचय - प्रयाग २०००

२६- अमृत महोत्सव सम्पादक - डॉ० सत्यप्रकाश मिश्र

२७- हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इतिहास - श्री नरेश मेहता

२८- परिसंवाद एवं ५४ वॉ अधिवेशन २००२

२९- सभापतियो के भाषण-भाग-१ - डॉ० लक्ष्मी शकर व्यास

३०- सभापतियो के भाषण भाग-२ डॉ० विद्यानिवास मिश्र

३१- सभापतियो के भाषण- भाग-३ डॉ० प्रेमनारायण शुक्ल

३२- सम्मेलन दैनन्दिनी - प्रयाग

३३- हिन्दी भाषा आन्दोलन - लक्ष्मी चन्द्र

३४- हस्तलिखित ग्रथो की विवरणात्मक सूची - डॉ० पारसनाथ तिवारी

३५- स्वतत्रतापूर्ण हिन्दी के सघर्ष का इतिहास - राम गोपाल

३६- राष्ट्रभाषा की समस्याएँ - भदन्त आनन्द कौसल्यायन

३७- हिन्दी साहित्य की समस्याएं - डॉ० रघुवंश

३८- राजभाषा हिन्दी - डॉ० सेठ गोविन्द दास

३९- सम्मेलन पत्रिका पत्र विशेषाक - प्रेमनारायण शुक्ल

४०- हिन्दी आन्दोलन - लक्ष्मीकांत वर्मा

४१- राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन - व्यक्तित्व एवं संस्मरण- लक्ष्मी नारायण - ओंकार शरद

४२- राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन - लक्ष्मी नारायण सिह

४३- राष्ट्रभाषा हिन्दी समस्याएँ और समाधान - आचार्य द्रेवेन्द्रनाथ शर्मा

४४- शासन मे नागरी - चन्द्रबली पाण्डे

४५ - सम्मेलन पत्रिका - गॉधी टण्डन स्मृति अक - ज्योति प्रसाद मिश्र निर्मल - राम प्रताप त्रिपाठी शास्त्री

४६- माध्यम - बालकृष्ण राव - १९६४

४७- माध्यम - डॉ० सत्य प्रकाश मिश्र

४८- राष्ट्रभाषा सन्देश - श्री विभूति पाठक

४९- सम्मेलन पत्रिका - प्रयाग

५०- हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य राम चन्द्र शुक्ल

५१- हिन्दी भाषा का विकास - उदित नारायण तिवारी

५२- हिन्दी भाषा का इतिहास - उदय नारायण तिवारी

५३- हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

५४- हिन्दी भाषा का इतिहास - मलिक मुहम्मद

५५ - हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ० राम कुमार वर्मा

५६- हिन्दी भाषा सवेदना का इतिहास - प्रो० रामस्वरूप चतुर्वेदी

५७- हिन्दी साहित्य इतिहास - हजारी प्रसाद द्विवेदी

५८- आदिकाल - हजारी प्रसाद द्विवेदी